RAJASTHAN HISTORY

→ **पाषाण काल:-**

(1) बागौर- भीलवाड़ा में कोठारी नदी के किनारे

- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य यहाँ मिले हैं।
- पाषाणकालीन औजारों के भडांर यहां मिले हैं।
- उत्खननकर्त्ता- 'विरेन्दर नाथ मिश्र'

(2) तिलवाड़ा:- बाड़मेर में लूनी नदी के किनारे ।

यहां भी पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।

- अग्नि कुंड के साक्ष्य।
- उत्खननकर्त्ता- 'विरेन्दर नाथ मिश्र'

- अन्य केन्द्र:-

(3) बुढ़ा पुष्कर (अजमेर)

(4) जायल (नागौर)

(5) डिडवाना (नागौर)

→ **सिंधु सभ्यता** -

(1) कालीबंगा: - हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे।

- अर्थ - काली चूडियां
- 1952 - सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने खोज की।
- 1961-1969 - वास्तविक उत्खनन B.K. Thaper & B.B. Lal ने किया (5 स्तरों तक)
- कालीबंगा से प्राक् हड़प्पा और विकसित हड़प्पा के अवशेष मिले हैं।
- सर्वप्रथम जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा के लोग दो फसले उगाया करते थे। - चना, सरसों
- अग्नि वेदिकाएँ प्राप्त हुयी हैं।
- काली बंगा में लकड़ी की नालियां बनी हैं।
- मकान कच्ची ईंटों व अलंकृत ईटों के बने थे।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुये हैं।
- भुकम्प के अवशेष मिले हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

- 1985-86 ई. में भारत सरकार ने एक सग्रंहालय बनवाया।

(2) **सोथी सभ्यता** - बीकानेर के आस-पास की सभ्यता।

- अमलानन्द घोष ने इसे सम्पुर्ण हड़पा सभ्यता का उद्‌गम स्थल कहा हैं। इसे कालीबंगा प्रथम भी कहा जाता हैं।
- दो केन्द्र - (1) सांवणिया (2) पूगल

(3) **आहड़ सभ्यता** -

- वर्तमान उदयपुर जिले में 'आहड़' स्थल बनास की सहायक नदी आयड़ / बेड़च नदी के किनारे बसा हुआ था।
- चूंकि यह सभ्यता बनास नदी के आस-पास मिली हैं, इसलिए इसे बनास सभ्यता भी कहते हैं।
- इसे मृतकों के टीलों की सभ्यता भी कहते हैं।
- यहां 1 घर में 6 से 8 चूल्हे मिले हैं। इससे हमें संयुक्त परिवार व सामूहिक भोज की जानकारी मिलती हैं।
- यहा से एक यूनानी मुद्रा मिलती हैं, जिस पर 'अपोलों' का चित्र बना हुआ हैं।
- यहाँ काले व लाल मृदभांड मिले हैं, जिन्हें गोरे या कोठ कहते हैं।
- बिना हत्थे के जलपात्र मिले हैं, ऐसे जलपात्र हमें ईरान की सभ्यता से प्राप्त हुये हैं। जो ईरान के साथ सम्बन्ध को दर्शातें हैं।
- प्राचीनतम नाम- आघाटपुर। स्थानीय नाम - धूलकोट।
- आहड़ से हमें तांबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुयी हैं। इसलिए इसे ताम्रवती नगरी भी कहते हैं।
- उत्खननकर्त्ता- (1) अक्षय कीर्ति व्यास (2) रतनचन्द अग्रवाल (3) विरेन्द्रनाथ मिश्र (4) हंसमुख धीरज सांकलिया।
- आहड़ सभ्यता के अन्य केन्द्र -

(1) गिलुण्ड - राजसंमद (2) बालाथल - उदयपुर (3) ओझीयाणा - भीलवाड़ा

→ **<u>महाजनपद काल</u>**

- राजस्थान में महाजनपद

(1) मत्स्य	(2) शुरसेन	(3) कुरू
वर्तमान अलवर व जयपुर	राजधानी - मथुरा,	राजधानी - इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)
राजधानी - विराटनगर	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली का क्षैत्र	

<u>अलवर</u>

उतर-कुरू   दक्षिण पश्चिम-मत्स्य   पूर्वी-शूरसेन

(4) शिवि जनपद

- वर्तमान चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों में स्थित
- राजधानी - माध्यमिका (नगरी - वर्तमान नाम)
- राजस्थान का पहला उत्खनित स्थल - उत्खननकर्त्ता- डी. आर. भंडारकर (1904ई.)

(5) <u>मालव जनपद जाति</u>

- वर्तमान जयपुर और टोंक
- राजधानी- नगर (टोंक) (इसे खेड़ा सभ्यता भी कहते हैं।)
- सर्वाधिक सिक्के मालव जनपद के प्राप्त होते हैं। ये सिक्के रैढ़ नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। इसे प्राचीन भारत का टाटानगर कहते हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

(6) <u>यौद्धेय जनपद</u>

- वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में स्थित।
- रूद्रदामन (शक् शासक) के गिरनार (जूनागढ़) से यह जानकारी मिलती हैं कि कुषाणों की शक्ति को यौद्धयों ने रोका।

(7) <u>शाल्व जनपद</u> - अलवर

(8) <u>अर्जुनायन जनपद</u>-अलवर, भरतपुर जिलों में स्थित।

(9) <u>राजन्य जनपद</u>- भरतपुर

- महाजनपद काल में बीकानेर और जोधपुर के आस-पास के क्षेत्र को जांगल प्रदेश कहा जाता था।
- बीकानेर के शासकों ने 'जागंलधर बादशाह' की उपाधि का प्रयोग किया।

→ **<u>मौर्यकाल</u>**:-

- **बैराठ** (विराटनगर)
- 1837 ई. में 'कैप्टन बर्ट' ने बीजक पहाड़ी से अशोक का भाब्रु शिलालेख खोजा। इसमें अशोक द्वारा बौद्ध,संघ, धम्म के प्रति निष्ठा व्यक्त की गयी हैं। अशोक का भाब्रू शिलालेख वर्तमान में कलकत्ता में म्यूजियम में रखा गया हैं। यहां से एक बौद्ध स्तूप और एक बौद्ध गोलाकार मंदिर प्राप्त होता हैं।
- ह्वेनसांग भी यहां बौद्ध मठों की पुष्टि करता हैं।
- कालान्तर में हुण शासक मिहिरकुल ने इन बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया।
- जयपुर का राजा सवाई रामसिंह ने यहां खुदाई करवायी थी। जिसमें सोने की एक मंजूषा प्राप्त हुयी। सम्भवतः इसमें भगवान बुद्ध के अवशेष रहे होगें।
- बैराठ से सर्वाधिक मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होते हैं।
- बैराठ में चट्टानों में लिखी लिपि को शंखलिपि कहते हैं।
- 1936 ई. में दयाराम साहनी ने यहां का उत्खनन किया था।
- 713 ई. के मान सरोवर लेख के अनुसार यहां राजा 'मान मौर्य' का शासन था। इस अभिलेख में चार शासकों के नाम प्राप्त होते हैं।

(1) महेश्वर (2) भीम (3) भोज (4) मान

- 738 ई. में कणसवा (कोटा) शिवालय के अभिलेख से मौर्य राजा धवल का जिंक्र मिलता हैं। इसके बाद हमें राजस्थान में मौर्यो का कोई जिक्र नहीं मिलता हैं।

→ **<u>मौर्योत्तर काल</u>**

- यूनानी शासक 'मिनाण्डर' ने 150 ई. में माध्यमिका पर अधिकार कर लिया था।
- बैराठ से हमें मिनाण्डर की 16 यूनानी मुद्राएं प्राप्त होती हैं।
- भरतपुर के 'नोह' से सुंगकालीन 5 मीटर ऊँची यक्ष की मुर्ति मिली हैं। इसे 'जाख बाबा' की मूर्ति कहा गया हैं।
- हनुमानगढ़ के रंग महल से कुषाण कालीन मुद्राएं प्राप्त हुयी हैं।
- एक गुरू - शिष्य की मूर्ति मिली हैं।
- रंगमहल का उत्खनन डॉक्टर 'हन्नारिद' ने किया था। (स्वीडन)

→ **<u>गुप्तकाल</u>**

- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार, उसने राजस्थान के गणतंत्रों को अपनी अधीनता स्वीकार करवायी थी।
- कुमार गुप्त के समय बयाना (भरतपुर) में सर्वाधिक गुप्तकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं।
- बडवा (बारां) से गुप्तों का एक अभिलेख प्राप्त होता हैं। जिसमें मोखरी शासकों का वर्णन हैं।
- हुण शासक 'मिहिरकुल' ने बाड़ोली में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- चारचौमा (कोटा) का शिव मंदिर भी गुप्तकालीन स्थापत्य कला का उदारहण हैं।

→ **गुप्तोत्तर काल**

- गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी 'भीनमाल' थी।
- ह्वेनसांग भीनमाल को 'पी लो मो लो' लिखता हैं।
- ब्रह्मगुप्त (भारत का न्युटन) भीनमाल के थे।
- पुस्तकें - बह्मस्फुट सिद्धान्त, खंड खाद्यक
- कवि माघ भी भीनमाल के थे। पुस्तक- शिशुपाल वध।
- गुर्जर प्रतिहारों ने अरबों को सिंध से आगे बढ़ने से रोका था।
- राष्ट्रकूटों की एक शाखा कालान्तर में राजस्थान में राठौड़ के रूप में आयी थी।

→ **अन्य पुरातात्विक स्थल:-**

(1) गणेश्वर - सीकर जिले में कान्तली नदी के किनारे।

- गणेश्वर को ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहते हैं।

(2) सुनारी - झुंझूनु जिलें में कान्तली नदी के किनारे। लौहयुगीन केन्द्र।

(3) कुराड़ा - नागौर जिले में 'औजारों की नगरी'

(4) ईसवाल - उदयपुर जिलें में। 'औद्योगिक नगरी' (प्राचीनकाल में यहां से लोहा निकाला जाता था।)

(5) जोधपुरा - जयपुर में साबी नदी के किनारे

(6) नलियासर - सांभर (जयपुर) में

(7) गरदड़ा - बूंदी में (प्राचीन भारत की Rock Painting)

मेवाड़

- गुहिल ने 566 ई. में मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना की।
- मेवाड़ सूर्यवंशी हिन्दू शासकों का शासन था।
- विश्व का सबसे दीर्घकालीन वंश।
- यहां के शासकों को हिन्दुआ सुरज कहा जाता था।
- मेवाड़ के राजचिन्ह में एक पंक्ति लिखी हुयी हैं।
  'जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहि राखै करतार।।'

(1)बापा रावल:-

- वास्तविक नाम- कालभोज
- ये हारित ऋषि की गाये चराते थे।
- हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया। और नागदा को अपनी राजधानी बनाया।
- यहां पर एकलिंग जी का मंदिर बनवाया। मेवाड़ के शासक स्वंय को एकलिंग नाथ (शिव) जी के दीवान मानते हैं।
- मुद्रा प्रणाली शुरू की।

(2) अल्लट:-

- वास्तविक नाम - आलु रावल
- इसने 'आहड़' को दूसरा महत्वपूर्ण केन्द्र बनाया। आहड़ में वराह मंदिर बनवाया।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- हूण राजकुमारी हरियादेवी से शादी की।
- मेवाड़ राज्य में नौकरशाही की स्थापना की।

(3) <u>जैत्रसिंह</u>:- 1213-1250 ई.

- भूताला का युद्ध - सुल्तान इल्तुतमिश और जैत्रसिंह के मध्य जिसमें जैत्रसिंह विजयी रहा।
- इल्तुतमिश ने नागदा को तबाह कर दिया। इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड़ को अपनी नयी राजधानी बनायी।
- जैत्रसिंह के समय को 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण' काल कहते हैं।
- भूताला युद्ध की जानकारी हमें 'जयसिंह सूरी' की पुस्तक 'हम्मीर मद मर्दन' से मिलती हैं।

(4) <u>रतनसिंह</u> :- 1302 - 1303 ई.

- रतनसिंह का छोटा भाई कुम्भकरण नेपाल चला गया और नेपाल में 'राणाशाही' वंश की स्थापना की।
- रतनसिंह की रानी का नाम पदमिनी था, ये सिंहल देश के राजा गन्धर्व सेन और चम्पावती की पुत्री थी। राघव चेतन नामक एक ब्राह्मण ने अलाउदीन खिलजी को पद्मिनी की सुन्दरता के बारें में बताया। अलाउदीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के प्रमुख कारण निम्न थे।

(a) अलाउदीन की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा
(b) सुल्तान की प्रतिष्ठा का प्रश्न
(c) चित्तौड़ का सामरिक तथा व्यापारिक महत्व।

→ <u>चित्तौड़ का पहला साका</u>- 25 अगस्त 1303 ई.

- **साका = केसरिया + जौहर**

- गोरा व बादल नामक दो सेनानायकों ने अद्भुत वीरता दिखायी।
- अलाउदीन ने किले पर अधिकार कर लिया।
- अलाउदीन ने किले का नाम खिज्राबाद कर दिया और उसे अपने बेटे को खिज्र खां को दे दिया।
- कालान्तर में चित्तौड़ का शासन मालदेव सोनगरा को सौंप दिया गया।
- मालदेव - जालौर के कान्हडदेव सोनगरा का भाई था।
- इस मालदेव को मुंछाला मालदेव के नाम से भी जाना जाता हैं।
- 1540 ई. में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी पुस्तक 'पद्मावत' में पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया हैं। यह पुस्तक 'अवधी' भाषा में लिखी हैं।
- 'गोरा बादल री चौपाई' नामक पुस्तक 'हेमरत्न सूरी' ने लिखी।

(5) <u>हम्मीर</u>:- 1326-1364 ई.

- हम्मीर ने मालदेव सोनगरा के बेटे 'बनवीर सोनगरा' से चित्तौड़ छीना। चूंकि यह सिसोदा गांव से आया था इसलिए मेवाड़ के राजा अब सिसोदिया कहलाने लगें, मेवाड़ में 'राणा शाखा' की स्थापना हुयी।
- सिंगोली का युद्ध:- हम्मीर V/s मुहम्मद बिन तुगलक
- कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में हम्मीर को विषम घाटी पंचानन (विकट युद्धों में शेर के समान) कहा गया हैं।
- 'रसिक प्रिया' में हम्मीर को वीर राजा कहा गया हैं।
- चित्तौड़ के किले में 'अन्नपूर्णा मंदिर' (बरवड़ी माता) का निर्माण करवाया। बरवड़ी माता मेवाड़ के सिसोदिया वंश की ईष्ट देवी हैं। कुलदेवी बाण माता।

(6) <u>राणा लाखा</u>:- (राणा लक्षसिंह) 1382-1421 ई.।

- 'जावर' में चांदी की खान निकल गयी।
- एक बन्जारे ने 'पिछोला झील' का निर्माण करवाया।
- (नटनी का चबूतरा - पिछोला झील के पास हैं।)
- कुम्भा हाड़ा नकली बूंदी की रक्षा करता हुआ मारा गया।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- राणा लाखा की शादी मारवाड़ के राव चूंडा की पुत्री हंसा बाई के साथ हुई।
- इस अवसर पर लाखा के बेटे चूडां ने यह प्रतिज्ञा की मेवाड़ का अगला राणा वह न बनकर हसांबाई के पुत्र को बनाएगा।
- ऐसी प्रतिज्ञा के कारण चूडां को 'मेवाड़ को भीष्म पितामह' कहते हैं।
- इस बलिदान के बदले चूडां के वंशजो को (चूंडावत) हरावल में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

<u>हरावल</u> – सेना का अग्रिम भाग ।

- सलूम्बर नामक सबसे बडा ठिकाणा इन्हें दिया गया।
- राजधानी में राणा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का रावत शासन कार्य संभालता था।
- मेवाड़ के शासकों (राणा) का राजतिलक , सलूम्बर का रावत ही करता था।

(7) <u>मोकल</u>:- 1421-1433 ई.। (हंसा बाई का बेटा)

- हंसा बाई के अविश्वास की वजह से चूडां मेवाड़ छोड़कर मालवा चला गया।
- अब मोकल का संरक्षक हंसा बाई का भाई रणमल बन गया।
- मोकल ने चित्तौड़ में 'समिद्धेश्वर मंदिर' का पुनः निर्माण करवाया।
- एकलिंग जी के मंदिर का परकोटा बनवाया।
- 1433ई. में जीलवाड़ा नामक स्थान पर चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मोकल की हत्या कर दी।

(8) <u>राणा कुम्भा</u>:- 1433-1468 ई.।

- कुम्भा की माता का नाम - सौभाग्यवती परमार
- रणमल राणा कुम्भा का संरक्षक था।
- मेवाड़ के दरबार में राठौड़ों का प्रभाव बढ़ रहा था। उन्होनें चूंडा के भाई राघव देव सिसोदिया की हत्या कर दी थी।
- राठौड़ो के इस प्रभाव को खत्म करने के लिए हंसाबाई ने चूंडा को मालवा से मेवाड़ वापस बुलवाया।
- रणमल की उसकी प्रेमिका 'भारमली' की सहायता से हत्या कर दी गयी।
- रणमल का बेटा जोधा अपने अन्य भाइयों के साथ भाग जाता हैं। वे बीकानेर के पास काहुनी नामक गांव में शरण लेता हैं।
- चूंडा ने मंडौर पर हमला करके अधिकार कर लिया।
- हंसा बाई की मध्यस्थता से कुभां व जोधा के बीच संधि हुयी इस संधि को 'आँवल बाँवल की सन्धि' (1453) कहते हैं।
- 1437 ई.:- 'सांरगपुर का युद्ध' - कुम्भा V/s महमूद खिलजी (मालवा का सुल्तान)
- कुम्भा इस युद्ध में विजयी रहता हैं। इस विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़ में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाता हैं।
- **विजय स्तम्भ**- अन्य नाम- कीर्ति स्तम्भ, विष्णु ध्वज, गरूड़ ध्वज, मुर्तियों का अजायबघर, भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष।
- 122 फुट लम्बा, 30 फुट चौड़ा हैं। नौ मंजिला इमारत हैं।
- इसकी तीसरी मंजिल में 9 बार अल्लाह लिखा हैं।
- वास्तुकार- जैता व उसके पुत्र नापा,पुंजा,पोमा।
- इसमें कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति लिखी गयी हैं। जिसकी रचना अत्री व उसके बेटे महेश ने की थी।
- इसका ऊपरी भाग क्षतिग्रस्त होने पर महाराजा स्वरूपसिंह ने उसका पुनर्निमाण करवाया था।`
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'कुतुबमीनार' से की हैं।
- 'फर्ग्युसन' ने इसे रोम के टार्जन से भी श्रेष्ठ बताया हैं।
- राजस्थान पुलिस तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिन्ह हैं।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- राजस्थान की पहली इमारत जिस पर 'डाक टिकट' जारी किया गया। (15 अगस्त 1949)
- को इस पर 1 रूपये का डाक टिकट जारी हुआ।

* **जैन कीर्ति स्तम्भ** :- 12 वीं शताब्दी में एक जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने इसका निर्माण करवाया था। सात मंजिला इमारत हैं जो भगवान आदिनाथ को समर्पित हैं।

- 1456ई. (चम्पानेर की संधि):- मालवा के महमूद खिलजी और गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच, दोनों ने मिलकर एक साथ कुम्भा पर आक्रमण करने की योजना बनायी।
- बदनौर के युद्ध में कुम्भा इन दोनों की संयुक्त सेना को हराता हैं।
- सिरोही के 'सहसमल देवड़ा' को हराता हं।
- नागौर के शम्स खां को मुजाहिद खां के खिलाफ सहायता देता हैं।

* कुम्भा की उपाधियां:-
(1) हिन्दु सुरताण ।
(2) अभिनव भरताचार्य। (संगीतज्ञ के कारण)
(3) राणौ रासौ (साहित्यकारों का आश्रयदाता)।
(4) हाल गुरू (पहाड़ी किलों को जीतने वाला)
(5) दानगुरू।
(6) छापगुरू (छापामार युद्ध प्रणाली)

* कुम्भा का स्थाप्त्य कला में योगदान:-
'श्यामलदास' की पुस्तक- 'वीर विनोद' के अनुसार मेवाड़ के 84 दुर्गो में से 32 का निर्माण राणा कुम्भा ने करवाया था।
(1) कुम्भलगढ़ (राजसमन्द)
वास्तुकार - मंडन।
कुम्भलगढ़ का ऊपरी भाग 'कटारगढ़' कहलाता हैं। यह कुम्भा का निजी आवास था। इसे 'मेवाड़ की आंख' कहते हैं।
(2) अचलगढ़ (सिरोही) के किले का पुनर्निमाण करवाया
(3) बसन्ती दुर्ग (सिरोही)
(4) मचान दुर्ग (सिरोही)
(5) भोमठ दुर्ग - भोमठ के पठार पर (डुंगरपुर - बांसवाड़ा)
- कुम्भ स्वामी का मंदिर बनवाया। तीनों किलों में- चित्तौड़ में, कुम्भलगढ़ व अचलगढ़ में।
- कुम्भा के समय में 1439 ई. में धरणकशाह ने रणकपुर के जैन मंदिर बनाए। चौमुखा मंदिर - रणकपुर के जैन मंदिरों में एक मंदिर हैं। इसमें 1444 स्तम्भ हैं। इसलिए इसे स्तम्भों का अजायबघर कहते हैं।
- इसका वास्तुकार देपाक था।

* कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था। व इसके संगीत गुरू थे 'सारगं व्यास' कुम्भा द्वारा रचित संगीत ग्रन्थ:
(1) सूड़ प्रबन्ध
(2) कामराज रतिसार
(5) संगीत राज - सबसे वृहत एंव सिरमौर ग्रन्थ। इसके पांच भाग हैं।
(1) पाठ्य रत्न कोष (2) गीत रत्न कोष (3) नृत्य रत्न कोष (4) वाद्य रत्न कोष (5) रस रत्न कोष।

More PDF Install App - DevEduNotes

(6) संगीत सुधा

(7) संगीत मींमासा

(8) जयदेव की गीत गोविन्द पर रसिक प्रिया नामक टीका लिखी।

(9) चण्डी शतक पर टीका लिखी।

(10) संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी हैं।

*** दरबारी विद्वानः-**

- (1) कान्ह व्यास- 'एकलिंग महात्मय'
- एकलिंग महात्म्य के पहले भाग की रचना कुम्भा ने की थी, जिसे राज वर्णन कहा जाता हैं।
- (2) मंडन- (1) वास्तुसार (2) देवमूर्ति प्रकरण (रूपावतार) (3) राज वल्लभ (4) रूपमंडन (मूर्तिकला) (5) कोदंड मडंन (धनर्विधा)
- (3) नाथा (मडंन का भाई) - वास्तुमंजरी
- (4) गोविन्द (मडंन का बेटा)- 1. कला निधि 2. द्वार दीपिका 3. उद्धार धोरिणी।
- (5) रमाबाई - कुम्भा की बेटी रमा बाई भी एक अच्छी संगीतज्ञा थी। रमा बाई को जावर का परगना दिया।

- कुम्भा की हत्या उसके बेटे उदा ने कुम्भलगढ़ किले में कर दी थी।

(9) <u>संग्रामसिंह (सांगा) (1509-1527 ई.)</u>

<u>पृथ्वीराज-</u> सांगा का बड़ा भाई।

- रायमल का ज्येष्ठ पुत्र।
- इसे 'उड़ना राजकुमार' के नाम से जानते हैं।
- अपनी पत्नी 'तारा' के नाम पर इसने अजमेर के किले का पुनर्निमाण करवाकर इसे <u>तारागढ़</u> नाम दिया।
- पृथ्वीराज की '12 खम्भों की छतरी' कुम्भलगढ़ के किले में बनी हुयी हैं।

<u>जयमल</u>- सांगा का भाई।

- जयमल सौलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया। (तारा के पिता का नाम सुरताण सौलंकी था।)

- एक चारण महिला की भविष्यवाणी सुनकर पृथ्वीराज व जयमल ने सांगा पर आक्रमण कर दिया था। सांगा को अपना एक हाथ खोना पड़ा। सांगा वहां से भागकर सेवन्त्री गांव के रूपनारायण मंदिर में पंहुचता हैं। यहां पर मारवाड़ का बीदा जैतमालोत (राठौड़ों की उपशाखा) सांगा की रक्षा करता हैं। बीदा रक्षा करते हुये लड़ता हुआ मारा जाता हैं।
- सांगा यहां से श्रीनगर (अजमेर) में कर्मचन्द पंवार के यहां शरण लेता हैं।
- <u>खातोली (कोटा) का युद्ध</u> (1517 ई.)
- बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध (1519ई.):-

इन दोनों युद्धो में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराया।

- 1519 ई. गागरौन के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय को हराता हैं।

* इस समय गागरौन का किला सांगा के दोस्त 'मेदिनी राय' (चन्देरी के राजा) के पास था।

- गुजरात की रियासत ईडर के उत्तराधिकार के प्रश्न पर गुजरात के राजा 'मुजफ्फर शाह द्वितीय' को हराया।
- बयाना के युद्ध में सांगा, बाबर को हराता हैं। (16 फरवरी 1527ई.)
- **खानवा का युद्ध** - 17 मार्च 1527 ई.।
- बाबर इस युद्ध मे पहले जेहाद की घोषणा करता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

- मुसलमानों से 'तमगा कर' हटा दिया गया।
- शराब के व्यक्तिगत सेवन पर रोक।
- राणा सांगा युद्ध से पहले राजस्थान की लगभग समस्त रियासतों को युद्ध में सहायता के लिए पत्र लिखता हैं, इसे पाती परवन कहते हैं।

- <u>खानवा के युद्ध में भाग लेने वाले अन्य राजा।</u>
- आमेर- पृथ्वीराज कछवाहा
- चन्देरी- मेदिनी राय
- बीकानेर- कल्याण मल (जैतसी का पुत्र)
- जोधपुर (मारवाड़)- मालदेव (गांगा का पुत्र)
- मेड़ता- वीरम देव
- सिरोही- अखैराज देवड़ा
- वागड़- उदयसिंह (डुंगरपुर-बाँसवाड़ा)
- मेवात- हसन खां मेवाती।
- इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी।
- युद्ध में सांगा की आंख में तीर लगने से उसे युद्ध मैदान से मालदेव बाहर ले गया। झाला अज्जा ने फिर युद्ध का नेतृत्व किया।
- युद्ध में बाबर की की जीत हो गयी।
- घायल सांगा को बसवा (दौसा) लाया गया।
- सांगा को युद्धरत / युद्ध उन्मुक्त देखकर ईरीच- (M.P.) में साथी सरदारो द्वारा जहर देकर मार दिया गया। कालपी नामक स्थान पर सांगा की मृत्यु हो गई। (समाधि - माडंलगढ़)
- सांगा को 'सैनिकों का भग्नावशेष' तथा 'हिन्दूपत' कहते हैं।

(10) <u>राणा विक्रमादित्य 1531-1536 ई.</u>
- इनकी मां रानी कर्मावती इनकी सरंक्षिका थी।
- इनके समय 1533 ई. में गुजरात के राजा बहादुरशाह ने आक्रमण किया। फिर संधि में रणथम्भौर का किला मेवाड़ वालों ने बहादुरशाह को दे दिया।
- 1534 ई. में फिर बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया इसके बाद रानी कर्मावती ने हुमायुं के पास राखी भेजकर सहायता को गुहार की।
- इस समय मेवाड़ का दूसरा साका हुआ।
- देवलिया के 'बाघसिंह' के नेतृत्व में केसरिया किया गया। रानी कर्मावती ने जौहर किया।
- 'उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज' के दासी पुत्र बनवीर को मेवाड़ का शासन भार दिया गया
- बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।
- बनवीर उदयसिंह को मारने के लिए गया पर पन्ना धाय ने अपने बेटे चन्दन की बलि देकर उदयसिंह को बचा लिया।

(11) <u>उदयसिंह 1537-1572 ई.।</u>
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ जाती हैं। कुम्भलगढ़ का किलेदार आशा देवपुरा इन्हें शरण देता हैं।
- अखेराज सौन्दरा ने अपनी बेटी जयवंता बाई की शादी उदयसिंह के साथ की।
- जोधपुर के राजा मालदेव के समर्थन से बनवीर को हराकर 1540 ई. में मावली के युद्ध में बनवीर को हराकर उदयसिंह महाराणा बनता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

- 1559 ई. में उदयसिंह 'उदयपुर' की स्थापना करता हैं। इसी समय उदयसागर झील का निर्माण करता हैं।
- 1567-68 ई. में अकबर का चित्तौड़ पर आक्रमण।
- उदयसिंह चित्तौड़ के किले की चाबी 'जयमल' (मेड़ता का राजा) को सौंपकर स्वंय 'गिरवा की पहाड़ियों' में चला गया।
- जयमल एवं फता के नेतृत्व में साका किया गया।
- जयमल जख्मी होने के कारण 'कल्ला राठौड़' के कंधे पर बैठकर लड़े थे।
- इसलिए कल्ला राठौड़ को चार हाथों के लोक देवता के रूप में पूजा जाता हैं।
- अकबर इन दोनों की वीरता से प्रभावित होकर इन दोनों की गजारूढ़ मूर्तियां आगरा के किले पर लगवाता हैं।
- बीकानेर में जूनागढ किले के बाहर भी इनकी मूर्तियां लगी हुई हैं।
- यह चित्तौड़ का तीसरा साका था।
- इस युद्ध के बाद उदयसिंह अपनी राजधानी गोगुन्दा बनाता हैं।
- गोगुन्दा में ही उदयसिंह की छतरी बनी हुयी हैं।

(12) **<u>महाराणा प्रताप</u>** <u>1572-1597 ई.।</u>
- जन्म - 9 मई 1540 ई. में (कुम्भलगढ़)
- माता - जयवेता बाई
- पत्नी अजमादे कंवर
- बचपन का नाम - कीका (छोटा बच्चा)
- उदयसिंह ने प्रताप के छोटे भाई जगमाल को राजा बनाया लेकिन मेवाड़ के सामंतों ने प्रताप को राजा घोषित कर दिया। गोगुन्दा में राजतिलक किया गया।
- कुम्भलगढ़ के किले में दुबारा राजतिलक किया गया।
- प्रताप को समझाने के लिए अकबर द्वारा भेजे गये दूत- 1. जलाल खां कोरची 2. मानसिंह 3. भगवंतदास 4. टोडरमल
- **<u>हल्दीघाटी का युद्धः</u>** 18 जून 1576 ई में।
- प्रताप V/s अकबर
- अकबर के सेनापति मानसिंह व आसफ खा थे।
- मिहतर खां नामक सैनिक ने अकबर के आने की झूठी सूचना दी।
- चेतक के घायल होने के कारण प्रताप युद्ध के मैदान से बाहर चला गया। झाला बीदा (मान) युद्ध का नेतृत्व करता हैं।
- प्रताप की तरफ से हाकिम खां सूर तथा पूंजा भील लड़े थे।
- चेतक की छतरी बलीचा में हैं।
- इस युद्ध को इतिहासकारों द्वारा दिए गए विभिन्न नाम- 1. अबुल फजल- खमनौर का युद्ध 2. बदांयूनी- गोगुन्दा का युद्ध (इस युद्ध में खुद आया था) 3. जेम्स टॉड- मेवाड़ की थर्मोपोली 4. आदर्शीलाल श्रीवास्तव- बादशाह बाग का युद्ध।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद भामाशाह व उसके भाई ताराचंद ने प्रताप की आर्थिक सहायता की। (चूलिया नामक ग्राम में)
- **कुम्भलगढ़ का युद्धः**- (1577,78,79ई.)
- अकबर के सेनापति शाहबाज खां ने कुम्भलगढ़ पर तीन बार आक्रमण किया। उसने कुम्भलगढ़ पर अधिकार कर लिया लेकिन प्रताप को पकड़ नही सका।

More PDF Install App - DevEduNotes

- **दिवेर का युद्ध** :-(1582ई.)
- प्रताप ने अकबर के सेनापति सुल्तान खान को मारकर युद्ध जीत लिया। जेम्स टॉड ने इस युद्ध को मेवाड़ का मेराथन कहा हैं।

- 1585 ई. में अकबर ने जगन्नाथ कच्छवाहा को प्रताप के विरूद्ध भेजा। यह अकबर का प्रताप के खिलाफ अन्तिम अभियान था।
- प्रताप ने चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया। यहां पर चामुण्डा माता का मन्दिर बनवाया। यहां से मेवाड़ की चित्रकला प्रारम्भ हुई।
- चावण्ड में प्रताप की मृत्यु हुई। (19 जनवरी 1597ई.)। बांडोली में प्रताप की आठ खम्भों की छतरी हैं।

<u>(13) अमरसिंह 1597-1620 ई.।</u>
- 5 फरवरी 1615 ई. - मुगल+मेवाड़ संधि (जंहागीर के काल में)
- हरिदास झाला व शुभकरण दोनों मेवाड़ की तरफ से संधि का प्रस्ताव लेकर गए।
- शर्तें:- मुगल दरबार में युवराज कर्णसिंह जायेगा।
- कर्णसिंह को पांच हजार का मनसबदार बनाया गया।
- चित्तौड़ के किले की मरम्मत नहीं की जायेगी।
- मेवाड़ से वैवाहिक सम्बन्ध नहीं बनाया जायेगा।
- महाराणा अमरसिंह ने इस बात से दु:खी होकर शासन प्रबन्ध कर्णसिंह को सौंप दिया। वह स्वयं 'नौ चौकी' नामक राजस्थान पर जाकर रहने लगा।

(14) <u>कर्णसिंह 1620-1628 ई. तक</u>
- उदयपुर में जगमंदिर महलों का निर्माण शुरू करवाया।
- शाहजहां विद्रोह के दौरान जगमंदिर में शरण लेता हैं।
- उदयपुर में महल बनाए:- दिलखुश महल व कर्ण विलास महल

<u>(15) जगतसिंह प्रथम 1628-1652 ई.।</u>
- जगमंदिर महलों का निर्माण पूरा करवाया।
- उदयपुर में जगदीश (जगन्नाथ मंदिर) का निर्माण करवाया। इसे सपने से बना मंदिर कहते हैं।
- इस मंदिर पर जगन्नाथ राय प्रशस्ति (कृष्ण भट्ट ने) लिखी हुयी हैं।
- 1631 ई. में शाहजंहा ने सुजानसिंह को मेवाड़ से अलग शाहपुरा (भीलवाड़ा) रियासत दे दी।
- जगदीश मंदिर के पास वाला धाय का मंदिर महाराणा की धाय नौजूबाई द्वारा बनवाया गया।

(16) <u>राजसिंह 1652-1680 ई. तक</u>
- उत्तराधिकार संघर्ष में औरंगजेब का समर्थन किया।
- जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह को औरंगजेब के खिलाफ समर्थन देता हैं। इसे राठौड़ - सिसोदिया गठबन्धन कहते हैं।
- औरंगजेब के जजिया कर का विरोध किया था
- रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारूमती से महाराणा राजसिंह ने औरंगजेब की इच्छा के विरूद्ध विवाह किया।
- इस विवाह से पूर्व हुए युद्ध में सलूम्बर का रावत रतनसिंह चूण्डावत अपनी पत्नी हाड़ी रानी सहलकंवर से निशानी

More PDF Install App - DevEduNotes

मांगता हैं।

- हाडी रानी सहलकंवर निशानी के तौर पर अपना सिर काट कर देती हैं।

''चूंडावत मांगी सेनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी''

- **राजसिंह के निर्माण कार्य:-**
- 1. श्रीनाथ मंदिर- सिहाड़ (नाथद्वारा) 2. द्वारिकाधीश मंदिर- कांकरोली 3. अम्बामाता मंदिर- उदयपुर 4. राजसमंद झील- 1662 से 1676 के दौरान अकाल राहत कार्यो में निर्माण किया गया।
- **राजसिंह के दरबारी विद्वान:-**
- 1. रणछोड़ भट्ट तैलंग- (1) राजप्रशस्ति- राजसमंद झील के पास पच्चीस पत्थरों पर लिखी गई। भारत का सबसे बड़ा संस्कृत शिलालेख। (2) अमर काव्य वंशावली।
- 2. किशोरदास- राजप्रकाश।
- 3. सदाशिव भट्ट- राज रत्नाकर।
- **राजसिंह की उपाधियाँ:-**
- 1. विजयकटकातु 2. हाइड्रोलिक रूलर

(17) <u>अमरसिंह द्वितीय 1698-1710 ई.</u>।

- 1708 ई. में देबारी समझौता। - मेवाड राणा अमरसिंह द्वितीय + आमेर के राजा सवाई जयसिंह + मारवाड़ राजा अजीतसिंह। मुगल बादशाह बहादुरशाह प्रथम के खिलाफ।
- अमरसिंह की बेटी चन्द्रकंवर की शादी सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर की गयी कि चन्द्रकंवर का बेटा ही आमेर (जयपुर) का अगला राजा बनेगा।

(18) <u>संग्रामसिंह द्वितीय - 1710-1734 ई.</u>।

- इसने उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- हुरड़ा सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की।
- सीसरमा गांव में वैद्यनाथ का विशाल मंदिर बनवाया एवं वैद्यनाथ मंदिर की प्रशस्ति लिखवाई गई। रूप भट्ट ने लिखी।

(19) <u>जगतसिंह द्वितीय 1734-51 ई.</u> ।

- जगत विलास महल (पिछोला झील में)
- 17 जुलाई 1734 ई में हुरड़ा सम्मेलन बुलाया गया।
- उद्देश्य - मराठों के खिलाफ सभी राजपूत रियासतों को एक करना।
- वर्षा ऋतु समाप्त होते ही 'रामपुरा' में मराठों के खिलाफ युद्ध किया जाएगा।
- जयपुर - सवाई जयसिंह
- जोधपुर - अभयसिंह
- कोटा - दुर्जनसाल
- बीकानेर - जोरावरसिंह
- करौली - गोपालसिंह
- किशनगढ़ - राजसिंह
- बूंदी - दलेलसिंह
- नागौर - बख्तसिंह
- अध्यक्षता - जगतसिंह द्वितीय ने की।
- सवाई जयसिंह को अध्यक्ष नहीं बनाया गया इसी वजह से उनके नाराज होने पर हुरड़ा सम्मेलन असफल रहा।

More PDF Install App - DevEduNotes

- दरबारी नेकराम 'जगतविलास' नामक पुस्तक लिखी।

(20) भीमसिंह 1778-1828 ई.।

- **कृष्णा कुमारी विवादः-**
- मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी की सगाई मारवाड़ के राजा भीमसिंह के साथ हुई।
- संयोगवश शादी से पहले ही मारवाड़ राजा भीमसिंह की मृत्यु हो गयी।
- अतः कृष्णा कुमारी की सगाई जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ कर दी गयी।
- मारवाड़ महाराजा मानसिंह ने इस बात पर आपत्ति जताई।
- 1807ई. गिंगोली का युद्ध नागौर में परबतसर के पास। जयपुर V/s जोधपुर
- इस विवाद को समाप्त करने के लिए अजीतसिंह चूण्डावत व अमीर खां पिंडारी (टोंक) के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर देकर मार दिया गया।
- 1818 ई. में भीमसिंह ने अंग्रेजों के साथ सहायक संधि कर ली।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

मारवाड़ के राठौडो का इतिहास

- मारवाड़ के राठौडो को दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट या कन्नौज के राठौड़ो का वंशज बताया जाता हैं।

(1) राव सीहा:-
- पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए राव सीहा बदायूं से 1240 ई. में खेड़ा (बालोतरा) आता हैं। और अपनी राजधानी बनाता हैं।
- राव सीहा को - 'राजस्थान के राठौड़ो का आदिपुरूष' कहा जाता हैं।
- 1273 ई. में गायों की रक्षा करते हुये राव सीहा पाली के बीठू गांव में मारा जाता हैं।
- बीठू गांव में राव सीहा का स्मारक बना हुआ हैं।

(2) राव धूहड़:- यह कर्नाटक से कुल देवी 'नागणेची' की मूर्ति लेकर आता हैं।
- इसे बाड़मेर गांव के नागाणा गांव में स्थापित किया गया हैं।
- इनके छोटे भाई का नाम 'धांधल' था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे।

(3) रावल मल्लीनाथ:-
- राजस्थान के प्रसिद्ध लोकदेवता
- इन्होनें अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी।
- मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।
- भाई - 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

(4) चूण्डा:-
- 'इन्दा' (प्रतिहार) शासको ने चूण्डा को दहेज के रूप में मण्डौर दिया। मंडोर को राजधानी बनाया।

(5) राव जोधा 1438-1489 ई.।
- 1459 ई. में जोधपुर शहर की स्थापना करता हैं।
- चिड़िया टूंक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ किला बनवाता हैं।
- मेहरानगढ़ किले की नींव 'करणीमाता' ने रखी थी।
- जोधा के 5 वें पुत्र बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

(6) मालदेव 1531-1564 ई.।
- अपने पिता गांगा की हत्या करके शासक बना। इसलिए इसे पितृहंता शासक कहते हैं।
- जिस समय मालदेव का राजतिलक हुआ। तब उसके पास जोधपुर व पाली (सोजत) दो ही परगने थे।
- कालातंर में मालदेव ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत 52 युद्धों के द्वारा 58 परगने जीते थे।

पाहेबा का युद्ध 1541ई. में।
- मालदेव V/s जैतसी (बीकानेर)
- मालदेव इस युद्ध को जीतता हैं व जैतसी लड़ते हुए मारा जाता हैं।
- जैतसी का बेटा कल्याणमल शेरशाह सूरी के पास चला जाता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

- मालदेव ने वीरमदेव से मेड़ता छीन लिया।
- वीरमदेव भी शेरशाह सूरी से जाकर मिल जाता हैं।

मालदेव-हुमायूँ सम्बन्ध:-

- शेरशाह से हारने के बाद हुमायूं जब फलौदी (जोधपुर) में था, तब उसने मालदेव के पास अपने दूत भेजे-
    - रायमल सोनी
    - अतका खां
    - मीर समेद
- मालदेव ने भी सकारात्मक उत्तर दिया व हुमायूं का बीकानेर परगना देने का वादा किया।
- हुमायूं अविश्वास की वजह से जोधपुर न आकर सिंध की तरफ चला गया।

गिरी सुमेल का युद्ध (जनवरी 1544 ई.)

- इसे जैतारण का युद्ध भी कहते हैं।
- मालदेव V/s शेरशाह सूरी।
- अविश्वास की वजह से मालदेव पीछे हट जाता हैं।
- मालदेव की सेना के दो सेनानायक जैता व कूंपा शेरशाह के खिलाफ लड़ाई करते हैं।
- शेरशाह मुश्किल से इस युद्ध को जीत पाता हैं। अत: शेरशाह के मुह से बरबस ही निकल गया- मुठी भर बाजरे के खातिर मैं हिन्दुस्तान की सल्तनत खो देता। शेरशाह ने जलाल खां जलवानी की आरक्षित टुकडी की सहायता से युद्ध जीता था।
- शेरशाह आगे बढ़कर जोधपुर पर अधिकार कर लेता हैं। खवास खां को जोधपुर सौंप दिया था।
- मालदेव सिवाणा (बाड़मेर) चला गया।
- सिवाणा को 'राठौड़ो की शरणस्थली' कहते हैं। शेरशाह के जाते ही मालदेव ने जोधपुर पर पुन: अधिकार कर लेता हैं।

- मालदेव की रानी उमा दे को 'रूठी रानी' कहा जाता हैं।
- ये जैसलमेर के लूणकरण की बेटी थी।
- इन्होनें अपना कुछ समय तारागढ़ किला (अजमेर) व अंतिम समय मेवाड़ के केलवा गांव में बिताया।
- 'अबुल फजल' अकबरनामा में मालदेव की तारीफ बताता हैं।
- बदायूनी - मालदेव को 'भारत का महान् पुरूषार्थी राजकुमार' बताता हैं।
- <u>मालदेव की उपाधियाँ</u>:- (1) हिन्दू बादशाह 2. हशमत वाला राजा
- **दरबारी विद्वान:-**
- 1. ईसरदास- (1) हाला झाला री कुडंलिया (सूर सतसई) (2) देवीयाण (3) हरिरस
- 2. आशानन्द- (1) बाघा भारमली रा दूहा (2) उमादे भटियाणी रा कवित।

<u>(7)चन्द्रसेन:-</u>

- मालदेव ने अपने बड़े बेटे को राजा न बनाकर अपने छोटे बेटे चन्द्रसेन को राजा बनाया। अत: इसके बड़े भाई राम व उदयसिंह अकबर के पास चले गये। अकबर ने जोधपुर पर आक्रमण किया। अत: चन्द्रसेन भाद्राजूण चला गया।

- <u>1570 ई. में का अकबर का नागौर दरबार</u>

1. जैसलमेर - हरराज
2. बीकानेर - कल्याणमल
3. चन्द्रसेन - का बड़ा भाई उदयसिंह (जोधपुर)

(ऊपर के तीनों) —— अकबर की अधीनता स्वीकार की।

Springboard Academy

More PDF Install App - DevEduNotes

- चन्द्रसेन भी इस नागौर दरबार में गया था।
- चन्द्रसेन स्थिति को अनुकूल न देखकर यहां से भाद्रा जूण चला जाता हैं।
- अकबर भाद्राजूण पर आक्रमणकर देता हैं। चन्द्रसेन सिवाणा (बाड़मेर) चला जाता हैं।
- भटकते हुए राव चन्द्रसेन की पाली (सोजत) के पास सारण (सिंचियाई गांव) की पहाड़ियों में मृत्यु हो गयी।
- चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का भूला - बीसरा शासक' कहते हैं।
- चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का प्रताप' कहते हैं।
- इसे 'प्रताप का अग्रगामी' कहते हैं।
- महाराणा प्रताप की राजतिलक में चन्द्रसेन भी उपस्थित था।
- अकबर ने 1572 ई. में बीकानेर के रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त कर दिया।

<u>(8) मोटा राजा उदयसिंह:-</u>

- अपनी बेटी ' मानी बाई' की शादी जहांगीर के साथ कर दी गयी। इसे इतिहास में 'जोधाबाई' कहा जाता है।
- इसे 'जगत गोसाई' भी कहते हैं।
- मानी बाई का बेटा 'खुर्रम' (शाहजहां) था।
- इस प्रकार मोटा राजा उदयसिंह जोधपुर का पहला राजा, जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। और उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए।

<u>कल्ला रायमलोत</u>

- यह मोटा राजा उदयसिंह के छोटे भाई रायमल का बेटा था।
- इन्होनें सिवाणा का दूसरा साका किया। (अकबर के खिलाफ युद्ध)
- कल्ला रायमलोत ने अपनी मृत्यु से पहले ही ' पृथ्वीराज राठौड़' (बीकानेर) से अपने 'मरसिये' लिखवा लिए।
- **मरसिये**:- किसी वीर के युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते हुए मारे जाने पर कवि द्वारा उसकी वीरता पर लिखे जाने वाले दोहे।

(9) <u>जसवंतसिंह 1638-1678 ई.</u>

- **अमरसिंह**- जसवंतसिंह का बड़ा भाई, ये नागौर का राजा था।

<u>मतीरे की राड़ (लड़ाई)</u>:- (1644ई.)

- बीकानेर राजा कर्णसिंह V/s नागौर का अमरसिंह
- अमरसिंह शाहजहां के दरबार में उसके मीर बख्शी (सेनापति) सलावत खां की हत्या कर देता हैं।
- अमरसिंह राठौड़ को 'कटार का धणी' कहते हैं।
- अमरसिंह की 16 खम्भों की छतरी 'नागौर' के किले में बनी हैं।
- आज भी राजस्थान के 'ख्याल व रम्मतों' में अमरसिंह को याद किया जाता हैं।
- शाहजहां के पुत्रों के उत्तराधिकारी संघर्ष में जसवंतसिंह ने दारा का पक्ष लिया।
- शाहजहां ने जसवंतसिंह को 'महाराजा' की उपाधि दी।
- धरमत का युद्ध:- दारा V/s औरगंजेब
- इस युद्ध में दारा की सेना का सेनापति जसवर्तसिंह था।
- दूसरे सेनापति कासिम खां से अनबन होने पर जसवर्तसिंह युद्ध के बीच में जोधपुर वापस आ जाता हैं।
- धरमत के युद्ध में हारकर वापस आने पर जसवर्तसिंह की रानी जसवतं दे हाड़ी ने किले के दरवाजे बंद कर दिये।
- औरगंजब ने जसवंतसिंह राठौड़ को अफगानिस्तान भेज दिया। (काबुल का गर्वनर बनाकर)
- वहीं पर 'जमरूद' का थाना नामक स्थान पर 1678 ई. में जसवर्तसिंह की मृत्यु हो जाती हैं।
- औरगंजेब ने इसकी मृत्यु पर कहा- 'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।' (धर्म का विरोध करने वाला)

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

- जसवंतसिंह की मृत्यु के 1 साल बाद ही औरगंजेब 1679 ई. में 'जजिया कर' लगाता हैं।
- जसवंतसिंह के बेटे पृथ्वीसिंह ने शेर के साथ लड़ाई की। औरगंजेब ने इसे विषैली पोशाक देकर मरवा दिया।
- जब जसवंतसिंह की मृत्यु हुयी तब उनकी दोनों रानियाँ गर्भवती थी।
- औरगंजेब ने आगरा में इन्हें रूपसिंह राठौड़ की हवेली में नजरबंद कर दिया।
- कालान्तर में इनसे अजीतसिंह व दलथम्बन नाम पुत्र होते हैं।
- **पुस्तकें** - 1. अपरोक्ष सिद्धान्त सार 2. प्रबोध चन्द्रोदय 3. आनन्द विलास 4. भाषा भूषण
- **दरबारी विद्वान:-**
- 1. मुहणौत नैणसी:- (1) 'नैणसी री ख्यात' (पुस्तक)
- इसमें जोधपुर के राजाओं की वशांवली लिखी गयी हैं।
- पहली बार क्रमबद्ध इतिहास लेखन।
- (2) मारवाड़ रा परगना री विगत- जनगणना का उल्लेख।
- इसे मारवाड़ का गजेटियर कहतें कहते हैं।
- मुंशी देवी प्रसाद ने मुहणौत नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा हैं।

(10) अजीतसिंह 1679-1724 ई.।

- औरगंजेब ने 36 लाख रूपये के बदले अमरसिंह के पोते इन्द्रसिंह को राजा बना दिया।
- दुर्गादास राठौड़ दोनों रानियों व राजकुमारों को लेकर वहां से निकल जाता हैं।
- अजीतसिंह को बचाने के लिए एक गौरा नाम महिला ने सहायता की थी।
- 'गौरा' को 'मारवाड़ की पन्नाधाय' कहते हैं।
- मारवाड़ के राष्ट्रगीत 'धूसों' में गौरा का नाम लिया जाता हैं।
- गौरा की छतरी जोधपुर में बनी हैं।
- सिरोही जिले के कालिन्द्री गांव में अजीतसिंह को जयदेव पुरोहित के घर में मुकुन्ददास खिची की देखरेख में रखा जाता हैं।
- दुर्गादास औरंगजेब के बेटे अकबर से विद्रोह करवा देता हैं।
- ओरंगजेब ने दुर्गादास व अकबर में फूट डलवा दी।
- अकबर के बेटा - बुलन्द अख्तर
- बेटी सफीयतुन्निसा दोनों दुर्गादास के पास रह जाते हैं,
- दुर्गादास इनकी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध करता हैं। तथा कालान्तर में ईश्वरदास नागर के कहने पर औरंगजेब को सौंप देता हैं।
- अैरंगजेब की मृत्यु के बाद 'बहादुरशाह' अजीतसिंह को जोधपुर का राजा बना देता हैं।
- अजीतसिंह मुगल बादशाह फर्रूखसियर से अपनी बेटी इन्द्रकंवर की शादी करता हैं।
- यह अंतिम राजकुमारी (राजपूत) थी, जिसकी किसी मुगल बादशाह से शादी हुई।
- 23 जून 1724 को अजीतसिंह के बेटे 'बख्तसिंह' ने अजीतसिंह की हत्या कर दी।
- अजीतसिंह की मृत्यु पर उनकी चिंता में जानवरो ने स्वेच्छा से अपनी जान दे दी।

More PDF Install App - DevEduNotes

दुर्गादास राठौड़:-

- पिता का नाम - आसकरण
- जन्म स्थान - सालवा
- जागीर - लुणेवा गांव।
- अजीतसिंह ने शासक बनने के बाद दुर्गादास को देश निकाला दे दिया था।
- दुर्गादास यहां से मेवाड़ महाराणा 'अमरसिंह द्वितीय' के यहां चला गया।
- अमरसिंह ने इसे 'रामपुरा' व विजयपुर की जागीरें दी।
- यहां से दुर्गादास उज्जैन चला जाता हैं।
- उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे दुर्गादास की छतरी बनी हुयी हैं।
- दुर्गादास को 'मारवाड़ का अणबिन्धिया मोती' तथा 'राजपूताने का गेरीबाल्डी' कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड इसे 'राठौड़ो का यूलीसेज' (उद्वारक) कहते हैं।

(11) अभयसिंह 1724-1749 ई.।

- खेजड़ली की घटना:- विक्रमी संवत 1787 ई. को भाद्रपद शुक्ल दशमी को खेजड़ली नामक गांव में अमृतादेवी नामक विश्नोई महिला अपने पति रामोजी व अपनी तीन बेटियों के साथ वृक्षों को बचाने के लिए शहिद हो गयी।
- इसमें कुल 363 लोगों ने अपना बलिदान दिया था। इसलिए आज भी भाद्रपद शुक्ल दशमी को हम शहीद दिवस के रूप में मानते हैं।
- इसी दिन विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला लगता हैं।
- अमृतादेवी के नाम पर सामाजिक वानिकी के क्षेत्र के लिए पुरस्कार दिया जाता हैं। (वन्य व वन्य जीव)

- दरबारी विद्वान - 1. करणीदान - सूरज प्रकाश (बिड़द सिणगार)
  2. वीरभाण - राजरूपक।
- इन दोनों पुस्तकों में अभयसिंह व अहमदाबाद के सूबेदार 'सर बुलदं खान' के बीच युद्ध का वर्णन हैं।

(12) मानसिंह 1803-1843 ई. तक

- जालौर घेरे के समय 'देवनाथ' द्वारा मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की।
- मानसिंह ने राजा बनते ही देवनाथ को अपना गुरू बनाया।
- नाथें के सबसे बड़े मंदिर 'महामंदिर' का निर्माण करवाया।
- 'नाथचरित्र' नामक पुस्तक लिखी।
- 1805 ई. में जोधपुर के किले में एक पुस्तकालय बनवाते हैं, जिसे 'मानपुस्तक प्रकाश' कहते हैं।
- 1807 ई. में 'गिंगोली का युद्ध' होता हैं।
- 1818 ई. में अंग्रेजी से संधि कर लेता हैं।
- इसके दरबार में कवि बांकीदास था।
- मानसिंह ने इन्हें 'कविराज' की उपाधि दी।
- पुस्तक:- 1. बांकीदास री ख्यात 2. कुकवि बत्तीसी 3. दातार बावनी
  4. मान जसो मंडन
- बांकीदास ने अग्रेंजो का साथ देने वाले राजाओं की निन्दा की।

More PDF Install App - DevEduNotes

बीकानेर के राठौड़ो का इतिहास

- बीका:- 1465ई. में बीकानेर क्षेत्र में राठौड़ राज्य की स्थापना की।
- 1488 ई. में बीकानेर नगर की स्थापना की।
- आखातीज (अक्षय तृतीया) बीकानेर का स्थापना दिवस हैं।
- आखातीज को बीकानेर में पतंगे उडाई जाती हैं।

* लूणकरण
- जैसलमेर के रावल जैतसी को हराया।
- बीठू सूजा ने इसे 'कलयुग का कर्ण' कहा हैं।

* जैतसी
- 1534 ई. में हुमायूं का भाई कामरान भटनेर पर अधिकार कर लेता हैं।
- कामरान बीकानेर पर भी आक्रमण करता हैं, पर रावल जैतसी उसे रातीघाटी के युद्ध में हरा देता हैं। इस युद्ध की जानकारी हमें 'बीठू सुजा' की पुस्तक 'राव जैतसी रो छन्द' से मिलती हैं।

* रायसिंह
- रायसिंह (1574-1612 ई.) (अकबर के समय चार हजारी मनसबदार जहांगीर के समय 5000)
- 1572 ई. में अकबर इसे जोधपुर का प्रशासक नियुक्त करता हैं। और महाराजा की उपाधि देता हैं।
- 1577 ई. में अकबर ने इकावन (51) परगने रायसिंह को दिये।
- खुसरों के विद्रोह के समय जहांगीर रायसिंह को राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौंप के जाता हैं।
- 1589-1594 ई. के बीच बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया। बीकानेर के जूनागढ़ में सूरजपोल के पास रायसिंह प्रशस्ति लिखी हुयी हैं, जिसकी रचना 'जइता' नामक जैनमुनि ने लिखी थी।
- जूनागढ़ का निर्माण कर्मचन्द की देखरेख में हुआ।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को 'राजपूताने का कर्ण' कहा।
- रायसिंह ने 'रायसिंह महोत्सव' नामक पुस्तक लिखी।
- श्रीपति की 'ज्योतिष रत्नमाला' पर 'बाल बोधिनी' नाम से रायसिंह ने टीका लिखी।
- 'जयसोम' रायसिंह के दरबार में था जिसने- कर्मचन्दवंशोत्कीर्णकंकाव्यम् नामक पुस्तक लिखी।
- रायसिंह के छोटे भाई का नाम पृथ्वीराज राठौड़ था, जो अकबर के नवरत्नों में से एक हैं। अकबर ने इसे गागरोन का किला दिया था।
- राठौड़ की प्रमुख रचनाएं:-

(1) वेलिक्रिसण रूक्मणि री: दुरसा अढ़ा ने इसे 5 वां वेद और 19 वां पुराण कहा हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इस रचना में 'दस सहस्त्र घोड़ो का बल' बताया हैं।
- यह पुस्तक उत्तरी राजस्थानी में लिखी गई हैं।
- L.P. टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को 'डिंगल का होरेस' कहा हैं।

* कर्णसिंह
- उपाधि:- जागंलधर बादशाह
- कर्णसिंह ने अन्य कुछ साहित्यकारों के साथ मिलकर 'साहित्य कल्पद्रुम' की रचना की।
- 'गगांधर मैथिल' कर्णसिंह का एक दरबारी था, उसने निम्न पुस्तक लिखी-

(1) कर्णभूषण (2) काव्य डाकिनी

More PDF Install App - DevEduNotes

* अनूपसिंह

- औरंगजेब ने इनके दक्षिण अभियानों से खुश होकर ' माही भरातिव' की उपाधि दी।
- संस्कृत के दूर्लभ ग्रन्थों का ' अनूप पुस्तकालय' में संकलन किया।
- कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन किया।
- हिन्दू देवी-देवताओं की विभिन्न मूर्तियों को एकत्रित कर उन्हें जूनागढ़ के 33 करोड़ देवी - देवताओं के मंदिर में रखवाया।
- विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया।
  (1) सुककारिका (2) बेताल पचीसी
- (सुककारिका फारसी में अनूवादित संस्कृत की पहली पुस्तक थी)
- गीता का राजस्थानी में अनुवाद आनन्दराम ने किया।
- अनूपसिंह की पुस्तकें- 1. अनूप विवेक 2. काम प्रबोध 3. श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि 4. अनूपोदय- गीत गोविन्द पर लिखी टीका
- 'भाव भट्ट' अनूपसिंह के दरबार में था, उसके द्वारा रचित पुस्तके:-
  1. संगीत अनूप अंकुश 2. अनूप संगीत रत्नाकार 3. अनूप संगीत विलास

* सूरतसिंह

- 1805 ई. में भटनेर पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। चूंकि उस दिन मंगलावार था, इसीलिये भटनेर का नाम हनुमानगढ़ कर दियां
- 1814 ई. में चुरू को अपने अधिकार में ले लाता हैं। इस समय चुरू का शासक ठाकुर स्योजी (शिव जी) सिंह था। इसी युद्ध के समय चुरू के किले से चांदी के गोले चलाये गये।
- 1818 ई. में सूरतसिंह ने अंग्रेंजो से सन्धि कर ली।

* रतनसिंह

- 1836 ई. में गया (बिहार) में अपने सभी सरदारों से कन्यावध नहीं करने शपथ दिलायी।
- दयालदास सिढ़ायच- 'बीकानेर रा राठौडा री ख्यात' इसमें राव बीका से लेकर महाराजा सरदारसिंह का वर्णन हैं। यह राजस्थान की अन्तिम ख्यात हैं।

* महाराजा गंगासिंह

- 1899 ई. में चीन के बॉक्सर विद्रोह में अग्रेंजो की मदद की। इसलिए अंग्रेजो ने 'केसर ए हिन्द' पदक दिया।
- 1913 ई. में 'प्रजा प्रतिनिधि सभा' की स्थापना की।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में सर्वाधिक आर्थिक सहायता महाराजा गंगासिंह ने दी थी। इसलिए B.H.U. के आजीवन कुलपति रहे।
- पेरिस शांति सम्मेलन (I world war के बाद) में महाराजा गंगासिंह ने भाग लिया (एकमात्र राजा जो रियासतों की तरफ से गया था)
- 1921 ई. में स्थापित नरेन्द्र मंडल के पहले अध्यक्ष थे।
- 1927 ई. में अपनी रियासत में गंगनहर का निर्माण करवाया। गंग नहर का उद्‌घाटन लॉर्ड इरविन ने किया।
- इसीलिए गंगासिंह को 'राजस्थान' का भागीरथ कहते हैं।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाला राजस्थान का एकमात्र राजा था।
- महाराजा गंगासिंह की ऊँटों की सेना को 'गंगा रिसाला' कहते थे।
- बीकानेर रियासत के रामदेवरा, गोगामेड़ी तथा देशनोक के मंदिरों को वर्तमान स्वरूप दिया।
- इसने अपने सिक्को पर 'विक्टोरिया इम्प्रेस' लिखवाया।
- आजादी के समय बीकानेर का शासक सार्दुलसिंह था।
- भारत में विलय की घोषणा करने वाला पहला रियासती शासक सार्दुलसिंह था।

More PDF Install App - DevEduNotes

<u>चौहानों का इतिहास</u>

- चौहानों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मतः

(1) चन्दबरदाई, सूर्यमल्ल मीसण व मुहणौत नैणसी :- के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ के अग्नि कुंड से हुयी।

- चौहान, चालुक्य (सौलंकी), प्रतिहार, और परमार इन चारों जातियों की उत्पत्ति अग्नि कुंड से मानी जाती हैं।

(2) जेम्स टॉड, विलियम क्रुक :- के अनुसार चौहान विदेशी हैं।

(3) 1170 ई. के बिजौलिया भीलवाड़ा (शिलालेख) के अनुसार चौहानों की उत्पति वत्स गौत्रीय ब्राह्मणों से हुयी।

- बिजौलिया शिलालेख, बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर में लगा हुआ हैं। इस पर अंकित बिजौलिया प्रशस्ति की रचना गुणभद्र ने की थी।
- राजस्थान के विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम भी इससे प्राप्त होते हैं।

(4) दशरथ शर्मा- चन्द्रवंशी।

(5) गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा- सूर्यवंशी।

* <u>चौहानों का मूल निवास स्थान</u>:-
- सपादलक्ष क्षेत्र (सांभर के आस-पास का क्षेत्र)
- इनकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।
- चौहानों की कुल देवी - आशापुरा माता

<u>(1) वासुदेव</u>:-
- 551 ई. में चौहान राज्य की स्थापना की।
- वासुदेव को चौहानों का आदिपुरूष कहत हैं।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार इसने सांभर झील का निर्माण करवाया।

<u>(2) गूवक</u>:-
- चौहान प्रारम्भ में प्रतिहारों के सामन्त थे, गूवक ने प्रतिहार शासक नागभट् द्वितीय की अधीनता मानने को अस्वीकार कर दिया। तथा इस प्रकार गूवक ने एक पूर्ण स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

<u>(3) चन्दराज</u>
- पत्नी का नाम - रूद्राणी (आत्मप्रभा)- यौगिक क्रिया में निपुण महिला।
- रूद्राणी प्रतिदिन पुष्कर झील में 1000 दीप जलाकर भगवान शिव की पूजा करती थी।

<u>(4) अजयराज</u>
- 1113 ई. में अजमेर नगर की (पृथ्वीराज विजय के अनुसार) स्थापना करता हैं।
- अजमेर का किला बनवाया।
- अपनी रानी सोमलेखा के नाम के सिक्के चलाये।

<u>(5) अर्णोराज</u>
- अर्णोराज ने अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया।
- पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।

<u>(6) विग्रहराज चतुर्थ(1153-1163ई.)</u>
- इसके शासनकाल को सपादलक्ष के चौहानों का स्वर्णकाल कहते हैं।
- इन्होनें तोमरों से ढ़िल्लिका (दिल्ली) छीन ली। इसने दिल्ली-शिवालिक स्तम्भ लगवाया।
- इसमें अजमेर में 'सरस्वती कंठाभरण नामक' संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया। अपने नाटक हरिकेली की पंक्तियां इस पाठशाला की दीवारों पर खुदवायी। कालान्तर में कुतुबद्दीन ऐबक ने इस पाठशाला को

More PDF Install App - DevEduNotes

तोड़कर एक मस्जिद बनवा दी, जिसे हम अढ़ाई दिन का झोपड़ा के नाम से जानते हैं।

उपाधियां - बीसलदेव, कवि बान्धव,

- बीसलपर नगर व बीसलपुर तालाब का निर्माण करवाया। तालाब के किनारे एक भगवान शिव का मंदिर बनवाया।
- दरबारी सोमदेव ने ललित विग्रहराज नामक पुस्तक लिखी।
- नरपति नाल्ह ने 'बीसलदेव रासो' नामक पुस्तक लिखी। यह गौड़वाड़ी बोली में लिखी गई रचना हैं। यह बोली पाली की बाली तहसील से लेकर जालौर की आहोर तहसील के मध्य क्षेत्रों में बोली जाती हैं।

<u>(7) पृथ्वीराज तृतीय</u> <u>(1177-1192 ई.)</u>

- पिता का नाम ' सोमेश्वर
- माता का नाम - कर्पूरी देवी (दिल्ली के शासक अनगंपाल तोमर की पुत्री)
- प्रारम्भ में माता कर्पूरी देवी उसकी संरक्षिका बनी, क्यों पृथ्वीराज तृतीय बाल्यावस्था में शासक बने थे।
- अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह का दमन करता हैं।
- भंडानको को हराता हैं।
- 1182 ई. में तुमुल के युद्ध में महोबा के चन्देल शासक परमार्दिदेव को हराता हैं।
- इस युद्ध में परमार्दिदेव चन्देल के दो सेनानायक आल्हा व ऊदल लड़ते हुए मारे गये थे, जो आज भी वहां के लोकगीतों में गाये जाते हैं।
- 1187 ई. में चालुक्य शासक भीन द्वितीय पर आक्रमण करता हैं।
- पर दोनों के बीच संधि हो जाती हैं।

<u>चौहान (पृथ्वीराज) - गहड़वाल (जयचन्द) वैमनस्य:</u>

- दिल्ली के उत्तराधिका के प्रश्न तथा संयोगिता के अपहरण के कारण दोनों में मनमुटाव था।

<u>**- तराइन का प्रथम युद्ध :-** 1191 ई.</u>

- पृथ्वीराज चौहान V/s मोहम्मद गौरी
- तात्कालिक कारण: मोहम्मद गौरी द्वारा तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार
- इसमें पृथ्वीराज का सेनापति चामुण्डराय था।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान जीतता हैं।

- <u>**तराइन का द्वितीय युद्ध:-** 1192 ई.</u>

- इस युद्ध में सेनापति चामुण्डराय भाग नहीं लेता हैं।
- पृथ्वीराज इस युद्ध में हार जाता हैं। सिरसा (हरियाणा) के पास बंदी बनाकर मार दिया जाता हैं।
- पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली के पास पिथौरागढ़ का निर्माण करवाया।
- उपाधि- 1. 'राय पिथौरा' 2. दल पुंगल (विश्व विजेता)
- दरबारी (पृथ्वीराज के दरबार में।) 1. चन्दबरदायी (वास्तविक नाम पृथ्वीराज भट्ट)- 'पृथ्वीराज रासौ' 2. जयानक- 'पृथ्वीराज विजय' 3. विद्यापति गौड़ 4. जनार्द्धन 5. वागीश्वर
- पृथ्वीराज चौहान ने एक कला व संस्कृति मंत्रालय की स्थापना की तथा इसका मंत्री पद्मनाभ को बनाया।
- कैमास व भुवनमल्ल इसके प्रमुख मंत्री थे।
- मोइनुद्दीन चिश्ती इसी के समय भारत आये थे।
- तराइन के दोनों युद्धो का विस्तृत विवरण कवि चन्द्र बरदाई के पृथ्वीराज रासौ, हसन निजामी के ताजुल
- मासिर एवं मिन्हास उस् सिराज के 'तबकात - ए - नासिरी' में मिलता हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास

- पृथ्वीराज चौहान के बेटे गोविन्दराज ने 1194 ई. में रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना की।

- हम्मीर (1282-1301 ई.)

- हम्मीर ने कोटि यज्ञ का आयोजन करवाया। इस यज्ञ का पुरोहित विश्वरूपम् थे।
- जलालुद्दीन खिलजी के रणथम्भौर आक्रमण को हम्मीर विफल कर देता हैं। इस विफलता के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि- 'ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता' हूँ।
- गुजरात आक्रमण के दौरान अलाउद्दीन की सेना में विद्रोह हो जाता हैं।
- विद्रोही मंगोल नेता मुहम्मद शाह तथा केहब्रू हम्मीर के पास चले जाते हैं।
- उलुग खान व नुसरत खान (अलाउद्दीन के सेनापति) ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया। नुसरत खान मारा गया। तब अलाउदीन एक बड़ी सेना लेकर खुद रणथम्भौर पर घेरा डालता हैं। रणमल व रतिपाल नामक दो विश्वासघातियों की वजह से हम्मीर को किले के फाटक खोलने पड़े, रणथम्भौर के किले में पहला साका हुआ।
- हम्मीर की पत्नी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- हम्मीर की पुत्री 'देवल दे' इस जौहर से एक दिन पूर्व रणथम्भौर किले के पद्‌म तालाब में कूदकर आत्महत्या कर लेती हैं। (जल जौहर)
- रणथम्भौर का साका 1301 ई. में हुआ था। यह राजस्थान का पहला शाका था।
- हम्मीर ने अपने जीवनकाल में 17 युद्ध लड़े थे जिनमें से 16 में वो विजयी रहा।
- अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षीय शासनकाल की याद में रणथम्भौर के किले में 32 खम्भो की छतरी बनवायी।
- बीजादित्य नामक विद्वान हम्मीर के दरबार में रहता था।
- हम्मीर को हठ व शरण देने वालों के रूप में याद किया जाता हैं।
  ''सिंह गमन, सत्पुरूष वचन, कदली फलै इक बार। तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार''

जालौर के चौहानों का इतिहास

- ऋषि जावालि की तपोभूमि होने के कारण इसे जाबालिपुर कहते थे, जो कालान्तर में जालौर हो गया।
- जाल वृक्षो की अधिकता होने के कारण इसे जालौर कहा गया।
- जालौर का किला सोनगिरि (सुवर्णगिरी) नामक पहाड़ियों पर स्थित होने के कारण यहां के शासक सोनगरा चौहान कहलाए।

Note- स्वर्णगिरी का किला / सोनार का किला - जैसलमेर

- 1182 ई. में कीर्तिपाल ने जालौर में चौहानों की सोनगरा शाखा की स्थापना की।
- इसने चित्तौड़ के सामंतसिंह को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

कान्हड़देव सोनगरा

- 1308 ई. में अलाउदीन 'जालौर की कुंजी' सिवाणा पर आक्रमण करता हैं। 'सातल व सोम' (कान्हड़देव के भतीजे) के नेतृत्व में सिवाणा में साका किया गया। यह सिवाणा का पहला साका था।
- 'भायल सैनिक' ने विश्वासघात किया था।
- अलाउदीन सिवाणा का नाम 'खैराबाद' कर देता हैं।
- 1311 ई. में अलाउदीन जालौर पर आक्रमण कर देता हैं। अलाउदीन का सेनापति कमालुदीन गुर्ग होता हैं।
- 'बीका दहिया' नामक आदमी ने किले का रास्ता बताकर विश्वासघात किया। जब इस विश्वासघात की सूचना बीका दहिया की पत्नी को मिली, तब उसने अपने विश्वासघाती पति को मार दिया।
- कान्हड़देव व वीरमदेव के नेतृत्व में साका किया गया।

More PDF Install App DevEduNotes

- अलाउदीन ने जालौर पर अधिकार कर लिया और जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- जालौर में अलाउदीन ने 'अलाई मस्जिद' का निर्माण करवाया।
- अलाउदीन की पुत्री 'फिरोजा' वीरमदेव (कान्हड़देव का पुत्र) से प्यार करती थी।
- फिरोजा की धाय माँ 'गुल विहिश्त' थी।
- 1311 ई. युद्ध की जानकारी पद्मनाभ द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कान्हड़दे प्रबन्ध' तथा 'वीरमदेव सोनगरा री बात' में मिलता हैं।

सिरोही के देवड़ा चौहानों का इतिहास

- लुम्बा ने 1311 ई. में आबू व चन्द्रावती को जीतकर चौहानों के देवड़ा शाखा की स्थापना की।
- चन्द्रावती को अपनी राजधानी बनायी।
- सहसमल ने 1425 ई. में सिरोही की स्थापना कर सिरोही को अपनी राजधानी बना ली।

अखैराज देवड़ा
- खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से भाग लेता हैं।
- इसे उड़ना अखैराज के नाम से जानते हैं।

सुरताण देवड़ा
- अकबर के खिलाफ दत्ताणी का युद्ध किया (1583ई.)। प्रताप के छोटे भाई जगमाल ने अकबर की तरफ से भाग लिया था।
- दुरसा आढ़ा ने राव सुरताण रा कवित नामक पुस्तक लिखी।

शिवसिंह
- 1823 ई. में अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता हैं।
- अंग्रेजों के साथ संधि करने वाली सिरोही अंतिम रियासत थी।

बूंदी के हाड़ा चौहानों का इतिहास

- बूंदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था। बून्दा मीणा के नाम पर ही इसका नाम बूंदी पड़ता हैं।
- कुम्भा के 'रणकपुर अभिलेख' में बूंदी का नाम वृन्दावती भी मिलता हैं।
- 1241 ई. में देवा हाड़ा ने जैता मीणा को हराकर बूंदी पर अधिकार कर लिया।
- 1274 ई. में जैत्रसिंह ने कोटा को जीत लेता हैं।
- 1354 ई. में बरसिंह ने बूंदी के तारागढ़ किले का निर्माण करवाया।
- तारागढ़ का किला भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।

रावसुरजन
- 1569 ई. में अकबर की अधीनता स्वीकार कर देता हैं।
- द्वारिका में 'रणछोड़ जी का' मंदिर बनवाता हैं।
- चन्द्रशेखर- (1) हम्मीर हठ (2) सुरजन चरित्र

* बुद्धसिंह
- इसने 'नेहतरंग' नामक पुस्तक लिखी।
- इसके शासन काल में सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप होता हैं। इसके पुत्र दलेलसिंह व उम्मेदसिंह के बीच उत्तराधिकार संघर्ष हुआ जिसमें सवाई जयसिंह ने दलेलसिंह का तथा मराठों ने उम्मदेसिंह का पक्ष लिया।
- जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की बहन अमर कंवर की शादी बुद्धसिंह के साथ हुयी। अमरकंवर ने मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर को उम्मदेसिंह के पक्ष में बुलाया

More PDF Install App - DevEduNotes

विष्णुसिंह

- इसने 1818ई. में अंग्रेजों से संधि कर ली।

कोटा के हाड़ा चौहानों का इतिहास

- 1631 ई. में बुंदी के राजा राव रत्नसिंह के पुत्र माधोसिंह ने कोटा राज्य की स्थापना की।

* मुकुन्दसिंह

- धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने कोटा में अबली मीणी का महल बनाया।

* भीमसिंह

- इसने फर्रूखसियर के कहने पर बूंदी पर अधिकार कर लिया। बुंदी का नाम फर्रूखाबाद कर दिया।
- खींचियों (चौहानों की एक शाखा) से गागरोन छीन लिया।
- भगवान श्रीकृष्ण के भक्त होने के कारण कोटा का नाम नन्दग्राम कर दियां
- बांरा में 'सावंरिया जी का मंदिर' बनवाया।

* उम्मेदसिंह

- इसने अंग्रेजो से संधि कर ली।
- संधि की मुख्य शर्ते:-

1. उम्मेदसिंह व उसके वंशजो का कोटा पर अधिकार बना रहेगा।
2. जालिमसिंह झाला व उसके वशंज पूर्ण अधिकार सम्पन्न दीवान बने रहेंगे। (पूरक संधि)

झालावाड़ राज्य का इतिहास

- 1837 ई. में 'जालिमसिंह झाला' के पोते मदनसिंह ने झालावाड़ में एक झाला राज्य की स्थापना की। 1838 ई. में अंग्रेजों ने इसे मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार झालावाड़ राजस्थान की सबसे अंतिम रियासत थी। इसकी राजधानी झालरापाटन थी। झालरापाटन चन्द्रभागा नदी के किनारे हैं इसे घंटियों का शहर कहा जाता हैं।
- यहां के राजराणा राजेन्द्रसिंह ने झालावाड़ के मंदिरों को हरिजनों के लिए खुलवा दिया था।

आमेर के कछवाहों का इतिहास

- भगवान राम के छोटे बेटे कुश के वंशज कुशवाहा कहलाए, जा कालान्तर में कछवाहा हो गया।
- नरवर से 'दुल्हराय' दौसा आता हैं, व दौसा में बडगुर्जरों को हराकर कछवाहा शासन की स्थापना करता हैं ये घटना 1137 ई. की है।
- कालान्तर में रामगढ़ में मीणाओं को हराकर इसे अपनी राजधानी बनाता हैं।
- यहां अपनी कुलदेवी जमवाय माता का मंदिर बनवाता हैं और इसका नाम जमवारामगढ़ रख दिया।
- दुल्हराय का वास्तविक नाम 'तेजकरण' था।

* काकिल देव

- 1207 में. मीणा शासकों को आमेर में हराकर वहां आमेर पर अधिकार कर लिया और राजधानी जमवारामगढ़ से आमेर ले आता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

* **भारमलः**

- 1562ई. में अकबर की अधीनता स्वीकार की तथा अपनी बेटी हरखा बाई (मरियम उज्जमानी) की शादी सांभर में अकबर के साथ की। मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला तथा वैवाहिक सम्बन्ध बनाने वाला राजस्थान का पहला राजा था।

* **भगवंतदास**

- सरनाल युद्ध में मिर्जा विद्रोह को दबाया अतः अकबर ने नगाड़ा व परचम देकर सम्मानित किया।
- अपनी बेटी मानबाई (शाहे बेगम) की शादी जहांगीर के साथ की। खुसरो इसी का बेटा था। मानबाई ने जहांगीर की शराब की आदतो से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी।

* **मानसिंह**

- 14 फरवरी 1590 को मानसिंह का राज्याभिषेक किया गया। मानसिंह को 5000 का मनसबदार बनाया। जो बाद में बढ़कर 7000 का हो गया।
- अकबर ने इसे बंगाल, बिहार व काबूल का सुबेदार बनाया।

<u>बिहार</u>

- बिहार में सूबेदारी के दौरान मानपुर नगर बसाता हैं।

<u>बंगाल</u>

- बंगाल में अकबरनगर नामक शहर बसाता हैं, जिसे वर्तमान में हम राजमहल कहते हैं।
- पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराकर शिला माता की मूर्ति लेकर आता हैं तथा इसने आमेर में शिला माता का मंदिर बनवाया।
- दरबारी विद्वान- 1. 'पुण्डरीक विट्ठल'
  1. रागमाला 2. राग मंजरी 3. राग चन्द्रोदय 4. नर्तन निर्णय
- मानसिंह ने आमेर के महलों का निर्माण शुरू करवाया।
- आमेर में जगत शिरोमणि मंदिर बनवाया, इस मंदिर का निर्माण मानसिंह की रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की याद में बनवाया।
- इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की वही मूर्ति लगी हुयी हैं, जिसकी मीरा चित्तौड़ में पूजा किया करती थी।
- वृदांवन में राधा-गोविन्द का मंदिर बनवाया।

* **मिर्जा राजा जयसिंह** (1621-1667 ई.)

- सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला जयपुर का राजा (46 वर्ष)
- जहांगीर ने इसे दक्षिण में मलिक अम्बर के खिलाफ भेजा था।
- शाहजहां ने इसे मिर्जा राजा की उपाधि दी व काबुल अभियान पर भेजा।
- जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह को भी औरंगजेब की तरफ यही लेकर आता हैं। औरंगजेब ने इसे दक्षिण में शिवाजी को नियंत्रित करने के लिए भेजा।
- 11 जून 1665 - पुरन्दर की संधि- शिवाजी V/s जयसिंह
- मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में हिन्दी के प्रख्यात कवि 'बिहारी जी' थे- पुस्तक- बिहारी सतसई
- 'कुलपति मिश्र' (बिहारी जी के भान्जे) इन्होनें लगभग 52 ग्रन्थों की रचना की थी, जिनसे हमे जयसिंह के दक्षिण अभियानों की जानकारी मिलती हैं।
- जयपुर में जयगढ़ किले का निर्माण करवाया।

* **सवाई जयसिंह** (1700-1743 ई.)

- सर्वाधिक सात मुगल बादशाहों के साथ काम किया।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में हुये उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होनें शहजादे आजम का पक्ष लिया था। चूंकि जीत मुअज्जम (बहादुरशाह) की हुयी, जो बादशाह बनते ही उसने सवाई जयसिंह आमेर के राजा पद से हटा दिया। इसके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बना दिया।
- आमेर का नाम बदलकर इस्लामाबाद या मोमिनाबाद रख दिया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- 1741 ई. में पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ धौलपुर समझौता करता हैं। जयसिंह 'मालवा' का 3 बार सूबेदार बना।
- जयसिंह ने अश्वमेध यज्ञ करवाया, इसका पुरोहित 'पुण्डरीक रत्नाकर' था।
- अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को दीपसिंह कुम्भाणी ने पकड़ लिया व अपने 25 आदमियों के साथ लड़ता हुआ मारा गया।
- <u>सवाई जयसिंह के निर्माण कार्य-</u>
- 1. 18 नवम्बर 1727 ई.- जयपुर की स्थापना- वास्तुकार- विद्याधर भट्टाचार्य (पुर्तगाली ज्योतिषी जेवियर डि सिल्वा की मदद ली गई।) 2. नाहरगढ़ (सुदर्शनगढ़) 3. जलमहल (मानसागर झील) 4. सिटी पैलेस (चन्द्र महल) 5. गोविन्ददेव जी का मंदिर (गौड़िय सम्प्रदाय का प्रमुख मंदिर)- जयपुर के शासक खुद को गोविन्द देव जी का दिवान मानते थे। 6. जन्तर-मन्तर (वैधशाला)- (1) दिल्ली- सबसे पहले (2) जयपुर - सबसे बड़ा- राजस्थान की पहली इमारत जिसे युनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया। (3) मथुरा (4) उज्जैन (5) बनारस।
- सवाई जयसिंह के दरबारी विद्वान :- (1) पुण्डरीक रत्नाकर- जयसिंह कल्पद्रुम (2) पण्डित जगन्नाथ- युक्लिड ज्यामिति का संस्कृत अनुवाद किया, सिद्धान्त सम्राट तथा सिद्धान्त कौस्तुभ नामक पुस्तकें लिखी।
- सवाई जयसिंह ने स्वयं 'जयसिंह कारिका' नामक ग्रन्थ लिखा।
- नक्षत्रों की शुद्ध सारणी 'जीज मुहम्मद शाही' तैयार करवाई।
- सवाई जयसिंह ने सती प्रथा पर रोक लगाने की कोशिश की।

<u>**ईश्वरीसिंह** 1743-1750 ई. तक।</u>

- राजमहल का युद्ध (1747ई.):- (बनास नदी के पास) (टोंक)

ईश्वरीसिंह V/s माधोसिंह

- (सूरजमल - भरतपुर महाराजा) | (जगतसिंह द्वितीय - मेवाड़)
(बूंदी नरेश - उम्मदेसिंह)
(कोटा राजा - दुरजनसाल)
(मराठे)

- इस युद्ध में ईश्वरीसिंह जीतता हैं। इस जीत के उपलक्ष्य में ईसरलाट (सरगासूली) का निर्माण करवाता हैं।
- बगरू का युद्ध(1748ई):- ईश्वरीसिंह V/s माधोसिंह
- इस युद्ध में ईश्वरीसिंह हार जाता हैं, उसे मराठों को युद्ध हर्जाना व माधोसिंह को पांच परगने देने पड़े।
- मराठों द्वारा युद्ध हर्जाने के लिए तंग करने पर ईश्वरीसिंह ने आत्महत्या कर ली।

* <u>माधोसिंह</u>

- 1751 ई. में मराठों (5000) का कत्ले आम करवाया जयपुर में।
- <u>काकोड़ का युद्ध (टोंक)</u> (1759ई.)
- माधोसिंह ने इस युद्ध में मराठों को हराया।
- <u>भटवाड़ा का युद्ध (कोटा)</u> (1761ई.)
- माधोसिंह V/s शत्रुशाल (कोटा)
- रणथम्भौर पर अधिकार के लिए प्रश्न पर।
- इस युद्ध में माधोसिंह की हार होती हैं।
- कोटा का सेनापति जालिमसिंह झाला था।
- 1763 ई. में माधोसिंह ने सवाई माधोपुर की स्थापना की।
- मोतीडूंगरी के महल बनवाए।
- चाकसू में शीतला माता का मंदिर बनवाया।

More PDF Install App - DevEduNotes

प्रतासिंह (1778-1803 ई.)

- 1. तुंगा का युद्ध (1787 ई.)
- जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर का विजयसिंह, दोनों मिलकर मराठों के महादजी सिन्धिया को हराते हैं।
- 2. पाटन का युद्ध (1790)
- इस युद्ध में मराठों ने प्रतापसिंह को पराजित किया। इस युद्ध में मराठा सेनापति, एक फ्रांसीसी 'डी-बोय' था।
- 3. मालपुरा का युद्ध 1800ई.।
- इस युद्ध में मराठों ने जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर के भीमसिंह की सयुंक्त सेना को हराया।
- प्रतापसिंह एक अच्छा लेखक था, 'बृजनिधि' नाम से कविताएं लिखा करता था।
- प्रतापसिंह ने एक संगीत सम्मेलन बुलवाया। जिसकी अध्यक्षता देवर्षि बृजपाल भट्ट ने की थी, जिसमें 'राधा गोविन्द संगीत सार' ग्रंथ लिखा गया।
- प्रतापसिंह के संगीत गुरू का नाम चांदखां था, प्रतापसिंह ने इसे 'बुद्ध प्रकाश' नामक उपाधि थी।
- चांद खां ने 'स्वर सागर' ग्रन्थ की रचना की।
- प्रतापसिंह के दरबार में 22 विद्वान रहते थे, जिन्हें गन्धर्व बाईसी या प्रताप बाईसी कहते थे। प्रतापसिंह ने विद्वानों के लिए 'गुणीजन खाना' की स्थापना की।
- प्रतापसिंह ने 'हवामहल' का निर्माण करवाया, यह एक पांच मंजिला इमारत हैं, जो भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट के समान हैं। इसमें 953 झरोखे हैं।
- पांच मंजिल - 1. शरदमंदिर 2. रत्न मंदिर 3. विचित्र मंदिर 4. प्रकाश मंदिर 5. हवा मंदिर
- हवा महल का वास्तुकार - लालचन्द

जगतसिंह (1803-1818 ई. तक)

- 1818ई. में अग्रेंजो के साथ संधि करता हैं।
- जगतसिंह की प्रेमिका का नाम 'रस कपूर' था। यह शासन कार्यो में हस्तक्षेप करती थी।

रामसिंह (1833-1880 ई. तक)

- 'जॉन लुडलो' को रामसिंह का संरक्षक व जयपुर का प्रशासक बनाया गया।
- जॉन लुडलों ने 1844 ई. में समाधि प्रथा व कन्या वध पर रोक लगायी।
- 1845 ई. सत्ती प्रथा पर रोक लगायी
- 1847 ई. मानव व्यापार पर रोक लगायी।
- रामसिंह ने जयपुर में गुलाबी रंग करवाया था।
- 'प्रिंस अल्बर्ट' के जयपुर आगमन पर 1876 ई. में अल्बर्ट हॉल की नींव रखी गयी, इसका वास्तुकार 'स्टीवन जैकब' था। इसी समय रामनिवास बाग बनवाया गया।
- कला के विकास के लिए 1857 ई. में 'मदरसा - ए - हुनरी' की स्थापना की। कालान्तर में इसका नाम बदलकर Rajasthan School of Arts and Crafts कर दिया गया।
- 1866 ई. में 'क्रान्तिचन्द मुखर्जी' ने एक महिला विद्यालय खोला, यह किसी भी रियासत में महिला-शिक्षा का पहला कदम था। यहां बालिकाओं को सिलाई सिखाई जाती थी।
- महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।

माधोसिंह द्वितीय

- इसे बब्बरशेर कहते हैं।
- मनमोहन मालवीय को B.H.U. के लिए 5 लाख रूपये दिये थे।
- नाहरगढ़ में अपनी नौ दासियों के लिए एक जैसे 9 महल बनवाये।
- 1904 ई. में सबसे पहले 'डाक टिकट व पोस्टकार्ड व्यवस्था' लागू की जो रियासतों में किया गया पहला

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

प्रयास था।
- सिटी पैलेस में मुबारक महल बनवाया।

अलवर राज्य का इतिहास

- यहां कछवाहा वंश की 'नरूका शाखा' का शासन था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याणसिंह को माचेड़ी की जागीर दी।
- 1774 ई. में बादशाह शाह आलम ने प्रतापसिंह को स्वतंत्र रियासत दे दी।
- 1775 ई. में प्रतापसिंह ने भरतपुर से अलवर को छीनकर इसे अपनी राजधानी बनाया।

विनयसिंह

- विनयसिंह ने अपनी माता 'मूसी महारानी' की याद में अलवर में 80 खम्भों की छतरी बनवायी। यह 2 मंजिला छतरी हैं, जिसकी दूसरी मंजिल पर रामायण व महाभारत के चित्र बनाए गए हैं
- विनयसिंह की रानी का नाम 'शीला' था। इसने अपनी रानी के नाम पर सिलीसेढ़ झील बनवायी।
- सिलीसेढ़ झील को 'राजस्थान का नन्दनकानन' कहते हैं।

जयसिंह

- नरेन्द्र मंडल का नामकरण 'जयसिंह' ने किया था।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- अलवर में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया।
- 'डयूक ऑफ एडिनबर्ग' के अलवर आगमन पर सरिस्का पैलेस का निर्माण करवाया।
- 10 दिसम्बर 1903 को बालविवाह व अनमेल विवाह पर रोक लगा दी।
- तिजारा दंगो के बाद जयसिंह को हटा दिया गया, जयसिंह पेरिस चला गया व वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

तेजसिंह

- आजादी के समय अलवर का शासक महात्मा गांधी की हत्या में इनकी संदिग्ध भूमिका थी, पर बाद में न्यायपालिका ने इन्हें क्लीन चिट दे दी।

जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

- भाटी भगवान श्रीकृष्ण के वंशज हैं।
- भाटी यदुवंशी होते हैं, इसलिए जैसलमेर के राजचिन्ह में 'छत्राला यादवपति' लिखा हुआ हैं।
- 285 ई. में भट्टी ने भटनेर को अपनी राजधानी बनाया। भट्टी को 'भाटियों का आदिपुरूष' या भाटी राज्य का संस्थापक कहा जाता हैं।
- भटनेर के कारण ही भाटियों को 'उत्तर भड़ किवाड' / उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा गया।

मंगलराव:

- राजधानी - तनोट ।

देवराज:

- देवराज ने पंवारो से लोद्रवा छीनकर, लोद्रवा को अपनी राजधानी बनाया।
- मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था तथा मूमल लोद्रवा की राजकुमारी थी।

More PDF Install App - DevEduNotes

जैसल

- 12 जुलाई 1155 ई. को जैसलमेर की स्थापना करता हैं। व इसे अपनी राधानी बनाता हैं।

मूलराज

- अलाउदीन खिलजी ने जैसलमेर पर आक्रमण किया इस समय जैसलमेर का पहला साका हुआ।
-

दुर्जनसाल:

- 1352 ई. में फिरोज तुगलक ने जैसलमेर पर आक्रमण किया। इस समय जैसलमेर का 'दुसरा साका' हुआ।

लूणकरण:-

- 1550 ई. में कंधार के अमीर अली ने आक्रमण किया। इस समय केसरिया तो किया गया लेकिन जौहर नहीं हो पाया। इसलिए इसे आधा साका कहा जाता हैं।

मूलराज द्वितीय

- इसने अंग्रेजों के साथ 1818ई. में संधि कर ली थी।

जवाहरसिंह

- आधुनिक जैसलमेर का निर्माता।
- जैसलमेर में डाक-तार व रेल व्यवस्था लागू की।
- जैसलमेर में 'विण्डम पुस्तकालय' बनवाया।
- इन्हीं के समय स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा को जेल में जिंदा जलाकर मार दिया गया। सागरमल गोपा की हत्या की जाँच के लिए गोपाल स्वरूप पाठक आयोग स्थापित किया गया।
- सागरमल गोपा की पुस्तकें:- 1. आजादी के दीवाने 2. जैसलमेर का गुडांराज 3. रघुनाथसिंह का मुकदमा

करौली का इतिहास (यादव वंश)

- करौली में यादवों की 'जादौन' शाखा थी।

विजयपाल

- 1040 ई. में बयाना को जीतकर इसे अपनी राजधानी बनाता हैं। और यादवों की जादौन शाखा का शासन प्रारम्भ करता हैं।

अर्जुनपाल:

- कल्याणपुर नामक नगर की स्थापना करता हैं।

धर्मपाल

- कल्याणपुर का नाम करौली रखकर उसे अपनी राजधानी बनाता हैं।

गोपालपाल:

- करौली में 'मदन मोहन जी का मंदिर' बनवाता हैं। यह गौड़ीय सम्प्रदाय की राजस्थान की दूसरी प्रमुख पीठ हैं।

हरबक्शपाल

- इसने अंग्रेजों के साथ 1817ई. में संधि कर ली।

मदनपाल

- 1857 ई. में क्रांति में कोटा महाराव की मदद की थी। अग्रेंजो ने 17 तोपो की सलामी दी।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती सबसे पहले (राजस्थान में) करौली मदनपाल जी के निमत्रंण पर आए थे।

More PDF Install App - DevEduNotes

भरतपुर के जाट वंश का इतिहास

- 1667 ई. में मथुरा क्षेत्र के आस-पास के जाट किसानों ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह कर दिया था। इस विद्रोह का नेतृत्व 'गोकुला' नामक जाट किसान ने किया था। गोकुला को पकड़कर उसकी हत्या कर दी।
- 1687 ई. में सिनसिनी का जमींदार राजाराम विद्रोह कर देता हैं। सिकन्दरा में अकबर के मकबरे को लूट लेता हैं, और अकबर की अस्थियों को निकालकर जला देता हैं। राजाराम के विद्रोह को भी दबा दिया जाता हैं।

चूड़ामण

- जाट राज्य की स्थापना की। थूण किले का निर्माण करवाया

बदनसिंह

- सवाई जयसिंह की सहायता से अपने भाई मोहकमसिंह को हराकर राजा बना। सवाई जयसिंह ने इसे डीग की जागीर तथा बृजराज की उपाधि दी। इसने डीग के किले का निर्माण करवाया।

सुरजमल: (1753-63)

- सूरजमल को 'जाटो का प्लेटों' और 'जाटों का अफलातून' कहते हैं।
- भरतपुर के किले का निर्माण करवाया व अपनी राजधानी बनाया।
- पानीपत के तीसरे युद्ध में भागते हुये मराठा सैनिकों को भरतपुर में शरण देता हैं।
- 1754 ई. में दिल्ली पर आक्रमण करता हैं, वहां से नूरजहां का झूला उठाकर लाता हैं। और इन झूलों को डीग के महलों में स्थापित करवाया।
- डीग में जलमहलों का निर्माण करवाया।
- सूरजमल एक आर्थिक विशेषज्ञ था, उसने भरतपुर की आर्थिक स्थिति सुधारने का अधिक प्रयास किया।
- उसकी मृत्यु के समय 1763 ई. में भरतपुर राज्य की आय 175 लाख रू. सालाना थी।
- सूरजमल ने भरतपुर में एक नवीन प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें पद का आधार योग्यता को बनाया गया।
- भरतपुर में दीवान को 'मुखत्यार' कहते थे।
- सूरजमल के दरबारी 'मगंलसिंह पुरोहित' रहें, जिन्होनें 'सुजान संवत विलास' नामक पुस्तक लिखी।

जवाहरसिंह

- 1774 ई. में दिल्ली पर आक्रमण करता हैं, व दिल्ली के किले से अष्ट धातुओं के बने दरवाजे लेकर आता हैं, इन्हें भरतपुर के किले में लगवाता हैं।
- ये दरवाजे मुल रूप से चित्तौड़ के किले में लगे हुये थे, जिन्हें अकबर चित्तौड़ अभियान के दौरान आगरा ले गया था, फिर औरंगजेब इन्हें आगरा से दिल्ली ले आता हैं।
- जवाहरसिंह इस जीत के उपलक्ष्य में भरतपुर के किले में जवाहर बुर्ज का निर्माण करवाता हैं, जवाहर बुर्ज में भरतपुर के राजओं का राज तिलक किया जाता हैं।

रणजीतसिंह

- 1803 ई. में दूसरे अंग्रेंज-मराठा युद्ध के दौरान 'जसवंत राव होल्कर' को भरतपुर में शरण देता हैं।
- अग्रेंज सेनापति लॉर्ड लेक भरतपुर पर पांच आक्रमण करता हैं। लेकिन जीत नहीं पाता हैं। इसलिए भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता हैं।
- कालान्तर में अग्रेंजो के साथ संधि कर ली।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

1857 की क्रांति

1832 ई. में A.G.G. (Agent to governer General) मुख्यालय 'अजमेर' में स्थापित किया गया।
- राजस्थान के पहले A.G.G. 'मि. लॉकेट' थे।
- 1845 ई. में इस मुख्यालय को 'आबू' स्थानान्तरित कर दिया गया।
- 1857 ई. की क्रांति के समय यहां A.G.G. (Geogre Patrick Laurence) था।
- Laurence इससे पहले मेवाड़ का 'Political Agent' रह चुका था।
- राजस्थान में अग्रेंजों की सैनिक छावनियां-
- नसीराबाद (अजमेर), नीमच (मध्यप्रदेश), एरिनपुरा (पाली) देवली (टोंक), खैरवाड़ा (उदयपुर), ब्यावर (अजमेर)।
- ब्यावर व खेरवाड़ा सैनिक छावनियों ने क्रांति में भाग नहीं लिया।

नसीराबाद:
- 28 मई 1857 ई. में राजस्थान में सबसे पहले नसीराबाद की छावनी में विद्रोह हुआ।
- 28 मई 1857 ई. को 15 वी. Netive Infantry के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- दो दिन बाद 30 वीं Native Infantry भी इनके साथ मिल गयी व सभी सैनिक दिल्ली की ओर कूच कर गए।

नीमच:
- मोहम्मद अली बेग नामक एक सैनिकों ने कर्नल एबॉट के सामने अंग्रेजी राज के प्रति वफादार रहने की कसम नहीं खायी।
- 3 जून 1857 को हीरासिंह नाम के एक सैनिक के नेतृत्व में छावनी में विद्रोह हो गया।
- नीमच छावनी से भागे 40 अग्रेंजों को डूंगला गांव में रूघाराम नामक किसान ने शरण दी।
- कैप्टन शावर्स इन्हें मुक्त करवाता हैं व उदयपुर महाराणा स्वरूपसिंह के पास भेज देता हैं।
- उदयपुर महाराणा ने इन्हें जगमंदिर महलों में रखा।
- यहां से विद्रोही सैनिक शाहपुरा आते हैं, शाहपुरा का राजा इन्हें सहायता करता हैं।
- शाहपुरा के राजा ने कैप्टन शावर्स का विरोध किया।
- यहां से सैनिक निम्बाहेड़ा आए। (उस समय टोंक के अधीन था।)
- निम्बाहेड़ा में इन्हें व्यापक जनसमर्थन मिलता हैं। निम्बाहेड़ा में देवली छावनी के सैनिक भी इनसे आकर जुड़ गये। यहां से सैनिक दिल्ली की ओर चले गये।

एरिनपुरा: 21 अगस्त 1857 ई.
- 1835 ई. में जोधपुर लीजियन का गठन किया गया। इसका प्रमुख मुख्यालय एरिनपुरा को बनाया गया।
- एरिनपुरा छावनी की पूर्विया सैनिकों की टुकड़ी को आबू भेजा हुआ था। वहीं पर उन्होंनें विद्रोह कर दिया और एरिनपुरा में आकर अपने बाकी साथियों के साथ मिल गए। छावनी को लूटकर 'चलों दिल्ली मारो फिरंगी' के नारे लगाते हुए दिल्ली की ओर चल पड़े।
- खैरवा (पाली) नामक स्थान पर इन्हें आउवा का ठाकुर कुशालसिंह चाम्पावत मिलता हैं, व विद्रोही सैनिकों को अपना नेतृत्व प्रदान करता हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

कुशालसिंह चम्पावत:

- बिठौड़ा गांव के उत्तराधिकारी प्रश्न को लेकर कुशालसिंह ने बिठौड़ा के ठाकुर कानजी की हत्या कर दी थी, हत्या करने से यह जोधपुर राज का विद्रोही हो गया।
- एरिनपुरा छावनी के सैनिकों के साथ जुड़ने से इसका यह विद्रोही अग्रेजों के विरूद्ध हो गया।

(1) बिठौड़ा का युद्ध - 8 सितम्बर 1857।

(2) चेलावास का युद्ध - 18 सितम्बर 1857।

(3) आउवा का युद्धः- 20 जनवरी 1858।

(1) बिठौड़ा का युद्ध

- कैप्टन हीथकोट + कुशलराज सिंघवी V/s कुशालसिंह
- कुशालसिंह जीत गया तथा जोधपुर का किलेदार ओनाड़सिंह पंवार मारा गया।
-

(2) चेलावास का युद्ध

- इस काले - गोरे का युद्ध भी कहते हैं।
- A.G.G. George Patirick Lawrence व जोधपुर का Political Agent मैकमेसन अंग्रेंजी सेना का नेतृत्व करते हैं। इस युद्ध में भी कुशालसिंह जीत गया।
- मैकमेसन के सिर को काटकर आउवा के किले पर लटका दिया गया।
-

(3) आउवा का युद्ध

- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व कर्नल होम्स व हंसराज जोशी कर रहे थे, जीत की आशा न देखकर कुशालसिंह आउवा का भार अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह (लाम्बिया का ठाकुर) को सौपंकर मेवाड़ चला गया।
- मेवाड़ में कोठरिया (नाथद्वारा) के रावत जोधसिंह के पास शरण लेता हैं और यहां से सलूम्बर के केसरी सिंह चूडांवत के पास चला जाता हैं।
- आउवा में विद्रोही सैनिक हार जाते हैं, और आउवा की ईष्ट देवी सुगाली माता की मूर्ति ले जाते हैं, इसे अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में रखा। बाद में पाली के बांगड़ म्यूजियम में रखा गया था। 2014ई. में राजस्थान धरोहर संरक्षण तथा प्रोन्नति प्राधिकरण ने निर्णय लिया हैं कि इस मूर्ति को आउवा गांव में स्थापित किया जायेगा।
- **कुशालसिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्तः-**
- आलणियावास- अजीतसिंह, गूलर- बिशनसिंह, आसोप- शिवनाथसिंह
- आउवा में हारने के बाद विद्रोही सैनिक शिवनाथसिंह के नेतृत्व में दिल्ली की ओर बढ़ते हैं। लेकिन नारनोल के पास गैर्राड़ की सेना से हार गये।
- 1860 ई. में कुशालसिंह नीमच में अग्रेंजों के सामने आत्मसर्पण कर देता हैं।
- 'टेलर कमीशन' की जांच के आधार पर कुशालसिंह को बरी कर दिया गया।

कोटा में जनविद्रोहः-

- कोटा में वकील 'जयदयाल' व ' रिसालदार मेहराब खां' के नेतृत्व में क्रांति की गयी। (15 अक्टूम्बर 1857)
- कोटा के पॉलिटिक्ल एजेन्ट बर्टन की हत्या कर दी गई।

More PDF Install App - DevEduNotes

- कोटा महाराव रामसिंह द्वितीय को नजरबंद कर लिया गया।
- मथुराधीश मंदिर के महन्त कन्हैयालाल गोस्वामी व कोटा महाराव के बीच एक समझौता हुआ, बर्टन की हत्या के लिए स्वंय को जिम्मेदार ठहराने वाले परवाने पर कोटा महाराव ने हस्ताक्षर किए, जयदयाल को कोटा का प्रशासक नियुक्त कर दिया गया।
- करौली का शासक मदनपाल सेना भेजकर कोटा महाराव को मुक्त करवाता हैं।
- इसके भी काफी दिनों बाद 'जनरल राबर्टस' कोटा को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाता हैं।
- अग्रेंजों ने मेजर बर्टन की हत्या के लिए कोटा महाराव को निरपराध किन्तु उत्तरदायी घोषित किया।
- कोटा महाराव की तोपों की सलामी 15 से घटाकर 11 कर दी गयी।

<u>टोंक में विद्रोह</u>

- टोंक का नवाब वजीरूद्दौला अंग्रेजों का समर्थक था। परन्तु नवाब के मामा मीर आलम ने विद्रोहीयों का साथ दिया।
- नीमच छावनी के सैनिकों का निम्बाहेड़ा में स्वागत किया गया विद्रोहियों का पीछा करती कर्नल जैक्सन की सेना का ताराचन्द पटेल ने सामना किया।
- टोंक में महिलाओं ने भी क्रांति में भाग लिया था।

<u>तात्यां टोपे और राजस्थान:-</u>

- तात्यां टोपे सबसे पहले मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) आया था। टोंक के नवाब के खिलाफ, नासीर मोहम्मद खां ने तात्यां टोपे का समर्थन किया।
- बनास नदी के निकट हुये कुआड़ा युद्ध में तात्यां टोपे हार जाता हैं व हाड़ौती की तरफ चला जाता हैं। यहां पर झालावाड़ का राजा पृथ्वीसिंह तात्यां टोपे के विरूद्ध सेना भेजता हैं। 'गोपाल पलटन' को छोड़कर बाकी सेना ने युद्ध करने से मना कर दिया।
- पलायता नामक स्थान पर हुये युद्ध में तात्यां टोपे जीत जाता हैं व पृथ्वीसिंह को भागना पड़ता हैं।
- थोड़े दिनों बाद अग्रेंजों की मदद से ही पृथ्वीसिंह झालावाड़ पर पुन: अधिकार कर पाता हैं।
- पृथ्वीसिंह ने तात्यां टोपे को 5 लाख रूपये भी दिए।
- सितम्बर 1857 ई. में तात्यां टोपे एक बार फिर बांसवाड़ा में आता हैं, सलूम्बर का रावत केसरीसिंह चूडांवत तात्यां टोपे की मदद करता हैं।
- बीकानेर के राजा सरदारसिंह ने भी तात्यां टोपे को 10 घुड़सवारों की सहायता दी।
- तात्यां टोपे को नरवर के जंगलों में (मानसिंह नरूका) ने गिरफ्तार करवा दिया। अग्रेंजों ने तात्यां टोपे को फांसी दे दी।
- सीकर के एक सामन्त को तात्यां टोपे को शरण देने के आरोप में फांसी दे गयी। सीकर में तात्यां टोपे की छतरी हैं।
- तात्यां टोपे जैसलमेर को छोड़कर राजस्थान की बाकी सब रियासतों में गया था।

- बीकानेर का महाराजा सरदारसिंह एकमात्र शासक था, जो अपनी रियासत से बाहर जाकर लड़ा था। (हिसार के 'बाड़लू' नामक स्थान पर)
- अग्रेजों ने सरदारसिंह को टिब्बी परगने के 41 गांव दिए थे।
- जयपुर के सवाई रामसिंह ने भी अग्रेंजो का साथ दिया था।
- अग्रेंजो के विरूद्ध षड्यंत्र करने वालों को गिरफ्तार कर लिया था। 1. सादुल्ला खां 2. विलायत खां 3. उस्मान खां

More PDF Install App - DevEduNotes

- अग्रेंजो ने रामसिंह को 'सितार ए हिन्द' की उपाधि दी व कोटपूतली परगना दिया।
- अलवर के राजा बनेसिंह के खिलाफ वहां के दीवान फैजल खान ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- धौलपुर के राजा भगवन्तसिंह को विद्रोहियों से मुक्त करवाने के लिए पटियाला से सेना आयी थी। यहां पर राव रामचन्द्र व हीरालाल के नेतृत्व में क्रांति हुई।
- भरतपुर के राजा ने Political Agent मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने का सुझाव दिया था। यहां की गुर्जर व मेव जनता विद्रोहियों के साथ हो गयी थी।
- बीकानेर के अमरचन्द बांठिया 1857 की क्रान्ति में राजस्थान के पहले ऐसे शहीद थे, जिन्हें फांसी दी गयी। ये ग्वालियर के नगरसेठ थे, इन्होनें खजाने का सारे धन क्रांतिकारियों में वितरित कर दिया। इन्हें क्रान्ति का भामाशाह कहा जाता हैं।
- सूर्यमल्ल मिश्रण व बांकिदास ने अग्रेंजों का साथ देने वाले राजाओं की निन्दा की।

राजस्थान के किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलनः

- बिजौलिया वर्तमान में भीलवाड़ा जिलें में स्थित हैं, तत्कालीन मेवाड़ रियातस का (अ) श्रेणी का ठिकाणा था।
- राणा सांगा ने अशोक पंवार को ऊपरमाल की जागीर दे दी। और इसका मुख्यालय बिजौलिया था। (खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से अशोक पंवार लड़ता हैं)
- बिजौलिया में 1897 ई. से किसान आंदोलन शुरू होता हैं। यह आंदोलन 'धाकड़' जाति के किसानों द्वारा किया गया।

इस आंदोलन के मुख्य कारणः-

- 84 प्रकार की लाग-बाग (कर)
- लाटा - कूंता व्यवस्था (खेत में खड़ी फसलों के अनुमान पर)
- चंवरी कर, तलवार बंधाई कर
- यह आंदोलन मुख्यतः 3 चरणों में विभक्त था।
- प्रथम चरण - 1897-1914।
- द्वितीय चरण - 1914-1923।
- तृतीय चरण - 1923-1941

प्रथम चरण (1897-1914 ई.)

- गिरधारी पुरा नामक एक गांव में एक मृत्युभोज के अवसर पर किसानों की सभा हुई, साधु सीताराम दास के कहने पर नानजी व ठाकरी पटेल को मेवाड़ महाराणा से मिलने भेजा गया।
- रियासत की तरफ से हामिद खां को ठिकाने की जांच करने के लिए भेजा गया।
- नानजी व ठाकरी पटेल को बिजौलिया ठाकुर ने बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।
- पहले चरण में इस आंदोलन में अधिक सफलता नहीं मिल पायी थी, अतः यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त चलता था।
- स्थानीय नेता- प्रेमचंद भील, ब्रह्मदेव, फतहकरण चारण।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

द्वितीय चरण (1914-1923 ई.)

- 1906 ई. में पृथ्वीसिंह बिजौलिया का नया जागीरदार बनता हैं। व्‌जा पर तलवार बंधाई नामक एक नया कर लगा देता हैं।

तलवार बंधाई- यह उत्तराधिकार शुल्क था जो नये सांमत द्वारा राजा को दिया जाता था। मेवाड़ में इसे तलवार बंधाई, कैदखालसा, नजराना तथा मारवाड़ में हुक्मनामा, पेशकशी कहा जाता था। जैसलमेर रियासत में सामंतों से यह कर नहीं लिया जाता था।

- विजयसिंह पथिक व माणिक्यलाल वर्मा दोनों आदोंलन से जुड़ें।
- 1917 ई. में विजयसिंह पथिक ने 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' की स्थापना की । मुन्ना पटेल को इसका अध्यक्ष बनाया।
- मेंवाड़ रियासत ने 1919ई. में 'बिनदुलाल भट्टाचार्य' की अध्यक्षता में आयोग गठित किया गया।
- A.G.G. हॉलैण्ड के प्रयासो से किसानों व रियासतों के बीच समझौता हो जाता हैं, तथा किसानों के 35 कर माफ कर दिये गये पर ठिकाने ने इस समझौते को लागू नहीं किया।

तृतीय चरण (1923-1941 ई.)

- तीसरे चरण मे विजयसिंह पथिक इस आदोंलन से अलग हो जाते हैं। जमनालाल बजाज को नेतृत्व सौंपा गया।
- जमनालाल बजाज ने हरिभाऊ उपाध्याय को आदोंलन के नियुक्त किया।
- मेवाड़ के प्रधानमंत्री राघवाचारी व राजस्व मंत्री मोहनसिंह मेहता के प्रयासों से किसानों के साथ समझौता हो गया और उनकी (किसानों) मांगे मान ली गयी।
- इस प्रकार 1941 ई. में यह आंदोलन समाप्त हो गया। इस प्रकार यह सर्वाधिक समय (44 वर्ष) तक चलने वाला यह अहिसंक आंदोलन था।
- गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर से प्रकाशित अपने समाचार पत्र 'प्रताप' में बिजौलिया किसान आंदोलन को प्रमुखता से महत्व देते हैं।
- माणिक्यलाल वर्मा अपने पंछीड़ा गीत के माध्यम से किसानों में जोश भरते थे।

बेंगू किसान आंदोलन

- बेंगू वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित हैं, यह भी मेवाड़ रियासत का (अ) श्रेणी का ठिकाणा था।
- यहां का ठाकुर 'अनुपसिंह चूडांवत' था। यहां के किसान भी विभिन्न लाग-वागों से परेशान थे। किसानों ने इन करों को कम करने की मांग की तो ठिकाणें व किसानों के बीच समझौता हो गया पर रियासत ने इस समझौते को अस्वीकार कर दिया व इसे 'बोल्शेविक समझौता' कहा गया।
- रियासत ने 'ट्रेन्च' को मामले की जांच करने के लिए भेजा।
- किसानों ने ट्रेन्च का बहिष्कार किया।
- गोविन्दपुरा गांव में सभा कर रहे किसानों पर ट्रेन्च ने 13 जुलाई 1923 को गोली चला दी, रूपा जी व कृपा जी धाकड़ नामक दो किसान शहीद हो गए।
- 1926 ई. में किसानों की शर्ते मान ली जाती हैं।
- विजयसिंह पथिक व रामनारायण चौधरी ने आदोंलन का नेतृत्व किया।

More PDF Install App - DevEduNotes

बूंदी किसान आदोंलन/ बरड़ किसान आदोंलन:

- 1920 ई. में साधु सीताराम दास ने डाबी किसान पचांयत की स्थापना की, जिसका अध्यक्ष 'हरला भड़क' को बनाया गया।
- 2 अपैल 1923 ई. को सभा कर रहे किसानों पर पुलिस अधिकारी 'इकराम हुसैन' ने गोली चला दी।
- 'नानक जी भील' झंडा गीत गाते हुए शदीद हो गए।
- मुख्य नेता पण्डित नयनूराम शर्मा, भँवरलाल सुनार, नारायणसिंह।
- इस आदोंलन में मुख्यत: गुर्जर किसानों ने भाग लिया।
- इस आदोंलन में महिलाओं ने भी भाग लिया था।

नीमूचणा किसान आंदोलन (अलवर)

- 14 मई 1925 ई. को को नीमूचणा में आंदोलन कर रहे किसानों पर कमाण्डर 'छाजूसिंह' ने गोली चला दी, कई किसान मारे गये।
- 'तरूण राजस्थान' समाचार पत्र ने इस खबर को सचित्र प्रकाशित किया।
- महात्मा गांधी ने इसे 'दोहरी ड़ायरशाही' की संज्ञा दी।
- दिल्ली से प्रकाशित रियासत समाचार पत्र ने इस हत्याकांड को जलियावाला से भी अधिक भयानक बताया।

शेखावाटी किसान आदोंलन:

- 1931ई.- जाट क्षेत्रीय महासभा का गठन।
- 1933ई.- महासभा का पहला अधिवेशन पलथाना (सीकर) में हुआ।
- कूदन हत्याकाण्ड (अप्रैल 1934)- कैप्टन वेब द्वारा की गयी फायरिंग में कई किसान मारे गये। इसकी चर्चा ब्रिटेन के हाऊस ऑफ कॉमन्स में हुई।
- कटराथल सम्मेलन (25 अप्रैल 1934)- सिहोट के सांमत द्वारा महिलाओं से किए गए दुर्व्यवहार के विरोध में 10,000 से अधिक महिलाओं का सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षा किशोरीदेवी तथा मुख्य वक्ता उत्तमादेवी थी।
- जयसिंहपुरा हत्याकांड (21 जून 1934)- प्रथम हत्याकांड जिसके हत्यारों को सजा सम्भव हो सकी।

भगत आंदोलन:

- वह आंदोलन मुख्यत: भील जनजाति के किसानों द्वारा किया गया था।
- सुरजी भगत व गोविन्द गिरी ने इसे शुरू किया था।
- गोविन्द गिरी ने 1883 ई. में 'सम्प सभा' की स्थापना की। गोविन्द गिरी दयानन्द सरस्वती से प्रभावित थे। अत: उन्होनें आदिवासियों को हिन्दू धर्म के दायरे में रखने के लिए भगतपंथ की स्थापना की।
- 17 नवम्बर 1913 ई. को मानगढ़ की पहाड़ी (बांसवाड़ा) पर जब भीलों की सभा हो रही थी, तब मेवाड़ भील कोर ने पहाड़ी को घेर लिया व गोली चला दी।
- 1500 से अधिक भील मारे गये। इसे राजस्थान का जलियावाला हत्याकांड कहा जाता हैं।
- आज भी उनकी याद में आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मेला लगता हैं।
- गोविन्द गिरी की फांसी की सजा को 20 वर्ष की कैद में बदला गया था। लेकिन 10 वर्ष बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। अपना शेष जीवन गुजरात के काम्बिया गांव में शांतिपूर्ण तरीके से गुजारा।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

एकी आंदोलन

- ये भोमट क्षेत्र के भील तथा गरासिया जनजाति लोगों द्वारा किया गया था, इसलिए भोमठ - भील आंदोलन भी कहते हैं।
- चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया नामक स्थान से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को यह आंदोलन शुरू हुआ था।
- मातृकुण्डिया को 'राजस्थान का हरिद्वार' कहते हैं।
- इस आंदोलन के मुख्य नेता मोलीलाल तेजावत थे।
- मोती लाल तेजावत मेवाड़ रियासत के 'झाड़ोल ठिकाणे' के कामदार थे। प्रारम्भ में यह आंदोलन झाडोल, कोटडा व गोगुन्दा तहसीलों में शुरू हुआ था। जो बाद में डुंगरपुर, बाँसवाड़ा, ईड़र, विजयनगर (गुजरात की एक रियासत) आदि रियासतों में फैल गया।
- मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा के समक्ष 21 सूत्री मांग-पत्र प्रस्तुत किया था, जिसे 'मेवाड़ की पुकार' कहते हैं।
- 7 मार्च 1922 ई. में नीमड़ा (विजयनगर) गांव में हो रही एक सभा पर पुलिस फायरिंग कर दी गयी थी,
- मोती लाल तेजावत इस आंदोलन के बाद भूमिगत हो गए, पर 1929 में गांधीजी के कहने पर ईडर पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।
- ईडर रियासत ने उन्हें मेवाड़ को सौंप दिया, मेवाड़ की सर्वोच्च न्यायिक संस्था 'महाइन्द्राज सभा' ने मोतीलाल तेजावत से रियासत के विरूद्ध कोई गतिविधि नहीं करने का लिखित आश्वासन मांगा।
- गांधीजी के सहायक मणिलाल कोठारी के हस्तक्षेप से समझौता हुआ।
- 1936 ई. में मोतीलाल तेजावत को रिहा कर दिया गया।

महाइन्द्राज सभा- मेवाड़ का सर्वोच्च न्यायालय जिसकी स्थापना 1880 ई. में महाराणा सज्जनसिंह द्वारा की गई।

मेवाड़ भील कोर- इसकी स्थापना 1841ई. में की गई। इसका मुख्य केन्द्र खैरवाड़ा (उदयपुर) था।

मीणा जाति का आंदोलन

- 19254 ई. में 'आपराधिक जाति अधिनियम' बनाकर मीणा जाति की उसके अन्तर्गत रख दिया गया। 1930 में 'जयरायम पेशा' कानून के तहत प्रत्येक मीणा स्त्री-पुरूष को थाने में हाजिरी लगवाना अनिवार्य कर दिया गया।
- 1933 में मीणा क्षेत्रीय महासभा की स्थापना की गयी। व महासभा ने इस कानून को निरस्त करने की मांग की।
- 1944 ई. में मुनि मगन सागर के नेतृत्व में सीकर के नीमकायाना में एक मीणा सम्मेलन बुलवाया गया और मीणा समाज को उनके गौरवशाली अतीत से अवगत करवाया गया।
- मुनि मगनसागर ने मीनपुराण नामक ग्रंथ की रचना की।
- बंशीधर शर्मा ने 1944 ई. में जयपुर मीणा सुधार समिति की स्थापना की।
- 28 अक्टूबर 1946 कों बागावास सम्मेलन में सभी चौकीदार मीणाओं ने अपने पदो से इस्तीफे दे दिये तथा इसे मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- आजादी के बाद 1952 में जरायम पेशा कानून को रद्द कर दिया गया।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

प्रजामण्डल आंदोलन

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना की गयी। (बम्बई में)
- विजयसिंह पथिक को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया।
- 1928 ई. में 'राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद' का गठन किया गया।
- 1931 ई. मे अजमेर में इसका पहला अधिवेशन हुआ। अध्यक्ष- रामनारायण चौधरी
- 1938 ई. के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में रियासतों (देशी) में चल रहे आंदोलनों को कांग्रेस ने समर्थन [illegible]

1. [illegible]

- [illegible]
- 1936 ई. जमना लाल बजाज ने इसका पुनर्गठन किया और चिरंजी लाल मिश्र को इसका अध्यक्ष बनाया।
- 17 सितम्बर 1942 ई. में जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल व जयपुर प्रजामंडल के नेता हीरालाल शास्त्री के बीच एक समझौता हुआ, जिसे 'जेन्टलमैन एग्रीमेन्ट' कहा गया।
- इसके तहत जयपुर प्रजामंडल ने यह कहा कि वह भारत छोडो आंदोलन में भाग नहीं लेगा।
  (मिर्जा इस्माइल- आधुनिक जयपुर का निर्माता)
- जयपुर प्रजामंडल के असतुंष्ट कार्यकर्त्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में एक आजाद मोर्चा का गठन किया व इस आजाद मोर्चा ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- आजाद मोर्चा के नेता- रामकरण जोशी, दौलतमल भंडारी, गुलाबचन्द कासलीवाल
- 1945ई. में नेहरूजी के कहने पर आजाद मोर्चा का प्रजामंडल में विलय हो गया।

2. **बूंदी प्रजामंडल**
- संस्थापक- कांतिलाल, ऋषिदत्त मेहता, नित्यानन्द।
- ऋषिदत्त मेहता ने 'बूंदी राज्य लोक परिषद' की स्थापना भी की थी।
- ऋषिदत्त मेहता ने 1923 में ब्यावर से 'राजस्थान' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र निकाला। इसमें हाड़ौती क्षेत्र की खबरें प्रकाशित होती थी।

3. **मारवाड़ प्रजामंडल**
- 1918 ई. में चांदमल सुराणा ने मारवाड हितकारिणी सभा की स्थापना की।
- 1920 ई. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ सेवा संघ' की स्थापना की। 1920-21 में मारवाड़ सेवा संघ ने तौल आंदोलन चलाया था। (100 तोले के स्थान पर 80 तोले का एक सेर कर दिया गया।)
- 1929 ई. में जयनारायण व्यास ने मारवाड़ राज्य लोक परिषद् की स्थापना की। 1931 में इसका अधिवेशन पुष्कर में हुआ इसकी अध्यक्षता चादकरण शारदा ने की। इस अधिकवेशन में काका कालेरकर व कस्तूरबा गांधी आए थे।
- 10 मई 1931 ई. में जयनारायण व्यास ने Marwar Youth league की स्थापना की।
- 1932 ई. में जोधपुर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। छगन राज चौपासनी वाला ने तिरंगा झंडा फहराया।
- 1934 ई. में भवंर लाल सर्राफ ने मारवाड़ प्रजामंडल की स्थापना की।
- 1936 ई. - कृष्णा दिवस (बॉम्बे)
  - शिक्षा दिवस (जोधपुर)
  - जयनारायण व्यास के जोधपुर प्रवेश पर पाबंदी।
- 1937 ई. में बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखकर जयनारायण व्यास के प्रवेश सम्बन्धी लगी पाबन्दी को हटाने की मांग की।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 19 जून 1942 को जेल में भूख हड़ताल कर रहे बालमुकुन्द बिस्सा की मृत्यु हो गयी, बालमुकुन्द बिस्सा ने जोधपुर में 'जवाहर खादी भण्डार' की स्थापना की।

बालकृष्ण कौल ने अजमेर में जेलों में कुव्यवस्था के विरूद्ध हड़ताल की थी।

- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयनारायण व्यास सिवाणा किले में नजरबंद किया गया। अन्य नेताओं को जालौर किले में नजरबंद किया गया।
- जयनारायण व्यास की पुस्तके:- 1. मारवाड़ की अवस्था 2. पोपा बाई की पोल
- समाचार पत्र 1. अखण्ड भारत 2. आंगीबाण 3. पीप

डाबडा कांड:- 13 मार्च 1947
- डीडवाना परगने के डाबडा गांव में एक किसान मोतीलाल के घर पर सभा हो रही थी, पुलिस ने फायरिंग कर दी। 12 लोग मारे गये।
- मथुरा दास माथुर घायल हो गये।

चण्डावल आदोंलन - (1942-45)

More PDF Install App - DevEduNotes

4.**बीकानेर प्रजामंडल :**

- कन्हैयालाल ढुंढ़ व स्वामी गोपालदास ने 1913 में चुरू में 'सर्वहितकारिणी सभा' की स्थापना करी।
- कन्हैयालाल ढुंढ़ ने 'कन्या विद्यालय' व कबीर पाठशाला (दलित शिक्षा) खोलीं।
- 1930 ई. में चुरू के धर्मस्तूप पर तिरंगा फहरा दिया।
- महाराजा गगांसिंह जब गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दर गए तब 'चन्दनमल बहड़ व स्वामी गोपालदास' ने बीकानेर दिग्-दर्शन नामक पत्रिकांए बंटवायी। इन पर 1932 ई. में बीकानेर षडयंत्र केस चलाया गया।

- 1936 ई. में वैद्य मघाराम ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना की।
- 1942 ई. में 'रघुवर दयाल गोयल' ने बीकानेर राज्य लोक परिषद की स्थापना की।
- 26 अक्टूम्बर 1944 को बीकानेर दमन विरोधी दिवस बनाया गया।
- 1 जुलाई 1946 को रायसिंह नगर में जुलूस निकाल रहे प्रजामंडल के कार्यक्रर्ताओं पर फायरिंग कर दी गयी। बीरबरसिंह नामक एक युवक मारा गया। 17 जुलाई 1946 को बीकानेर रियासत में बीरबल दिवस मनाया गया।
- इंदिरा गांधी नहर की जैसलमेर शाखा को 'बीरबल शाखा' नाम दिया गया।
- बीकानेर प्रजामंडल के तहत ही दुधवा-खारा (चूरू), महाजन (बीकानेर), उदासर (बीकानेर) आदि किसान आदोंलन चलाये गये।

5.**धौलपुर प्रजामंडल**

- संस्थापक- कृष्णदत्त पालीवाल (आर्य समाज के नेता श्रद्धानन्द सरस्वती के कहने पर)
- तसीमो काण्ड - अप्रैल 1947 में प्रजामंडल के सदस्यों पर फायरिंग की गयी। छतरसिंह व पचंमसिंह शहीद हो गए।
- डूगंरपुर प्रजामंडल (26 जनवरी 1944)
- स्थापना: मोगीलाल पांड्या व हरिदेव जोशी ने की।

6. **मेवाड़ प्रजामंडल**

- संस्थापक- बलवंतसिंह मेहता (अध्यक्ष), भूरेलाल बया (उपाध्यक्ष) माणिक्य लाल वर्मा (महामन्त्री)
- मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों पर रियासत ने पाबन्दी लगा दी। अत: माणिक्यलाल वर्मा ने अजमेर से इसका संचालन किया।
- 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तक माणिक्य लाल वर्मा ने लिखी।
- 1941 ई में मेवाड़ प्रजामंडल का पहला अधिवेशन उदयपुर में हुआ।
- माणिक्यलाल वर्मा इसके अध्यक्ष थे।
- जे. पी. कृपलानी व विजयलक्ष्मी पंडित इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए।
- 1946 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का सातवां अधिवेशन उदयपुर में हुआ। 'जवाहर लाल नेहरू' व 'शेख अब्दुल्ला' इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए।
- भारत छोड़ो आंदोलन में माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा अपने 6 महीने के पुत्र दीनबन्धु को साथ लेकर जेल गयी।
- प्यारे लाल बिश्नोई की पत्नी भगवती बिश्नोई भी जेल गयी थी।
- भीलवाड़ा भी मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधयों का प्रमुख केन्द्र था।
- भीलवाड़ा के रमेश चन्द्र व्यास मेवाड़ प्रजामंडल के पहले सत्याग्रही थे।
- नाथद्वारा भी मेवाड़ प्रजामंडल का अन्य केन्द्र था।

More PDF Install App - DevEduNotes

7. **<u>शाहपुरा प्रजामंडलः</u>**
- संस्थापक- लादूराम व्यास व रमेशचन्द्र ओझा। (माणिक्यलाल वर्मा के कहने पर)
- शाहपुरा पहली रियासत थी, जिसमें पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी (गोकुल लाल असावा के नेतृत्व में)
- शाहपुरा के राजा 'सुदर्शन देव' ने प्रजामंडल को अपना समर्थन दिया।

8. **<u>करौली प्रजामंडल</u>**
- संस्थापक- त्रिलोकचन्द माथुर, चिरंजी लाल शर्मा, कुंवर मदनसिंह।
- कुंवर मदनसिंह ने 1927ई. में किसान आदोंलन चलाया।

9.**<u>अलवर प्रजामंडल</u>**
- इसकी स्थापना हरिनारायण शर्मा ने की, इसके पहले अधिवेशन के अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा थे।
- अलवर प्रजामंडल ने भी भरत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था।
- हरिनारायण शर्मा ने वाल्मिकी संघ, आदिवासी संघ व अस्पृश्यता निवारण संघ स्थापित किए।

10. **<u>भरतपुर प्रजामंडल</u>**
- स्थापना- जुगलकिशोर चतुर्वेदी ने रेवाड़ी में इसकी स्थापना की।
- अध्यक्ष - गोपी लाल यादव
- किशनलाल जोशी, मास्टर अदित्येन्द्र - भरतपुर प्रजा परिषद
- प्रजामण्डल का समाचार पत्र- 'वैभव'

11. **<u>कोटा प्रजामंडलः</u>**
- संस्थापक- पण्डित नयनूराम शर्मा, अभिन्न हरि।
- नयनूराम शर्मा ने कोटा राज्य में बेगार विरोधी आंदोलन चलाया।

नयनूराम शर्मा ने 1934 में हाडौती प्रजामंडल की स्थापना की।

- कोटा प्रजामंडल का पहला अधिवेशन मांगरोल (बारां) में हुआ था।
- 1942 ई. नाथूलाल जैन तथा मोती लाल के नेतृत्व में प्रजामंडल के सदस्यों ने कोटा के प्रशासन पर कब्जा कर लिया था।
- कॉलेज की छात्राओं ने रामपुरा कोतवाली पर कब्जा कर लिया था।

12.**<u>किशनगढ़ प्रजामंडल</u>**
- संस्थापक- कांतिलाल चौथानी, जमाल शाह।

13.**<u>सिरोही प्रजामंडल</u>**
- स्थापना- गोकुल भाई भट्ट ने बॉम्बे में की थी। गोकुल भाई भट्ट को राजस्थान का गांधी कहा जाता हैं।

14.**<u>कुशलगढ़ प्रजामंडल</u>**
- संस्थापक- भंवरलाल निगम।

More PDF Install App - DevEduNotes

15. **<u>बांसवाड़ा प्रजामंडल:</u>**
- संस्थापक- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी, मणिशंकर नागर, धूलजी भाई भावसार।
- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी बम्बई से 'संग्राम' नामक समाचार पत्र निकालते थे।
- इस प्रजामंडल में एक महिला मंडल का गठन 'विजया बहिन भावसार' ने किया था।

16. **<u>डूगंरपुर प्रजामंडल</u>** (1 अगस्त 1944)
- संस्थापक: भोगीलाल पांड्या (वागड़ का गांधी), हरिदेव जोशी, गौरीशंकर उपाध्याय (समाचार पत्र- सेवक)

<u>रास्तापाल कांड</u> (19 जून 1947)
- सेवा संघ द्वारा स्थापित स्कूल को बंद करवाने गये रियासत के सैनिकों ने एक शिक्षक नानाभाई की हत्या कर दी व दूसरे शिक्षक सेगांभाई को गाड़ी के पीछेकर घसीट रहे थे, तब एक कालीबाई नामक एक वीरबालिका ने अपनी हसिंया से उन रस्सियों को काट दिया, पर खुद पुलिस की गोलियों की शिकार हो गयी।
- डुंगरपुर में गेप सागर तालाब के पास कालीबाई तथा नानाभाई की प्रतिमा लगी हुयी हैं।
- राजस्थान सरकार बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई के नाम से पुरस्कार देती हैं।

<u>पूनावाड़ा काण्ड</u>
- अध्यापक शिवराम भील के साथ मारपीट।

- इस प्रजामंडल में रियासती अन्यायपूर्ण नीतियों के विरूद्ध जनजागृति हेतु प्रयाण सभाओं का आयोजन किया गया।

17.**<u>जैसलमेर प्रजामंडल</u>**
- जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना मीठालाल व्यास ने जोधपुर में की।
- प्रजामंडल के सदस्य सागरमल गोपा को जेल में जलाकर हत्या कर दी गयी।

18.**<u>प्रतापगढ़ प्रजामंडल</u>**
- संस्थापक- ठक्कर बापा, अमृतलाल पायक, चुन्नीलाल प्रभाकर।

19. **<u>झालावाड़ प्रजामंडल</u>**
- संस्थापक- मांगीलाल भव्य ने की।
- झालावाड़ में स्वंय राजराणा हरिश्चन्द्र (राजा) के नेतृत्व में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी।

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान का एकीकरण

- 5 जुलाई 1947 को रियासती सचिवालय की स्थापना की गयी।
- रियासती सचिवालय के अनुसार वे रियासतें जिनकी आय 1 करोड़ से अधिक हो व जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो, अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं।
- उस समय राजस्थान में ऐसी 4 रियासतें थी।

  1. जयपुर 2. जोधपुर 3. उयदपुर 4. बीकानेर
- 18 जुलाई 1947 को धारा- 8 के तहत देशी रियासतों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त कर दी गयी। (स्वतंत्रता अधिनियम के तहत)
- आजादी के समय राजस्थान में 19 रियासतें, 3 ठिकाणे (1. लावा 2. नीमराणा 3. कुशलगढ़) व एक केन्द्र शासित प्रदेश (अजमेर मेरवाड़ा) था।
- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह ने राजस्थान गुजरात व मालवा की रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन बनाने का प्रस्ताव रखा, इसके लिए 25, 26 जून 1947 को अधिवेशन भी बुलाया। इसमें 22 राजाओं ने भाग लिया, पर जयपुर , जोधपुर और बीकानेर के रियासतों के रूचि नहीं लेने के कारण यह निर्णय फलीभूत नहीं हो सका।

प्रथम चरण: मत्स्य संघ

- भरतपुर, धौलपुर, अलवर व करौली रियासतों व नीमराणा ठिकाने को मिलाकर मत्स्य संघ बनाया गया।
- मत्स्य संघ का नामकरण के. एम. मुंशी ने किया।
- धौलपुर महाराजा उदयभानसिंह - राजप्रमुख
- करौली महाराजा गणेशपालसिंह - उपराजप्रमुख
- अलवर - राजधानी
- भरतपुर - उद्घाटन
- मत्स्य संघ का उद्घाटन 18 मार्च 1948 को भरतपुर के किले में केन्द्रीय खनिज मंत्री एन. वी. गाडविल ने किया।
- शोभाराम कुमावत (अलवर के) को मत्स्य संघ का प्रधानमंत्री बनाया गया।
- जुगल किशोर चतुर्वेदी को उपप्रधानमंत्री बनाया गया।

* अलवर व भरतपुर रियासतों का नियंत्रण भारत सरकार ने पहले ही अपने कब्जे में ले लिया था।

द्वितीय चरण: राजस्थान संघ/ पूर्व राजस्थान

- 9 रियासत + 1 ठिकाने को मिलाकर राजस्थान संघ को बनाया गया।
- कोटा, बूंदी, झालावाड़, प्रतापगढ़, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, किशनगढ़, टोंक , शाहपुरा, कुशलगढ़ (ठिकाना)
- कोटा - राजधानी
- कोटा महाराजा भीमसिंह - राजप्रमुख
- बूंदी महाराजा बहादुरसिंह - वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- डुगंरपुर के लक्ष्मणसिंह - कनिष्ठ उपराजप्रमुख
- शाहपुरा के गोकुल लाल असावा - प्रधानमंत्री
- 25 मार्च 1948 को एन. वी. गाडविल ने कोटा में उद्घाटन किया।
- शाहपुरा व किशनगढ़ दो ऐसी रियासतें थी, जिन्हें तोपो की सलामी का अधिकार नहीं था।
- बांसवाडा महारावल चनद्रवीरसिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हूए कहा था कि में अपने Death Warant पर हस्ताक्षर कर रहा हूं।

More PDF Install App - DevEduNotes

तृतीय चरण – संयुक्त राजस्थान

- राजस्थान संघ + मेवाड़
- मेवाड़ राणा भूपालसिंह – राजप्रमुख
- कोटा महाराजा भीमसिंह – उपराजप्रमुख
- बूंदी महाराजा बहादुरसिंह – वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- डुंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह – कनिष्ठ उपराजप्रमुख
- 18 अप्रैल 1948 को उदयपुर में जवाहर लाल नेहरू ने उद्घाटन किया।
- इसमें यह निर्णय लिया गया कि संयुक्त राजस्थान संघ का प्रतिवर्ष एक अधिवेशन कोटा में होगा और कोटा के विकास के लिए विशेष प्रयास किये जाएगें।
- राजधानी – उदयपुर
- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह को 20 लाख रू. सालाना (प्रिवी पर्स के रूप में) दिय जाने थे, जिनमें से
  10 लाख रू. – प्रिवी पर्स
  5 लाख रू. – राजप्रमुख के रूप में वेतन
  5 लाख रू. – धार्मिक कार्यो के लिए दिए गए।
- प्रधानमंत्री – माणिक्य लाल वर्मा
- उपप्रधानमंत्री – गोकुल लाल असावा
- इसमें मंत्रिमंडल में सामन्तों को शामिल करने से गतिरोध उत्पन्न हो गया।

चतुर्थ चरण: वृहत् राजस्थान

- संयुक्त राजस्थान संघ + बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर
- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह – महाराजप्रमुख
- जयपुर राज सवाई मानसिंह द्वितीय – राजप्रमुख
- जोधपुर राजा हनवन्तसिंह – वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- कोटा महाराजा भीमसिंह – वरिष्ठ उपराजप्रमुख
- बूंदी के बहादूरसिंह – कनिष्ठ उपराजप्रमुख
- डुगंरपुर के लक्ष्मणसिंह – कनिष्ठ उपराजप्रमुख
- सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर जयपुर को राजधानी बनाया।
- 30 मार्च 1949 को वल्लभ भाई पटेल ने जयपुर में उद्घाटन किया।
- इस दिन को 'राजसथान दिवस' के रूप में मनाया जाता हैं।
- प्रधानमंत्री – हीरालाल शास्त्री
- जोधपुर – हाई कोर्ट
- बीकानेर – शिक्षा विभाग।
- भरतपुर – कृषि विभाग।
- कोटा – वन एवं सहकारी विभाग।
- उदयपुर – खनिज विभाग।

जयपुर के राजा को 18 लाख रू. PRIVI PURSE के रूप में दिए।

- जोधपुर – 17.5 लाख रू.
- बीकानेर – 17 लाख रू.

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

पंचम चरण: संयुक्त वृहद राजस्थान

- वृहद राजस्थान + मत्स्य संघ (15 मई 1949)
- शोभाराम कुमावत को शास्त्री मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया।
- शंकरराव देव समिति की सिफारिश के आधार पर मत्स्य संघ का विलय किया गया।

षष्ठम् चरण - राजस्थान

- संयुक्त वृहद राजस्थान + सिरोही (आबू व देलवाड़ा को छोड़कर)
- 26 जनवरी 1950
- आबू व देलवाड़ा सहित 89 गांव बॉम्बे राज्य में शामिल किए गए। गोकुल भाई भट्ट का हाथल गांव राजस्थान में शामिल किया गया।
- हीरालाल शास्त्री - पहले मनोनीत मुख्यमंत्री

सप्तम् चरण

- फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया गया था (तीन सदस्यीय)
- के. एम. पणिक्कर (बीकानेर की तरफ से संविधान सभा में जाने वाले सदस्य)
- हृदयनाथ कुजंरू
- इसकी सिफारिशों के आधार पर 1 नवम्बर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय कर दिया गया।
- अजमेर को राजस्थान का 26 वां जिला बनाया गया।
- आबू व देलवाड़ा राजस्थान में मिलाये गए।
- मध्यप्रदेश का सुनेल टप्पा राजस्थान में मिलाया गया।
- राजस्थान का सिरोंज मध्यप्रदेश में मिलाया। गया।
- इस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया थे।
- राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया। (7वें संविधान संशोधन 1956 द्वारा)
- सरदार गुरूमुख निहालसिंह को राजस्थान का पहला राज्यपाल बनाया गया।

अजमेर-मेरवाड़ा एक केन्द्रशासित प्रदेश था जिसमें 30 सदस्यों की धारा सभा होती थी। इसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे।
इन्होंनें अजमेर के राजस्थान में विलय का विरोध किया था।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के त्यौंहार

1. चैत्र	- बसन्त ऋतु	पौष-माघ	- जनवरी
2. बैशाख	- ग्रीष्म	माघ-फाल्गुन	- फरवरी
3. ज्येष्ठ	- ग्रीष्म	फाल्गुन-चैत्र	- मार्च
4. आषाढ़	- वर्षा	चैत्र-वैशाख	- अप्रैल
5. श्रावण	- वर्षा	वैशाख-ज्येष्ठ	- मई
6. भाद्रपद	- शरद् ऋतु	ज्येष्ठ-आषाढ़	- जून
7. आश्विन	- शरद् ऋतु	आषाढ़-श्रावण	- जुलाई
8. कार्तिक	- हेमन्त ऋतु	श्रावण-भाद्रपद	- अगस्त
9. मार्गशीर्ष	- हेमन्त ऋतु	भाद्रपद-आश्विन	- सितम्बर
10. पौष	- शिशिर ऋतु	आश्विन-कार्तिक	- अक्टूबर
11. माघ	- शिशिर ऋतु	कार्तिक-मार्गशीर्ष	- नवम्बर
12. फाल्गुन	- बसन्त ऋतु	मार्गशीर्ष-पौष	- दिसम्बर

- विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल एकम् से शुरू होता हैं।
- अंग्रेजी महिनों से बराबर करने के लिए प्रत्येक तीसरे वर्ष एक महीना दो बार गिना जाता हैं, जिसे अधिकमास कहते हैं।

श्रावण

कृष्ण पक्ष

1. पंचमी- नाग पंचमी
2. नवमी - निडरी नवमी (नेवले की पूजा की जाती हैं।)
3. अमावस्या- हरियाली अमावस्या
   - कल्पवृक्ष मेला- मांगलियावास (अजमेर)
   - फतेह सागर मेला - उदयपुर
   - बुढ़ा जौहड़ मेला- श्रीगंगागनर

1. तृतीया- छोटी तीज
   - जयपुर की सवारी प्रसिद्ध हैं।
   - नवविवाहिता लहरिया ओढ़नी पहनती हैं।
   - नवविवाहिता के लिए ससुराल से सिंजारा आता हैं।
2. पूर्णिमा- रक्षा बन्धन
   - नारियल पूर्णिमा
   - श्रवणकुमार की पूजा की जाती हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

भाद्रपद

कृष्ण पक्ष

1. तृतीया- बड़ी तीज, बुढ़ी तीज, सातुडी तीज, कजली तीज
   - बूंदी की सवारी प्रसिद्ध हैं।
2. षष्ठी- ऊब छठ/हलछठ (बलराम जयंती)
3. अष्टमी- कृष्ण जन्माष्टमी।
4. नवमी- गोगानवमी
   - मेले - ददरेवा (चुरू), गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
   - किसान हल को नौ गांठ वाली राखी बांधता हैं।
5. द्वादशी- बछबारस।
6. अमावस्या- सती अमावस्या
   - झुंझुनू में रानी सती का मेला लगता हैं।

शुक्ल पक्ष

1. द्वितीया- बाबे री बीज (रामदेव जयंती)
   - द्वितीया से एकादशी तक रामदेवरा (जैसलमेर) में रामदेव मेला लगता हैं। जिसे मारवाड़ का कुंभ कहते हैं।
2. चतुर्थी- गणेश चतुर्थी, शिव चतुर्थी, कलंक चतुर्थी, चतरा चौथ।
   - मेले- त्रिनेत्र गणेश मेला (रणथम्भौर)
   - चुंधी तीर्थ मेला (जैसलमेर)
3. पंचमी- ऋषि पंचमी (सप्तऋषि की पूजा)
   - मेले- भोजन थाली मेला- कामां (भरतपुर)
   - माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन
4. अष्टमी- राधाअष्टमी
   - सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला।
5. दशमी- तेजा दशमी (परबतसर में पशु मेला)
   - खेजड़ली वृक्ष मेला।
6. एकादशी- जलझूलनी एकादशी / देव झुलनी एकादशी।
7. चतुर्दशी- अनन्त चतुर्दशी (गणेश विसर्जन)
8. पूर्णिमा- श्राद्ध प्रारम्भ।

आश्विन

कृष्ण पक्ष

1. श्राद्ध पक्ष- कृष्ण पक्ष की एकम् से अमावस्या तक श्राद्ध चलते हैं।
   - श्राद्ध पक्ष में सांझी की पूजा की जाती हैं।
   - मत्स्येन्द्र नाथ मंदिर (उदयपुर) सांझी का मंदिर कहलाता हैं।
   - श्राद्ध पक्ष के अंतिम दिन (अमावस्या) को थम्बुड़ा व्रत किया जाता हैं।

शुक्ल पक्ष

1. एकम्:- शरद नवरात्रा प्रारम्भ
2. अष्टमी- दुर्गाष्टमी / होमाष्टमी
3. दशमी:- दशहरा
   . खेजड़ी वृक्ष की पूजा की जाती हैं।
   . हथियारों की पूजा भी की जाती हैं।
   . इस दिन लीलटांस पक्षी (चिड़िया) के दर्शन शुभ माने जाते हैं।
   . कन्हैयालाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी हैं।
   . कोटा / मैसूर (कर्नाटक)का दशहरा प्रसिद्ध हैं।
4. पूर्णिमा:- शरद् पूर्णिमा/रास पूर्णिमाा (चन्द्रमा 16 कलाओं से परिपूर्ण होता हैं।)

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

कार्तिक

कृष्ण पक्ष

1. चतुर्थी:- करवा चौथ
2. अष्टमी:- अहोई अष्टमी
3. त्रयोदशी- धनतेरस
   - ऋषि धनवन्तरि की पूजा की जाती हैं।
5. चतुर्दशी- रूप चौदस/छोटी दीपावली
6. अमावस्या- दीपावली
   - दीपावली को भगवान महावीर व दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस।

शुक्ल पक्ष

1. एकम्:- गोवर्धन पूजा
   - नाथद्वारा - अन्नकूट महोत्सव
2. द्वितीया - भैया दूज
3. अष्टमी- गोपाष्टमी
4. नवमी- आंवला नवमी / अक्षय नवमी
5. एकादशी- देव उठनी ग्यारस/प्रबोधिनी
6. पूर्णिमा- सत्यनारायण पूर्णिमा
   - मेले- पुष्कर (अजमेर)
   - कोलायत (बीकानेर)
   - चन्द्रभागा- झालरापाटन

माघ

कृष्ण पक्ष

1. चतुर्थी- तिल चतुर्थो, संकट हरण चतुर्थी

. चौथ का बरवाड़ा (स. माधोपुर) में मेला भरता हैं।

[illegible]

शुक्ल पक्ष

1. पंचमी- बंसत पंचमी

. सरस्वती जयंती।

. राजस्थान में बालिका शिक्षा के लिए गार्गी पुरस्कार दिया जाता हैं।

3. पूर्णिमा:- बेणेश्वर मेला- नवाटापरा (डूंगरपुर)

. यहां शिवलिगं 5 स्थानों से खंडित हैं।

. बेणेश्वर मेले को आदिवासियों का कुम्भ कहते हैं

. वागड़ का पुष्कर

. इस दिन होली का डंडा रोपण किया जाता हैं।

फाल्गुन

कृष्ण पक्ष

1. त्रयोदशी- महाशिवरात्रि
   शिवाड़ (सवाई माधोपुर) में
   घुश्मेश्वर महादेव का मेला भरता हैं।

शुक्ल पक्ष

1. द्वितीया- फुलेरा दूज
2. पूर्णिमा - होली

- ब्यावर में होली पर बादशाह की सवारी निकाली जाती हैं।

. भिनाय- कोड़ामार होली

. महावीर जी- लट्ठमार होली

. बाड़मेर - पत्थर मार होली।

. बाड़मेर में इलो जी की सवारी निकाली जाती हैं।

. सांगोद(कोटा)- न्हाण

. जयपुर में जन्म, मरण, परण का त्यौंहार मनाया जाता हैं।

Springboard Academy

More PDF Install App - DevEduNotes

चैत्र

कृष्ण पक्ष

1. एकम्- धुलण्डी
2. अष्टमी- शीतला अष्टमी।
- चाकसू (जयपुर) में गधो का मेला लगता हैं।
3. अष्टमी/नवमी- ऋषभदेव मेला (धुलेव-उदयपुर)
4. एकादशी- जौहर मेला- चित्तौड़गढ़

शुक्ल पक्ष

1. एकम्- विक्रमी संवत् शुरू होता हैं।
. बसन्त नवरात्रि शुरू।
. वृहत् राजस्थान का गठन
2. तृतीया- गणगौर
. इस दिन शिव-पार्वती की पूजा की जाती हैं। (गणगौर की पूजा धुलण्डी से ही शुरू हो जाती हैं।)
. जयपुर व उदयपुर की गणगौर सवारी प्रसिद्ध हैं।
. जैसलमेर में गणगौर पर केवल ईसर की सवारी निकलती हैं। (चतुर्थी)
. सबसे अधिक गीतों वाला त्यौंहार
. इस दिन लड़किया अपने लिए सुन्दर पति व भाई के लिए सुन्दर पत्नी की कामना करती हैं।
3. अष्टमी- अशोक अष्टमी
4. नवमी- रामनवमी (भगवान राम का जन्मदिन)
5. पूर्णिमा- हनुमान जयन्ती
- मेले- सालासर (चुरू)
- मेंहदीपुर (दौसा)

बैशाख

कृष्ण पक्ष

1. तृतीया- धींगा गवर
. जोधपुर में इस दिन धींगा गवर मेला गलता हैं।

शुक्ल पक्ष

1. तृतीया- आखा तीज / अक्षय तृतीया
. अबूझ सावा।
. राजस्थान में सबसे ज्यादा बाल-विवाह इसी दिन होते हैं।
. बीकानेर का स्थापना दिवस
. पूर्णिमाः- पीपल पूर्णिमा/बुद्ध पूर्णिमा।
- मेले- गोमती सागर मेला- (झालरापाटन)
- बाणगंगा मेला (विराटगनर)
- मातृकुण्डिया मेला (चित्तौड़गढ़)
- गोतमेश्वर मेला- (अरणोद-प्रतापगढ़)
- नक्की झील मेला (माउंट आबू)

More PDF Install App - DevEduNotes

ज्येष्ठ

कृष्ण पक्ष

1. अमावस्या- बड़ मावस / वट सावित्री व्रत

शुक्ल पक्ष

1. दशमी- गंगा दशमी
   (गंगा जी का धरती पर अवतरण।)
2. एकादशी-निर्जला एकादशी

- उदयपुर में निर्जला एकदशी पर पतंगे उ़ती हैं।

आषाढ़

कृष्ण पक्ष

शुक्ल पक्ष

1. नवमी- भदल्या नवमी
2. एकादशी- देव शयनी एकादशी।
3. पूर्णिमा- गुरू पूर्णिमा

. वेदव्यास का जन्मदिन, इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

मुस्लिम त्यौंहार

- मुस्लिम त्यौंहार 'हिजरी संवत्' के अनुसार मनाए जाते हैं।
- 622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना गये थे, इसी दिन से हिजरी संवत् का प्रारम्भ माना जाता हैं।

1. मोहर्रमः
- हिजरी संवत् का पहला महीना
- मोहर्रम की 10 वीं तारीख को हजरत मोहम्मद साहब के नवासे हुसैन करबला के मैदान में शहीद हो गये थे, इसलिए इस दिन ताजिये निकाले जाते हैं।
- 27 वीं तारीख को गलियाकोट (डूंगरपुर) में सैय्यद फखरूद्दीन का उर्स।

2. सफरः
- 20 वीं तारीख को चेहल्लम मनाते हैं। (हुसैन के चालीस दिन पूरे हुये थे।)

3. रबी - उल - अव्वल।
- 12 वीं तारीख को बारावफात (ईद- मिलादुलनवी) मनाते हैं।
- हजरत मोहम्मद साहब का जन्म (570ई.) व मृत्यु (632ई.) इसी दिन हुयी थी।

4. रबी - उस सानी
5. जमात - उल - अव्वल
6. जमात उस सानी
- 8वीं तारीख को ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का जन्मदिन। (संजरी- फारस)

7. रज्जब
- 1 से 6 तारीख तक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का उर्स।
- इस उर्स में भीलवाड़ा का गौरी परिवार बुलन्द दरवाजे पर झंडा चढ़ाता हैं।

8. शाबान
- शाबान महीने की 14 वीं तारीख हजरत मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुयी थी, इसलिए इसको शब (शत) - बरात कहते हैं।
- मुसलमान इस दिन अपने कर्मो का प्रायश्चित करते हैं।
- मक्का की हीरा पहाड़ी पर मुसलमान एकत्रित होते हैं।

9. रमजान
- मुसलमान, इस महीने में रोजे रखते हैं।
- रमजान की 27 वीं तारीख को 'शवे कद्र' कहते हैं इस दिन कुरान शरीफ का धरती पर अवतरण हुआ था।

10. शव्वाल
- शव्वाल की पहली तारीख को ईद-उल-फितर, (मीठी ईद) / सेवईयों की ईद मनाया जाता हैं।
- यह भाईचारे का त्यौंहार हैं।

11. जिल - कद्र
12. जिल्हिज
- 10वीं तारीख को ईद-उल-जुहा- बकर ईद/कुर्बानी का त्यौंहार होता हैं।
- इस महीने में मुसलमान हज के लिए जाते हैं।
- जिल्हिज की 8 से 10 तारीख तक हज के लिए जाते हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

जैन धर्म के त्यौंहार

1. ऋषभ जयन्ती - चैत्र कृष्ण नवमी
2. महावीर जयन्ती - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
3. सुगन्ध दशमी - भाद्रपद शुक्ल दशमी

सुगन्ध दशमी को धूप दशमी कहा जाता हैं।

4. रोट तीज - भाद्रपद शुक्ल तीज
5. पर्यूषण - ये जैनों का महापर्व हैं।

. दिगम्बर - भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक व्रत रखते हैं। आश्विन कृष्ण एकम् को पड़वा ढ़ोक मनाते हैं।

. श्वेताम्बर - भाद्रपद कृष्ण द्वादशी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तक व्रत रखते हैं। भाद्रपद शुक्ल पंचमी को संवत्सरी पर्व मनाते हैं। (क्षमा याचना पर्व)

6. दसलक्षण पर्व:- चैत्र, भाद्रपद, माघ- शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी।

सिन्धी समाज के त्यौंहार

- चेटीचण्ड- चैत्र शुक्ल एकम् (विक्रम संवत प्रारम्भ)
- झूलेलाल जयन्ती।
- झूलेलाल जी को वरूण का अवतार मानते हैं।
- झूलेलाल जी ने सिंध के राजा मृगशाह के अत्याचारों से मुक्ति दिलायी।
- झूलेलाल जी का जन्म- थट्टा (सिंध)

2. थदड़ी सातम / बड़ी सातम:-

- भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (कृष्ण जन्माष्टमी से ठीक एक दिन पहले सिन्धियों का बास्योड़ा)

सिक्खों के त्यौंहार

1. गुरू नानक जयन्ती - कार्तिक पूर्णिमा (शुक्ल)
2. गुरू गोविन्दसिंह जयन्ती - पौष शुक्ल सप्तमी
3. लोहड़ी- 13 जनवरी
4. वैशाखी- 18 अप्रैल

. 13 अप्रैल 1699 को आनंदपुर साहिब में गुरू गोविन्द साहिब ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।

. 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड।

More PDF Install App - DevEduNotes

ईसाई समाज के त्यौंहार

1. 1 जनवरी - ईसाईयों का नववर्ष
2. 25 दिसम्बर - ईसा मसीह का जन्मदिन (2014 से सुशासन दिवस मनाया जाता हैं।)
3. ईस्टर- 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती हैं, उसके ठीक बाद वाले रविवार को ईस्टर बनाया जाता हैं।

. इस दिन ईसा मसीह पुनर्जीवित होकर लौट आए थे।

4. गुड़ फ्राइड़े - ईस्टर से ठीक पहले वाला शुक्रवार।

. इस दिन ईसा मसीह को सूली पर लटकाया गया।

5. असेन्शन ड़े- ईस्टर से ठीक 40 चालीस दिन बाद, ईसा मसीह वापस स्वर्ग चले गये थे।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के लोक-देवता

"पाबू हडबू राम दे, मांगलिया मेहा। पांच्यू पीर पधारज्यों, गोगा जी जेहा"

- राजस्थान के पांच पीर - 1. पाबूजी 2. हडबूजी 3. मेहा जी. 4. रामदेव जी 5. गोगा जी

(1) पाबूजी राठौड़

- जन्म स्थान- कोलुमण्ड
- पिता - धांधल
- माता- कमलादे
- पत्नी- फूलमदे/सुप्यारदे (अमरकोट की राजकुमारी)
- घोडी का नाम- केशर कालमी।
- मित्र- चान्दा, डामा (भील भाई)
- देवल नामक चारण महिला की गायों को बचाने के लिए अपने फेरों के बीच से उठ कर आये तथा जिन्दराव खीचीं (जायल) के खिलाफ लड़ते हुए देचू (जोधपुर) में मारें गये।
- चैत्र कृष्ण अमावस्या को कोलूमण्ड में पाबू जी का मेला भरता हैं।
- पाबू जी को ऊंटो के देवता व प्लेग रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता हैं।
- ऊंट पालने वाली राईका / रैबारी जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती हैं।
- आशिया मोड़जी ने 'पाबू प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी हैं।
- पाबू जी की फड़ भील जाति के भोपे रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ बांचते हैं।
- पाबू जी की फड़ सबसे लोकप्रिय फड़ हैं।
- पाबू जी के भजन (पवाड़े) माट वाद्ययंत्र के साथ गाये जाते हैं।

(2) रामदेव जी तंवर

- जन्म स्थान- उण्डूकाश्मीर (बाड़मेर)
- पिता- अजमालजी
- माता - मेणादे
- पत्नी- नेतल दे (अमरकोट की राजकुमारी)
- रामदेव जी एक समाज सुधारक थे, उन्होंनें जात-पात का भेदभाव मिटाने व दलित उद्धार का कार्य किया।
- रामदेव जी एक अच्छे कवि थे और इनका ग्रंथ हैं- चौबीस बाणियां
- रामदेव जी ने कामडिया पंथ शुरू किया था। कामडिया पंथ की महिलाऐं तेरह-ताली नृत्य करते हैं।
- रामदेव जी के मेघवाल भक्तों को रिखिया कहते हैं।
- रामदेव जी को पीरों का पीर कहते हैं। रामदेवजी को विष्णु/कृष्ण का अवतार माना जाता हैं।
- रामदेव जी के घोड़े का नाम - लीलो / लीला।
- रामदेव जी के पगले पूजे जाते हैं।
- ध्वज- नेजा
- जागरण - जमो।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

(3) <u>गोगाजी:</u>

- जन्म स्थान - दद्रेवा (चुरू)
- इन्होनें महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था, महमूद गजनवी ने इन्हें जाहरपीर (साक्षात् पीर) कहा।
- अपने मौसेरे भाईयों अरजन-सरजन के खिलाफ गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) नामक स्थान पर इनकी मृत्यु हुयी।
- गोगाजी को सांप रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता हैं
- गोगाजी का मंदिर (थान) खेजड़ी वृक्ष के नीचे बनाया जाता हैं।
- ददरेवा के मंदिर को शीर्षमेड़ी व गोगामेड़ी के मंदिर को धुर मेड़ी कहते हैं।
- गोगामेड़ी वाला मंदिर मकबरा शैली में बना हुआ हैं, इसके शीर्ष पर बिस्मिल्लाह लिखा हुआ हैं।
- खिलेरियों की ढ़ाणी (सांचौर) में गोगाजी की ओल्डी बनी हुई हैं।

(4) <u>हड़बूजी सांखला</u>

- रामदेव जी के मौसरे भाई थे।
- जन्म स्थान - भूण्डेल (नागौर)
- इन्होनें राव जोधा को मंडौर विजय का आशीर्वाद दिया व एक कटार भेंट की , इसलिए राव जोधा ने मंडोर विजय के बाद इन्हें 'बेंगटी' गांव दिए। जहां इनका मुख्य मंदिर बना हुआ हैं।
- इस मीिंदर का निर्माण जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने करवाया।
- हड़बू जी अपनी बैलगाड़ी से गायों के लिए चारा लाते थे।
- इसलिए मंदिर में इनकी बैलगाड़ी की पूजा की जाती हैं।
- शगुन विचार ग्रन्थ- हडबू जी ने लिखा।

(5) <u>मेहाजी मांगलिया</u>

- मुख्य मंदिर- बापिणी (जोधपुर)
- मेला- कृष्ण जन्माष्टमी।
- इनके घोड़े का नाम किरड काबरा हैं।
- इनके भोपो की वंशवृद्धि नहीं होती हैं।

(6) <u>तेजाजी</u>

- जन्मस्थान - खरनाल (नागौर) (जाट परिवार में जन्म हुआ)
- पत्नि - पेमलदे
- ससुराल - पनेर (अजमेर)
- लाछा गूर्जरी की गायों को बचाने के लिए तेजाजी सुरसुरा गांव में घायल हो गये तथा सांप के काटने से मृत्यु हो गयी।
- सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजा की जाती हैं।
- तेजाजी को 'काला-बाला' का देवता कहते हैं।
- किसान हल जोतते हुए तेजा गाता हैं।
- 7 दिसम्बर 2010 को तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया।
- तेजाजी की घोड़ी का नाम - लीलण
- तेजाजी के भोपों को घोड़ला कहते हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

(7) देवनारायण जी

- पिता का नाम - सवाई भोज
- देवनारायण बगड़ावत गूर्जर परिवार से सम्बन्धित थे।
- आसींद (भीलवाड़ा) देवमाली (अजमेर), जोधपुरिया (टोंक) में इनके मुख्य पूज्य स्थल हैं।
- इनके मंदिर में प्रतिमा के स्थान पर ईटों की पूजा की जाती हैं।
- नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं। (औषधि का देवता)
- देवनारायण जी की फड़ गूर्जर जाति के भोपे 'जन्तर' वाद्य के साथ पढ़ते (बाचते) हैं।
- देवनारायण जी की फड़ सभी लोकदेवताओं में सबसे लम्बी फड़ हैं।
- लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत ने 'बगडावत' नामक कहानी लिखी।
- देवनारायण जी की फड़ पर डाक-टिकट जारी किया गया हैं।
- भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता हैं।
- विष्णु का अवतार माना जाता हैं।

(8) मल्लीनाथ जी

- मारवाड़ के राठौड़ राजा।
- राजधानी - मेवानगर
- मल्लीनाथ जी भविष्यवक्ता थे।
- गुरू का नाम - उगमी सी भाटी
- बाड़मेर के तिलवाड़ा गांव में होली के दूसरे दिन मल्लीनाथ पशु मेला लगता हैं।
- पत्नी का नाम - रूपा दे (ये भी लोकदेवी हैं, इनका मंदिर तिलवाड़ा के पास मालाजाल गांव में बना हुआ)

(9) तल्लीनाथ जी

- वास्तविक नाम - गोगादेव राठौड़
- शेरगढ़ (जोधपुर) के राजा।
- पांचोटा (जालौर) में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- इन्हें ओरण का देवता माना जाता हैं।

(10) देव बाबाः

- नंगला जहाज (भरतपुर) में मुख्य मंदिर हैं।
- भाद्रपद शुक्ल पंचमी और चैत्र शुक्ल पंचमी को इनकी पूजा की जाती हैं।
- देव बाबा पशु चिक्त्सिक थे।
- इन को खुश करने के लिए सात ग्वालों को भोजन करवाना होता हैं।
- पशुपालक समाज इन्हें आराध्य देव मानता हैं।

(11) बिग्गाजीः

- बीकानेर के रीड़ी गांव में एक जाट परिवार में जन्म हुआ।
- गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए मारे गये।
- जाखड़ समाज इन्हें अपना कुलदेवता मानते हैं।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

(12) <u>जुन्झार जी:</u>
- सीकर जिले के इमलोहा गांव में जन्म हुआ।
- सीालोदड़ा गांव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- स्थालोदड़ा गांव में 5 पत्थर की मूर्तियां लगी हुयी हैं। (दुल्हा दुल्हन तथा तीन भाईयों की मूर्तियां)
- मेला- रामनवमी।

(13) झरड़ाजी:
- पाबूजी के भतीजे थे।
- कोलूमण्ड (जोधपुर) व सिभुंदडा (बीकानेर) में इनके मुख्य मंदिर हैं।
- झरडाजी का एक अन्य नाम 'रूपनाथ' भी मिलता हैं।
- हिमाचल प्रदेश में बालकनाथ के रूप में पूजा की जाती हैं।

(14) <u>खेतलाजी:</u>
- मुख्य मंदिर - सोनाणा (पाली) में।
- हकलाने वाले बच्चो का इलाज किया जाता हैं।

(15) <u>मामदेव</u>
- इन्हें बरसात का देवता कहा जाता हैं।
- इनके मंदिर नहीं होते हैं, बल्कि गांव के शहर इनके तोरण की पूजा की जाती हैं।
- भैंसे की बलि दी जाती हैं।

(16) <u>आलमजी:</u>
- धोरीमन्ना (बाड़मेर) में इनका मेला भरता हैं।
- धोरीमन्ना को 'घोड़ो का तीर्थस्थल' कहते हैं।
- आलम जी जैतमालोत राठौड़ थे।

(17) <u>वीरफत्ताजी:</u>
- सांथू (जालौर) गांव में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- मेला- सांथू गांव में भाद्रपद शुक्ल नवमी को।

(18) <u>हरिराम जी:</u>
- नागौर के झोरड़ा गांव में इनका मंदिर हैं।
- सांप की बांबी की पूजा की जाती हैं।
- मेला- भाद्रपद शुक्ल- पंचमी

(19) <u>डूंगजी-जवाहरजी:</u>
- सीकर जिले के बाठोठ - पाटोदा गांव के थे।
- अमीरो से लूटकर गरीबों में उनका धन वितरित कर दिया करते थे। इन्होनें अग्रेंजो की नसीराबाद छावनी लूट ली।
- मुख्य सहयोगी- लोहटजी जाट, करणा जी मीणा ।

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान की लोक देवियां

* करणी माता
- जन्म स्थान - सुआप (जोधपुर)
- बचपन का नाम- 'रिद्धी बाई'
- इन्होंने देशनोक गांव बसाया, जहां इनका मुख्य मंदिर बना हुआ हैं।
- मंदिर में अत्यधिक संख्या में चूहे होने के कारण इन्हें चूहों वाली देवी कहा जाता हैं।
- इन चूहों को काबा कहा जाता हैं। सफेद काबे के चूहे के दर्शन को शुभ माना जाता हैं।
- चील को करणी माता का प्रतीक माना जाता हैं।
- राव बीका ने बीकानेर की स्थापना करणी माता के आशीर्वाद से की थी, इसलिए बीकानेर के राठौड़ो की इष्ट देवी करणी माता को माना जाता हैं।
- मुख्य मंदिर से कुछ दूरी पर एक अन्य मंदिर स्थिति हैं, जिसे 'नेहड़ी जी' कहते हैं।
- करणी माता स्वयं तेमड़ेराय माताजी की पूजा करती थी। तेमड़ेराय का मंदिर भी देशनोक में बना हुआ हैं।
- करणी माता को दाढ़ी वाली डोकरी कहते हैं। (151 साल)

* जीणमाता:
- सीकर जिले के रैवासा गांव में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- इनके भाई का नाम हर्ष था, जिनका मंदिर भी पास की पहाड़ियों पर बना हुआ हैं।
- जीण माता का मंदिर चौहान शासक पृथ्वीराज प्रथम के सामन्त 'हट्टड़ मोहिल' ने बनवाया था।
- औरंगजेब ने भी जीणमाता के 'छत्र' चढ़ाया था।
- जीण माता को मधुमखियों की देवी भी कहते हैं।
- जीण माता के दीपक का घी आज भी केन्द्र सरकार द्वारा भेजा जाता हैं।
- जीण माता का लोकगीत सबसे लम्बा हैं।
- चौहानों की ईष्ट देवी।

* आशापुरा माता
- चौहानों एंव बिस्सा ब्राह्णों की कुलदेवी हैं।
- नाड़ोल (पाली) एवं मोदरा (जालौर) में इनके मुख्य मंदिर हैं।
- इनकी पूजा करते समय महिलाएं घूंघट निकालती हैं।
- पूजा करने वाली महिलाऐं हाथों में मेंहदी नहीं लगाती हैं।

* शीतला माता
- चाकसू (जयपुर) में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- इस मंदिर का निर्माण जयपुर के सवाई माधोसिंह ने करवाया था।
- यह एक मात्र ऐसी देवी हैं, जिनकी खंडित प्रतिमा की पूजा की जाती हैं।
- 'चैत्र कृष्ण अष्टमी' को यहां गधो का मेला भरता हैं।
- शीतला माता का वाहन गधा एवं पुजारी कुम्हार होता हैं।
- चैत्र कृष्ण अष्टमी को इनको बासी भोजन का प्रसाद चढ़ाया जाता हैं। इन्हें चेचक की देवी भी कहते हैं।
- बांझ स्त्रियां संतान प्राप्ति के लिए शीतला माता की पूजा करती हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

* त्रिपुर सुन्दरी
- इनका मंदिर तलवाड़ा (बांसवाड़ा) में हैं।
- इन्हें (तुरताई माता) भी कहते हैं।
- 'लुहार जाति' के लोग इन्हें अपनी ईष्टदेवी मानते हैं।
- त्रिपुर सुन्दरी की 18 हाथों की प्रतिभा हैं।

* रानी सती:
- इनका वास्तविक नाम 'नारायणी देवी' था।
- इनके पति का नाम तनधनदास अग्रवाल था।
- झुन्झुनुं ने इनका मुख्य मंदिर बना हुआ हैं।
- भाद्रपद अमावस्या को इनका मेला भरता हैं।
- इन्हें दादी सती भी कहते हैं।

* आवरी माता:
- निकुम्भ (चित्तौडगढ़) में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- यहां लकवाग्रस्त लोगों को इलाज किया जाता हैं।

* महामाया माता:
- मावली (उयपुर) में इनका मंदिर हैं।
- शिशु रक्षक लोकदेवी हैं।

* भदाणा माता:
- मुख्य मंदिर - 'कोटा'
- यहां मूठ लगे व्यक्ति का इलाज किया जाता हैं।

* तन्नौट माता:
- इनका मुख्य मंदिर तन्नौट (जैसलमेर) में हैं।
- इन्हें 'थार की वैष्णोदेवी' कहते हैं।
- B.S.F. के जवान इनकी पूजा करते हैं।
- इन्हें 'रूमाल की देवी' भी कहते हैं।

* ब्राहृणी माता:
- इनका मुख्य मंदिर सोरसन (बारां) में हैं।
- यहां देवी की पीठ की पूजा की जाती हैं।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता हैं।

* छींक माता:
- इनका मुख्य मंदिर जयपुर में हैं।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

* छींछ माता:
- इनका मुख्य मंदिर बांसवाड़ा में हैं।

* ब्रह्मणी माता:
- मुख्य मंदिर पल्लू (हनुमानगढ़) में हैं।

* कैला माता:
- करौली के यादव राजवंश की कुल देवी।
- त्रिकुट पहाड़ी पर इनका मंदिर बना हुआ हैं।
- चैत्र शुक्ल अष्टमी को लक्खी मेला भरता हैं।
- इनके भक्त लागुंरिया गीत गाते हैं।
- इन्हें अंजली (हनुमान जी की मां) माता या भगवान श्री कृष्ण की बहन का अवतार मानते हैं।
- इनके मंदिर के सामने 'बोहरा भक्त' की छतरी बनी हुई हैं, जहां तांत्रिक विद्या से बच्चों का इलाज किया जाता हैं।

* आईमाता:
- से सीरवी जाति की कुलदेवी।
- इनका मुख्य मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर) में हैं।
- इनके मंदिर की अखण्ड ज्योति से केसर टपकती हैं।
- इनके मुख्य मंदिर को 'बडेर' व अन्य मंदिर को 'दरगाह' कहते हैं।
- आई माता रादेवजी की शिष्या थी। अत: इन्होंनें भी दलित उद्धार व साम्प्रदायिक सौहाई का काम किया।

* सच्चियां माता:
- औसियां (जोधपुर) में इनका मुख्य मंदिर हैं।
- ये ओसवालों की कुल देती हैं।
- ये मंदिर गुर्जर - प्रतिहार शासकों के समय बनाया गया था, जो महामारू शैली में निर्मित हैं।

* सकराय माता:
- मुख्य मंदिर- उदयपुरवाटी (झुन्झुनुं)
- खण्डेवालों की कुल देवी तथा चौहानों की ईष्ट देवी। अकाल के समय शाक - सब्जियां उत्पन्न की थी, इसलिए इसे शाकम्भरी माता भी कहते हैं।
- अन्य मंदिर सांभर व सहारनपुर (U.P.) में भी हैं।

* स्वांगिया माता:
- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी।
- शगुन चिड़ी के हाथ में मुड़ा हुआ माला (स्वांग) - जैसलमेर के राज चिन्ह में हैं, इसीलिए शगुन चिड़ी का स्वांगिया माता का प्रतीक माना जाता हैं।
- इनका मुख्य मंदिर भादरिया (जैसलमेर) में बना हुआ हैं।
- यहां पर विश्व का सबसे बड़ा भूमिगत पुस्तकालय हैं।

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

* हिगंलाज माताः
- मुख्य मंदिर - पाकिस्तान के सिंध प्रान्त के लासवेला गांव में बना हैं।
- अन्य मंदिर लोद्रवा (जैसलमेर) व नारलाई (पाली)

* आवड़ माताः
- ये भी स्वांगिया माता का ही एक अवतार हैं।
- इनका एक अन्य नाम तेमडेराय भी मिलता हैं, जिनकी करणी माता भी पूजा थी।
- मुख्य मंदिर, जैसलमेर
- भाटियों की ईष्ट देवी।

* नारायणी माताः
- मुख्य मंदिर - अलवर
- नाई जाति के लोग इन्हें अपनी कुल देवी मानते हैं।
- मीणा जाति के लोग भी इनकी पूजा करते हैं।

* जिलाड़ी माताः
- मुख्य मंदिर - बहरोड़ (अलवर) में।
- गुर्जर जाति के लोक इनकी पूजा करते हैं।

* चामुण्डा माताः
- मुख्य मंदिर - जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में बना हुआ हैं।
- 30 सितम्बर 2008 ई. को पहले नवरात्रा के दिन मची भगदढ़ में कई लोग मारे गए, इसे मेहरानगढ़ दुखान्तिका कहते हैं। इसकी जांच के लिए जसराज चौपड़ा आयोग की स्थापना की गयी।

* आमजा माताः
- मुख्य मंदिर- रीछंड़ा (उदयपुर) में।
- भील जाति के लोग इन्हें अपनी इष्ट देवी मानते हैं।

* अम्बिका माताः
- मुख्य मंदिर - जगत (उदयपुर) में।
- इस मंदिर को 'मेवाड़ का खजुराहो' कहते हैं।

* सुंधा माताः
- मुख्य मंदिर - भीनमाल (जालौर)
- राजस्थान का पहला रोप-वे बनाया गया हैं।
- यहां भालू अभ्यारण्य स्थापित किया जा रहा हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

* <u>ज्वाला माताः</u>

- मुख्य मंदिर - जोबनेर (जयपुर)
- खंगारोतो की ईष्ट देवी ।

* <u>नकटी माताः</u>

जयपुर जिले में जयभवानीपुरा में मुख्य मंदिर।

* <u>दधीमति माताः</u>

- मुख्य मंदिर - गोठ मांगलोद (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी।

* <u>लटियाल माताः</u>

- कल्ला ब्राह्मणों की कुलदेवी।
- फलौदी (जोधपुर)- मुख्य मंदिर
- इन्हें खेजड़ बेरी रायभवानी भी कहते हैं।

* <u>मरकण्ड़ी माताः</u>

- नीमाज (पाली)

* <u>कठेश्वरी माता</u>

- आदिवासियों की कुलदेवी।

* <u>रानाबाईः</u>

- हरनावा (नागौर)
- मेला- भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
- एकमात्र महिला संत जो कुआरी सती हुयी।

* <u>माता रानीभटियानी</u>

- जसोल (बाड़मेर)
- मेला- भाद्रपद शुक्ल त्र्योदशी

* <u>वाकल माता</u>

- विरात्रा (बाड़मेर)

* <u>अधरदेवी/अर्बुदा</u> देवी

- माउण्ट आबू

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय

(1) **दादूदयाल:**

- जन्म स्थान - अहमदाबाद।
- 1585 ई. में आमेर के राजा भगवानदास ने दादूदयाल को फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिलाया।
- इनकी मुख्य पीठ नरैना (जयपुर) में हैं, जो दादूदयाल ने 1602 ई. में स्थापित की थी।

शाखाएं:- 1. खालसा 2. विरक्त 3. उतरादे 4. खाकी 5. नागा।

- दादू जी के 52 शिष्य थे, जिन्हें 52 स्तम्भ (थाम्बे) कहा जाता हैं।
- दूाद दयाल ने अपने उपदेश ढुँढ़ाढी भाषा में दिए।
- दादू पंथ के मंदिरों को 'दादू द्वारा' कहते हैं।
- दादूदयाल को राजस्थान का कबीर कहते हैं।
- दादू पंथी विवाह नहीं करते हैं।
- मंदिर में कोई मूर्ति नहीं होती हैं, (वाणी रखी जाती हैं)
- दादूपंथी शव को जलाते या दफनाते नहीं हैं, बल्कि पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता हैं। (वायु-दहन)
- स्वयं दादूदयाल का शव भेराणा की पहाड़ी में छोड़ दिया गया था। इस स्थान को दादू खोल या दादूपालका कहा जाता हैं।
- दादूपंथियों के सत्संग स्थल को 'अलख दरीबा' कहा जाता हैं।
- दादू ने निपख आंदोलन चलाया।

- दादूदयाल के प्रमुख शिष्य:

1. सुन्दरदास:-

- 'नागा' शाखा की स्थापना की थी।
- नागा खाशा के साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के शासकों (प्रतापसिंह) की मदद की।
- नागा साधु हथियार बंद रहते थे, इनके रहने के स्थान को छावनी कहते हैं
- सुन्दरदास की मुख्य पीठ गेटोलाव (दौसा) में हैं।

2. रज्जबजी:

- सांगानेर के पठान थे।
- दादूदयाल के उपदेश सुनकर शादी छोड़ दी, दादूदयाल जी के शिष्य बन गये, आजीवन दूल्हे के वेश में रहे।
- पुस्तके:- रज्जब वाणी, सर्वगी

(2) **जाम्भो जी:**

- जन्म स्थान:- पींपासर (नागौर)
- जाम्भो जी पंवार राजपूत थे।
- 1482 ई. में समराथल धोरे पर अपने अनुयायियों को 29 उपदेश दिए। इसलिए इनके अनुयायी विश्नाई कहलाए।
- 1526 ई. में बीकानेर जिले के मुकाम गांव में समाधि ली थी। जहां 'मुकाम' में इनका मुख्य मंदिर बना हुआ हैं।
- फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को यहां मेला भरता हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

Springboard ACADEMY

जाम्भो जी की प्रमुख शिक्षाएं:-

(1) पेड़ो की कटाई नहीं करना। (खेजड़ी) (सिर साटे रूंख रहे तो भी सस्तों जाण)

(2) जीव हिंसा नहीं करना (विशेषकर हिरण)

(3) नशा नहीं करना।

(4) विधवा विवाह करना।

(5) नीले वस्त्र का त्याग।

- जाम्भो जी ने सिकंदर लोधी से कहकर गौ-वध निषेध करवाया।
- एक बार बीकानेर क्षेत्र में अकाल पड़ने पर जाम्भो जी के कहने पर सिकंदर लोधी ने पशुओं के लिए चारा भेजा था।
- जाम्भो जी को विष्णु का अवतार माना जाता हैं।
- जोधपुर के राव जोधा व उनके बेटे बीका व बीदा, दूदा (मेड़ता) जाभों जी का सम्मान करते थे।

<u>(3) जसनाथी सम्प्रदाय:</u>

- सिकन्दर लोधी ने जसनाथ जी को बीकानेर में कतरियासर गांव की जमीन दी थी।
- कतरियासर गांव में ही जसनाथ जी ने जीवित समाधि ली थी।
- जसनाथ जी के अनुयायी 36 नियम मानते हैं।
- इनके अनुयायी काली ऊन के धागा पहनते हैं।
- मोर पंख व जाल वृक्ष को प्रमुख माना जाता हैं।
- इनके अनुयायी अग्नि नृत्य करते हैं।
- इनकी पत्नी 'काल दे' की जसनाथ जी के साथ पूजा की जाती हैं।
- मुख्य पीठ- कतरियासर
- उपदेश- सिंभूदडा एवं कोंडा ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

<u>चरणदासी सम्प्रदाय</u> (सगुण तथा निर्गुण का मिश्रण)

- चरणदास जी का जन्म अलवर जिले के डेहरा गांव में हुआ।
- इनकी मुख्य पीठ दिल्ली में हैं।
- चरणदा सी सम्प्रदाय के अनुयायी 42 नियम मानते हैं।
- चरणदास जी ने नादिरशाह के आक्रमण (1739) की भविष्यवाणी की थी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग पीले रंग के कपड़े पहनते हैं।
- इनकी एक शिष्या का नाम दयाबाई था, जिसने (1) 'दया बोध' (2) 'विनय मलिका' नामक पुस्तक लिखी।
- एक अन्य शिष्या सहजाबाई ने 'सहज प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग भगवान श्रीकृष्ण की पूजा सखी भाव से करते हैं।
- मेवात क्षेत्र के लोगों में इनका प्रभाव अधिक हैं।

<u>रामानन्दी सम्प्रदाय</u> (सगुण भक्ति)

- कृष्णदास 'पयहारी' ने गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आमेर का पृथ्वीराज कछवाहा तथा उसकी रानी बालाबाई कृष्णदास जी के भक्त थे।
- कृष्णदास जी के अन्य शिष्य अग्रदास ने सीकर जिले के रैवासा गांव में इस सम्प्रदाय की दूसरी पीठ की स्थापना की।
- इस सम्प्रदाय के लोग भगवान राम की पूजा 'रसिक नायक' के रूप में करते हैं, इसलिए इस सम्प्रदाय को

More PDF Install App - DevEduNotes

रसिक सम्प्रदाय भी कहते हैं।

- सवाई जयसिंह के समय कृष्ण भट्ट ने 'रामरासा' नामक ग्रंथ लिखा था, जिसमें भगवान राम व सीता के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन हैं।

निम्बार्क सम्प्रदाय (हंस सम्प्रदाय सगुण)

- आचार्य परशुराम ने सलेमाबाद (अजमेर) में इस सम्प्रदाय की मुख्य पीठ की स्थापना की।
- इस सम्प्रदाय के लोग राधा को भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी मानते हैं।
- राधाअष्टमी को मेला लगता हैं।

वल्लभ सम्प्रदाय (सगुण)

- वल्लभ सम्प्रदाय के लोग श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की पूजा करते हैं।
- इनके मंदिर में कपड़े के पर्दे पर कृष्ण लीलाओं का अकंन किया जाता हैं, जिसे 'पिछवाई' कहते हैं।
- राजस्थान में वल्लभ सम्प्रदाय के 41 मंदिर हैं। इनके मंदिरों को हवेली कहा जाता हैं।
- मंदिरों में गाया जाने वाला संगीत हवेली संगीत कहलाता हैं।
- वल्लभ सम्प्रदाय को पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय भी कहते हैं।
- इनके अन्य प्रमुख मंदिर-
- मथुरेश जी - कोटा
- द्वारकाधीशजी - कांकरोली
- श्रीनाथ मंदिर - सिहाड़ (नाथद्वारा)
- गोकुलचन्द्र मंदिर - कामां (भरतपुर)
- मदनमोहन मंदिर - कामां (भरतपुर)

हरिदासी सम्प्रदाय

- इसकी स्थापना हरसिंह सांखला ने की थी।
- इनका जनम नागौर के कापड़ोद गांव में हुआ था।
- इन्होंनें गाढ़ा गांव (नागौर) में समाधि ली थी।
- ये डाकू से संत बने थे।
- हरिदासी सम्प्रदाय को (निरंजनी सम्प्रदाय) भी कहते हैं।
- हरिदास जी की प्रमुख पुस्तकें- मन्त्र राज प्रकाश, हरिपुरूष जी की वाणी।।

लालदासी सम्प्रदाय

- लालदास जी का जन्म अलवर जिले के धोलीदूब गांव में हुआ था।
- इनकी मुख्य पीठ भरतपुर के नगंला जहाज में हैं।
- ये मेव जाति के लकड़हारे थे।
- प्रसिद्ध संत 'गद्दन चिश्ती' इनके गुरू थे।
- मेवात क्षेत्र में इनका प्रभाव अधिक हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

संत धन्ना

- टोंक जिले में धुवन गांव में एक जाट परिवार में इनका जन्म हुआ था।
- धन्ना भी रामानंद जी के शिष्य थे।
- इन्हें राजस्थान में भक्ति आंदोलन लाने का श्रेय जाता हैं।
- बोरानाड़ा (जोधपुर) में इनका मंदिर बना हुआ हैं।

संत पीपा

- वास्तविक नाम- प्रतापसिंह खीचीं
- गागरौन के राजा थे।
- रामानंद के शिष्य थे।
- दर्जी समाज के प्रमुख देवता।
- मुख्य मंदिर- समदड़ी (बाड़मेर)
- टोड़ा (टोंक) में पीपा की गुफा हैं।
- गागरौन में छत्री हैं।

संत मावजी

- इनका जन्म डुंगरपुर जिले के सावला गांव में हुआ था।
- इन्होंनें 'निष्कंलकी सम्प्रदाय' चलाया।
- इनमें भगवान श्रीकृष्ण की निष्कंलकी रूप में पूजा की जाती हैं।
- इन्होंनें बेणेश्वर धाम (डुंगरपुर) की स्थापना की।
- इनके ग्रन्थ का नाम 'चौपड़ा' हैं, जिसमें तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की हुई हैं, (वागड़ी भाषा में लिखा।)

- **अलखिया सम्प्रदाय**
- इसकी स्थापना स्वामी लाल गिरी जी ने चूरू में की थी।
- बीकानेर में इनकी प्रमुख पीठ हैं।
- अलख स्तुति प्रकाश इनका प्रमुख ग्रन्थ हैं।

नवल सम्प्रदाय

- इसकी स्थापना नवल सागर ने नागौर के हर्षोलाव में की थी। इनका मुख्य ग्रन्थ्ज्ञ नवलेश्वर अनुभव वाणी हैं।

बालनन्दा चार्य

- ये औरंगजेब के समकालीन थे।
- 52 मूर्तियों को सुरक्षित स्थान पर पंहुचाया।
- इन्होनें दुर्गादास राठौड़, राजसिंह व शत्रुशाल की सेना भेजकर सहायता की थी।
- इन्हें लश्कर (सेना) संत भी कहते हैं।
- मुख्य पीठ- लोहार्गल (झुन्झुनुं)

राजाराम

- पटेल जाति के लोग इनमें विशेष आस्था रखते हैं।
- मुख्य पीठ- शिकारपुरा (जोधपुर)
- पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया।

More PDF Install App - DevEduNotes

<u>रामस्नेही सम्प्रदाय</u>

- रामस्नेही संप्रदाय की राजस्थान में प्रमुख चार पीठ-

(1) शाहपुरा- (भीलवाड़ा)
- स्थापना रामचरण जी ने की थी।
- रामचरण जी के उपदेश 'अणभैवाणी' नामक ग्रंथ में संकलित हैं।
- शाहपुरा में होली के दूसरे दिन 'फूलडोल का मेला' भरता हैं।

(2) रैण (नागौर)
- इस पीठ की स्थापना दरियाव जी ने की थी।

(3) सींथल बीकानेर
- इस पीठ की स्थापना हरिराम जी ने की थी।
- ग्रंथ का नाम- निशानी इस ग्रंथ में यौगिक क्रियाओं का उल्लेख हैं।

(4) खेड़ापा (जोधपुर)
- इस पीठ की स्थापना रामदास जी ने की थी।
- ये हरिरामदास जी (सींथल) के शिष्य थे।
- संत जैमलदास को सींथल व खेड़ापा शाखा का आदि-आचार्य कहा जाता हैं।

- राम स्नेही सम्प्रदाय के लोग निर्गुण राम की पूजा करते हैं।
  (यहां राम से तात्पर्य दशरथ पुत्र राम से नहीं हैं।)
- रामस्नेही सम्प्रदाय के मंदिरों को रामद्वारा कहते हैं।
- रामस्नेही सम्प्रदाय के संत गुलाबी रंग की चादर पहनते हैं।

<u>संत मीरा</u>
- मीरा का जन्म पाली जिले के कुड़की गांव में हुआ था।
- पिता का नाम - रत्नसिंह
- दादा का नाम - दूदा (जोधा का बसे छोटा बेटा)
- मीरा की शादी मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुयी थी।
- अपने पति के मृत्यु के बाद मीरा मेवाड़ से वापस मेड़ता आ गयी थी, फिर वहां से वृंदावन चली गयी थी। फिर वृदांवन से द्वारिका चली गयी थी।
- ऐसा कहा जाता हैं कि मीरा द्वारिका के राणछोड़ मंदिर की मूर्ति में विलीन हो गयी।
- मीरा सगुण श्रीकृष्ण की पति के रूप में पूजा करती थीं
- मीरा ने रैदास (रामान न्द के शिष्य) को अपना गुरू बनाया, रैदास की छतरी चित्तौड़ में बनी हुई हैं।
- रैदास के उपदेश 'रैदास की परची' नामक ग्रंथ में संकलित हैं।
- मीरा की पुस्तकें:- (1) गीत गोविन्द (2) रूक्मणि मंगल (3) सत्यभामा नू रूसणों
- रतना खाती के सहयोग से नरसी जी रो मायरो नामक पुस्तक लिखी।
- महात्मा गांधी मीरा को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने वाली सत्याग्रही महिला के रूप में देखते थे।
- मीरा को राजस्थान की राधा कहते हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

भक्त कवि दुर्लभः-

- प्रमुख प्रभाव क्षेत्र वागड़ रहा हैं।
- भक्त कवि दुर्लभ को 'वागड़ का नृसिंह' कहते हैं।

नरहडपीरः-

- वास्तविक नाम- हजरत शक्कर बाबा।
- सलीम चिश्ती 'जिसके आशीर्वाद से जहांगीर पैदा हुआ था' नरहड़ पीर के शिष्य थे।
- कृष्ण जन्माष्टमी के दिन इनका उर्स लगता हैं।
- साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जाने जाते हैं।
- इन्हें 'बागड़ का धणी' कहते हैं

गवरी बाई

- गवरी बाई- 'वागड़ की मीरां'
- डूंगरपुर के राजा शिवसिंह ने इनके लिए बालमुकुन्द मंदिर बनवाया था।

राजस्थान के लोकगीत

- केसरिया बालमः- राज्य गीत, यह एक रजवाडी गीत हैं, जिसमें पति का इंतजार करती, पत्नी की विरह-व्यथा का वर्णन हैं।
- मोरियोः- उस लड़की द्वारा गाया जाने वाला गीत जिसका सम्बन्ध तय हो चुका हैं लेकिन शादी नहीं हुई।
- सूवटियोंः- परदेस गये पति के पास तोते के माध्यम से संदेश भेजती भील महिला का गीत।
- कुरजाँः- परदेस गये पति से मिलन की कुरजां से की गयी गुजारिश।
- कागाः- कागा को उड़ाकर पत्नी अपने पति के आगमन का शगुन बनाती हैं।
- पपैयोंः- पत्नी एवं पति के बीच आदर्श दाम्पत्य प्रेम का सूचक।
- पीपलीः- विरह गीत, इसमें पत्नी द्वारा पति से परदेश न जाने की विनती। मारवाड़ व शेखावाटी में तीज पर गाया जाता हैं।
- कामणः- वर को जादू - टोने से बचाने के लिए गाये जाने वाले गीत।
- सीठणेः- विवाह आदि अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गाली गीत।
- गोरबन्दः- ऊँट के गले का एक आभूषण (शेखावाटी क्षेत्र में इसे बनाते समय गाने जाने वाला गीत)
- चिरमीः- ससुराल में अपने पिता भाई की प्रतीक्षा करती वधू द्वारा गाया जाने वाला गीत।
- बधावाः- शुभ कायों के सम्पन्न होने पर गाया जाने वाला गीत।
- पावणाः- दामाद के ससुराल आने पर गाया जाने वाला गीत।
- हमसीढ़ोः- भील महिला, पुरूषों द्वारा गाया जाने वाला गीत।
- पणिहारीः- अपने पतिव्रत धर्म पर अटल स्त्री का गीत।
- बिच्छूड़ोंः- हाड़ौती क्षेत्र का लोक गीत।
- हिचकीः- मेवात क्षेत्र का लोक गीत।
- ढोलामारूः- सिरोही क्षेत्र का लोकगीत।

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान की लोक गायन शैलियां

1. **मांड**:- जैसलमेर क्षेत्र का प्राचीन नाम अतः यहां विकसित लोक गायन शैली मांड कहलायी जो कालान्तर में राजस्थान में विभिन्न भागों में लोकप्रिय हुई। केशरिया बालम इसी शैली का लोकगीत हैं।
   - प्रमुख कलाकारः- 1. अल्लाह जिलाई बाई (बीकानेर) 2. गवरी बाई (बीकानेर) 3. गवरी बाई (पाली) 4. मांगी बाई (उदयपुर) 5. जमिला बानो (जोधपुर) 6. बन्नो बेगम (जोधपुर)
2. **मांगणियार**:- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में मांगणियार जाति द्वारा विकसित लोक गायन शैली।
   - प्रमुख कलाकार- सद्दीक खां (खड़ताल का जादूगर), साकर खां (कमायचा वादक)
3. **लंगा**:- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में लंगा जाति द्वारा विकसित लोक गायन शैली।
   - मुख्य वाद्य यंत्र- कमायचा, सारंगी
   - मुख्य गीत- निम्बुड़ा
4. **तालबंदी**:- करौली, सवाई माधोपुर, भरतपुर क्षेत्र के साधु महात्माओं द्वारा विकसित लोक गायन शैली।
   - मुख्य वाद्य यंत्रः- नगाड़ा।

राजस्थान के लोक-नृत्य

घूमर:-

. राजस्थान का राज्य नृत्य।
. नृत्यों का सिरमौर।
. राजस्थान की आत्मा।
. केवल महिलाओं द्वारा किया जाता हैं, विवाह एवं मांगलिक अवसरों पर विशेषतः गणगौर
. घूमर में हाथों का लचकदार संचालन आकर्षक होता हैं।
. लहंगें के घूम के कारण ही इसे घूमर कहा जाता हैं।
. इसमें विशेष 8 चरण होते हैं, जिन्हें सवाई कहते हैं
. ढ़ोल, नगाड़ा, शहनाई वाद्य यत्रों का प्रयोग किया जाता हैं।
. इसे रजवाड़ी लोक नृत्य कहा जाता हैं। (राज परिवारों में विशेषतः)

कच्छी घोड़ी:-

. शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य (व्यावसायिक नृत्य)
. केवल पुरूषों द्वारा किया जाता हैं।
. चार - चार पंक्तियों में पुरूष आमने-सामने खड़े होकर नृत्य करते हैं
. नृत्य करते समय फूल की पंखुड़ियों के खिलने का आभास होता हैं।
. इसमें नृतक हाथ में तलवार रखते हैं।

अग्नि नृत्य:-

. जसनाथी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता हैं।
. बीकानेर का कतरियासर गांव इसका मुख्य स्थल हैं।
. नृत्य करते समय आग से मतीरा फोड़ना, तलवार के करतब दिखाना प्रमुख हैं।
. नृत्य करते समय नृतक फते-फते बोलता हैं।
. आग के साथ राग व फाग का सुन्दर समन्वय दखेने को मिलता हैं।
. बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य को संरक्षण प्रदान किया।

Springboard Academy
More PDF Install App . DevEduNotes

गींदड़ नृत्यः–
. शेखावाटी क्षेत्र का लोक नृत्य (नगाड़ा प्रमुख वाद्य यंत्र)
. माघ पूर्णिमा (होली का डंडा रोपण) से इसकी शुरूआत हो जाती हैं और फिर होली तक चलता रहता हैं।
. गींदड़ केवल पुरूषों द्वारा किया जाता हैं।
. पुरूष के द्वारा महिला वस्त्र पहनकर किया जाने वाला नृत्य– गणगौर कहलाता हैं।

भवाई नृत्यः–
. उदयुपुर क्षेत्र में किया जाने वाला व्यावसायिक नृत्य।
. इस लोक नृत्य में तलवारों ना नाचना मुंह से रूमाल उठाना, थाली के किनारों पर नाचना, गिलासों पर नाचना, सिर पर सात – आठ मटके रख कर नृत्य आदि करतब किये जाते हैं।

चरी नृत्यः–
. किशनगढ़ क्षेत्र में।
. गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाता है।
. सिर पर सात चरी रखकर, सबसे ऊपर की चरी में कपास के बीजों को जलाकर नृत्य किया जाता हैं।
. फलकू बाईः– प्रसिद्ध नृत्यांगना

तेरह ताली नृत्यः– उद्‌गम स्थल– पादरला (पाली)
. कामड़ जाति / पंथ (रामदेव जी के भक्त) की महिलाओं द्वारा किया जाता हैं।
. इसमें नौ मंजिरे दायें पैर में बांधे जाते हैं।
. 2 मंजिरे कोहनी के ऊपर दोनों हाथों में तथा दो मंजिरे एक – एक हाथ में लिए जाते हैं।
. महिलाएं बैठ कर नृत्य करती हैं।
. मांगी बाई– प्रसिद्ध नृत्यांगना।
. वाद्य यंत्र– मंजीरा, तानपूरा, चौतारा।

ढ़ोल नृत्यः–
. जालौर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य
. ढ़ोली, माली, भील, सरगड़ा आदि जातियों में पुरूषों द्वारा मांगलिक अवसरों पर किया जाता हैं।
. थाकना शैली में नृत्य किया जाता हैं।
. जयनारायण व्यास द्वारा कलाकारों को प्रोत्साहन दिया गया।

बम नृत्यः–
. अलवर, भरतपुर, धौलपुर क्षेत्रों में फसल की कटाई के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य।
. इसमें नगाड़े को बम किया जाता हैं।
. इसमें गायन को रसिया कहा जाता हैं, इसलिए इस नृत्य को बम रसिया भी कहा जाता हैं

घुड़ला नृत्यः– (जोधपुर के राजा सातल की याद में।)
. मारवाड़ क्षेत्र में शीतलाष्टमी से गणगौर तक किया जाता हैं।
. छिद्रित मटके में दीपक रखकर लड़किया डांस करती हैं।
. मणिशंकर गांगुली, देवीलाल सामर, कोमल कोठारी,– ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान किया।

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

बिंदौली नृत्य:–

. झालावाड़ क्षेत्र का लोक नृत्य।

. होलीह के अवसर पर किया जाता हैं।

चंग नृत्य:–

. शेखावटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरूषों द्वारा किये जाने वाला नृत्य।

डांग नृत्य:–

. नाथद्वारा क्षेत्र में होली के अवसरों पर किया जाता हैं।

जनजातियों के नृत्य:–

भील जनजाति:

1. **गैर**:– मेवाड़ क्षेत्र में भील पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य।
 – मारवाड़ में यह लोक नृत्य सभी सम्प्रदाय द्वारा किया जाता हैं।
 – मुख्य केन्द्र– कनाना (बाड़मेर)
 – ओंगी नामक वस्त्र पहनकर नृत्य किया जाता हैं।

2. **गवरी नृत्य**:–

. मेवाड़ में भील पुरूषों द्वारा किया जाना वाला लोक नृत्य।

. भाद्रपद कृष्ण एकम् (रक्षाबन्धन से एक दिन बाद) से शुरू होकर 40 दिन तक चलता हैं।

. इसमें गवरी पार्वती का प्रतीक हैं।

. इसे राई नृत्य भी कहते हैं।

3. **हाथीमना**:–

– भील पुरूषों द्वारा विवाह के अवसर पर घूटनों के बल बैठकर किया जाता हैं।

4. **नेजा**:– भील व मीणा जनजाति के लोक नृत्य। लकड़ी के डंडे पर नारियल बांधा जाता हैं। महिलाऐं उसकी रक्षा करती हैं तथा पुरूष उतारने की कोशिश करता हैं।
5. **घुमरा**:– बांसवाड़ा क्षेत्र की महिलाओं द्वारा।
6. **युद्ध**:–
7. **द्विचकरी**:–

गरासिया जनजाति:

1.**वालर नृत्य**:– (विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर किया जाने वाला)

. महिला पुरूष दोनों भाग लेते हैं।

. वालर नृत्य में किसी भी वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता हैं।

. नृत्य करते समय महिला – पुरूष अर्द्धवृत बनाते हैं।

2. मांदल:–
3. लूर:–
4. कूद:–
5. **जवारा**:– महिलाओं द्वारा होली का दहन के समय।
6. मोरिया:– पुरूषों द्वारा विवाह के समय।
7. गौर:–

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

कालबेलिया जनजातिः–

1. चकरीः– गुलाबो (प्रसिद्ध नृत्यागंना)
2. शंकरियाः– प्रेम कहानी पर आधारित युगल नृत्य।
3. बागड़ियाः– भीख मांगते समय महिलाओं द्वारा।
4. पणिहारीः–
5. इंडोणीः–

मेव: रणबाजा, रतवई

सहरिया: शिकारी नृत्य

कथौड़ी: जनजातिः मावलिया नृत्य (पुरूषों द्वारा नवरात्रा के समय), होली नृत्य (महिलाओं द्वारा फडका साड़ी पहनकर पिरामिड बनाया जाता हैं।)

कजंर:– चकरी (महिला), धाकड (पुरूष)

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान की चित्रकला

- ब्राउन महोदय ने राजस्थान की चित्रकला को 'राजपुत कला' कहा।
- H.C. मेहता - 'हिन्दू शैली'
- आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 में लिखी अपनी पुस्तक 'Rajput Paintings' में राजस्थान की चित्रकला को राजपूत चित्र शैली कहा तथा इस राजपूत चित्र शैली में पहाड़ी शैली (हिमाचल प्रदेश) को भी शामिल कर लिया।
- रामकृष्ण दास- राजस्थानी चित्रकला
- मेवाड़ को राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि कहा जाता हैं।
- राजस्थान के सबसे प्राचीन चित्र जैसलमेर के जिनभद्र सूरी भंडार में संग्रहीत हैं।
- मुख्य प्राचनी चित्र:(1) ओद्य नियुक्ति वृत्ति (2) दस वैकालिक सूत्र चूर्णि - जैन ग्रन्थ

Note- जैनों ने सबसे पहलेकागज पर चित्र तथा क्षेत्रीय भाषा में लिखना शुरू किया।

- भौगौलिक व सांस्कृतिक आधार पर राजस्थान की चित्रकला को 4 भागों में बांटा जाता हैं।

(1) मेवाड़ शैली- चावण्ड, देवगढ़, नाथद्वारा
(2) मारवाड़ शैली- जाधेपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर, नागौर, जैसलमेर
(3) ढुंढ़ाड़ शैली- जयपुर, अलवर, उणियारा, शेखावाटी
(4) हाड़ौती शैली- कोटा, बूंदी

(1) <u>मेवाड़ शैली</u>:-

- 1260 ई. में रावल तेजसिंह के समय आहड में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- 1423 ई. में मोकल के समय देलवाडा में 'सुपार्श्वनाथ चरित्र' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- महाराणा कुम्भा ने भी मेवाड़ की चित्रकला में अपना योगदान दिया था।
- महाराणा प्रताप के समय चावण्ड से मेवाड़ की चित्रकला शैली का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ होता हैं।
- इस समय ढ़ोला-मारू का चित्र चित्रित किया गया, जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में रखा हुआ हैं।
- महाराणा अमरसिंह के समय इस चित्रकला शैली का विकास अग्रसर होता हैं। नासिरद्दीन नामक एक चित्रकार ने 'रागमाला' का चित्रण किया।
- इसके बाद बारहमासा का चित्रण किया गया।
- महाराणा जगतसिंह के समय को मेवाड़ की चित्रकला का स्वर्णकाल कहते हैं।
- जगतसिंह ने 'चितेरो की ओबरी' का निर्माण करवाया। चितेरी की ओबरी को 'तस्वीरां रो कारखानों' भी कहते हैं।
- जगतसिंह के समय साहिबदीन नामक एक चित्रकार ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाए।
- महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय कलीला-दमना व मुल्ला दो प्याजा के लतीफे ग्रन्थों के चित्र चित्रित किए।
- महाराणा जगतसिंह द्वितीय के समय नुरूद्दीन नामक चित्रकार ने जगतसिंह द्वितीय का चित्र बनाया।
- इस शैलीह में शिकार के दृश्यों की चित्रकारी में त्रि-आयामी प्रभाव दिखायी देता हैं।
- मनोहर व कृपाराम इस शैली के अन्य चित्रकार थे।
- कदम्ब वृक्ष का अधिक चित्रण किया गया हैं।

<u>देवगढ़</u>:-

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- 1680 ई. में महाराणा जयसिंह ने द्वारिकादास चूंडावत को देवगढ़ ठिकाणा दिया था।
- यहीं से चित्रकला की देवगढ़ शैली प्रारम्भ होती हैं।
- देवगढ़ शैली में मोड मारवाड व आमरे तीनों शैलियों का प्रभाव दिखायी देता हैं।
- श्रीधर अंघारे ने इस शैली को प्रकाश में लाने का काम किया।
- देवगढ़ शैली में अघारा की ओबरी व मोतीमहल के भित्ति चित्र देवगढ़ शैली के प्रमुख आहरण हैं।
- हरे व पीले रेंगों का अधिक प्रयोग किया गया हैं।

नाथद्वारा:-
- पिछवाई चित्रण नाथद्वारा शैली की मौलिक विशेषता हैं।
- केले के वृक्षों की प्रधानता हैं।

मारवाड़ शैली:-

जोधपुर
- मालदेव के समय यह चित्र शैली प्रारम्भ हुई।
- चोखेला महल में भित्ति चित्र बनाए गए। (राम-रावण युद्ध के दृश्य)
- उतराध्ययन सूत्र नामक ग्रन्थ चित्रित किया गया।
- महाराजा सूरसिंह के समय ढ़ोला-मारू व भागवत पुराण चित्रित किए गए।
- 1623 ई. में वीरजी (विठुलदास चाम्पावत) ने 'रागमाला' का चित्रण किया।
- महाराजा जसवंतसिंह के समय चित्रकला में मुगल प्रभाव आ गया था।
- इस समय कृष्ण लीलाओं के चित्र अधिक चित्रित किए गए।
- मानसिंह के समय नाथों का प्रभाव अधिक था, अत: शैव सम्प्रदाय से सम्बन्धि चित्र अधिक चित्रित हुए।
- पुस्तकें:- नाथ चरित्र, शिव पुराण, दुर्गा चरित्र
- महाराजा तख्तसिंह के समय यूरोपीय प्रीाव आ जाता हैं।
- K. K. MULER नामक एक चित्रकार ने दुर्गादास राठौड़ का घोड़े पर बैठकर भाले से रोटी सेंकते हुए चित्र बनायाा हैं।
- "चौबीस घड़ी, आठ पहर, घुडले ऊपर वास। सेल अणी सुं सेकतो, बाटी दुर्गादास"
- जोधपुर शैली में प्रेम कहानियां अधिक चित्रित की गयी।
- जैसे - ढ़ोला-मारू, महेन्द्र-मुमल, वीरमदेव सोनगरा आदि।
- इन शैली में बादलों का अधिक चित्रण किया गया।
- लाल व पीले रंगों का अधिक प्रयोग हुआ हैं।
- हासिये में भी पीले रंग का अधिक प्रयोग हुआ हैं।

बीकानेर शैली
- महाराजा रायसिंह के समय प्रारम्भ हुई भागवत पुराण विचित्र करवाया गया।
- महाराजा अनूपसिंह का समय चित्रकला शैली का स्वर्णकाल कहा जाता हैं।

उस्ता कला:-
- महाराजा अनूपसिंह लाहौर से अली रजा, रूक्नुद्दीन नामक दो कलाकारों को लेकर आए, जिन्होनें बीकानेर में उस्ता कला प्रारम्भ की।
- उस्ता कला में ऊंट की खाल पर सोने की चित्रकारी की जाती हैं।
- हिसामुद्दीन उस्ता को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका हैं।
- बीकानेर के 'कैमल हाईड् ट्रेनिगं सेन्टर' में उस्ता कला सिखायी जाती हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

मथेरणा कला:-

- जैनों की एक उपजाति
- गीले प्लास्टर पर चित्र बनाए जाते हैं
- इसे फ्रेस्को कहते हैं।
- इसे अराथरा भी कहते हैं।
- शेखावाटी क्षेत्र में पणा कहा जाता हैं।
- बीकानेर की चित्र कला शैली में पंजाबी, दक्कनी व मुगल तीनों प्रभाव दिखायी देते हैं।
- बीकानेर शैली की प्रमुख विशेषता मुस्लिम चित्रकारों द्वारा हिन्दू पौराणिक चित्रों का अंकन किया जाना हैं।
- ''तेरा सारा जहर उतर जाएगा, दो दिन मेरे शहर में रह कर तो देख''
- बीकानेर के चित्रकार चित्र के साथ अपना नाम व तिथि अंकित करते थे।

किशनगढ़ शैली:-

- 'फैयाज अली व एरिक डिक्सन' इस शैली को प्रकाश में लाए।
- महाराजा सावन्तसिंह का समय किशनगढ़ शैली का स्वर्णकाल कहा जाता हैं।
- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रीाव अधिक होने के कारण कृष्ण - लीलाओं का चित्रण करवाया।
- इसी रसिक बिहारी की तस्वीर को बणी-ठणी कहा जाता हैं, जिसका चित्रकार 'मोरध्वज निहालचन्द' था।
- एरिक डिक्सन ने इसे 'भारत की मोनालिसा' कहा हैं।
- एक दूसरा प्रमुख चित्र चांदनी रात की गोष्ठी हैं जिसका चित्रकार अमीरचन्द था।
- किशनगढ़ शैली में कांगड़ा शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता हैं।
- नारी सौन्दर्य का अधिक चित्रण हुआ हैं।
- नारी पात्रों के नाक में बाली इस शैली की प्रमुख विशेषता हैं

अजमेर शैली:-

- साहिबा नामक एक महिला चित्रकर का नाम मिलता हैं।

नागौर शैली:-

- इस शैली में बुझे हुए रंगों का अधिक प्रयोग किया जाता था।
- पारदर्शी वेशभूषा इस शैली की विशेषता हैं।

जैसलमेर:-

- मूमल का चित्रण अधिक हुआ हैं।
- जैसलमेर के चित्रों पर किसी अन्य शैली का प्रभाव नजर नहीं आता हैं।
- बणी-ठणी पर 1973 में डाक-टिकट जारी किया गया।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

ढुँढाढ शैली:-

- ढुँढ़ाढ

जयपुर:-

- मुगल शैली का सर्वाधिक प्रभाव दिशखायी देता हैं।
- महाराजा मानसिंह के समय यशोदा का चित्र बनाया गया।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने - बिहारी सतसई , कृष्ण रूक्मणि, गीत गोविन्द, आदि के चित्र अपनी रानी चन्द्रावती के लिए बनवाए।
- सवाई जयसिंह ने आमरे में सूरतखाने की स्थापना की।
- महाराजा ईश्वरीसिंह के समय साहिबराम नामक एक चित्रकार ने आदमकद चित्र बनाए।
- माधोसिंह के समय भित्ति चित्र अधिक बनाए गए।
- 'पुण्डरीक हवेली' के भित्ति चित्र प्रमख हैं।
- प्रतापसिंह का समय जयपुर चित्रकला शैली का स्वर्णकाल था।
- इस समय लालचंद नामक एक चित्रकार ने पशुओं की लड़ाई के दृश्य बनाए।
- विशेषताएं :- आदमकद चित्रण, भितिचित्रण, उद्यान चित्रण, हाथियों का चित्रण

अलवर शैली:-

- महाराजा विनयसिंह का समय अलवर शैली का स्वर्ण काल था।
- बलदेव नामक एक चित्रकार ने शेखवादी की पुस्तक 'गुलिस्ता' का चित्रण किया।
- अलवर शैली में वेश्याओं के चित्र सर्वाधिक बनाए गए।
- महाराजा शिवदान सिंह के समय 'कामशास्त्र' का चित्रण हुआ।
- मूलचन्द नामक एक चित्रकार हाथीदांत पर चित्रकारी करता था।
- विशेषता:- लघु चित्रणा, योगासन के चित्र, हासिये में बेल - बूटों का प्रयोग।
- राजगढ़ के महलों में शशमहल का चित्रण राव बख्तावरसिंह के द्वारा करवाया गया, यहीं से चित्रकला की अलवर शैली का विकास हुआ।

उणियारा शैली:- (टोंक)

- कछवाओं की 'नरूका शाखा' का प्रमुख ठिकाणा।
- यहां ढुँढ़ाढ़ व बूंदी शैली का प्रभाव/तमन्वय देखने को मिलता हैं।
- चित्रकार - धीमा, भीम, मीरबख्श, काशी, राम लखन

शेखावाटी शैली:-

- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
- कम्पनी शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता हैं।
- नीले व हरें रंगों का अधिक प्रयोग किया गया।
- उदयपुरवाटी में जोगीदास की छतरी भित्ति चित्रों को लिए प्रसिद्ध हैं। इन भित्ति चित्रों का चित्रकार 'देवा' था।
- पतेहपुर की गोयनका हवेली के भित्ति चित्र भी आकर्षक हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

हाड़ौती शैलीः-

बूंदीः-

- राव सुरजन के समय यह शैली प्रारम्भ हुई थी।
- राव रतनसिंह के समय दीपक व भैरवी राग पर चित्र बनाये गये।
- शत्रुसाल के समय रंगमहल का निर्माण करवाया गया जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- उम्मेदसिंह का समय बूंदी चित्रकला शैली का स्वर्ण काला कहा जाता हैं। इन्होंनें बूंदी के किले में चित्रशाला का निर्माण करवाया, जिसे भिति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं।

विशेषताः-

- पशु-पक्षी व प्रकृति चित्रण।
- मेवाड़ शैली का अधिक प्रभाव दिखायी देता हैं।

कोटाः-

- महाराव रामसिंह के समय शुरू हुयी थी।
- भीमसिंह के समय कृष्ण लीलाओं का अधिक अंकन हुआ हैं।
- उम्मदेसिंह का समय कोटा-शैली का स्वर्णकाल माना जाता हैं।
- 'डालू' नामक एक चित्रकार ने रागमाला को चित्रित किया।
- प्रमुख विशेषता- शिकार के दृश्य
- महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया गया हैं।
- नारी सौन्दर्य का सबसे अधिक चित्रण कोटा शैली में हुआ हैं।

प्रमुख आधुनिक चित्रकारः-

(1) रामगोपाल विजयवर्गीः-

- राजस्थान के सबसे अग्रणी चित्रकार।
- सबसे पहले एकल चित्र प्रदर्शनी लगानी शुरू की।
- इनके गुरू का नाम शैलेन्द्र नाथ डे।
- साहित्यिक रचनाः- 'अभिसार निशा'

(2) गोवर्धन लाल बाबाः-

- भीलों का चितेरा
- प्रमुख चित्र :- बारात

(3) कुन्दनलाल मिस्त्रीः-

- इन्होनें महाराणा प्रताप का चित्र बनाया।
- राजा रवि वर्मा ने कुन्दन लाल मिस्त्री के चित्रों को देखकर महाराणा प्रताप का चित्र बनाया। राजा रविवर्मा (केरल) को 'भारतीय चित्रकला का पितामह' कहा जाता हैं।

(4) सौभाग्यमल गहलोतः-

- इन्हें नीड़ का चितेरा कहते हैं।

(5) परमानन्द चोयलः-

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- इन्हें भैंसों का चितेरा कहते हैं।

(6) जगमोहन मायोडिया:-

- इन्हें स्वान का चितेरा कहते हैं।

(7) भूरसिंह शेखावत:
- इन्होनें देशभक्त व क्रांतिकारियों के चित्र बनाए।
- इनके चित्रों में राजस्थानी अंश अधिक पाया जाता हैं।

(8) ज्योतिस्वरूप कच्छावा:
- चित्र INNER JUNGLE

(9) देवकीनन्दन शर्मा:-
- इन्हें 'The Master of Nature and Living Object' कहते हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के दुर्ग

(1) गागरौन का किला :-

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध व आबू नदियों के किनारे स्थित हैं।
- गागरौन का किला एक जलदुर्ग हैं।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे डोडगढ़ भी कहते हैं। इसे धूलरगढ़ भी कहते हैं।
- देवेनसिंह खीची ने बजीलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पद्रुम के अनुसार)

जैत्रसिंह

- 1303में। जैत्रसिंह के समय अलाउदीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहब' के नाम से जानते हैं इनकी दरगाह गागरौण के किले में बनी हुयी हैं।

प्रतापसिंह

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं।
- इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरौण पर विफल आक्रमण किया था।
- संत पीपा की छतरी गागरौण में बनी हुयी हैं।

अचलदास

- 1423 ई. में मालवा का सुलतान होशगंशाह गागरौन पर आक्रमण करता हैं। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता हैं।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता हैं।
- लाला मेवाड़ी ने नेतृत्व में जौहर किया जाता हैं।
- अचलदास खीची की अन्य रानी का नाम - उमा सांखला (जांगलू)
- शिवदास गाडण ने 'अचलदास खीची री वचनिका' नामक ग्रन्थ लिखा हैं।

पाल्हणसिंह (अचलदास का बेटा, कुम्भा का भांजा)

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता हैं।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज दवे को भेजकर पाल्हणसिंह की सहायता करता हैं।
- इस समय गागरौण के किले का दूसरा साका होता हैं। महमूद खिलजी ने गागरौण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता हैं और फैजी इससे मुलाकात करता हैं।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रूक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहां ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया थां
- कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहां मधुसुदन का मंदिर बनवाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहां जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहां बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- इस किले में एक जौहर कुंड अंधेरी बावड़ी हैं यहां बंदियों को सजा दी जाती थी।
- गागरौण का किला बिना नीव के (चट्टानों पर) खड़ा हैं।
- कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

(2) चित्तौड़गढ़ का किला:-
- दुर्गो का सिरमौर
- दुर्गो का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- 'ओ गढ़ नीचो किम झुकै, ऊँचों जस गिर वास। हर झाटै जौहर जठै, हर भाठे इतिहास'
- इस किले का निर्माण चित्रागंद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)
- 743 ई. में बापा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चितौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा हैं। यह राजस्था का सबसे बड़ा आवासीय किला हैं।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए। 1. 1303 ई. में 2. 1535 ई. 3. 1568 ई. में।
- कुम्भा नें कुम्भश्याम। कम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने (समिद्धेश्वर) मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भंडार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में :- रत्नेश्वर तालाब, भीमलत तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख हैं।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ हैं।
- धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएं हैं।
- यह किला गम्भीरी व बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ हैं।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें विजयस्तम्भ (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ हैं।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत हैं, जिसपर 15 अगस्त 1949 को एक रूपये का डाक टिकट जारी किया गया था।

(3) कुम्भलगढ़ का किला:-
- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. के बीच करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार मडंन था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड का सीमा प्रहरी कहते हैं
- अत्यधिक ऊँचाई पर बना हुआ होने के कारण अबुल-फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती हैं।
- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ हैं, जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को मेवाड़ की आंख कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में उद्धा ने कुम्भा की हत्या (मामदेव कुंड के पास) की थी।
- उड़नाराजकुमारा पृथ्वीराज की छतरी बनी हुयी हैं। (12 खम्भों की)
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ के किले में आयी थी उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।

More PDF Install App - DevEduNotes

- प्रताप ने भी अपना शुरूआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ के शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआा हैं।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ हैं।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई - 36 किलोमीटर हैं।
- चौड़ाई इतनी हैं कि आठ घोडे समानान्तर दौड़ सकते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना (यूरोप) के एट्रुस्कन' से की हैं।

(4) रणथम्भौर का किला:-
- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित।
- 8 वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित।
- गिरि व वन दोनों दुर्गो की विशेषता रखता हैं।
- अबुल फजल:-
- 'बाकी सब किले नंगे हैं, पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद हैं।'
- हम्मीर के समय जलालुदीन खिलजी ने यहां एक विफल आक्रमण किया था। इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था।
- ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- 1301 ई.' में अलाउदीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका (हम्मीर के नेतृत्व में) हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध हैं।
- ''रण लडियों रण नीति सुं, रणथल रणथम्भौर। हठ राख्यौ हम्मीर रो, कट-कट खांगा कोर।।''
- इस किले में जोगी महल, सुपारी महल, रणत भंवर गणेश जी का मंदिर (शादी की पहली कुमकुमपत्री याहं भेजी जाती हैं।), पद्म तालाब, जौरा-भौंरा महल, पीर सद्रूदीन की दरगाह।
- अकबर कालीन टकसाल यहां स्थित हैं।

मेहरानगढ़:-
- यह किला जोधपुर में मयूर आकृति में बना हुआ हैं, इसलिए इसे मयूर ध्वज गढ़ भी कहते हैं।
- इस किले का निर्माण राव जोधा ने 1459 ई. में करवाया था।
- इस किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मेहरानगढ़ किले की नींव में राजाराम नामक व्यक्ति की बलि दी गयी थी।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था। तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मालदेव ने किले में लोहा पोल का निर्माण करवाया था।
- अजीतसिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोल का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में पोल का निर्माण करवाया। (इस पोल के दरवाजे निमाज का ठाकुर 'अमरसिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था।)
- मेहरानगढ़ के किले में 'कीरतसिंह सोढ़ा' की छतरी बनी हुयी हैं।
- धन्ना- भींवा की छतरी बनी हुयी हैं। (मामा-'भान्जा की छतरी)
- महाराजा सूरसिंह ने मोती महल का निर्माण करवाया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- सूरसिंह ने ही एक तलहटी महल (अपनी रानी सौभाग्यवती के लिए) बनवाया।
- जैसलमेर दुर्गः-
- जैसलमेर के राजा जैसल ने 1155ई. में इस किले का निर्माण करवाया।
- ''गढ़ दिल्ली गढ़; आगरों, अर गढ़ बीकानेर। भलो चिणायों भाटियां, सिरे गढ़ जैसलमेर''
- जैसलमेर के किले में 77 बुर्जे बनी हुयी हैं।
- जैसलमेर का किला त्रिभुजाकार (त्रिकुट) आकृति में बना हुआ हैं।
- ''दूर से देखने पर ऐसा लगता हैं मानों रेत के समन्दर में जहाज ने अपना लंगर डाल रखा हो।''
- जैसलमेर का किला अंगडाई लेते शेरे के समान प्रतीत होता हैं।
- जैसलमेर के किले को 'स्वर्णगिरी का किला' कहते हैं। इसे सोनार का किला भी कहते हैं।
- सत्यजीत रे 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।
- जैसलमेर के किले में दोहरा परकोटा बना हुआ हैं, जिसे कमर कोट कहा जाता हैं।
- जैसलमेर का किला अपने ढ़ाई साको के लिए प्रसिद्ध हैं।
- अबुल फजल ने कहा था- पत्थर की टांगे ही आपको जैसलमेर के किले तक पहुंचा सकती हैं।
- ''शरीर किजे काठ रा, पग कीजे पाषाण। बक्ष्तर कीजे लौह का, तब पंहुचे जैसाण।।''
- इस किले में चूने का उपयोग नहीं किया हैं।
- जैसलमेर के किले की छत लकड़ी की बनी हुयी हैं।
- बादल महल बना हुआ हैं।
- जवाहर विलास महल।
-' 2009 ई. में जैसलमेर किले में 5 रू. का डाक टिकट जारी किया गया।

<u>बीकानेर दुर्गः</u> (चतुष्कोण आकृति)
- बीकानेर के किले को जूनागढ़ किला कहा जाता हैं।
- इस किले का निर्माण महाराजा रायसिंह ने करवाया था।
- इसमें 37 पुर्जे बनी हुयी हैं।
- जूनागढ़ के किले को 'जमीन का जेवर' कहते हैं।
- जूनागढ़ में सूरजपोल के पा सजयमल फता की मूर्तियां लगी हुयी हैं।
- जूनागढ़ किले में 33 करोड़ देवी - देवताओं का मंदिर हैं।
- बादल महल , अनूप महल (बीकानेर के राजाओं का रातिलक किया जाता था।) निर्माण महाजा डूंगरसिंह ने करवाया था। , हरमंदिर
- जूनागढ़ किले के चारों तरफ खाई बनी हुई हैं।
- आमेर किले के चारों तरफ खाई बनी हुई हैं।
- आमेर व बीकाने दो ऐसे किले हैं, जो जिस वंश के द्वारा निर्मित किए गए थे, हमेशा उसी वंश के अधिकार में रहे।

<u>भटनेर का किला</u>:-
- हनुमानगढ़ जिले में स्थित हैं। (भूपत भाटी ने इसका निर्माण शुरू करवाया था।)
- भाटी शासकों ने इसका निर्माण करवाया था।
महमूद गजनवी ने इस पर आक्रमण किया था।

- तैमूर ने भी यहां आक्रमण किया था इस आक्रमण के समय यहां हिन्दू महिलाओं के साथ-साथ मुस्लिम महिलाओं

More PDF Install App DevEduNotes

ने भी जौहर किया था।
- तैमूर इसे भारत का सर्वश्रैष्ठ किला बताता हैं।
- तैमूर के आक्रमण के समय यहां का शासक दूलचन्द भाटी था।
- हूँमायुं के भाई कामरान ने यहां आक्रमण किया था। उस समय यहां का किलेदारन खेतसिंह कांधल था।
- अकबर ने भी यहां आक्रमण किया था। कल्याणमल का भाई ठाकुरसिंह लड़ता हुआ मारा गया।
- रायसिंह के बेटे दलपतसिंह व उसकी पांच रानियों के स्मारक बने हुए हैं। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरूद्ध भी विद्रोह किया था।)
- मनोहर कच्छवाहा ने यहां मनोहर पोल का निर्माण करवाया।
- 1805 ई. में बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने इस पर अधिकार कर लिया उस दिन मंगलवार था, इसलिए भटनेर के किले का नाम बदलकर हनुमानगढ़ कर दिया।
- भारत में सबसे अधिक आक्रमण झेलने वाला किला।
- भटनेर के किले को 'उत्तरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता हैं।
- बलबन के भाई शेर खां की कब्र हैं।

<u>जालौर का किला</u>
- सूकड़ी नदी के किनारे स्थित।
- सुवर्णगिरी के किले के नाम से विख्यात।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने इसका निर्माण करवाया।
- कान्हड़देव सोनगरा ने यहां पुनर्निमाण करवाया।
- 1311 ई. में जालौर के किले में शाका हुआ था।
- अलाउदीन खिलजी ने यहां अलाई मस्जिद व खिलजी मीनार बनवाई थी। जालौर का नाम जलालाबाद रख दिया था।
- जोधपुर महाराजा मानसिंह अपने संघर्ष के दिनों में जालौर के किले में रहा था। (मानसिंह महल)
- जालौर के किले में तोपखाना मस्जिद बनी हुयी हैं। जो पूर्व में भोज परमार द्वारा बनायी गयी एक संस्कृत पाठशाला थी। कान्हड़देव की बावड़ी, वीरमदे की चौकी, जलंधर नाथ जी का मंदिर।
मलिक शाह की दरगाह।

<u>सिवाणा का किला:-</u>
- बाड़मेर जिमें मे स्थित।
- वीर नारायण पंवार ने इसका निर्माण करवाया था।
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे कूमट दुर्ग भी कहते हैं।
- सिवाण का किला राठौड़ो की शरणस्थली कहलाता हैं।
- अलाउदीन के आक्रमण के समय सातल व सोम के नेतृत्व में साका हुआ था।
- अकबर के आक्रमण के समय कल्ला रायमलोत के नेतृत्व में साका हुआ था।
''किलों अणखलों यूं कहे, आव कल्ला राठौड़। मळारे तो मेहणो उतरे, तोहे बधे सिर मोड़।।''
- सिवाणा के किले में मांडेलाव तालाब बना हुआ हैं।

आमेर का किला:-

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- इसे काकिलगढ़ भी कहा जाता हैं।
- मानसिंह I ने इसका निर्माण करवाया था।
- आमेर के किले में सुहाग मंदिर हैं। यह रानियों क हास-परिहास का स्थान था।

सुख मंदिर :- एक जैसे 12 कमरे हैं, जो मिर्जा राजा जयसिंह ने बनवाए थे।

- दौलाराम का बाग
- मावठा जलाशय
- शिला माता का मंदिर
- जगत शिरोमणि मंदिर
- आम्बिकेश्वर मंदिर
- बारहदरी महल
- दीवान - ए - आम
- दीवान ए खास
- केसर क्यारी बगीचा

जयगढ़ का किला:-

- पहले इस स्थान को चील्ह का टोला कहते हैं।
- मानसिंह प्रथम ने इसक निर्माण कार्य शुरू करवाया था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम जयगढ़ रखा।
- सवाई जयसिंह ने इस में जयबाण तोप रखवायी।
- जयगढ़ का किला अपने पानी के विशाल टांकों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इसमें आमेर के कछवाहों शासकों का शस्त्रागार व खजाना था।
- इन्दिरा गांधी ने यहां 1975-76 में यहां खुदाई करवायी।
- इस किले में सुरंगे बनी हुयी हैं। इस कारण इस किले को रहस्यमय दुर्ग भी कहते हैं।
- इसे जयपुर का संकटमोचक किला कहते हैं।
- विजयगढ़ी:- राजनैतिक जेल, सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई (चीमाजी) विजयसिंह को यहां गिरफ्तार करके रखा था, इस कारण इसका नाम विजयगढ़ी पड़ गया।

नाहरगढ़ का किला:-

- इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।
- जगतसिंह द्वितीय की प्रमिका रसकपूर को यहीं गिरफ्तार करके रखा गया था।
- सवाई माधोसिंह द्वितीय ने अपनी 9 पासी / पासवानों के लिए 9 एक जैसे महल बनवाए।
- इसे जयपुर का पहरेदार किला कहते हैं।
- प्रारम्भ में इसका नाम सुदर्शनगढ़ था, बाद में नाहरसिंह भौमियाजी के नाम पर इसका नाम नाहरगढ़ पड़ गया।

बाला किला:-

- अलवर जिले में स्थित हैं।
- निकुम्भ चौहानों ने इसका निर्माण करवाया था।
- कोकिल देव के बैटै अलधुराय ने इसका पुनर्निमाण करवाया था।
- हसन खां मेवाती ने इसकी मरम्मत करवायी।

More PDF Install App - DevEduNotes

- इसमें :- निकुम्भ महल, जल महल
- जहाँगीर इस किले में ठहरता था। इसलिए इसे सलीम महल भी कहते हैं।
- करणी माता का मंदिर बना हुआ हैं। (बख्तावरसिंह)

तारागढ़ (अजमेर):-
- इस किले का निर्माण चौहान शासक अजयराज ने करवाया। उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम तारागढ़ रख दिया।
- पृथ्वीराज चौहान का स्मारक बना हुआ हैं। पृथ्वीराज चौहान के घोड़े नाट्य रम्भा का स्मारक बना हुआ हैं।
- मीरान साहब की दरगाह बनी हुयी हैं।
- यह किला मराठों के अधिाकर में भी रहा था।
- इसव किले में नाना साहब का झालरा बना हुआ हैं।
- मराठों से यह किला अग्रेंजों ने छीन लिया।
- विलियम बैंटिक ने इसे 'आरोग्य सदन' में बदल दिया।
- दारा शिकोंह ने यहां शरण ली थी।
- रूठी उमा दे ने भी अपना कुछ समय यहां बिताया था।
- हिजडे की मजार बनी हुयी है।
- इसे राजस्थान का जिब्राल्टर कहते हैं।
- गढ़ बीठली किला भी कहते हैं।

अकबर का किला:-
- 1570 ई. में ख्वाजा मुइनदीन के प्रति सम्मान प्रकट करने केलिए अकबर ने इस किले का निर्माण करवाया।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले यहां पर युद्ध की अंतिम योजना बनायी गयी थी।
- जाहंगीर मेवाड़ अाीयान के दौरान तीन साल यहां ठहरा था।
- 10 जनवरी 1616 को 'टॉमस रो' जहांगीर से मिलता हैं।
- इस महल को अकबर का दौलतखाना भी कहते हैं।
- अग्रेजों ने इसे शस्त्रागार में बदल दिया था, इसलिए इसे मैगजीन का किला भी कहते हैं।
- इसमें राजपूताना म्यूजियम बना हुआ हैं।

चुरू का किला :-
- इस किले में बीकानेर के राजा सूरतसिंह ने यहां आक्रमण किया, उस समय चुरू का ठाकुर स्योजीसिंह (शिव जी सिंह) था।
- इस आक्रमण के समय किले में सीसा समाप्त होने पर चांदी के गोले दागे गये थे (बीकानेर का सेनापति- अमरचन्द सुराणा)
- ''बीको फीको पड़ गयो, बण गोरा हमगीर। चांदी गोळा चालिया, आ चुरू री तासीर''

भरतपुर का किला (लोहागढ़)
- 1733 ई. में सूरजमल ने इस किले का निर्माण करवाया।
- भरतपुर के राजा जवाहरसिंह ने इस किले में दिल्ली आक्रमण से लूट कर लाए हुये अष्ट धातु के दरवाजे लगवाए। तथा इस जीत की स्मृति में जवाहर बुर्ज बनवायी।
- महाराजा रणजीतसिंह ने जसवंत राव होल्कर को इस किले में शरण दी थी।
- अनेक प्रयासों के बावजूद अग्रेंज इस किले को जीत नहीं सकें, इसी कारण भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता हैं।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- रणजीतसिंह ने इस जीत की स्मृति में 'फतह बुर्ज' का निर्माण करवाया।
- चार्ल्स मेटकॉफ ने अंग्रेजों की इस विफलता पर कहा था।
- "अग्रेंजी की प्रतिष्ठा भरतपुर के दुर्भाग्यपूर्ण घेरे में दबकर रह गई।" इसी किले के बारें में कहा जाता हैं।
- "आठ फिरंगी नौ गौरा, लड़े जाट का दो छोरा।।"
- किशोरी महल, दादी मां का महल, वजीर की कोठी, गंगा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर।

<u>बयाना का किला</u>:- इस किले का निर्माण विजयपाल ने करवाया था।
- इसे बादशाह का किला, बाणासुर किला, विजय मंदिर गढ़, के नाम से जाना जाता हैं।
- खानवा के युद्ध के बाद बाबर इस किले में आया था।
- इसमें:- लोदी मीनार, अकबर की छतरी, जहांगीरी दरवाजा, सादुल्ला सराय, दाउद खां की मीनार।
- बयाना में समुद्रगुप्त में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- रानी चित्रलेखा (समुद्रगुप्त के सामत की पत्नी) ने ऊषा मंदिर का निर्माण करवाया।
- समुन्द्रगुप्त के सामन्त विष्णुवर्धन ने भीमलाट ऊषालाट का निर्माण करवाया था।

तारागढ़ (बूँदी):-
- इस किले का निर्माण हाड़ा शासक बरसिंह ने करवाया था।
- दूर से देखने पर यह तारे के समान दिखायी देता हैं।
- इसमें:- सुख महल , छत्र महल, रानी जी की बावड़ी, 84 खम्भों की छतरी, फूल सागर तालाब।
- सूरसागर तालाब- बूंदी, बीकानेर
- बूंदी का तारागढ़ किला अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- रूडयार्ड किपलिंग :- इसे देखकर लगता हैं कि इसको भूतों द्वारा निर्माण करवाया गया हैं।
- जेम्स टॉड:- बूंदी के महलों को राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ महल बताता हैं।
- गर्म गुंजन:- तोप रखी हुयी हैं।

<u>मांडलगढ़</u>:-
- वर्तमान भीलवाड़ा जिलें में स्थित हैं।
- इस किले का निर्माण चादंना / चानणा गुर्जर ने माण्डिया भील की स्मृति में करवाया था।
- माडंलगढ़ में जगन्नाथ कछवाहा की 32 खम्भों की छतरी बनी हुयी हैं।
- राणा सांगा की छतरी भी यहीं स्थित हैं।
- मानसिंह हल्दीघाटी युद्ध से पहले मांडलगढ़ में रूकता हैं।
- इस में उडेश्वर महादेव का मंदिर बना हुआ हैं।
- शीतला माता का मंदिर भी हैं।
- मांडलगढ़ में मण्डल आकृति में बना हुआ हैं, इसलिए भी इसे मांडलगढ़ कहते हैं।

<u>अचलगढ़</u>:-
- इस किले का निर्माण परमार शासकों ने करवाया था।
- महाराणा कुम्भा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया व कुम्भा स्वामी का मंदिर बनवाया।
- सावन भादों की मूर्तियां (कुम्भा - ऊदा) लगी हुयी हैं।
- अचलेश्वर स्वामी का मंदिर हैं, इसमें शिव जी के अंगूठे की पूजा की जाती हैं। इस मंदिर के ठीक सामने दूरसा आढ़ा की मूर्ति लगी हुयी हैं।
- अचलगढ़ को 'भँवराथल' कहते हैं, क्योंकि महमूद बेगठा के आक्रमण के समय यहां पर मधुमक्खियों ने उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया था।

More PDF Install App - DevEduNotes

शेरगढ़ः-
- यह किला बारां जिले में परवन नदी के किनारे स्थित हैं।
- इसे कोषवर्धनगढ़ भी कहते हैं। (जल दुर्ग)

शेरगढ़ः- (धौलपुर) :-
- इसका निर्माण कुषाण काल में हुआ था।
- शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रख दिया था।
- इस किले में सैय्यद हुसैन की दरगाह हैं।
- हुनुहुँकार तोप भी इसी किले में स्थित हैं।
- धौलपुर के सिक्कों को तमचांशाही कहतें हैं।
- इस किले में भारत का सबसे बड़ा घंटाघर हैं।
- धौलपुर में कमलबाग हैं, जिसका बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में जिक्र हैं।
- राजस्थान, मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश की सीमाओं पर स्थित।

कोटा का किलाः- (माधोसिंह, परकोटा)
- जैत्रसिंह (बूंदी का राजा ने यहां एक गुलाब महल का निर्माण करवाया।)
- कालान्तर में माधोसिंह ने इसे कोटा के किले के रूप में विकसित किया।
- जेम्स टॉड के अनुसवार इस किले का परकोटा आगरा के किल` बाद सबसे बड़ा हैं।
- झाला हवेली- भित्ति चित्रो के लिए प्रसिद्ध हैं।

कांकणबाड़ी का किलाः- (अलवर, मिर्जा राजा जयसिंह)
- अलवर जिले में स्थित मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण करवाया।
- आरंगजेब ने दारा शिकोह (बड़े भाई) को यहां बंधक बना कर रखा था।

शाहबाद का किलाः-
- बारां जिले में स्थित।
- मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाय था।
- शेरशाह सूरी अपने कालिजंर अभियान के दौरान इस पर अधिकार कर लेता हैं, व इसका नाम सलीमाबाद कर देता हैं।
- इसमें एक बादल महल बना हुआ हैं।
- इसमें नवलवान तोप रखी हुयी हैं।

चौमूं का किलाः-
- जयपुर जिले में स्थित।
- इसे धारधारागढ़ रघुनाथगढ़, चौमुंहागढ़ भी कहते हैं।
- इसका निर्माण करणसिंह ने करवाय था।
- इसमें एक हवा मंदिर (आतिथ्य स्वागत) बना हुआ हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

दौसा का किलाः-
- देवगिरी पहाड़ी पर बना हुआ हैं।
- छाजले की आकृति का बना हुआ हैं।
- दौसा कछवाओं की पहली राजधानी थी।

माधोराजपुरा काकिलाः-
- जयपुर जिले में स्थित। (फागी तहसील के पास)
- जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह ने मराठों पर जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था।
- यह किला किछवाहों की नरूका शाखा के अधीन रहा था। यहां का भारतसंहि नरूका, अमीर खां पिण्डारी की बेगमों को बंधक बना कर लाता हैं।

फतेहपुर का किलाः-
- सीकर जिले मे स्थित।
- 1453 में फतेहपुर के नवाब फतेंह खां कायमखानी ने निर्माण करवाया था।
- पीर निजामुदीन की दरगाह बनी हुयी हैं।
- सरस्वती पुस्तकालय- फुतेहपुर

नीमराणा का किलाः-
- अलवर जिलें में स्थित।
- इसे पंचमहल भी कहते हैं

कुचामन का किलाः- (निर्माण- मेड़तिया शासक जालिमसिंह)
- नागौर जिले में स्थित।
- इसे जागीरों किलों का सिरमौर कहते हैं।

नागौर का किलाः-
- इसका निर्माण चौहान शासक सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने करवाया था।
- इसे 'अहिच्छत्रगढ़' दुर्ग भी कहते हैं।
- अमरसिंह राठौड़ की वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इसे 2013 का आगा खां अवार्ड दिया गया हैं।

- भैंसरोड़गढ़ का किलाः- (एक व्यापारी द्वारा निर्मित)
- चम्बल व बामनी नदियों के संगम पर चित्तौड़गढ जिले में स्थित हैं।
- इसे राजस्थान का वेल्लोर कहते हैं। (जल दुर्ग)

मालकोट का किलाः-
- मेड़ता (नागौर) के किले को मालकोट का किला कहते हैं।
- निर्माण- मालदेव ने।

More PDF Install App - DevEduNotes

मोहनगढ़ का किला:-
- जैसलमेर जिले मे स्थित।
- निर्माण- जैसलमेर महाराजा जवाहरसिंह के समय।
- भारत का अंतिम किला हैं।

तिमनगढ़ का किला:-
- त्रिभुवनगढ़ भी कहते हैं।
- ननद- भौर्जा का कुआं

राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ

गैटोर की छतरियाँ:-
- यहां पर जयपुर के शासकों की छतरियाँ हैं।
- सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह द्वितीय तक।
- ईश्वरीसिंह की छतरी यहां स्थित नहीं हैं, ईश्वरीसिंह की छतरी ईसरलाट के पास ही हैं।

आहड़:-
- यहां पर मेवाड़ के शासकों की छतरियाँ हैं।
- सबसे पहले यहां अमरसिंह प्रथम की छतरी बनायी गयी थी।
- इस स्थान को महासतियाँ कहते हैं।

पंचकुण्ड (मंडौर):-
- यहां जोधपुर के राजाओं की छतरियाँ हैं।
- जसवन्त थड़ा:- जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह द्वितीय का स्मारक, इसका निर्माण उनके बेटे सरदारसिंह ने करवाया था इसे राजस्थान का ताजमहल कहत हैं।
- कागा की छतरियाँ यहां जोधपुर के सामन्तों की छतरियां बनायी जाती हैं।
- जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के प्रधानमंत्री राजसिंह कुम्पावत की 18 खम्भों की छतरी बनी हैं।

देवीकुंड सागर (बीकानेर):-
- यहां बीकानेर के राजाओं की छतरियां बनी हुयी हैं।
- इनमें राव कल्याण मल की छतरी अधिक प्रसिद्ध हैं।
- बड़ा बाग (जैसलमेर) (महारावल जैतसिंह की छतरी)
- यहाँ जैसलमेर के राजाओं की छतरियां हुयी हैं।

<u>क्षार बाग</u>:-
- कोटा के राजाओं की छतरियां बनी हुयी हैं।
- क्षार बाग की छतरीयों को छत्रविलास बाग की छतरियां भी कहते हैं

पालीवाल:-
- बन्जारों की छतरी- लालसोट (दौसा)
- नाथों की छतरी- जालौर (छतरी पर तोता बना हुआ हैं।)
- मिश्रजी की छतरी- अलवर जिले के नेहड़ा गांव में स्थित।
- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।

More PDF Install App - DevEduNotes

- दशावतरों के चित्र बने हुये हैं।
- कुत्ते की छतरी- जोधपुर
- गोपालसिंह जी की छतरी - करौली
- गंगाबाई की छतरी:- गंगापुर सिटी (भीलवाड़ा)
- रैदास जी, कल्ला जी की छतरी- चित्तौड़ढ़ में।

<u>राजस्थान की प्रमुख हवेलीयाँ व महल:-</u>

जैसलमेर:- 1. पटवों की हवेली- जिसका निर्माण गुमानचन्द बाफना ने करवाया।
2. सालिमसिंह की हवेली - 9 मंजिला हवेली, जिसकी ऊपर की दो मंजिलें लकड़ी की बनी हुयी हैं।
3. नथमल की हवेली- वास्तुकार: हाथी व लालू
4. सर्वोत्तम विलास पैलेस

शेखावाटी:-
1. सोने-चांदी की हवेली- महनसर (झुन्झुनूं)
2. भगतों की हवेली - नवलगढ़ (झुन्झुनूं)
3. रामनाथ गोयनका की हवेली - मंडावा (झुन्झुनूं)
4. पसारी की हवेली - श्रीमाधोपुर (सीकर)
5. माल जी का कमरा - चुरू
6. मंन्त्रियों की हवेली - चुरू
7. सुराणों की हवेली - चुरू
8. खेतड़ी महल - झुन्झुनूं (राजस्थान का दूसरा हवा महल)

कोटा:- गुलाब महल, अबली मीणी का महल, अमेड़ा महल, हवा महल:- रामसिंह द्वितीय, जगमंदिर:- दुर्जनसाल ने अपनी रानी ब्रजकंवर के लिए बनाया।
नवलगढ़:- सर्वाधिक हवेलियाँ, हवेलिया क नगर, शेखावाटी की स्वर्ण नगरी।

जोधपुर:-
1. बड़े मियां की हवेली
2. राखी हवेली 3. पोकरण हवेली 4. एक खम्भा महल:- महाराजा अजीतसिंह ने बनवाया था।
5. राई का बाग पैलेस:- जसवंत दे (जसवंतसिंह प्रथम की रानी)
6. उम्मेद पैलेस:- छीतर पैलेस भी कहते हैं। इसका निर्माण अकाल राहत कार्यो के दौरान कराया गया था यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय महल हैं।
7. अजीत भवन पैलेस:- राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल
8. पुष्य हवेली:- विश्व की एकमात्र हवेली जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षय में बनी।

<u>डूंगरपुर</u>:-
1. एक थम्बिया महल:
2. जूना महल

More PDF Install App - DevEduNotes

<u>अलवर</u>:- 1. हवा बंगला, तिजारा 2. विनय विलास पैलेस, सिटी पैलेस (अलवर)

<u>टोंक</u>:- 1. सुनहरी कोठी (इस्लामिक शैली में निर्मित)

सिक्खों के त्यौंहार

1. गुरू नानक जयन्ती - कार्तिक पूर्णिमा (शुक्ल) इस दिन (चुरू) में सिक्खों का बड़ा मेला भरता हैं। कोलायत में भी सिक्खों का मेला भरता हैं।
2. गुरू गाविन्दसिंह जयन्ती - पौष शुक्ल सप्तमी
3. लोहड़ी- 13 जनवरी
4. वैशाखी- 18 अप्रैल

. 13 अप्रैल 1699 को आनंदपुर साहिब में गुरू गोविन्द साहिब ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।

. 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड।

ईसाई समाज के त्यौंहार

1. 1 जनवरी - ईसाईयों का नववर्ष
2. 25 दिसम्बर - ईसा मसीह का जन्मदिन
3. ईस्टर- 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती हैं, उसके ठीक बाद वाले रविवार को ईस्टर बनाया जाता हैं।

. इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित होकर लौट आए थे।

4. गुड़ फ्राइड़े - ईस्टर से ठीक पहले वाला शुक्रवार।

. इस दिन ईसा मसीह को सूली पर लटकाया गया।

5. असेन्शन ड़े- ईस्टर से ठीक 40 चालीस दिन बाद, ईसा मसीह वापस स्वर्ग चले गये थे।

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान भाषा की मत्त्वपूर्ण कृत्तियाँ

आर्य भाषा

वैदिक संस्कृत

पाली — संस्कृत

शौरसेनी प्राकृत	मागधी प्राकृत	महाराष्ट्री प्राकृत

गुर्जरी अपभ्रंश — शौरसेनी अपभ्रंश

राजस्थानी — हिन्दी

डिंगल	पिंगल
पं. राजस्थानी	पूर्वी राजस्थानी
का साहित्यिक रूप	का साहित्यिक रूप इसमें ब्रज भाषा का मिश्रण पाया जाता हैं।

राजस्थानी भाषा का विकास:-

- गुर्जरी अपभ्रंश- 11वीं से 13वीं शताब्दी

. प्राचीन राजस्थानी - 13वीं से 16वीं शताब्दी (जैन साहित्य)

. मध्यकालीन राजस्थानी- 16वीं से 18वीं शताब्दी (चारण साहित्य)

. आधुनिक राजस्थानी- 18वीं -----------

. राजस्थानी साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ- भरतेश्वर बाहुबली घोर, (वज्रसेन सूरी) जैन ग्रन्थ

. उद्योतन सूरि ने अपनी पुस्तक कुवलयमाला में मरू भाषा का उल्लेख किया हैं। (18 देसी भाषाओं का उल्लेख)

. अबुल फजल भी मारवाड़ी भाषा का उल्लेख करता हैं।

. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन 1912 में लिखी अपनी पुस्तक LINGVISTIC SURVEY OF INDIA में राजस्थानी भाषा का उल्लेख किया हैं।

1. सारंगधर - हम्मीर रासौ
2. जोधराज - हम्मीर रासौ
3. श्रीधर - रणमल छन्द, इसमें ईडर के राजा रणमल व पाटन के सूबेदार जफर खां के बीच युद्ध को वर्णन है।
4. चन्दबरदाई (वास्तविक नाम पृथ्वीराज भट्ट) - पृथ्वीराज रासौ (पिंगल भाषा शैली में रचित ग्रन्थ) इसका पहला प्रामाणिक उल्लेख राजप्रशस्ति महाकाव्य में मिलता हैं।
5. दलपत विजय - खुमाण रासौ, इसमें बापा रावल से महाराणा राजसिंह तक का वर्णन हैं।
6. गिरधर आसिया - सगतसिंह रासौ, इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह का वर्णन हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

7. डूंगरसिंह - शत्रुसाल रासौ (बूंदी)
8. आशानन्द (भादरेस) - गोगाजी री पेड़ी, बाघा रा दूहा, उमादे भटियाणी रा कवित।
9. ईसरदास (आशानन्द जी के भतीजे) - हाला झाला री कुण्डलिंया, सूर
10. केशदास गाडण - 1. गुणरूपक 2. अमरसिंह जी रा दूहा 3.विवेक वार्ता (उपनिषदों पर लिखित कृति)
11. शिदास गाडण - 'अचलदास खिंची री वचनिका' (गागरोन का वर्णन)
12. उमरदान - 1. अमल रा औगण 2. दारू रा दौस 3. भजन री महिमा
13. पृथ्वीराज राठौड़ - बेलि क्रिसण रूक्मणि री 2. गंगा लहरी 3. दशम भागवत रा दूहा, ठाकुरजी रा दूहा 4. दशरथ वराउत
14. करणीदान - सरूज प्रकाश- जोधपुर महाराजा अभयसिंह वगुजरात के सूबेदार सर बुलन्द खां के बीच युद्ध का वर्णन हैं।
- सूरज प्रकाश का संक्षिप्त रूप- बिड़द सिणगार, इस पुस्तक के लिए करणीदान जी को 1 लाख रूपये दिए गए।
15. वीरभाण - राजरूपक
16. कृपाराम खिड़िया - राजिया रा दूहा ''पाटा पीड़ उपाव, तन लागा तलवारिया। वहै जीभ राव घाव, रती औषध न राजिया।।''
17. जग्गा खिड़िया - वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेस दासौत री (धरमत के युद्ध में रतलाम रनेश रतनसिंह राठौड़ द्वारा दिखायी गयी अद्‌भुत वीरता का वर्णन हैं)
18. कवि कल्लोल - ढ़ोला मारू रा दूहा ''अकथ कहानी प्रेम की, मुख सुं कही न जाय। गुंगा रा सुपना भयों, सुमर-सुमर पछतायो।।''
19. कुशल लाभ - ढ़ोला-मारू री चौपाई
20. बुद्धसिंह - नेहतंरग
21. सूर्यमल्ल मिश्रण - वंश भास्कर, वीर सतसई, बलवन्त विलास, सती रासौ, छन्द मयूख, धातु रूपावली, राम रंजाट
''सुत धारा रज-रज थिथों, बहू बलेवा जाय। लखिया डूँगर लाज रा, सासू उर न समाय।।''
22. बीठू सूजा - राव जैतसी रो छन्द (इसमें बीकानेर के राजा जैतसिंह व कामरान के बीच हुये 'रातीघाटी के युद्ध' का वर्णन)
23. बांकीदा स - 1. बांकीदास री ख्यात, कुकवि बतीसी, दात्तार बावनी, मान जसो मंडन
24. मुरारिदास - जसवन्त जसो भूषण
25. मुहणौत नैणसी - नैणसी री ख्यात, मारवाड़ रा परगना री विगत (जनगणना का उल्लेख मिलता हैं।)
- मुंशी देवी प्रसाद ने इन्हें 'राजपूताने का अबुल-फजल' कहा हैं।

26. न पति नाल्हा - बीसलदेव रासौ (विग्रहराज चतुर्थ)
27. नल्लसिंह - विजयपाल रासौ (करौली)
28. हम्मीर (रणथम्भौर का राजा) - श्रंगार हार
29. दयालदास - बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात। (राव बीका से सरदारसिंह तक का वर्णन)
30. बख्तावर जी - केहर प्रकाश
31. सवाई प्रतापसिंह - केहर ग्रन्थावली
32. दुरसा आढ़ा - विरुद्ध छहतरी, किरतार बावनी, राव सुरताण रा कवित

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

33. बादर ढ़ाढ़ी - वीरभाण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की वीरता का वर्णन हैं।)
34. वृन्द - सत्य स्वरूप (औरंगजेब के पुत्रों के बीच हुये उतराधिकार संघर्ष का वर्णन हैं।)
- श्रंगार शिमा
35. दयाल - राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन हैं।)
36. खेतसी साड़ूँ - भाषा भारथ (महाभारत का डिगंल में अनुवाद)
37. जगजीवन भट्ट - अजितोदय
38. जोगीदास - हरिपिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह के बारें में वर्णित)
39. किशोदास - राजप्रकाश
40. साँया जी झूला - नागदमण
41. कल्याणदास - गुण गोविन्द
42. नरहरिदास - अवतार चरित्र
43. कविजान - काथमरासौ, बुधि सागर, लैला-मजनूँ

आधुनिक राजस्थानी साहित्य

1. श्रीलाल नथमल जोशी - 1. एक बीनणी दो बींद, परण्योड़ी कुंवारी,
सबड़का, आभै पटकी, घोरां रो घोरी
2. विजयदान देथा - बातां री फुलवारी, तीडो राव, मां रो बदलो, हिटलर, अलेखूँ दूविधा
3. लक्ष्मी कुमारी कुडांवत - माँझल राव, अमोलक बांता, कै रे चकवा बात, गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ा,
राजस्थान की प्रेम कहानियां, हुंकारो दो सा, बाघा-भारमली, बगड़ावत,
मूमल, टाबरां री बात, डूंगरजी जवाहरजी री बात

More PDF Install App - DevEduNotes

4. कन्हैया लाल सेठिया - धरती धोरां री, लीलटास, पाथल और पीथल, कुकूं मिजंर, निर्ग्रन्थ

5. यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र - हूं गोरी किग पीव री, खम्भा अन्नदाता, हजार घोड़ो का सवार, तास रो घर, जमारो, मेहंदी के फूल, जोग-संजोग, एक और मुख्यमंत्री

6. मेघराज मुकुल - उमंग, सैनाणी, चंवरी

7. रांगेय राघव - घरौदे, मुर्दो का टीला, कब तक पुकारूँ, आज की आवाज

8. गौरीशंकर हिराचन्द ओझा - प्राचीन लिपिमाला, कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र, राजपूताने का इतिहास

9. जहूर खां मेहर - राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, अर्जून आकी आंख, घर जला घर कोसां

10. चन्द्रसिंह बिरकाली - बादली (कालिदास के मेघदूत का राजस्थान अनुवाद), लू, सांझ बालासाद, कह- मुकरनी।

11. नारायणसिंह भाटी - मीरा, परमवीर, दुर्गादास, बरसा रा डिगोड़ा डूँगर लाँधिया

12. सीताराम लालस - राजस्थानी शब्दकोष

13. हरिराम मीणा - हां चाँद मेरा हैं।

14. मणिमघुकर - पगफेरो सुधि सपनों के तीर, रसगन्धर्व

15. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - उसने कहा था।

16 श्यामलदास - वीर विनोद(शम्भूसिंह के समय लिखना शुरू किया था तथा फतेह सिंह के समय पूरी की गयी।)
(वीर विनोद मेवाड़ का इतिहास हैं। परन्तु इसमें अन्य इतिहास की भी समकालीन जानकारियाँ मिलती हैं।)

1. रेवतदान चारण - बरखा बीनणी, नेहरू ने ओलमो

2. विचन्द्र भरतिया - कनक सुन्दरी (उपनयास) केसर विलास (नाटक)

3. हमीदुल्ला - भारमली, दरिन्दे, ख्याल

4. कुन्दन माली - सागर पांखी

5. हीरालाल शास्त्री - प्रत्यक्ष जीवन शाम

6. सावित्री परमार - जमी हुयी झील (मीरा पुरस्कार)

- राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी - बीकानेर
- राजस्थान साहित्य अकादमी - उदयपुर

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के लोकनाट्य

ख्याल:- पौराणिक एंव ऐतिहासिक कथाओं को पद्यबद्ध करके नाटक के रूप में मंचन किया जाता हैं।
. सूत्रधार:- हलकारा

1. कुचामनी ख्याल:-
- प्रवर्तक- लच्छी राम
- इसमें महिला पात्रों की भूमिका पुरूषों द्वारा डी निभायी जाती हैं।
- इसका स्वरूप 'ओपेरा' जैसा होता हैं।
- मुख्य कथाएं - चांद नीलगिरि, राव रिड़मल, मीरा मंगल।
- उगमराज:- कुचामनी ख्याल के प्रमुख कलाकार हैं।

2. जयपूरी ख्याल:-
- इसमें महिला पात्रों की भूमिका महिला ही निभाती हैं।

3. हेला ख्याल:-
- दौसा, लालसोट एवं सवाई माधोपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध।
- वाद्य यंत्र: नौबत

4. तुर्रा- कलंगी:-
- तुकनगीर व शाह अली ने इसे लोकप्रिय किया था। चन्देरी के राजा ने इन्हें तुर्रा व कलंगी दिया था।
- तुर्रा पक्ष - शिव
- कलंगी पक्ष - पार्वती
- सहेडूसिंह व हमीद बेग ने इसे मेवाड़ में लोकप्रिय किया था।
- इसमें दो पक्ष आमने - सामने बैठकर प्रतिस्पर्धा मूलक संवाद करते हैं, जिसे गम्मत कहते हैं।
- तुर्रा - कलंगी ख्याल में मंच की सजावट की जाती हैं।
- दर्शकों के भी भाग - लेने की सम्भावना रहती हैं।
- अन्य कलाकार - चेतराम, ताराचन्द, जयदयाल सोनी, ओंकारसिंह

5. शेखावाटी ख्याल/चिड़ावी ख्याल:-
- नानूराम व दूलिया राणा ने इसे लोकप्रिय किया।

6. अली बख्शी ख्याल:- अलवर जिले के मुण्डावर ठिकाणे के नवाब अली बख्श के समय यह ख्याल शुरू हुयी। अली बख्श को अलवर का रसखान कहा जाता हैं।

7. कन्हैया ख्याल:-
- भरतपुर, धौलपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
- कृष्ण लीलाओं का मंचन किया जाता हैं।
- सूत्रधार - मेड़िया

8. ढप्पाली ख्याल:-
- लक्ष्मणगढ़ (अलवर) क्षेत्र में लोकप्रिय।

Springboard Academy
More PDF Install App - DevEduNotes

9. भेंट के दंगलः-
- बाडी (धौलपुर) क्षेत्र में लोकप्रिय।
- धार्मिक कहानियों का मंचन किया जाता हैं।

नौटंकी:-
- अलवर, भरतपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
- प्रवर्त्तक - भूरीलाल
- वर्तमान में प्रमुख कलाकार-गिरिराज प्रसाद।
- 9 प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता हैं।
- यह हाथरस शैली से प्रभावित हैं।
- नौटंकी में प्रचलित कहानी:- अमरसिंह राठौड़, आल्हा-ऊदल, सत्यवान-सावित्री, हरिशचन्द्र-तारामती।

रम्मत:-
- बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र की लोकप्रिय।
- पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा खेली जाती हैं।
- होली एवं सावन के महीने में रम्मत खेली जाती हैं।
- जैसलमेर में तेजकवि ने इसे लोकप्रिय किया था।
- तेजकवि की प्रसिद्ध रम्मतेः- स्वतत्रं बावनी, (1942 में महात्मा गांधी को की गयी भेंट) मूमल, जोगी भृतहरि, छेले तम्बोलन
- तेजकवि अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ थे।
- बीकानेर में 'पाटों' पर रम्मत का मंचन किया जाता हैं।
- पाटा संस्कृति - बीकानेर की मौलिक विशेषता हैं।
- होली के समय शुक्ल अष्टमी से चतुदर्शी तक इनका अधिक मंचन किया जाता हैं।
- हेड़ाऊ - मेरी की रम्मत सर्वाधिक लोकप्रिय हैं, जिसे जवाहर लाल ने शुरू किया था।
- रम्मत शुरू से पहले रामदेव जी का गीत गया जाता हैं।
- बीकानेर के कलाकारः- तुलसीदास जी, सुआ महाराज, फागु महाराज।

स्वांग:-
- किसी पौराणिक या ऐतिहासिक पात्र की वेशभूषा पहनकर उसकी नकल करना।
- भीलवाड़ा के जानकीलाल भांड व परशुराम ने इसे लोकप्रिय किया।
- जानकी लाल भांड को 'मंकी मेन' कहा जाता हैं।
- मांडल (भीलवाड़ा) में चेत्र शुक्ल त्रयोदशी को नाहरों का स्वांग किया जाता हैं।

गवरी:-
- राजसथान का प्राचीनतम लोक नाट्य।
- इसे राजस्थान का मेरू नाट्य भी कहा जाता हैं।
- मेवाड़ क्षेत्र में भील पुरूषों द्वारा गवरी नाट्य का मंचन किया जाता हैं।
- रक्षा बन्धन से शुरू होकर 40 दिनों तक चलता हैं।
- इसमें शिव-भस्मासुर कथा को आधार बनाया जाता हैं।
- सूत्रधार- कुटकड़िया, शिव- राईबुड़िया।
- हास्य पुट डालने वाला कलाकार - झटपटिया।

More PDF Install App - DevEduNotes

- विभिन्न कथानकों को आपवस में जोड़ने के लिए बीच में सामुहिक नृत्य किया जाता हैं। जिसे 'गवरी की घाई कहते' हैं।

तमाशा:-
- यह जयपुर मे लोकप्रिय हैं।
- सवाई प्रतापसिंह के समय बंशीधर भट्ट (महाराष्ट्र) को तमाशा के लिए जयपुर लाया गया।
- उस समय 'गौहर जान' तमाशा में भाग लिया करती थी।
- होली के दिन- जोगी-जोगण का तमाशा।
- शीतलाष्टमी के दिन- जुट्ठन मियां का तमाशा। चैत्र अमावस्या के दिन- गोपीचन्द का तमाशा।
- अखाड़ा में तमाशा का मंचन किया जाता हैं।

भवाई:-
- गुजरात के सन्निकट राजस्थानी जिलों में अधिक लोकप्रिय।
- इसमें संगीत पक्ष पर कम ध्यान दिया जाता हैं, बल्कि करतब दिखाये जाते हैं।
- भवाई लोकनाट्य व्यावसायिक प्रकृति का हैं।
- राजस्थान में मुख्य कलाकार:- रूपसिंह, तारा शर्मा, सांगी लाल।
- महिला व पुरूष पात्रो को सगाजी व सगीजी कहा जाता हैं।
- कलाकार मंच पर अपना परिचय नहीं देते हैं।
- शांता गांधी का जसमल ओड़ण प्रसिद्ध भवाई लोक नाट्य हैं।

चारबैंत:-
- टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय।
- मूलत:- अफगानिस्तान का लोकनाट्य हैं।
- पहले इसे पश्तों भाषा में प्रस्तुत किया जाता था।
- मुख्य वाद्य यंत्र- डफ।
- टोंक नवाब फैजुल्ला खां के समय करीम खां निहंग ने इसे टोंक में लोकप्रिय किया था।

फड़:-
- कपड़े के पर्दे पर किसी देवता से सम्बन्धित जीवन चरित्र का मंचन फड़ कहलाता हैं।
- 30 Feet - Leugthl
- 5 Frit - Buidth, फड़ का चित्रण किया जाता हैं।
- किसी देवता की मनौती पूरी होने पर फड़ बचवाते हैं।

रासलीला:-
- इसे वल्लभाचार्य द्वारा शुरू किया गया।
- भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं का मंचन किया जाता हैं।
- भरतपुर क्षेत्र में लोकप्रिय हैं।
- शिवलाल कुमावत ने इसे भरतपुर में लोकप्रिय किया था।
- रामस्वरूप जी व हरगाविन्द जी भी इसके मुख्य कलाकार हरे हैं।
- कामां (भरतपुर), फुलेरा (जयपुर) की रासलीला प्रसिद्ध हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

रामलीला:- तुलसीदास जी द्वारा

- भगवान राम से समबन्धित घटनाओं की मंचन किया जाता हैं।
- बिसाऊ (झुन्झुनूं) की रामलीला- मूक अभिनय पर आधारित।
- अटरू (बारां) यहां रामलीला में धनुष को भगवान राम द्वारा न तोड़ा जाकर, जनता द्वारा तोड़ा जाता हैं।
- पाटूदां (कोटा)- की रामलीला भी प्रसिद्ध हैं।
- वेकंटेश मंदिर (भरतपुर)- भरतपुर के वेंकटेश मंदिर में होती हैं।

सनकादिक लीला:-

- चित्तौड़गढ़ के घोसुण्डा व बस्सी स्थान पर इसका मंचन किया जाता हैं।
- मंचित देवता कथा- गणेश, गारा-काला भैंरू, नृसिंह- हिरण्यकश्यप।
- आश्विन व कार्तिक महिनों में आयोजन किया जाता हैं।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान के प्रमुख मंदिर

किराडू के मंदिरः-

- माहवार (बाड़मेर) के समीप।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप हैं जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर - सोमेश्वर
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते हैं
- यह मंदिर नागर शैली में बने हुये हैं।

सूर्य मंदिरः-

- झालरापाटन (झालावाड़)
- इसे सात सहेलियों का मंदिर कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने चारभुजा मंदिर भी कहा हैं।
- इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहते हैं।

अर्थुना के मंदिरः-

- बांसवाड़ा
- अर्थुना भी परमारों की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर- हनुमान जी का मंदिर।
- 11 वीं व 12 वीं शताब्दी के बने हुये हैं।
- इन्हें वागड का खजुराहों कहते हैं।

रणकपुर के जैन मंदिरः-

- कुम्भा के समय रणकशाह द्वारा निर्मित
- मुख्य मंदिर- चौमुखा मंदिर (वास्तुकार-देपाक)
- इस मंदिर में 1444 खम्भे हैं, अतः इसे खम्भों का अजायबघर कहते हैं।
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ मंदिर हैं, जिसे वेश्याओं का मंदिर भी कहते हैं

देलवाड़ा के जैन मंदिरः-

- सिरोही

विमलसहि मंदिरः- इसका निर्माण 1031ई. में भीमशाह (गुजरात) के चालुक्य राजा का मंत्री ने करवाया था।
नेमिनाथ मंदिरः- चालुक्य राजा धवल के मंत्री तेजपाल एवं वास्तुपाल ने इसका निर्माण करवाया।

- इसे देवरानी-जेठानी का मंदिर भी कहते हैं।

पुष्कर के मंदिरः-

- यहां ब्रह्म जी का मंदिर बना हुआ हैं, जिसका निर्माण गोकुल चन्द पारीक ने करवाया।
- यहां कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता हैं।
- यहां सावित्री माता का मंदिर भी हैं।
- यहां रंगनाथ मंदिर भी बना हुआ हैं, जो द्रविड़ शैली का हैं।
- पुष्कर को कोंकण तीर्थ भी कहा जाता हैं।
- ब्रह्म जी के अन्य मंदिरः- आसोतरा (बाड़मेर) छींछ (बांसवाड़ा)

एकलिंगनाथ जी के मंदिरः-

- कैलाशपुरी (उदयपुर) - नागदा के समीप ।
- 8वीं सदी में बापा रावल ने इसका निर्माण करवाया था।

सहस्त्रबाहु का मंदिरः-

- नागदा (उदयपुर)

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- इसे सास-बहु का मंदिर भी कहते हैं।
नौ-ग्रहों का मंदिर:- किशनगढ़ (अजमेर)
सावलिया जी का मंदिर:-
- मंडफिया (चित्तौड़गढ़)
- इसे चोरों का मंदिर भी कहते हैं।
हर्षद माता का मंदिर:

---------मुनि का मंदिर
- कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता हैं।
- कपिल मुनि सांख्य दर्शन के प्रणेता थे।
अम्बिका माता:-
- जगत (उदयपुर)
- इसे मेवाड़ का खजुराहों कहते हैं।
- इसे राजस्थान का मिनी खजुराहों कहते हैं।
कसुंआ मंदिर:-
- कोटा
- मौर्य राजा धवल ने शिव मंदिर बनवाया था, जिसमें 1000 शिवलिंग हैं।
- यहां गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर भी हैं, जिसके दर्शन नहीं किये जाते हैं।
शीतलेश्वर महादेव:-
- झालावाड़ (कर्नल टॉड ने झालरापाटन को घंटियों का शहर कहा हैं।)
- इसका निर्माण 689 ई. में हुआ।
- यह राजस्थान का प्राचीनतम तिथि युक्त मंदिर हैं।
महामंदिर:-
- जोधपुर
- राजा मानसिंह द्वारा निर्मित
- नाथि सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मंदिर।
सिरे मंदिर:-
- जालौर (जोधपुर के राजा मानसिंह ने इसका निर्माण करवाया था)

- बीकानेर
- यह 5 वें जैन तीर्थकर सुमतिनाथ का मंदिर हैं।
- इसके निमा ण में पानी की जगह घी का उपयोग किया गया था।
सतबीस मंदिर:-
- चित्तौड़गढ़
- 11वीं शताब्दी के जैन मंदिर।
थंडदेवरा मंदिर:-
- अटरू (बारां)
- इसे हाड़ौती का खजुराहों कहते हैं। (राजस्थान का मिनि खजुराहों)

फुलदेवरा मंदिर:-
- बारां

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

- इसे माम-भान्जा मंदिर भी कहते हैं।

सोनी जी की नसियां :-

- अजमेर
- इसे लाल मंदिर भी कहते हैं
- 1864 में मूलचन्द सोनी ने इसका निर्माण करवाया।

खड़े गणेश का मंदिर:-

- कोटा

बाजणा गणेश मंदिर:-

- सिरोही

सारण श्वर महादेव मंदिर:-

- सिरोही

नाचणा गणेश मंदिर:-

- रणथम्भौर

हेरम्ब गणपति:-

- बीकानेर (जूनागढ़ किले में।)
- गणपति शेर पर सवार हैं।

रावण मंदिर:-

- मण्डौर (जोधपुर)
- श्रीमाली ब्राह्मण पूजा करते हैं।

विभीषण मंदिर:- कैथून (कोटा)

खोड़ा गणेश:- अजमेर

रोकड़िया गणेश:- जैसलमेर

सालासर बाजाली:- चुरू (बालाजी के दाढ़ी - मूंछ हैं।)

72 जिनालय:- भीनमाल (जालौर)

मेहन्दीपुर बाजाली:- दौसा (N.H.-11 आगरा से जयपुर)

पावापुरी जैन मंदिर:- सिरोही

- नारेली के जैन मंदिर:- अजमेर

बालापरी:- नागौर (कुम्हारी) यहां खिलौने चढ़ाये जाते हैं।

मूछाला महावीर:- घाघेराव (पाली)

33 करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर:- बीकानेर (जूनागढ़)

33 करोड़ देवी-देवताओं की साल:- मंडौर (अभयसिंह द्वारा निर्मित)

नीलकण्ड महादेव मंदिर:- अलवर (अजयपाल द्वारा निर्मित)

मालासी भैरू जी का मंदिर:- मालासी (चुरू)

. यहां भैरू जी की उल्टी मूर्ति लगी हैं।

खाटू श्याम जी का मंदिर:-

- खाटू (सीकर)
- बर्बरीक का मंदिर

कल्याणजी का मंदिर:- डिग्गी (टोंक)

अन्य मंदिर:-

1. ऋषभदेव जी का मंदिर:- उदयपुर

More PDF Install App - DevEduNotes

- पूरे देश में एकमात्र यही ऐसा मंदिर हैं जहां सभी सम्प्रदाय व जाति (श्वताम्बर, दिगम्बर, जैन, शैव, वैष्णव, भील) के लोग आते हैं।

2. सिरयारी मंदिर- पाली

- जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के प्रथम आचार्य री भिक्षु की निर्वाण स्थली।

3. मुकन्दरा का शिवमंदिर - कोटा

4. स्वर्ण मंदिर- पाली

- जिसे 'Gateway of Golden and Mini umbai' के नाम से जाना जाता हैं।

5. सुन्धा माता का मंदिर- जालौर

- राजस्थान का प्रथम रोप-वे बनाया गया हैं।

6. नागर शैली का अंतिम व सबसे भव्य मंदिर- सोमेश्वर (किराडू) (पुर्जर - प्रतिहार कालीन)

7. पंचायतन शैली का प्रथम उदाहरण राजस्थान में - औसियां का 'हरिहर मंदिर' (भारत में प्रथम उदाहरण- देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर)

- नाकोड़ा भैरव जी - बालोतरा।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान की मस्जिदें एवं मजारें

1. ईदगाह मस्जिद: जयपुर
2. मलिकशाह की दरगाह: जालौर
3. मीठे शाह की दरगाह: गणरौण
4. गुलाब खां का मकबरा : जोधपुर
5. गुलाब कलन्दर का मकबरा: जोधपुर
6. गमता गाजी मीनार: जोधपुर
7. भूरे खां की मजार: मेहरानगढ़ (जोधपुर).
8. इकमीनार : जोधपुर
9. सफदरजंग की दरगाह: अलवर
10. अलाउदीन आलमशाह की दरगाह: तिजारा (अलवर)
11. बीबी जरीना का मकबरा: धौलपुर
12. मेहर खां की मीनार शिवगंज (सिरोही)
13. सैय्यद बादशाह की दरगाह: शिवगंज (सिरोही)
14. जामा मस्जिद : शाहबाद (बारां)
15. काकाजी परी की दरगाह: प्रतागढ़
16. मस्तान बाबा की दरगाह: सोजत (पाली)
17. रजिया सुल्तान का मकबरा: टोंक
18. गूलर कालदान की मीनार: जोधपुर
19. तन्हापीर की दरगाह: जोधपुर
20. कबीर शाह की दरगाह: करौली
21. कमरूद्दीन शाह की दरगाह: झुंझुनू
22. पीर अब्दुल्ला की दरगाह: बांसवाड़ा
23. दीवान शाह की दरगाह: कपासन (चित्तौड़गढ़)
24. हजरत शक्कर बाबा की दरगाह: नरहड़ (झुंझुनूं) इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता हैं।
25. सैय्यद फखरूद्दीन की दरगाह: गलियाकोट (डूंगरपुर)
26. चल फिर शाह की दरगाह: चित्तौड़गढ़
27. पंजाब शाह की दरगाह: रणथम्भौर
28. मर्दानशाह पीर की दरगाह: रणथम्भौर
29. फखरूद्दीन चिश्ती की दरगाह: सरवाड़ (अजमेर)
30. नालीसर मस्जिद: सांभर (जयपुर)
31. इमली वाले बाबा की दरगाह: ताला (जयपुर)
32. लैला मंजनू की मजार: रायसिंह नगर (गंगानगर)
33. बाबा दौलतशाह की दरगाह: चौमूं
34. दूल्हेशाह की दरगाह: पाली
35. पीर निजामुद्दीन की दरगाह: फतेहपुर (सीकर)

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान मे प्रमुख मेले

राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित मेले :-

1. पतंग महोत्सव - जयपुर
2. ऊंट महोत्सव - बीकानेर
3. मरू महोत्सव - जैसलमेर
4. थार महोत्सव - बाड़मेर
5. हाथी महोत्सव - जयपुर
6. शरद महोत्सव - माउंट आबू
7. मेवाड महोत्सव - उदयपुर
8. दशहरा महोत्सव - कोटा

हिण्डोला महोत्सव - पुष्कर

अन्य मेले:-

1. गंगा दशहरा - कामां (भरतपुर)
2. भोजन थाली मेला - कामां (भरतपुर)
3. बसंत पचंमी मेला - दौसा
4. गौतम जी का मेला - सिरोही
5. जगदीश मेला - गोनेर (जयपुर)
6. घोड़ो-गधो का मेला - भावबन्ध (जयपुर) (लुणियावास)
7. सावित्री मेला - पुष्कर
8. गरूड़ मेला - बयाना (भरतपुर)
9. सुईया कपालेश्वर मंदिर - बाडमेर (इसे अर्द्धकुम्भ भी कहते हैं।)
10. राम रावण मेला - बड़ी सादड़ी (चित्तौड़गढ़)
11. मीरा महोत्सव - चित्तौड़गढ़
12. तीर्थराज मेला - धौलपुर
13. डोलची महोत्सव - दौसा
14. डोल मेला - बारां
15. विक्रमादित्य मेला - उदयपुर
16. चनणी चेरी कामेला - देशनोक (बीकानेर)
17. सवाई भोज मेला - आसींद (भीलवाड़ा)
18. बाणगंगा मेला - विराटनगर (जयपुर)
19. चूंगी तीर्थ मेला - जैसलमेर
20. चारभुजा नाथ मेला - मेड़ता (नागौर)

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

प्रजामंडल आंदोलन

रियासतों मं कुशासन को समाप्त कर उत्तरदायी शासन की स्थापना करने , राजनीतिक जनजागृति पैदा करने, नागरिकें के मौलिक अधिकारों की बहाली करने के उद्देश्य से किये गये आंदोलन प्रजामंडल आंदोलनों के नाम से जाने जाते हैं।

1938ई. के कांग्रेस के हरिपुर अधिवेशन के बाद देशी रियासतों में चल रहे संघर्ष को कांग्रेस ने अपना समर्थन दिया

1927 ई. मं बम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना की गयी थी, जिसकी रियासती इकाइयों को प्रजामण्डल के नाम से जाना गया।

<u>मारवाड़ सेवा संघ</u>:- 1920ई. में जयनारायण व्यास व चांदमल सुराणा द्वारा मारवाड़ सेवा संघ का गठन किया गया जिसका उद्देश्य जना जागृति पैदा कर मारवाड़ रियासत में उत्तरदायी शासन की थापना करवाना था। मारवाड़ सेवा संघ, राजस्थान सेवा संघ की एक इकाई थीं

<u>तोल आंदोलन</u>:- 1920-21 ई में मारवाड़ रियासत में ब्रिटिश भारत की तर्ज पर सौ तोले के स्थान पर 80 तौले का एक सेर कर दिया गया, मारवाड़ सेवा संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा इसके खिलाफ आंदोलन चलाया गया, अत: सरकार को अपना निर्णय बदलना पड़ा।

मारवाड़ यूथ लीग:- 10 मई 19831 ई. को जयनारायण व्यास द्वारा मारवाड़ रियासत में इस संगठन की स्थापना की गयी।

<u>चण्डावल घटना</u>:- मई 1942 ई. में चण्डावल (पाली) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजा परिषद के कार्यकर्ताओं की एक सभा पर रियासती सैनिलकों द्वारा हमला किया गया फलस्वरूप कई कार्यकर्त्ता घायल हो गये।

<u>डाबड़ा काण्ड</u>:- 13 मार्च 1947 ई. को डाबड़ा (नागौर) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं की एक सभा मोतीलाल तेजावत नामक एक किसान के घर पर हो रही थी। डीडवाना परगने के जागीरदार द्वारा कार्यकर्ताओं पर हमला करवाया गया। प्रजामंडल के मुख्य नेता चुन्नीलाल समेत 12 लोग मारे गये। मथुरादास माथुर घायल हो गये।

<u>सर्वहितकारिणी सभा</u>:- 1913 ई. में बीकानेर प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं स्वामी गोपालदास व कन्हैंया लाल द्वारा चुरू में इसकी स्थापना की गयी इसके तहत बालिका शिक्षा के लिए पुत्री पाठशाला तथा दलित शिक्षा के लिय कबीर पाठशालाएं खोली गयी।

<u>बीकानेर षडयंत्र अभियोग</u>:- बीकानेर महाराजा गंगासिंह जब दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931) में भाग लेने के लिये लंदन गये तब वहां पर बीकानेर के कार्यकर्ताओं द्वारा 'बीकानेर दिग्दर्शन' (बीकानेर में कुशासन को बताने वाली) नामक पत्रिका बटंवायी गयी। इसके दण्डस्वरूप स्वामी गोपालदास, चन्दनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ बीकाने षडयंत्र मुकदमा चलाया गया।

जेन्टलमैन एग्रमेन्ट:- भारत छोड़ो आंदोलन के समय सितम्बर 1942 में जयपुर प्रजामंडल के नेता हीराला शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा ईस्माइल के मध्य एक समझौता हुआ, जिसे Gentlemen Agreement कहा जाता हैं, इसके तहत यह तय किया गया कि जयपुर रियासत अंग्रेजों की जन-धन से सहायता नहीं करेगी। प्रजामंडल के कार्यकर्त्ता शांतिपूर्ण विरोध कर सकते हैं तथा कार्यकत्ताओं की गिरफ्तारी नहीं की जायेगी। राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के प्रयास किये जायेंगे।

जयपुर प्रजामण्डल भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लेगा

More PDF Install App - DevEduNotes

आजादमोर्चा:- जयपुर प्रजामंडल के द्वारा Quit India movement में भाग नहीं लेने के हीरालाल शास्त्री के निर्णय से नाराज कार्यकर्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में आजाद मार्चा का गठन किया तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया, जिसके अन्य नेता रामकरण जोशी, दौलतमल भंडारी व गुलाबचन्द कासलीवाल थे।
तसीमो कांड:- अप्रैल 1947 ई. में धौलपुर प्रजामंडल के तसीमो नामक गांव में पुलिस फायरिंग की गयी, जिसमें पंचमसिंह व छतरसिंह दो कार्यकर्त्ता शहीद हो गये।

रास्तापाल घटना:- वागड़ सेवा संघ द्वारा संचालित विद्यालयों को बंद करवाने गये डूंगरपरु राजय के सैनिकों कने रास्तापाल नामक गांव में विद्यालय बंद नहीं करने पर अध्यापक नानाभाई की गोली मारकर हत्या कर दी तथा दूसरे अध्यापक सेगांभाई को गाड़ी के पीछे बांधकर घसीटा गया, 13 वर्षीय भील बालिका कालीबाई अध्यापक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस की गोलियों की शिकार (शहीद) हो गयी। (19 जून 1947) डूंगरपुर जिले में गेप सागर के तट पर काली बाई की प्रतिमा लगी हुयी हैं। राजस्थान सराकर बालिका शिक्षा के क्षेत्र में बालिका पुरस्कार प्रदान करती हैं।

कथटराथल सम्मेलन:- 25 अप्रैल 1934 ई. को कटराथल (सीकर) नामक स्थान पर महिलाओं से दुर्व्यवहार के खिलाफ किशोरी देवी (किसान नेता हरलालसिंह) के नेतृत्व में 10000 महिलाओं का एक सम्मेलन हुआ इसमें भरतपुर के किसान नेता ठाकुर देशराज की पत्नी उत्तमादेवी ने भी भाग लिया था।

कूदंन हत्याकांड:- अप्रैल 1934ई. में कूदंन (सीकर) नामक गांव में पुलिस अधिकारी कैप्टन वेब द्वारा किसानों पर फायरिंग कर दी गई, इसमें कई किसान मारे गये, इस हत्याकांड की चर्चा लदंन के House of Commons में भी हुयी थी।

महत्वपूर्ण सगंठन:-
1. देश हितैषिणी सभा:- मेवाड़ रियासत में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के उद्देश्य से 2 जुलाई 1877ई. को महाराणा सज्जनसिंह की अध्यक्षता में समाज सुधार संगठन बनाया गया, जिसके उद्देश्य विवाह के समय होने वाले खर्च को कम करना,ख बहु विवाह निषेध करना था।
समाज सुधार के परिप्रेक्ष्य में किसी रियासत में हुआ पहला प्रयास कवि राजा श्यामलदास (वीर विनोद के लेखक) इसके सदस्य थे।

2. वाल्टरकृत राजपूत हिकारिणी सभा:- जनवरी 1889 ई. में A.G.G. वाल्टर ने राजपूतों में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के लिए इस सभा का गठन किया जिसके उद्देश्य:-
1. विवाह योग्य आयु निश्चित करना (लड़के के लिए 18, लड़की 14 वर्ष)
2. बहु विवाह बंद करना। 3. टीका व रीत बंद करना।

3. राजपूताना मध्य भारत सभा:- 1918ई. में जमनालाल बजाज द्वारा दिल्ली के चादंनी चौक में मारवाड़ी पुस्तकालय में इस सभा का गठन किया गया जिसका मुख्यालय अजमेर (बाद में) बनाया गया।
विजयसिंह पथिक, गणेश शंकर विद्यार्थी, चांदकरण शारदा आदि लोग भी इससे जुड़े हुये थे।

4. राजस्थान सेवा संघ:- 1919 ई. में विजयसिंह पथिक द्वारा वर्धा (महाराष्ट्र) में इसका गठन किया गया था। रामनारायण चौधरी व हरिभाई किंकर इस संघ के मुख्य कार्यकर्त्ता थे। राजस्थान सेवा ने किसान आंदोलनों (बूंदी, शेखावाटी आदि) में अपनी मुख्य भूमिका निभाई राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय अजमेर में बनाया गया।

More PDF Install App - DevEduNotes

5. जीइन कुटीरः- 1927 ई. में वनस्थली (टोंक) में हीरालाल शास्त्री द्वारा इस संस्था का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य एक ऐसे ग्राम समाज का निर्माण करना था, जो पूर्णतः स्वावलम्बन पर आधारित हैं।

6. हिन्दी साहित्य समितिः- 1912 ई. में इस संस्था की स्थापना की गयी थी, इसके तहत 1927ई. में भरतपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन करवाया गया जिसके अध्यक्ष गौरी शंकर हीराचन्द औझा थे इस सम्मेलन में रवीन्द्र नाथ टैगोर व जमना लाल बजाज ने भी भाग लिया था।

(भरतपुर में किशनसिंह ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था।)

7. अखिल भारतीय हरिजन संघः- 1932 ई. में गांधी जी ने घनश्यामदास बिड़ला के नेतृत्व में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की थी, इसकी राजपूताना इकाई के अध्यक्ष हरविलास शारदा थे।

8. वीर भारत सभाः- राजस्थान में क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रयास के लिये 1910 में केसरीसिंह बारहठ व राव गोपालसिंह खरवा द्वारा इसका गठन किया गया था, विजयसिंह पथिक भी इससे जुड़े हुये थे। यह संस्था अभिनव भारत (वीर सावरकर) की प्रान्तीय इकाई थी।

प्रजामण्डलों का राजनैतिक व सामाजिक योगदानः

राजनैतिक योगदान	सामाजिक योगदान
. राजनीतिक चेतना जागृत	. महिलाओं की स्थिति में सुधार
. राष्ट्रीय चेतना का संचार	. शिक्षा का प्रचार-प्रसार
. उत्तरदायी सरकारें की स्थापना	. आदिवासियों के कल्याण के लिये सुधार कार्यक्रम
. एकीकरण का मार्ग प्रशस्त	. हरिजन उद्धार
. राष्ट्रीय एकता को बल	. बेगार प्रथा का उन्मूलन
. सामन्तशाही समाप्त	. सामाजिक सुधार
.राष्ट्रीय आंदोलनों को बल	

Springboard ACADEMY
More PDF Install App - DevEduNotes

संस्कार / संस्कृति

जडूला:- जातकर्म (बच्चों के बाल उतरवाना)

बरी पड़ला:- वर पक्ष के लोगों द्वारा वधू पक्ष के लोगों के लिए लेकर जाने वाले उपहार।

सामेला (मधुर्पक):- शादी पर वधु पक्ष द्वारा वर पक्ष की अगुवानी करना।

मोड़ बाँधना:- वर को बारात में चढ़ाते समय मांगलिक कार्य।

नांगल:- नये घर का उद्‌घाटन

कांकनडोरा:- वर को शादी पूर्व बांधे जाने वाला डोरा।

पहरावणी / रंगवरी / समठुनी - शादी के बाद वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष को दिये जाने वाले उपहार।

बढ़ार:- शादी के समय का प्रीतिभोज।

गौना / मुकलावा:- वाल विवाह होने पर बाद में लड़की की पहली विदाई।

छूछक/जामणा:- नवजात के जन्म दर, ननिहाल पक्ष की ओर से दिये जाने वाले आभूषण।

दरसोठन:-

रियाण:- किसी अवसर पर अमल (अफीम) की मनुहार।

बैकुण्ठी/चंदोल:- शव यात्रा।

अघेटा:- शमशान ले जाते समय रास्ते में अर्थी की दिशा बदलना।

पगड़ी:- घर में मुखिया की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी चुना जाना।

सांतरवाडा:- मृत्यु के बाद दी जाने वाली सांत्वना।

फूल चुगना:- मृत्यु पश्चात् अस्थि एकत्रित करना।

Springboard ACADEMY

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था

सामन्ती व्यवस्था (Feoda System):- राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से हैं जो रक्त सम्बन्धों पर आधारित कुलीय, प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था होती थी, जिसमें समकक्षों में प्रथम होता था। (कबीलाई संस्कृति)

राजस्थान की सामन्त व्यवस्था पश्चिम की सामन्ती व्यवस्था के समान नहीं थी, जिसमें राजा व सामन्त के मध्य स्वामी व सेवक का सम्बन्ध होता था बल्कि बंधुत्व पर आधारित थी।

शासक पिता की मृत्यु के बाद बड़ा पुत्र राजा बनता था। तथा शेष छोटे भाईयों को जीवन निर्वाह के लिए जमीन आंवटित की जाती थी, इन भाईयों को सामन्त तथा भूमि को सामन्त जागीर कहा जाता था जिस पर उस सामन्त का जन्मजात अधिकार होता था।

सामन्ती व्यवस्था का स्वरूप:-

राजस्थान कमें सामन्ती व्यवस्था पदसोपान पर आधारित नहीं थी बल्कि टैंट व्यवस्था के समान थी जिसमें राजा टेंट का मुख्य स्तमी तथा सामन्त उसके अन्य स्तम्भ होते थे। किसी एक भी स्तम्भ के हिलने से पूरी व्यवस्था पर उसका पूरा प्रभाव पड़ता था।

सामन्ती व्यवस्था की विशेषताएं:-

यह रक्त सम्बन्धों पर आधारित प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था थी। राजा इन सामन्तों की मुख्य प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति किया करता था।

राजा के सभी प्रशासनिक सैनिक व नीतिगत निर्णय सामन्तों की सलाह। परामर्श पर ही लिए जाते थे।

सामन्त का उत्थान व पतन राजा के साथ ही होता था। वह सअपनी मर्जी से किसी अन्य राजय के साथ युद्ध या संधि का निर्णय नहीं ले सकता था।

राजा व सामन्तों के सम्बन्ध सम्मान व कर्त्तव्यों पर आधारित होते थे। राजा सामन्तों के विशेषाधिकारों का सम्मान करता थ। वहीं सामन्त राज्य के प्रति कर्त्तव्य को निभाते थे।

सामन्तों को अपने पास एक सेना (जतमीयत) रखनी पड़ती तथा आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनि क सहायता दी जाती थी, यह युद्ध व शंतिकाल दोनों में रहती थी। इस अनिवार्य सैनिक सहायता के पीछे यह भावना रहती थी कि उस राज्य की भूमि पर सबका सामूहिक अधिकार रहे।

राजा समकक्षों में प्रथम होता था इस तथ्य को मजबूती देने के लिए राजा सामन्तों को काकाजी व भाई जी जैसे सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करता था, वहीं सामन्त राजा को 'बापजी' कहकर बुलाते थे। (राजा राज्य का प्रधान, सामंत जागीर का प्रधान)

सामन्तों को मिलने वाले विशेषाधिकार:-

ताजीम:- यह एक राजकीय सम्मान होता था जिसमें सामन्त के दरबार में आने पर राजा को खड़े होकर अभिवादन करना होता हैं। ताजीम दो प्रकार की होती थी।

इकैवडी (इकहरी)	दोवड़ी (दोहरी)
इसमें राजा (एक बार ही) सामन्त के केवल आने पर खड़ा होता था।	इसमें राजा को सामन्त के आगमन व गमन दोनों पर खड़ा होना पड़ता था।

More PDF Install App - DevEduNotes

बाँह पसाव:-
इसमें जब कोई सामन्त राजा के दरबार में आता था तो वह अपनी तलवार राजा के पैरों में रखकर उसके पैरों को छूता था। बदले में राजा उसके कंधे पर हाथ रखता था।

हाथ का कुरब:-
इसमें भी सामन्त राजा के पैरों में तलवार रखकर उसकें पैंरों को छूता था। बदलें में राजा उसके कंधे पर हाथ रखकर हाथ को हदय से लगा लेता था।

सामन्तों द्वारा दिये जाने वाले (राज्यों को) कर:-
रेख:- यह किसी जागीर का अनुमानित भू-राजस्व होता था, जो उस जागीर के पट्टे पर लिखा होता था।

पट्टा रेख	भरतु रेख
पट्टे में लिखा अनुमानित भू-राजस्व	जागीर का वास्तविक भू राजस्व जो सामन्त राज्य को भरता था।

उत्तराधिकार शुल्क:- किसी जागीर में सामन्त की मृत्यु हो जाने पर राज्य द्वारा उस जागीर पर जब्ती बिठा दी जाती थी। फिर न्या सामन्त राज्य को उत्तराधिकार शुल्क चुका कर अपने लिए जागीर पुन: प्राप्त करता था। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उस जागीर का नवीनीकरण था। इसे मारवाड़ में हुक्मनामा व पेशकशी तथा मेवाड़ में कैद या तलवार बंधाई कहते हैं।
जैसलमेर एकमात्र ऐसी रियासत थी जहां उत्तराधिकार शुल्क नहीं लिया जाता था।

न्योत कर:-
राजकुमारी की शादी के अवसर पर सामन्तों द्वारा राजा को दिया जाने वाला कर।

गनीम बराड़:- युद्ध के अवसर पर दिया जाने वाला कर।

जागीर के प्रकार

सामन्त जागरी	हकुमत जागरी	भौम जागीर	सासण जागीर
राजा द्वारा अपने रक्त सम्बन्धियों को दी जाने वाली जागरी वाली सामन्त जागीर कहलाती थी, जिस पर उनका जम्नजात अधिकार होता था	राज्य द्वारा प्रशासनिक कार्यो के बदले में मुत्सदादी (कर्मचारी) वर्ग को दी जाने वाली जागीर जिसे उस जागीरदार की मृत्यु के बाद 'खालसा' कर दिया जाता था।	राज्य के लिए बलिदान के बदले में दी जाने वाली जागीर, भौम जागीर कहलाती थी।	चारणों, ब्राह्मणों, मंदिरों, शिक्षा केन्द्रो आदि को दी जाने वाली जागीर, सासण जागरी कहलाती थी जिस पर किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता था जिसे 'माफी जागीर' कहा जाता था।

Springboard Academy

More PDF Install App - DevEduNotes

सामनतों की श्रेणियों:-

सामन्तों को उनके सेवा कार्य तथा बलिदानों के बदले में जो जागीरे दी जाती थी, उनका अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीके से वर्गीकरण होता था। इन सामन्तों के विशेषाधिकार व सम्मान भी इन श्रेणियों से तय होते थे। उदाहरण स्वरूप मेवाड़ में प्रथम श्रेणी के सामन्तों की संख्या 16 थी, इनमें भी सलूम्बर (उदयपुर) के चूंडावत का महत्वपूर्ण स्थान था, उसे राज्य में प्रधान का पद दिया जाता था। युद्ध के समय वह सेना का सेनापति होता था। राजा की अनुपस्थिति में राजधानी संभालता था। राजा के राजतिलक के समय उसके तलवार बांधता था।

जोधपुर में सामन्तों की मुख्यतः 4 चार श्रेणियां थी जिन्हें राजवी, सिरदार, गिनायत, व मुत्सद्दी में विभक्त किया गया हैं।

जयपुर (आमेर) रियासत में पृथ्वीसिंह के समय 12 कोटडी व्यवस्था लागू की गयी।

सामन्तों के मुख्यतः दो र्ग होते थे।

1. भौमिया सामन्त

भूमि की रक्षा करते हुये मारे जाने पर उस बलिदान के बदले में जो जागीर दी जाती थी, उन्हें भौमियां सामन्त कहते थे। इनका अपनी जागीर पर वंशानुगत अधिकार होता था व इन्हें बेदखल किया जा सकता था।

भौमिया सामन्तों की राज्य कार्यो में नियुक्तियां कर दी जाती थी जैसे- डाक पहुंचाना, युद्ध सामग्री पहुंचाना

2. ग्रासिया सामन्त

जिन्हें सैनिक सेवा के बदले भूमि दी जाती थी, उन्हें ग्रासिया सामंत कहते थे। इनकी सेवाओं में किसी प्रकार की कमी आने पर इनकी भूमि छीन ली जाती थी।

प्रशासनिक व्यवस्था:-

राजा:- राज्य का मुख्य सर्वेसर्वा होता था। सभी प्रशसनिक सैनिक व न्यायिक शक्तियां इसमें निहित होती थी। परन्तु राजा की निरकुंश सत्ता नहीं होती थी। उस पर नियंत्रण करने वालों- सामन्त, पुरोहित, युवराज।
परम्परागत नीति नियमों व धर्म शास्त्रों का दबाव हमेशा बना रहता था।
राजा के अल्पवयस्क होने पर राजमाएवं शासन चलाया करती थी।
कभी-भी बड़े पुत्र का युवराज के रूप में राज्याभिषेक कर दिया जाता था तो युवराज भी शासन कार्यों में सहयोग करता था।

प्रधान:- राजा के बाद में दूसरा मुख्य अधिकारी, जो राजा को सैनिक व न्याय सम्बन्धी मामलों में सलाह दिया करता था।

कोटा रियासत में	- फौजदार
बीकानेर भरतपुर	- मुख्त्यार
जयपुर	- मुसाहिब

दीवान:- दीवान राज्य के वित्त व राजस्व सम्बन्धी मामलों की देख रेख करता था वह राज्य के आय-व्यय का लेखा-जोखा व जागीरों द्वारा दिये जाने वाले वार्षिक कर का हिसाब रखता था। कई वार राजा की अनुपस्थिति में जब राज्य पर नियंत्रण रखता था तो उसे देश दीवान के नाम से जाना जाता था।

More PDF Install App - DevEduNotes

मुसाहिब– राजा का मुख्य सलाहकार
बख्शी– यह सैन्य विभाग पर नियंत्रण रखता था। सैनिक सामग्री सैनिकों के अनुशासन व प्रशिक्षण की व्यवस्था करता था।

शिकदार:– शिकदार नगर कोतवाल होता था जो नगर में कानून व्यवस्था व शांति बनाए रखने का प्रयास करता था।

खानसामा:– यह राजा का विश्वसनीय अधिकारी होता था जो राजकीय सामानों की खरीद राजमहल की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा राजकीय उद्योगों के सामानों का क्रय – विक्रय किया करता था।
इस पद पर राजा किसी ईमानदार व्यक्ति की नियुक्ति करता था।

वकील:– यह राजधानी में ठिकाणे का प्रतिनिधि होता था।

मीर मुंशी:– यह कुटनीतिक पत्र व्यवहार का कार्य देखता था।
रूक्का:– राजा द्वारा सामन्तों को भेजे जाने वाले पत्र।
खरीवा:– राजा द्वारा किसी दूसरे राजा को भेजे जाने वाले पत्र।

किलेदार:–

डयोढ़ीदार:–

ग्राम प्रशासन:–
- मोजा (गांव) ग्रामिक (पटवारी) चौधरी (पटेल)
- तफेदार:– फसल कटते समय राज्य के भू–राजस्व को निश्चित करता था।

भू–राजस्व प्रशासन:–
- भूमि को दो भागों में विभक्त किया गया था।

<u>कृषि भूमि</u>	<u>चरणोता भूमि/गोचर</u>
खेती की जाती थी	राजा भी खालसा घोषित नहीं कर सकता था।

किसान भी दो तरह के होते थे–

<u>बापीदार</u>	<u>गैर–बापीदार</u>
दाखला (पट्टा) कुएं खुदवा सकते थे।	खेतीहर मजदूर, शिकमी किसान
लकड़ी उपयोग में ले सकते थे।	
मालिकाना हक	

भू– राजस्व को भोग, हासिल, लगान कहा जाता था।
बारानी व उन्नाव भूमि पर भू–राजस्व अलग – अलग होता था।

More PDF Install App - DevEduNotes

– जयपुर में उन्नाव भूमि पर राजस्व, बारानी भूमि से 1.5 गुणा था।

भू-राजस्व वसूलने के तरीके:-

लाटा:- फसल को काटकर खलिहान में उसकी सफाई करने के बाद राज्य का हिस्सा निश्चित किया जाता हैं। इस समय राज्य का कर्मचारी (तफेदार) वहां उपस्थित होता था।

कूंता:- खड़ी फसल का अंदाजा लगाकर ही भू-राजस्व निश्चित कर दिया जाता था।

मुकता:- जब कि गांव का एक मुश्त भू-राजस्व निर्धारित कर दिया जाता था।

घूघरी:- राज्य द्वारा दिये गये बीज के बदले लिया जाने वाला भू राजस्व घूघरी कहलाता था।

बीघोड़ी जब गांवों में बीघा के आधार भू-राजस्व लिया जाता था, बीघोड़ी कहलाता था।

सामन्ती व्यवस्था के प्रभाव:-

1. जनता कूपमडूण्कता की स्थिति में बनी रही, बाहरी दूनिया से अवगत नहीं हो पायी।
2. कृषि व्यवस्था का ह्रास
3. व्यापार- वाणिज्य को प्रोत्साहन नहीं दिया जैसे परिवहन- संचार के साधनों का अभाव।
4. उद्योग- धंधों को प्रोत्साहन नहीं दिया गया।
5. आर्थिक शोषण की परिणति किसान विद्रोहों हो गयी थी।
6. फिजूल खर्ची।
7. विलासितापूर्ण जीवन शैली।

सकारातमक प्रभाव:-

1. हस्तकला उद्योग को प्रोत्साहन दिया।
2. कला एंव संस्कृति का संरक्षण।
3. स्थापत्य काल को प्रोत्साहन
4. लोकगीतो, लोकनृत्यों शास्त्रीय गा यन (लंगा, मांगणियार) को जीवित बनाए रखा।

शुक्र नीति के 9 प्रकार के किले बनाए गए हैं।

1. एरण दुर्ग :7 जिसमं जाने के लिए कांटो - पतीरों का दुर्गम पथ हो।
2. गिरि दुर्ग- पहाड़ी पर
3. धान्वन दुर्ग :- मरूस्थल में।
4. वन दुर्ग - वन में।
5. पारिख दुर्ग- चारों तरफ खाई / न हर हो। उदा. बीकानेर का किला ।
6. पारिध दुर्ग:- चारों तरफ परकोटा हो। उदा. बीकानेर का किला।
7. सैन्य दुर्ग:- सैनिकों का निवास स्थान उदा. चित्तौड़
8. ओदक दुर्ग:- चारों तरफ पानी हो। (नदियों के किनारे बसा हुआ दुर्ग) उदा. गारोन और भेसरोगढ़
9. सहाय दुर्ग:- बन्धु बान्धवों, शूरवीरों का निवास स्थान।

More PDF Install App - DevEduNotes

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएं

- विषय वस्तु की विविधता, वर्ण विविधता, प्रकृति परिवेश, देश काल के अनुरूप होना राजस्थान चित्रकला की प्रमुख्पा विशेषताएं हैं।
- धार्मिक एंव सांस्कृतिक क्षेत्र की चित्रकला में भक्ति एंव श्रंगार इस की प्रधानता हैं।
- दीप्तियुक्त, चटकदार एंव सुनहरे रंगो का अधिक प्रयोग किया जाता है।
- किला महलों व हवेलियों में त्रिकला का पोषण हुआ।
- मुगल त्रिकला से प्रभावित राजस्थानी चित्रकला में विलासिता, तडक भडक अन्तःपुर के चित्रव पारदर्शी वस्त्र पहने पात्रों के चित्र बनाए गए हैं
- राजस्थानी चित्रकला में समग्रता के दर्शन हाते हैं। मुख्य आकृति व पृष्ठभूमि का हमेशा सामन्जस्य बना रहता था। चित्र में प्रत्येक वसतु का अनिवार्य महत्व होता था।
- राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति का मानवीकरण किया गया हैं। प्रकृति को जड़ नहीं मानकर उसका मान व के सुख - दुख के साथ तारतम्य स्थापित किया गया।
- मुगलों की अपेक्षा राजस्थानी चित्रकारों को अधिक स्वतंन्त्रता होने के कारण लोक विश्वासों को अधिक अभिव्यक्ति मिली।
- विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक वर्णन कर मान व जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण किया गया।
- राजस्थान चित्रकला में नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया हैं।
- प्राकृतिक सौन्दर्य का अधिक चित्रण होने के कारण राजस्थानी चित्रकला अधिक मनोरम हो गयी हैं।

राजस्थान की संगीतबद्ध जातियां

ढोली, राणा, लंगा, मांगणियार, कलावन्त, भवई, कजंर, भोपा, ढ़ाढी

लोकगीतों की विशेषताएंः-

मनष्य मन की सुख-दुख की भावनाओं का मौखिक रूप में लयबद्ध होना ही लोकगीत हैं।

राजस्थानी लोकगीतों में पेड़ -पौधों का वण्रन कर प्रकृति के साथ लोगों का जुडाव प्रकट होता हैं।

जैसेः- चिश्मी, पीपनी, जीरा

पशु-पक्षियों के माध्यम से विरहणी महिलाओं ने अपने प्रियतम के पास संदेश भेजे हैं तथा उन पक्षियों को अपने परिवार के सदस्य के समान माना गया हैं।

जैसेः- कुरजां, सुवटियों, मोरियो, बिच्छूडो।

राजस्थान लोकगीतों की स्वतंत्रता की बात नहीं की गई हैं। ये पति - पत्नी के निर्मल दाम्पत्य प्रेम के गीत हैं।

राजस्थान लोकगीतों में हमारे लोक विश्वासों की मुखर अभिव्यक्ति हुई हैं।

विभिन्न देवी देवताओं पर लिखे गए गीत निराश मनुष्य में भी आशा का संचार करते हैं

राजस्थानी लोकगीतों में पायल की झंकार व तलवार की टंकार दोनों ही सुनाई देती हैं।

सामन्ती परिवेश मे लिखे गए राजस्थान लोकगीतो में वीर इस की प्रधानता रहती हैं।

More PDF Install App - DevEduNotes

लोक देवी - देवताओं का योगदान

- समाज सुधार

'दीधा निज गुण देवता, रिखियां दी आसीस।
जिण दिन सिरजी मरुधरा, सोणी नायो सीस।।'

'दीधा नदी जो देवता, लूंठापण ही लीण।
इन्दर माग्यो आंतरै, अब लग बरखा हीन।।'

→ राजस्थान में मानव की सबसे पहली हलचल बनास और उसकी सहायक नदियों के आस-पास देखने को मिली।

→ Stone Age :

(1) BAGORE – In Bhilwara dist.

– कोठारी नदी के किनारे
– पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य यहाँ मिले हैं।
– पाषाणकालीन औजारों के भंडार यहाँ मिले हैं।
– यहाँ का उत्खनन सर्वप्रथम 'विरेन्द्र नाथ मिश्र' ने किया।

(2) TILWARA – In Barmer dist.

– लूनी नदी के किनारे
– यह बागोर की बस्ती के समकालीन थी तो यहां भी पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।
– 'अग्नि कुंड'

* Jayal, Deendwana } Nagore

* Budha pushkar · Ajmer

* राजस्थान, सिंधु सभ्यता के युग में —

[1] KALIBANGA : In Present hanumangarh

- अर्थ → काली चूड़ियां
- 1952 → सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने उत्खनन प्रारम्भ किया।
- 1961-1969 → वास्तविक उत्खनन B.K. Thaper & B.B. Lal ने किया (5 स्तरों तक)
- कालीबंगा से प्राक् हड़प्पा और विकसित हड़प्पा के अवशेष मिले हैं।
- सर्वप्रथम जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा के लोग दो फसलें उगाया करते थे— चना, सरसों
- अग्नि वेदिकाएँ प्राप्त हुयी हैं।
- कालीबंगा में लकड़ी की नालियां बनी हैं।
- मकान कच्ची ईंटो व अलंकरित ईंटो के बने थे।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुये हैं।
- भूकम्प के अवशेष मिले हैं।
- कालीबंगा प्राचीन सरस्वती या घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ था, शायद इन नदियों के मार्ग परिवर्तन कर लेने पर कालीबंगा नष्ट हो गया।
- 1985-86 A.D.: भारत सरकार ने एक संग्रहालय बनवाया

[2] SOTHI : In Bikaner

- अमलानन्द घोष ने इसे सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता का उद्गम स्थल कहा है। इसे 'कालीबंगा I' भी कहा जाता है।
- इस प्रकार के दो केन्द्र और मिले हैं —
  (1) सोवाणीया (2) पूगल

[3] आहड़ :

- वर्तमान उदयपुर जिले में स्थित।
- चूंकि यह सभ्यता बनास नदी के आस-पास मिली है, इसलिए इसे बनास सभ्यता भी कहते हैं।
- 'आहड़' स्थल बनास की सहायक नदी आयड़ / बेड़च नदी के किनारे बसा हुआ था।
- इसे मृतकों के टीलों की सभ्यता भी कहते हैं।
- यहां 1 घर में 6 से 8 चूल्हे मिले हैं। इससे हमें संयुक्त परिवार व सामुहिक भोज की जानकारी मिलती है।
- यहां से एक यूनानी मुद्रा मिलती है, जिस पर 'अपोलो' का चित्र बना हुआ है। [सूर्य का देवता]
- यहाँ काले व लाल मृद् भांड मिले हैं, जिन्हें 'गोरे' या 'कोठ' कहते हैं।
- यहां से बैल की मृण मूर्ति प्राप्त हुयी है, जिसे 'बनासीयन बुल' कहते हैं।
- बिना हत्थे के जलपात्र मिले हैं, ऐसे जलपात्र हमें ईरान की सभ्यता से प्राप्त हुये हैं। जो ईरान के साथ सम्बन्ध को दर्शाते हैं।
- आहड़ का प्राचीनतम नाम 'आघाटपुर' है। स्थानीय भाषा में इसे 'धूलकोट' भी कहते हैं।
- 'अक्षय कीर्ति व्यास' ने यहां सर्वप्रथम उत्खनन प्रारम्भ किया। उसके बाद { रतन चन्द्र अग्रवाल, हसमुख धीरज सांकलिया, वीरेन्द्र नाथ मिश्र, } ने यहां खुदाई की।
- आहड़ के अन्य केंद्र -
  (1) गिलुण्ड - राजसमंद
  (2) बालाथल - उदयपुर
  (3) ओझीयाणा - भीलवाड़ा

21 June 2013

– आहड़ से हमें तांबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुयी हैं इसलिये इसे ताम्रवती नगरी भी कहते हैं।

☆ महाजनपद काल

– भारत की दूसरी नगरीय क्रांति भी कहा जाता है।

– महाजनपदों में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी।

– राज. में जनपद

① मत्स्य
- वर्तमान अलवर व जयपुर
- राजधानी - विराटनगर
- ऋगवेद में भी मत्स्य जनपद की जानकारी मिलती है।

② शूरसेन
- राजधानी - मथुरा
- अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली का क्षेत्र

③ कुरु
- राजधानी – इन्द्रप्रस्थ (Delhi)
- उत्तरी अलवर

अलवर
- उत्तरी → कुरु
- द. प. → मत्स्य
- पूर्वी → शूरसेन

④ राजन्य जनपद
- भरतपुर का कुछ हिस्सा

⑤ शिवि जनपद
- वर्तमान चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों में स्थित
- राजधानी – माध्यमिका (नगरी - वर्तमान नाम)
- राज. का पहला उत्खनित स्थल : नगरी

1904 A.D. D.R. Bhandarkar.

अवन्ति का एक भाग
(6) - मालव जनपद
- वर्तमान जयपुर और टोंक
- राजधानी - नगर (टोंक) (इसे खेड़ा सभ्यता भी कहते हैं।)
- सर्वाधिक सिक्के मालव जनपद के प्राप्त होते हैं।

(7) शाल्व जनपद
- अलवर जिले में स्थित।

(8) यौद्धेय जनपद
- वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में स्थित।
- रूद्रदामन (शक शासक) के गिरनार / जूनागढ़ से यह जानकारी मिलती है कि कुषाणों की शक्ति को यौद्धेयों ने रोका।

(9) अर्जुनायन जनपद
- वर्तमान अलवर, भरतपुर जिलों में स्थित।

— महाजनपद काल में बीकानेर और जैसलमेर (जोधपुर) के आस-पास के क्षेत्र को जांगल प्रदेश कहा जाता था।

* कालान्तर में बीकानेर के शासकों ने 'जांगलधर बादशाह' की उपाधि का प्रयोग किया।

मौर्य काल

— मौर्य काल में सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्र बैराठ (विराटनगर) था।

— 1837 A.D. में 'कैप्टन बर्ट' ने बीजक पहाड़ी से अशोक का भाब्रू शिलालेख खोजा। इसमें अशोक द्वारा बौद्ध संघ के प्रति निष्ठा व्यक्त की गयी है। यहाँ से एक बौद्ध स्तूप और एक बौद्ध गोलाकार मंदिर प्राप्त होता है।

— ह्वेनसांग भी यहां बौद्ध मठों की पुष्टि करता है।
↓
आत्मकथा - सी - यू - की

- कालान्तर में हूण शासक मिहिरकुल ने इन बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया।
- अशोक का भाब्रू शिलालेख वर्तमान में कलकत्ता में Musium में रखा गया है।
- जयपुर का राजा सवाई राम सिंह ने यहां खुदाई करवायी थी। जिसमें सोने की एक मंजूषा प्राप्त हुयी। सम्भवत: इसमे भगवान बुद्ध के अवशेष रहे होंगे। उस समय बैराठ का किलेदार 'कीताजी खंगारोत' था।

→ जैसासिंह सूरी की पुस्तक 'कुमारपाल प्रबन्ध' के अनुसार 'चित्रांग (चित्रांगद) मोरी' ने चित्तौड़ का किला और चित्तौड में एक तालाब का निर्माण करवाया।

→ 713 A.D – के मानसरोवर (चित्तौड़) लेख के अनुसार यहां राजा 'मान मौर्य' का शासन था। इस अभिलेख में चार शासकों के नाम प्राप्त होते हैं –

(1) महेश्वर (2) भीम
(3) भोज (4) मान

'कर्नल जेम्स टॉड' द्वारा लंदन ले जाते समय यह अभिलेख गलती से समुद्र में गिर गया था।

→ 734 A.D. में 'बापा रावल' ने राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया।

→ 738 A.D. में कणसवा (कोटा) शिवालय के अभिलेख से मौर्य राजा धवल का जिक्र मिलता है।

इसके बाद हमें राज. में मौर्यों का कोई जिक्र नहीं मिलता है।

→ बैराठ से सर्वाधिक मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होते हैं।
→ बैराठ में चट्टानों में लिखी लिपि को शंख लिपि कहते हैं।
→ 1936 में दयाराम साहनी ने यहां का उत्खनन किया था।

मौर्योत्तर काल

- यूनानी शासक 'मिनाण्डर' ने 150 A.D. में माध्यमिका पर अधिकार कर लिया था इसकी पुष्टि 'पतंजलि के महाभाष्य' से होती है।
  बैराठ से हमें मिनाण्डर की 16 यूनानी मुद्राएँ प्राप्त होती है।
- भरतपुर के 'नोह' से शुंग कालीन 5 मीटर ऊँची यक्ष की मूर्ति मिली है। इसे 'जाख बाबा' की मूर्ति कहा गया है।
- हनुमानगढ़ के रंग महल से कुषाण कालीन मुद्राएँ प्राप्त हुयी हैं। एक गुरु - शिष्य की मूर्ति मिली है।
- रंगमहल की खोज (उत्खनन) डॉक्टर 'हन्नारिद' ने की थी (स्वीडन)

गुप्तकाल

- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार, उसने राजस्थान के गणतंत्रों को अपनी अधीनता स्वीकार करवायी थी।
- चन्द्रगुप्त II ने शक राजा रुद्रसिंह III को हराकर, यहाँ के शेष भागों को अपने अधिकार में कर लिया।
- कुमारगुप्त के समय बयाना (भरतपुर) में सर्वाधिक गुप्तकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं।
- बड़वा (बारां) से गुप्तों का एक अभिलेख प्राप्त होता है। जिसमे मोखरी शासकों का वर्णन है।
- हूण शासक 'मिहिरकुल' ने बाड़ोली (कोटा / चित्तौड़) में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- चारचौमा (कोटा) का शिव मंदिर भी गुप्तकालीन स्थापत्य कला का उदाहरण है।

गुप्तोत्तर काल /

त्रिपक्षीय संघर्ष के दौरान राजस्थान

→ गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी 'भीनमाल' थी।

— ह्वेनसांग अपनी यात्रा के दौरान भीनमाल होकर गुजरा था।
वही भीनमाल को 'पी लो मो लो' लिखता है।

— ब्रह्मगुप्त (भारत का न्यूटन), भीनमाल के थे।
पुस्तकें - ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त
खंड खाद्यक

— कवि माघ भी भीनमाल के थे।
पुस्तक - शिशुपालवध

— गुर्जर प्रतिहारों ने अरबों को सिंध से आगे बढ़ने से रोका था।

→ राष्ट्रकूटों की एक शाखा कालान्तर में राज॰ में राठौड़ के रूप में आयी थी।

⇒ कुछ अन्य ताम्र पाषाण कालीन स्थल —

(1) गणेश्वर — सीकर जिले में कान्तली नदी के किनारे।
• गणेश्वर को ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहते हैं।

(2) सुनारी — झुंझुनू जिले में कान्तली नदी के किनारे।

(3) कुराड़ा — नागौर जिले मे
'औजारों की नगरी'

(4) ईसवाल — उदयपुर जिले मे
'औद्योगिक नगरी' (प्राचीनकाल में यहां से लोहा निकाला जाता था।)

(5) रैढ़ — टोंक जिले में
यहां से सर्वाधिक मात्रा में सिक्के प्राप्त हुये हैं।
इसे प्राचीन भारत का टाटानगर कहते हैं।

(6) जोधपुरा - जयपुर में साबी नदी के किनारे

(7) नलियासर - सांभर (जयपुर) में

(8) गरदड़ा - बूंदी में (प्राचीन भारत की Rock Painting)

मध्यकालीन राजस्थान

(1.) मेवाड़ :

'होतो नहीं मेवाड़ तो; होती नहीं हिन्दवाण।
खांडो कदै न खड़कतो, भारत छिपतो भाण।।'

- मेवाड़ सूर्यवंशी हिन्दू शासकों का शासन था।
- विश्व का सबसे दीर्घकालीन वंश
- यहाँ के शासकों को हिन्दुआ सूरज कहा जाता था।
- मेवाड़ के शासकों की कुलदेवी - बाण माता
- मेवाड़ के शासक स्वंय को एकलिंग नाथ जी (शिव) के दीवान मानते हैं।
- मेवाड़ के राज्यचिन्ह में एक पंक्ति लिखी हुयी है -
  'जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहि राखै करतार ।।'
- गुहिल ने 566 A.D. (566 A.D) में मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना की। इसके वंशज गुहिल या गहलोत कहलाए।

(i) बापा रावल :

- इनका वास्तविक नाम था - 'काल भोज'
- ये हारित ऋषि की गायें चराते थे।
- हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 A.D. में राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया। और नागदा को अपनी राजधानी बनाया। यहाँ पर एकलिंग जी का मंदिर बनवाया।

* मुद्रा प्रणाली शुरु की। (अपने नाम के सिक्के चलाए)

शक्ति सिंह (मालवा) — ~~[illegible] सिंह~~ (~~[illegible]~~) — रणसिंह — क्षेमसिंह — सामंतसिंह (रावल)

(ii) अल्लट :

- वास्तविक नाम - 'अलु रावल'
- इसने 'आहड़' को अपनी राजधानी बनाया
- आहड़ में एक वराह का मंदिर बनवाया।
- हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की।

* मेवाड़ राज्य में नौकरशाही की स्थापना की।

- गुहिल शासक शक्ति कुमार के समय में मालवा के राजा मुंज ने चित्तौड़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। मुंज के वंशज राजा भोज ने त्रिभुवन नारायण शिव मंदिर जिसे अब मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर कहते हैं, का निर्माण करवाया।

(iii) **रणसिंह** —

- इसका अन्य नाम कर्णसिंह था।

- रणसिंह
  - क्षेमसिंह — राजा (रावल)
    - सांगत सिंह
    - कुमार सिंह
  - राहप — (सीसोदा गांव)

सामंत सिंह 1172 A.D में मेवाड़ का शासक बना लेकिन मेवाड़ के पड़ोसी और नाडौल के राजा कीतू (कीर्तिपाल) ने सामंतसिंह से मेवाड़ राज्य छीन लिया, तब सामंतसिंह ने वागड़ में अपना राज्य स्थापित किया।

- कीर्तिपाल को क्षेमसिंह के छोटे पुत्र कुमारसिंह ने 1179 A.D. में पराजित कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया। [कुमार का वंशज — जैत्रसिंह]

(iv) **जैत्रसिंह** (1213 – 1250) A.D.

- * भूताला का युद्ध (1234 A.D) — सुल्तान इल्तुतमिश और जैत्रसिंह के मध्य जैत्रसिंह विजयी रहा।
- इल्तुतमिश ने नागदा को तबाह कर दिया। इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड़ को अपनी नयी राजधानी बनायी।
- जैत्रसिंह के समय (1213 - 1250) को '*मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण*' काल कहते हैं।
- * भूताला युद्ध की जानकारी हमें '*जयसिंह सूरी*' की पुस्तक '*हम्मीर मद मर्दन*' से मिलती है।

(v) **तेजसिंह** **(1250 – 1273)** A.D.

- इनके समय बलबन का चित्तौड़ पर आक्रमण हुआ।
- 1260 A.D. में आहड़ में '*श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि*' नामक (जैन) ग्रंथ चित्रित किया गया, जो राज्य का पहला चित्रित ग्रंथ है।
- तेजसिंह की रानी *'*जैतलदे रानी*'; ने चित्तौड़ में **श्यामपार्श्वनाथ** का मंदिर बनवाया।

(vi) **समरसिंह** **(1273 - 1302)** A.D.

- इनके समय में रणथम्भौर के हम्मीर ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर वहां से खिराज वसूला।
- गुजरात आक्रमण के लिए जाते समय अलाउद्दीन की सेना से कर वसूला।

(vii) रतनसिंह (1302 — 1303 A.D.) – [अंतिम रावल शासक]

- रतनसिंह के एक भाई का नाम था – 'कुम्भकरण', ये यहां से नेपाल चला गया। और नेपाल में 'राणाशाही वंश' की स्थापना की।
- रतनसिंह की रानी का नाम पद्मिनी था, ये सिंहल देश के राजा गन्धर्व सेन और चम्पावती की पुत्री थी। राघव चेतन नामक एक ब्राह्मण ने अलाउद्दीन को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया। अलाऊद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के प्रमुख कारण निम्न थे –
  (a) अलाऊद्दीन की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा
  (b) सुल्तान की प्रतिष्ठा का प्रश्न
  (c) चित्तौड़ की सामरिक स्थिति, किले का सामरिक व व्यापारिक महत्त्व
- अलाऊद्दीन के 8 माह के घेरे के बाद, चित्तौड़ के किले में साका किया गया।

* साका – केसरिया + जौहर

(रानी पद्मिनी ने 16000 रानियों के साथ जौहर किया।)

25 Aug. 1303 – जौहर

- राजा रतनसिंह ने अपने महत्त्वपूर्ण योद्धाओं के साथ केसरिया किया। गोरा व बादल नामक दो सेनानायकों ने अद्भुत वीरता दिखायी।
- सिसोदे गाँव का ~~लक्ष्म~~ लक्ष्मणसिंह अपने सात पुत्रों के साथ काम आ गया।
- अलाऊद्दीन ने किले पर अधिकार कर लिया।
- यह चित्तौड़ के किले का 'पहला साका' था।
- अलाउद्दीन ने किले का नाम खिज्राबाद कर दिया और उसे अपने बेटे को खिज्र खां को दे दिया। (खिज्र)
- इस हमले के समय अमीर खुसरो, अलाउद्दीन के साथ था अपनी पुस्तक 'खजाइन-उल-फुतुह' में इसका जिक्र करता है।
- 1540 A.D में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी पुस्तक 'पद्मावत' में पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया है। ये पुस्तक 'अवधी' भाषा में लिखी है।

• थोड़े दिनों बाद चित्तौड़ का शासन 'मालदेव सोनगरा' को सौंप दिया गया।

* मालदेव – जालौर के कान्हड़देव सोनगरा का भाई था।
  • इस मालदेव को मूछाला मालदेव के नाम से भी जाना जाता था।

Note:

> राजस्थानी साहित्यिक स्त्रोतों तथा जनश्रुतियों के अनुसार पद्मिनी 'पूगल' के पून्यपाल भाटी की पुत्री थी।
>
> "पूगळ गढ़ री पद्मिनी, तूं राणी सिरमौड़।
> जैसळमेर जलम लियो, परणी गढ़ चित्तौड़।।"

• 'गोरा बादल री चौपाई' नामक पुस्तक 'हेमरत्न सूरी' ने लिखी।

(viii) **हम्मीर** (1326 – 1364 A.D.)

• हम्मीर सीसोदे गांव के लक्ष्मण सिंह का पोता था, जो चित्तौड के पहले साके में काम आ गये।
इनके पिता का नाम अरिसिंह था।

• हम्मीर ने मालदेव सोनगरा के बेटे 'बनवीर सोनगरा' से चित्तौड़ छीना। चूंकि यह सीसोदे गांव से आया था, इसलिए मेवाड़ के राजा अब सिसोदिया कहलाने लगे, मेवाड़ में 'राणा' शाखा की स्थापना हुयी।

राहप
↓
सीसोदा – (राणा)
↓
लक्ष्मणसिंह
↓
अरिसिंह
↓
हम्मीर ← राणा शाखा
↓
मेवाड़ के रावल से मेवाड़ के राणा में परिवर्तन।

* **सिंगोली का युद्ध** –

हम्मीर v. मुहम्मद बिन तुगलक

• 'कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति' में हम्मीर को 'विषम घाटी पंचानन' कहा गया है।
(विकट युद्धों में शेर के समान)

• 'रसिक प्रिया' में हम्मीर को 'वीर राजा' कहा गया है।

• चित्तौड़ के किले में 'अन्नपूर्णा मंदिर' का निर्माण करवाया।

• हम्मीर को 'मेवाड़ का उद्धारक' कहा जाता है।
(क्योंकि मेवाड़ को फिर से जीता था)

(ix) **राणा लाखा** – (राणा लक्ष सिंह) **1382 – 1421 A.D.**

- इनके समय में 'जावर' मे चांदी की खान निकल गयी।
- इनके समय में ही एक बन्जारे ने 'पिछोला झील' का निर्माण करवाया।

(नटनी का चबूतरा – पिछोला झील के पास)

- कुम्भा हाड़ा नकली बूंदी की रक्षा करते हुये मारा गया।

'नकली गढ़ दीघो नहीं, बिना घोर घमसाण।
सिर टूट्या बिन किम फिरै, असली गढ़ पर आण॥'

⇒ मेवाड़
↓
लाखा
↓
चूंडा

मारवाड़
↓
चूंडा ⟶ बेटी – हंसाबाई
↓
रिड़मल / रणमल

- राणा लाखा की शादी, मारवाड़ के राव चूंडा की पुत्री हंसा बाई के साथ हुई।
- इस अवसर पर लाखा के बेटे चूंडा ने यह प्रतिज्ञा की कि मेवाड़ का अगला राणा वह न बनकर हंसाबाई के पुत्र को बनाएगा। ऐसी प्रतिज्ञा के कारण चूंडा को *मेवाड़ का भीष्म पितामह* कहते है।
- इस बलिदान के बदले चूंडा के वंशजो को (चूंडावत) हरावल में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ

* हरावल – सेना का अग्रिम भाग जो सबसे पहले युद्ध लड़ता है।

चूंडावतो को सर्वाधिक (चार) प्रथम श्रेणी के ठिकाणे दिए गए।
(16 ठिकाणों में से – प्रथम श्रेणी के)
द्वितीय – 32
तृतीय – 64 जागीरें

- **सलूम्बर** नामक सबसे बड़ा ठिकाणा इन्हें दिया गया।
- राजधानी में राणा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का 'रावत' (रावल) शासन कार्य संभालता था।
- मेवाड़ के शासकों (राणा) का राजतिलक, सलूम्बर का रावत ही करता था।

(X) मोकल (1421 - 1433) A.D.

(हंसा बाई का बेटा)

- हंसा बाई के अविश्वास की वजह से चूंडा मेवाड़ छोड़कर मालवा चला गया। अब मोकल का संरक्षक हंसा बाई का भाई रणमल बन गया।
- मोकल ने चित्तौड़ में 'समिद्धेश्वर मंदिर' का पुनः निर्माण करवाया। (परमार राजा भोज ने बनाया था)
- एकलिंग जी के मंदिर का परकोटा बनवाया।
- 1433 A.D. में गुजरात के राजा अहमद शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। जब मेवाड़ की सेना झीलवाड़ा (राजसमंद) में पड़ाव डाल रखी थी तब चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मोकल की हत्या कर दी। उस समय इस पड़ाव में मोकल का बेटा कुम्भा भी था, पर अन्य सरदारों ने उसे सुरक्षित चित्तौड़ वापस पहुँचा दिया।
- मोकल की रानी कमलावती ने अहमद शाह के साथ युद्ध किया।

(XI) राणा कुम्भा (1433 - 1468 A.D.)

- रणमल, राणा कुम्भा का संरक्षक था।
- मेवाड़ के दरबार में राठौड़ों का प्रभाव बढ़ रहा था, उन्होंने चूंडा के भाई राघव देव सिसोदिया की हत्या कर दी थी।

  राठौड़ों के इस प्रभाव को खत्म करने के लिए हंसाबाई ने चूंडा को मालवा से मेवाड़ वापस बुलवाया।
- रिणमल की उसकी प्रेमिका 'भारमली' की सहायता से हत्या कर दी गयी।
- रणमल का बेटा जोधा अपने अन्य भाइयों के साथ भाग जाता है। व बीकानेर के पास 'काहुनी' नामक गाँव में शरण लेता है।
- चूंडा ने मंडोर पर हमला करके अधिकार कर लिया।
- हंसा बाई की मध्यस्थता से कुंभा व जोधा के बीच संधि हुयी इस संधि को 'आँवल बाँवल की सन्धि' कहते हैं।
- जोधा ने अपनी बेटी शृंगार कंवर की शादी कुम्भा के बेटे 'रायमल' से कर दी।

* कुम्भा की माता का नाम - सौभाग्यवती परमार

• 1437 A.D. 'सारंगपुर का युद्ध'

कुम्भा V. महमूद खिलजी

(मालवा का सुल्तान)

कुम्भा इस युद्ध में विजयी रहता है। इस विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़ में विजयी स्तम्भ का निर्माण करवाता है। इस विजयी स्तम्भ को कीर्ति स्तम्भ भी कहा जाता है। बीच में भगवान विष्णु की प्रतिमा लगी होने के कारण इसे 'विष्णु ध्वज' भी कहते हैं। इसे 'मूर्तियों का अजायबघर' कहते हैं। भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष कहते हैं।

यह (नौ) मंजिला इमारत है।

122 feet लम्बा, 30 feet चौड़ा है।

इसकी (तीसरी) मंजिल में 9 बार अल्लाह लिखा है।

इसके वास्तुकार जैता व उसके पुत्र नाता व पुंजा थे।

इसमें कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति लिखी गयी है। जिसकी रचना अत्री व उसके बेटे महेश ने की थी।

इसका ऊपरी भाग क्षति ग्रस्त होने पर महाराणा *स्वरूपसिंह* ने उसका पुनर्निर्माण करवाया था।

कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'कुतुबमीनार' से की है।

'फर्ग्यूसन' ने इसे रोम के टार्जन से भी श्रेष्ठ बताया है।

राजस्थान पुलिस का यह प्रतीक चिन्ह है।

राजस्थान की पहली इमारत जिस पर 'डाक टिकट' जारी किया गया।

15 Aug. 1949 को इस पर (1 Rs.) का डाक टिकट जारी हुआ।

* 'जैन कीर्ति स्तम्भ' :

12वीं शताब्दी में एक जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने इसका निर्माण करवाया था। (चित्तौड़ के किले में।)

जैनों के पहले तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित होने के कारण इसे आदिनाथ स्मारक भी कहते हैं।

- 1457 — चम्पानेर की संधि

मालवा के महमूद खिलजी और गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच दोनों ने मिलकर एक साथ कुम्भा पर आक्रमण करने की योजना बनायी।

- बदनोर के युद्ध में कुम्भा इन दोनों की संयुक्त सेना को हराता है
- सिरोही के 'सहसमल देवड़ा' को हराता है।
- नागौर के शम्स खाँ को मुजाहिद खां के खिलाफ सहायता देता है। (नागौर के थे दोनों, नागौर के लिए लड़ रहे थे).

* कुम्भा की उपाधियां →

(1) हिन्दु सुल्तान सुरताण
(2) अभिनव भरताचार्य
(3) राणौ रासौ (साहित्यकारों का आश्रयदाता)
(4) हाल गुरू (पहाड़ी किलों को जीतने वाला)
(5) दान गुरू
(6) छापगुरू (छापामार युद्ध प्रणाली)

* कुम्भा का स्थापत्य कला में योगदान →

'श्यामलदास' के वीर विनोद के अनुसार, ~~चित्तौड़~~ मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 का निर्माण राणा कुम्भा ने करवाया था।

(1) कुम्भलगढ़ का किला - राजसमन्द
वास्तुकार - * मंडन
कुम्भलगढ़ का ऊपरी भाग 'कटारगढ़' कहलाता है। यह कुम्भा का निजी आवास था। इसे 'मेवाड़ की आंख' कहते हैं।

(2) अचलगढ़ के किले का पुनर्निमाण करवाया — सिरोही

(3) बसन्ती }
(4) मचान } सिरोही

(5) भोमठ दुर्ग — भोमठ के पठार पर (डूंगरपुर - बांसवाड़ा)

• कुम्भा स्वामी का मंदिर बनवाया -
तीनों किलों मे - चित्तौड में, कुम्भलगढ़ व अचलगढ़ मे।
• चित्तौड़ के किले मे श्रृंगार चवंरी का मंदिर बनवाया।
• कुम्भा के समय में 1439 A.D. में धरणकशाह ने रणकपुर के जैन मंदिर बनाए। चौमुखा मंदिर - रणकपुर के जैन मंदिरो मे एक मंदिर है।
↓
वास्तुकार - * देपाक

→ कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था। व इसके संगीत गुरू थे 'सारंग व्यास'
कुम्भा द्वारा रचित संगीत ग्रन्थ :
(1) सूड़ प्रबन्ध
(2) कामराज रतिसार
(3) जयदेव की गीत गोविन्द पर टीका लिखी - 'रसिक प्रिया'
(4) चंडी शतक पर भी टीका लिखी
(5) संगीत राज
(6) संगीत सुधा
(7) संगीत मीमांसा
(8) संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी है।

→ कुम्भा के दरबार में एक विद्वान थे - कान्ह व्यास
↓
पुस्तक - 'एकलिंग महात्मय'

एकलिंग महात्म्य के पहले भाग की रचना कुम्भा ने की थी, जिसे राज्य वर्णन कहा जाता है।

→ मंडन की पुस्तकें -
(1) वास्तुसार
(2) देवमूर्ति प्रकरण
(3) राज्य वल्लभ

(4) रूप मंडन
(5) वास्तु मंडन
(6) प्रासाद मंडन
(7) शकुन मंडन

→ मंडन के भाई का नाम था - नाथा
उसने एक पुस्तक लिखी - वास्तुमंजरी

→ मंडन के बेटे का नाम था - गोविन्द
उसने पुस्तक लिखी - {कलानिधि
{द्वार दीपिका

→ कुम्भा की बेटी रमा बाई भी एक अच्छी संगीतिज्ञा थी। रमा बाई को जावर का परगना दिया।

→ कुम्भा की बहन लाला मेवाड़ी की शादी गागरौन के शासक अचल दास खिंची से हुयी थी।
↳(चौहानों की एक उपशाखा)

→ अपने पिता की हत्या ऊदा ने कटारगढ़ में कर दी। इसलिए ऊदा को पितृहन्ता भी कहते हैं।

महाराणा कुम्भा के काल में ही रणकपुर के जैन मंदिरों का निर्माण 1439 A.D में एक जैन श्रेष्ठि धरनक ने करवाया। रणकपुर के चौमुखा मंदिर का निर्माण देपाक नामक शिल्पी के निर्देशन में हुआ।

(xii) रायमल (1473 - 1509 A.D.)
(जोधा की पुत्री) (रायमल के भाई)

- शृंगार देवी (रायमल की पत्नी) ने चित्तौड़ के पास घोसुण्डी बावड़ी का निर्माण करवाया।

*
घोसुण्डी में 2 century B.C. का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो राजस्थान में वैष्णव धर्म का पहला अभिलेखीय साक्ष्य है।

- रायमल ने चित्तौड़ के किले में 'अद्भुत शिव' मंदिर का निर्माण करवाया।

पृथ्वीराज

- रायमल का ज्येष्ठ पुत्र
- इसे 'उड़ना राजकुमार' के नाम से जानते हैं।
- अपनी पत्नी 'तारा' के नाम पर इसने अजमेर के किले का पुनर्निर्माण करवाकर इसे तारागढ़ नाम दिया।
- पृथ्वीराज की '12 खम्भों की छतरी' कुम्भलगढ़ के किले में बनी हुयी है।
(सिरोही)
- पृथ्वीराज के जीजा जगमाल देवड़ा ने पृथ्वीराज को जहर दे दिया।

जयमल

- जयमल सौलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

(तारा के पिता का नाम सुरताण सौलंकी था।)

(xiii) महाराणा संग्राम सिंह [1509 - 1527 A.D.]
(कुंभा के पौत्र, रायमल के पुत्र)

- एक चारण महिला की भविष्यवाणी सुनकर पृथ्वीराज व जयमल ने सांगा पर आक्रमण कर दिया था। सांगा को अपना एक हाथ खोना पड़ा। सांगा वहां से भागकर सेवन्त्री गांव के रूपनारायण मंदिर में पहुंचता है। यहां पर मारवाड़ का बीदा जैतमालोत (राठौड़ो की उपशाखा) सांगा की रक्षा करता है। बीदा रक्षा करते हुये लड़ता हुआ मारा जाता है।

"जैतमाल दल जूंझिया, करवाला कटै।
सांगो भोगे चित्रकूट, सिर बीदा सटै॥" (बदले में)
(चित्तौड़)

- सांगा यहाँ से श्रीनगर (अजमेर) में कर्मचन्द पवांर के यहां शरण लेता है।

- खानवा का युद्ध (1527 A.D.) - 17 मार्च
  राणा सांगा V. बाबर

- 1517 A.D.- खातोली का युद्ध, बाड़ी का युद्ध } इब्राहिम लोधी के खिलाफ दोनों युद्धों में राणा सांगा जीतता है।

- गागरौन के युद्ध में मालवा के सुलतान महमूद खिलजी II को हराता है।
  * इस समय गागरौन का किला, सांगा के दोस्त 'मेदिनी राय' (चन्देरी के राजा) के पास था।
  (M.P.)

- गुजरात की रियासत ईडर के उत्तराधिकार के प्रश्न पर गुजरात के राजा 'मुजफ्फर शाह II' को हराया।

- बयाना के युद्ध में सांगा, बाबर को हराता है।

- खानवा का युद्ध – 1527 A.D.
  - बाबर इस युद्ध से पहले जेहाद की घोषणा कर दी।
  - मुसलमानों से 'तमगा कर' हटा दिया गया।
  - शराब के व्यक्तिगत सेवन पर रोक।

- राणा सांगा युद्ध से पहले राज्य की लगभग समस्त रियासतों को युद्ध में सहायता के लिए चिट्ठी लिखता है, इसे **पाती परवन** कहते हैं

आमेर का पृथ्वीराज कछवाह।
चन्देरी का मेदिनी राय
बीकानेर से कल्याण मल
जोधपुर (मारवाड़) से मालदेव
मेडता का वीरम देव
सिरोही का अखैराज देवड़ा
बागड़ का उदयसिंह
(डूंगरपुर- बांसवाड़ा)
काठियावाड़ का झाला (जाति) अज्जा (नाम)
गोगुन्दा से झाला सज्जा
बिजौलिया का अशोक परमार (वंश) / पवांर (जाति)
मेवात का हसन खां मेवाती
इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी

युद्ध में सांगा की आंख में तीर लगने से उसे युद्ध मैदान से मालदेव बाहर ले गया। झाला अज्जा ने फिर युद्ध का नेतृत्व किया। (मेवाड़ के शासकों की रक्षा करी झालाओं ने हमेशा)
युद्ध में बाबर की जीत हो गयी।
घायल सांगा को बसवा (दौसा) लाया गया।

सांगा को युद्धरत / युद्ध उन्मुक्त देखकर कालपी (ईरच - जहर) (M.P.) में साथी सरदारों द्वारा जहर देकर मार दिया गया। (समाधि - माण्डलगढ़)

(इस युद्ध में मीराबाई के पति भोजराज (सांगा के ज्येष्ठ पुत्र) मीरा के पिता रतनसिंह राठौड़ काम आ गये थे। (वीरम देव के भाई)

सांगा को 'सैनिकों का भग्नावशेष' कहते हैं।

→ सांगा को 'अंतिम भारतीय हिन्दू सम्राट' के रूप में याद किया जाता है। (भारत के राजनीतिक, सम्पूर्ण हिन्दू साम्राज्य का अंतिम दृश्य भी पूर्ण हो गया)

(xiv) राणा रतन सिंह [1528 - 1531] A.D.

✓ बुंदी के सूरजमल हाड़ा के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

(xv) राणा विक्रमादित्य [1531 - 1536] A.D.

• इनकी मां रानी कर्मावती इनकी संरक्षिका थी।

• इनके समय 1533 A.D. में गुजरात के राजा बहादुरशाह ने आक्रमण किया। फिर संधि में रणथम्भौर का किला मेवाड़ वालों ने बहादुरशाह को दे दिया।

✓ 1534 A.D. में फिर बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया इसके बाद रानी कर्मावती ने हुमायुं के पास राखी भेजकर सहायता की गुहार की।

इस समय मेवाड़ का दूसरा साका हुआ

देवलिया के 'बाघ सिंह' के नेतृत्व में केसरीया किया गया।

रानी कर्मावती ने जौहर किया।

* बाघ सिंह की 'रामपोल' के पास छतरी बनी हुयी है। इन्हें देवलियां दीवान के नाम से जाना जाता है।

• 'उडना राजकुमार पृथ्वीराज' के दासी पुत्र बनवीर को मेवाड़ का शासन भार दिया गया। क्योंकि विक्रमादित्य छोटा था।
• बनवीर उदयसिंह को मारने के लिए गया पर पन्ना धाय ने अपने बेटे चन्दन की बलि देकर उदय सिंह को बचा लिया।

महाराणा उदयसिंह (1537-1572) : (जयंता बाई)

• पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ जाती है। कुम्भलगढ़ का किलेदार आशा देवपुरा इन्हें शरण देता है।
• अखेराज सौनगरा ने अपनी बेटी जयंता बाई की शादी उदयसिंह के साथ की।
• जोधपुर के राजा मालदेव के समर्थन से बनवीर को हराकर उदयसिंह महाराणा बनता है।

* गिरी सुमेल 1545 : (शेरशाह v. उदयसिंह)

• इसमें शेरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। इसमें उदयसिंह संधि कर लेता है।

* 1557 A.D. हरमाड़ा का युद्ध :

• अजमेर के सुबेदार हाजी खाँ पठान v. उदयसिंह के बीच।
मालदेव ~~के सूबेदार~~ ने समर्थन किया (जोधपुर का शासक था)
• उदयसिंह इस युद्ध में हार जाता है।

1559 A.D. में उदयसिंह 'उदयपुर' की स्थापना करता है। इसी समय उदयसागर झील का निर्माण करता है।

(मेरातके 1302-1303, 1534, 1567-68)

1567-68 A.D. में अकबर का चित्तौड़ पर आक्रमण

• उदयसिंह चित्तौड़ के किले की चाबी 'जयमल' को सौंपकर स्वयं 'गिरवा की पहाड़ियों' में चला गया। मेड़ता का राजा

- अबुल फजल इसे – 'खमनौर का युद्ध कहता' है।
- कर्नल जेम्स टॉड – 'राजस्थान की थर्मोपल्ली'
- आदर्शी लाल श्री वास्तव – 'बादशाह बाघ का युद्ध'
(हरावल)
- हाकिम खां सूर व पूंगा भीम भी महाराणा प्रताप की तरफ से लड़े थे।
- हल्दीघाटी के युद्ध के बाद जब महाराणा प्रताप की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है तब भामाशाह व उसका भाई ताराचंद अपनी सारी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को दे देता है।

- मिहत्तर खां नामक सैनिक ने उखड़ती मुगल सेना को पुनः प्रोत्साहित किया।
- शक्तिसिंह अकबर की तरफ से लड़ता है, लेकिन बाद में भावुकता से राणा प्रताप के साथ मिल जाता है।

कन्हैया लाल सेठ ने 'पायल व पीयल' नामक रचना लिखी है।
(पायल → प्रताप, पीयल → पृथ्वी राज राठौड़)

- पृथ्वीराज राठौड़ की शादी – महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह की बेटी किरण कंवर से हुयी थी।
- हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मुगल सेनापति शाहबाज खां कुम्भलगढ़ के किले को जीतने के चार असफल प्रयास करता है।
- 1580 A.D. में शेरपुर नामक स्थान पर अमरसिंह मुगल हरम की स्त्रियों को गिरफ्तार कर लेता है।

* 1582 A.D. दिवेर का युद्ध

- इसे 'मेवाड़ का मैराथन' कहते है। (कर्नल जेम्स टॉड)
- इस युद्ध में मुगल सेनापति 'सुरताण खान' मारा जाता है।
- महाराणा प्रताप के विरुद्ध अंतिम मुगल अभियान जगन्नाथ कच्छवाह ने किया था। (1585 A.D. में)
- जगन्नाथ कच्छवाह की '32 खम्भों की छतरी मांडलगढ़' में बनी हुयी है।
- महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ व मांडलगढ़ को छोड़कर लगभग पूरे मेवाड़ को पुन: जीत लिया।
- अंतिम समय में प्रताप ने अपनी राजधानी चावण्ड (डूंगरपुर) बनायी।

  यहां से चित्रकला की मेवाड़ शैली प्रारम्भ होती है।

  यहां पर मंदिर बनवाया - चामुण्डा माता
- 19 JAN. 1597 A.D. चावण्ड में धनुष खींचते समय राणा प्रताप की मृत्यु हो गयी।
- राणा प्रताप की छतरी बाड़ोली में मिली है।

(i) "बिंधियो जा मिज आण वस, गज माथै बण मोड़।
सुरग दुरग प्रवेस सत्य, निज तक फालक तोड़॥"

- */ हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अकबर खुद उदयपुर पर आक्रमण करता है। व इसका नाम 'मोहम्मदाबाद' कर देता है।

(ii) हल्दी घाट साख दे, चेतक झाला मान,
इण घाटी किसै सदा, मारी - मारी राण॥

[ऊंटाला का युद्ध:] यह हरावल का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए

जैत्रसिंह चूण्डावत V. बल्लू शक्तावत

• 'दलबल धावो बोलियो, अब लग फाटक सेस।
सिर फेक्यो भड़ काट निज, पहला दुरग प्रवेश ॥'
(योद्धा)

अमरसिंह [1597 - 1620 A.D.]

• 5 FEB. 1615 A.D. <u>मुगल V. मेवाड़ संधि</u> [जहांगीर के काल में]

• मेवाड़ की तरफ से संधि का प्रस्ताव लेकर गए। –
  - हरिदास झाला
  - शुभकरण

• शर्तें – ✓मुगल दरबार में युवराज कर्णसिंह जायेगा।
  ✓कर्णसिंह को पांच हजार का मनसबदार बनाया गया।

• महाराणा अमरसिंह ने इस बात से दुःखी होकर शासन प्रबन्ध कर्णसिंह को सौंप दिया। वह स्वंय <u>'नौ चौकी'</u> नामक राजस्थान पर जाकर रहने लगा।

• अमरसिंह के समय में <u>मेवाड़ चित्रकला शैली</u> का विकास होता है।

• अमरसिंह की छतरी – <u>आहड़ में</u>

• <u>अमरसिंह के बाद सभी मेवाड़ महाराणों की छतरियां आहड़ में बनायी जाने लगी।</u>

कर्णसिंह [1620 - 1628 A.D.]

- उदयपुर में जगमंदिर महलों का निर्माण शुरु करवाया।
- शाहजहाँ विद्रोह के दौरान जगमंदिर में शरण लेता है।
- उदयपुर में महल बनाए : { दिलखुश महल, कर्ण विलास महल }

जगतसिंह प्रथम [1628 - 1652 A.D.]

①. जगमंदिर महलों का निर्माण पूरा करवाया।

②. उदयपुर में जगदीश (जगन्नाथ मंदिर) का निर्माण करवाया।

③. इस मंदिर पर जगन्नाथ राय प्रशस्ति लिखी हुयी है।
↓
'कृष्ण भट्ट' ने की

④. 1631 A.D. में शाहजहाँ ने सुजानसिंह को मेवाड़ से अलग शाहपुरा (भीलवाड़ा) रियासत दे दी।

* जगदीश मंदिर के पास वाला धाय का मंदिर महाराणा की धाय नौजूबाई द्वारा बनवाया गया।

* महाराणा ने पिछोला में मोहनमंदिर और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।

राजसिंह [1652 - 1680 A.D.]

- उत्तराधिकार संघर्ष में औरंगजेब का साथ देता है।
- 1679 A.D. में औरंगजेब द्वारा जजिया लगाने पर उसका विरोध करता है।
- जोधपुर का महाराजा, अजीतसिंह को औरंगजेब के खिलाफ समर्थन देता है। इसे **राठौड़ – सिसोदिया गठबन्धन** कहते हैं।
(राजसिंह – अजीतसिंह)

" नजर न पूगी ऊजगाँ, गी को पड़यो न भाव।
पावाँ सूं पहली धणीं, सिर पड़ियो गढ़ जाय॥

- क्षतिग्रस्त किले का पुनर्निमाण करवाते समय अकबर की संग्राम नामक बंदूक की गोली से जयमल जख्मी हो गया।
- किले में अन्न - जल की समस्या उत्पन्न होने पर 'साका' करने का निश्चय किया गया।
- फतेहसिंह चूण्डावत की पत्नी 'फूलकंवर' के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- फतेहसिंह एवं जयमल के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- जयमल जख्मी होने के कारण 'कल्ला राठौड़' के कंधे पर बैठकर लड़े थे।
- इसलिए कल्ला राठौड़ को चार हाथों के लोक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- फत्ता और चूण्डावत की छतरी 'रामपोल' के पास बनी हुयी है। जयमल और कल्ला की छतरी हनुमानपोल व भैरवपोल के बीच बनी है।
- अकबर इन दोनों की वीरता से प्रभावित होकर इन दोनों की गजारूढ़ मूर्तियां आगरा के किले पर लगवाता है।
- बीकानेर में जूनागढ़ किले के बाहर भी इनकी मूर्तियां लगी हुई है
- यह चित्तौड़ का तीसरा साका था।

"है गढ़ म्हारो हूं धणी, असुर फिरे किम आण।
कूच्यां ज्यूं चित्रकूट री, दीधि मोहि दीवाण॥"

(लड़का) (लड़की) (माँ) (पत्नी) (अंग)
"नान्हा गीगा गीगली, जामण कामण गेह,
भड़ दाल्या निज हाथ सूं, करतब ऊंचो नेह॥"
(कर्तव्य) (स्नेह)

- इस युद्ध के बाद उदयसिंह अपनी राजधानी गोगुन्दा बनाता है।
- गोगुन्दा में ही उदयपुर सिंह की छतरी बनी हुयी है।

* महाराणा प्रताप (1572 - 1597 A.D.)

- महाराणा प्रताप का राजतिलक गोगुन्दा में किया गया।
- सलूम्बर के रावत 'कृष्णदास चूण्डावत' जगमाल को हटाकर महाराणा प्रताप को राजगद्दी पर बैठा देता है। (राजमहलों की क्रांति)

- जन्म - 9 MAY 1540 A.D.

  माता - जयवंता बाई

  पत्नी - अजमादे कंवर

  बचपन का नाम - कीका (छोटा बच्चा)

  पुनाभिषेक - कुम्भलगढ़ के किले में।

  राजधानी - गोगुन्दा में।

- हल्दीघाटी का युद्ध : 18 JUNE 1576

  महाराणा प्रताप V. अकबर

- इस युद्ध में शाही सेना का सेनापति मानसिंह था।
- यह मान सिंह का पहला स्वतंत्र अभियान था।
- हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजे गये दूतमंडल -
  - जलाल खां कोरची
  - मानसिंह
  - भगवन्त दास
  - टोडरमल
- युद्ध में राणा प्रताप के घोड़े चेतक के घायल होने पर राणा प्रताप युद्ध क्षेत्र से बाहर निकल जाता है। उसकी जगह झाला मान सिंह (बीदा) युद्ध का नेतृत्व करता है।
- चेतक की समाधि 'बलीचागांव' में बनी है।
- बदायूनी इस युद्ध को 'गोगुन्दा का युद्ध' कहता है।

- रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारुमती से महाराणा राजसिंह ने औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया।
- इस विवाह से पूर्व हुए युद्ध में सलूम्बर का रावत रतनसिंह चूण्डावत युद्ध में जाने से मना कर देता है।
- अपनी पत्नी हाड़ी रानी सहलकँवर के समझाने पर युद्ध के लिए तैयार होता है। वह उससे कोई निशानी मांगता है।
- हाडी रानी सहलकंवर निशानी के तौर पर अपना सिर काट कर देती है।

" चूंडावत मांगी सेनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी "

" सत री सैनाणी चाही, समर सलूम्बर धीश।
चूड़ामण मेली सियां, इण धण मेल्यो सीस।।
(भेजी) (पत्नी)

- रूपनगर की राजकुमारी रूपमती (चंचल कुमारी) से भी राजसिंह औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध विवाह करता है।
- सिहाड़ (नाथद्वारा) में 'श्रीनाथ जी' की मूर्ति लगवाई।
- कांकरोली (राजसमंद) में द्वारिकाधीश की मूर्ति लगवाई।
- उदयपुर में - अम्बा माता का मंदिर
- राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया। जहाँ पर अमरसिंह ने अपना अंतिम समय 'नौ चौकी' पर बिताया।
- इस झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान किया।
- इस झील के किनारे 25 बडे-2 शिलालेखों में राजप्रशस्ति लिखी है।
रचना - भट्ट रणछोड़ ने।
- राजसिंह की रानी *रामरस दे ने *त्रिमुखी बावड़ी का निर्माण करवाया।
- माता जानादे ने जानासागर तालाब का निर्माण करवाया। (उदयपुर में)

• उपाधि - 'विजयकट कातु' (सेना को जीतने वाला)

• राजसिंह को 'हाइड्रोलिक रूलर' कहते हैं।

• महाराणा कुम्भा के बाद मेवाड़ में सर्वाधिक सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने वाला राजा।

जयसिंह (1680 - 1698 A.D.)

जयसिंह ने जयसमंद झील का निर्माण करवाया। (गोमती, झामरी, रूपारेल के पानी को रोककर) (इसे ढेबर झील भी कहते हैं।), इस झील में दो टापू हैं-

- (1) बाबा का भागड़ा
- (2) प्यारी

अमरसिंह II (1698 - 1710 A.D.)

• 1710 A.D. में देबारी समझौता।

- मेवाड़ राणा अमरसिंह II
- आमेर के राजा सवाई जयसिंह
- मारवाड़ राजा अजीतसिंह

• अजीतसिंह को मारवाड़ दिलाने में सहायता

• अमर सिंह की बेटी चन्द्रकुंवर की शादी सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर की गयी कि चन्द्रकुंवर का बेटा ही आमेर (जयपुर) का अगला राजा बनेगा।

संग्रामसिंह - II (1710- 1734 A.D.)

- ① सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप इन्हीं के समय हुआ।
- ② मराठों ने यहाँ से कर वसूला था।
- ③ इसने उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- ④ हुरड़ा सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की।

जगतसिंह II (1734-51 A.D.) → [जगत विलास महल]

- 17 July 1734 A.D. में हुरड़ा सम्मेलन बुलाया गया।
- उद्देश्य - मराठों के खिलाफ सभी राजपूत रियासतों को एक करना।
- वर्षा ऋतु समाप्त होते ही 'रामपुरा' में मराठों के खिलाफ युद्ध किया जाएगा।
- जयपुर - सवाई जयसिंह
  जोधपुर - अभयसिंह
  कोटा - दुर्जनसाल
  बीकानेर - जोरावर सिंह
  करौली - गोपालसिंह
  किशनगढ़ - राजसिंह
  बूंदी - दलेल सिंह
  नागौर - बख्त सिंह

→ अध्यक्षता - जगतसिंह II ने की।

- सवाई जयसिंह को अध्यक्ष नहीं बनाया गया, इसी वजह से उनके नाराज होने पर हुरड़ा सम्मेलन असफल रहा।

- उदयपुर में जगतविलास महल बनाया।

- दरबारी नंदराज ने 'जगतविलास' नामक पुस्तक लिखी।
- मराठों ने इन्हीं के शासन में मेवाड़ में पहली बार प्रवेश कर इनसे 'कर' वसूल किया।

भीमसिंह [1778-1828 A.D.]

कृष्णा कुमारी विवाद :

- मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई मारवाड़ के राजा भीमसिंह के साथ हुई।
- संयोगवश शादी से पहले ही मारवाड़ राजा भीमसिंह की मृत्यु हो गयी। अतः कृष्णा कुमारी की सगाई जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ कर दी गयी।
- मारवाड़ महाराजा मानसिंह ने इस बात पर आपत्ति जताई।
- 1807 A.D. गिंगोली का युद्ध (नागौर में पर्वतसर के पास)

  [जयपुर V. जोधपुर]
- बीकानेर महाराजा सूरतसिंह एवं टोंक नवाब अमीर खाँ पिंडारी जयपुर की तरफ थे।
- इस विवाद को समाप्त करने के लिए आसिन्द ठाकुर अजीत सिंह चूण्डावत व अमीर खाँ पिंडारी के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर देकर मार दिया गया।
- 1818 A.D. में भीमसिंह ने अंग्रेजो के साथ सहायक संधि कर ली।

  संधि में मेवाड़ की तरफ से अजीतसिंह चूंडावत तथा अंग्रेजो की तरफ से मेटकॉफ था।
- मेवाड़ के पालिटिकल एजेंट - कर्नल जेम्स टॉड थे।

महाराणा स्वरूप सिंह (1842 - 1861 A.D.)

- इन्होंने मेवाड़ में स्वरूपशाही सिक्के चलाए।

* मेवाड़ में किसी को ईनाम देते समय 'चाँदोड़ी सिक्का' दिया जाता था।

- ~~मेवाड़~~ 1857 A.D. में क्रांति के समय शासक रहे।
- [illegible]

सज्जन सिंह (1874-84 A.D.)

- सज्जनगढ किले का निर्माण करवाया।
- इसे *मेवाड़ का मुकुटमणि* कहते है।
- वीर विनोद के लेखक श्यामलदास को 'कविराज' की उपाधि दी।
- 2 जुलाई 1870 A.D. को *'देश हितैषिणी सभा' की स्थापना की।
  - यह एक समाज सुधार संस्था थी।
  - राजपूतों में विवाह में होने वाले खर्चे को सीमित करना।
  - बहुविवाह पर रोक लगाना
- कविराज श्यामलदास भी इसके सदस्य थे।
- 1880 A.D. में *महाइन्द्रसा सभा की स्थापना की।
  (यह एक न्यायिक संस्था थी।)

फतेह सिंह (1884 - 1921 A.D.)

- प्रसिद्ध बिजौलिया आंदोलन इन्हीं के समय शुरू हुआ।
- 1903 A.D. में जब ये लॉर्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में भाग लेने जा रहे थे तब केसरी सिंह बारहठ ने इन्हें 13 सोरठे लिखकर

जिन्हें 'चेतावनी रा चूँगटिया' नाम से जानते हैं।

" घण घलिया घमसाण, राणा सदा रहियौ निडर।
देखतां फरमांण, हलचल किम फतमल हुवै॥"

' आजादी के समय यहाँ का महाराणा 'भूपालसिंह' था।
जिसे राजस्थान का 'महला महाराज प्रमुख' बन

"मगरो छोड़ हु नहीं, भूँडण मत बिलमाय।
सैला टक्करा सेलसु, भाज्या वंस लजाय॥"

मारवाड़ के राठौड़ों का इतिहास

- राजस्थान में आने वाली अंतिम राजपूत जाति।
- राष्ट्रकूटों की एक शाखा कन्नौज आती है। कन्नौज पर गहड़वालों का अधिकार होने से बदायूं चले गये।
  यहां से राव सीहा राजस्थान आता है।

* कई ऐतिहासिक स्रोतों में गहड़वाल एवं राठौड़ों दोनों को एक ही बताया गया है।

- कुल देवी - नागणेची
- ये चील पक्षी को पवित्र मानते हैं।
- राठौड़ों के विरुद्ध (उपाधि)
  1. रणबंका - (युद्ध क्षेत्र में बहादुरी प्रदर्शित करने वाला।)
  2. कमधज

राव सीहा :

- पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए राव सीहा बदायूं से 1240 A.D. में खेड़ (बालोतरा) आता है। और इसे अपनी राजधानी बनाता है।
- राव सीहा को 'राजस्थान के राठौड़ों का आदिपुरुष' कहा जाता है।
- 1273 A.D में गायों की रक्षा करते हुये राव सीहा पाली के बीठू गांव में मारा जाता है।
- बीठू गांव में राव सीहा का स्मारक बना हुआ है।
  जिसमें उसकी रानी पार्वती सोलंकी के सती होने का उल्लेख है।

2. राव आस्थान :

- जलालुदीन खिलजी के खिलाफ युद्ध करते हुए मारा जाता है।

राव धूहड़ :

- यह कर्नाटक से कुल देवी 'नागणेची' की मूर्ति लेकर आता है। इसे बाड़मेर गांव के नागाणा गांव में स्थापित किया गया है।
- इनके छोटे भाई का नाम 'धांधल' था।
  ↓
  ये लोकदेवता* पाबू जी के पिता थे।

रावल मल्लीनाथ :

- राज० के प्रसिद्ध लोकदेवता
- इन्होंनें अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी।
- मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।
- पत्नी - 'रूपा दे'
- बेटा - 'जगमाल' (जो गुजरात के शासक महमूद बेगड़ा की बेटी गींदोली को उठा लाता है। यह गणगौर विसर्जन का दिन था। इसीलिए आज भी राज० में गणगौर पर गींदोली गायी जाती है।
- भाई - 'वीरम' (मल्लीनाथ ने जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

चूण्डा :

- 'इन्दा' (प्रतिहार शासक) ने चूण्डा को दहेज के रूप में मण्डोर दिया।
- चूण्डा ने अपनी बेटी हसांबाई की शादी मेवाड़ के राजा लाखा के साथ की।
- अपनी मोहिल रानी के प्रभाव में आकर अपने बड़े बेटे रणमल को राजा न बनाकर कान्हा को राजा बना देता है।
- रानी - चांद कंवर सोनगरा
  ↓
  इसने 'चांद बावड़ी' का निर्माण करवाया।

रणमल :

- हसांबाई का भाई जो मेवाड़ चला जाता है।
- मोकल व कुम्भा का संरक्षक बनता है।
- इसकी प्रेमिका 'भारमली' की सहायता से जहर देकर मेवाड़ में हत्या कर दी गयी।

जोधा (1438-1489 A.D.) :

- जोधा और कुंभा के बीच आवल- बावल की संधि हुई।
- जोधा ने अपनी बेटी श्रृंगार कंवर की शादी कुम्भा के बेटे रायमल से कर दी।
- 1459 A.D. - जोधपुर शहर की स्थापना करता है।
- चिड़िया टूंक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ किला बनवाता है।

- मेहरानगढ़ किले की नींव 'करणीमाता' ने रखी थी।
- करणीमाता जोधा की धर्म बहिन थी।
- जोधा ने मेहरानगढ़ किले में 'चामुण्डा माता' और 'नागणेची' के मंदिर बनवाए।
- जोधा के 5वें पुत्र बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

राव सूजा (1492 - 1512 A.D.) :

- बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण कर दिया।
- राजमाता 'जसमादे हाड़ी' की मध्यस्थता से संधि हुयी व बीका को कुछ राज चिन्ह दिए गए।

राव गांगा :

- 'खानवा के युद्ध' में अपने बेटे मालदेव के साथ 4000 सैनिक भेजकर राणा सांगा की मदद करता है।
- अफीम के नशे में मालदेव ने राव गांगा की हत्या कर दी। इसीलिए मालदेव को 'मारवाड़ का पितृ हंता शासक' कहते हैं।

मालदेव (1532- 1564 A.D.)

- मारवाड़ का सबसे शक्तिशाली राजा।
- फारसी इतिहासकारों ने इसे 'हशमत वाला बादशाह' कहा है।
- जिस समय मालदेव का राजतिलक हुआ तब उसके पास जोधपुर व पाली (सोजत) दो ही परगने थे।

* कालांतर में मालदेव ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत 52 युद्धों के द्वारा 58 परगने जीते थे।

* पाहेबा का युद्ध (1541)

- जोधपुर राजा मालदेव V. बीकानेर राजा जैतसी
- मालदेव इस युद्ध को जीतता है व जैतसी लड़ते हुए मारा जाता है।
- मालदेव बीकानेर का शासन प्रबन्ध 'कूंपा' को सम्भला देता है। व कूंपा को डीडवाना की जागीर देता है।
- जैतसी का बेटा कल्याणमल शेरशाह सूरी के पास चला जाता है। मालदेव ने वीरमदेव से मेड़ता छीन लिया।
- वीरमदेव भी रणथम्भौर के सूबेदार की सहायता से शेरशाह सूरी से जाकर मिल जाता है।
- वीरा सिंधल को हराकर भाद्रा जूण छिन लेता है।
- नागौर के दौलत खाँ को हराता है।

* गिरी सुमेल का युद्ध (1544)

- इसे जैतारण का युद्ध भी कहते हैं।
- मालदेव V. शेरशाह सूरी
- अविश्वास की वजह से मालदेव पीछे हट जाता है।

- मालदेव की सेना के दो सेनानायक जैता व कूंपा शेरशाह के खिलाफ लड़ाई करते हैं।
- शेरशाह मुश्किल से इस युद्ध को जीत पाता है।

अतः शेरशाह के मुंह से बरबस ही निकल गया —

"बोल्यो सूरी राज यूँ, गिरि घाट घमसाण।
मुट्ठी खातर बाजरी, खो देतो हिन्दवाण॥"

- शेरशाह आगे बढ़कर जोधपुर पर अधिकार कर लेता है।
- मालदेव सिवाड़ा (बाड़मेर) में भाग जाता है।
- सिवाड़ा को 'राठौड़ों की शरणस्थली' कहते हैं।
- कल्याणमल व वीरमदेव को बीकानेर व मेड़ता के राज्य पुनः मिल जाते हैं।

[] सामेल युद्ध से पूर्व एक टुकड़ी बीकानेर भेजी जाती है। जिसका नेतृत्व किशन सिंह कान्हड़ कर रहा था। कूंपा इसके सामने आत्मसमर्पण कर जोधपुर आ जाता है।

- 1557 A.D में मालदेव 'हरमाड़ा के युद्ध' में उदयसिंह के खिलाफ हाजी खां व पठान की सहायता देता है।
- शेरशाह से हारने के बाद हुमायूं जब फलौदी (जोधपुर) में था, तब उसने मालदेव के पास अपने दूत भेजे —
  - रायमल सोनी
  - अतका खा
  - मीर समेद
- मालदेव ने भी सकारात्मक उत्तर दिया व हुमायुं को बीकानेर परगना

देने का वादा किया।

- हुमायुं आविश्वास की वजह से जोधपुर न आकर सिंध की तरफ चला गया।
- इनकी रानी का नाम - 'उमा दे'
- ये जैसलमेर के लूणकरण की बेटी थी। ये इतिहास में 'रूठी रानी' के नाम से जानी जाती है।
- इन्होंने अपना कुछ समय तारागढ़ किला (अजमेर) व अंतिम समय मेवाड़ के केलबा गांव में बिताया।

"मान रखे तो पीव तज, पीव रखे तज मान।
दो-दो गयंद (हाथी) न बंधहूं, एकै खम्भ ठाण (स्थान)।।"

[बाघा भारमली की प्रेम कहानी]

- 'अबुल फजल' अकबरनामा में मालदेव की तारीफ करता है।
- **बदायूंनी** - 'भारत का महान पुरूषार्थी राजकुमार' बताता है।

चन्द्रसेन :

- मालदेव ने अपने बडे बेटे को राजा न बनाकर अपने छोटे बडे चन्द्रसेन को राजा बनाया।

राम	उदयसिंह	चन्द्रसेन	रायमल
↓	↓	↓	↓
गुंदोज	फलौदी	राजा बनाया	सिवाणा

• 1570 का अकबर का नागौर दरबार

1) जैसलमेर - हरराज

2) बीकानेर - कल्याणमल

3) चन्द्रसेन - का बड़ा भाई उदयसिंह
(जोधपुर)

• चन्द्रसेन भी इस नागौर दरबार में गया था।

• चन्द्रसेन स्थिति को अनुकूल न देखकर यहां से भाद्राजूण चला जाता है।

• अकबर भाद्राजूण पर आक्रमण कर देता है। चन्द्रसेन सिवाणा (बाड़मेर) चला जाता है।

भाद्राजूण ⟶ सिवाणा ⟶ पीपलूंद ⟶ कणूजा

• भटकते हुए राव चन्द्रसेन की पाली (सोजत) के पास सारण की पहाड़ियों में मृत्यु हो गयी। (सारण ↓ गाँव - सिंचियाई)

• यहीं पर चन्द्रसेन व उसके साथ सती हुयी पांच रानियों के स्मारक हैं।

• चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का भूला-बीसरा शासक' कहते हैं।
चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का प्रताप' कहते हैं।
इसे 'प्रताप का अग्रगामी' कहते हैं।

• महाराणा प्रताप की राजतिलक में चन्द्रसेन भी उपस्थित था।

• अकबर ने 1572 A.D. में बीकानेर के रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त कर दिया।

* मोटा राजा उदयसिंह :

- अपनी बेटी 'मानी बाई' की शादी जहांगीर के साथ कर दी गयी।
- इसे इतिहास में 'जोधाबाई' कहा जाता है।
- इसे 'जगत गोसाई' भी कहते है।
- मानी बाई का बेटा 'खुर्रम' (शाहजहाँ) था।
- इस प्रकार मोटा राजा उदयसिंह जोधपुर का पहला राजा, जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। और उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए।

* कल्ला रायमलोत :

- यह मोटा राजा उदयसिंह के छोटे भाई रायमल का बेटा था।
- इन्होंने सिवाणा का दूसरा साका किया।
- कल्ला रायमलोत ने अपनी मृत्यु से पहले ही 'पृथ्वीराज राठौड़' (बीकानेर) से अपने 'मरसिये' लिखवा लिए।
- * मरसिये : किसी वीर के युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते हुए मारे जाने पर कवि द्वारा उसकी वीरता पर लिखे जाने वाले दोहे।

"कटियाँ पहला कोड सूं, गाथ सुणी निज आय।
जिण विधि कवि जताविये, उण ~~निधि~~ विच कटियो जाय॥"

गजसिंह (1615-1638 A.D.) :

- मानारा बेगम के कहने पर गजसिंह ने अपने छोटे पुत्र जसवंत सिंह को राजा बना दिया।

- अमरसिंह को नागौर का परगना दे दिया।
- अमरसिंह शाहजहां के दरबार में उसके मीर बख्शी (सेनापति) सलावत खां की हत्या कर देता है।

'अमर की कमर में कहां की थी करारी।
पाव सेर लोहे से हिलायी सारी पातशाही,
होती शमसेरी तो धिनाथ लेतो आगरी।।'

- अमरसिंह राठौड़ को 'कटार का धणी' कहते हैं।
- अमरसिंह का साला 'अर्जुनसिंह गौड़' धोखे से इसकी हत्या कर देता है।
- 'बल्लू चम्पावत' आगरा के किले से अमरसिंह की लाश लाता है।
- अमरसिंह राठौड़ के घोड़े का नाम बादल था।
- अमरसिंह की 16 खम्भों की छतरी 'नागौर' के किले में बनी है।
- आज भी राज. के 'ख्याल व रम्मतों' में अमरसिंह को याद किया जाता है।

* मतीरे की राड़ (लड़ाई):

बीकानेर राजा कर्णसिंह V. नागौर का अमरसिंह

* जसवंत सिंह (1638 - 1678 A.D.)

- शाहजहाँ के पुत्रों के उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होंने दारा का पक्ष लिया।
- शाहजहाँ ने जसवंत सिंह को 'महाराजा' की उपाधि दी।
- धरमत का युद्ध : दारा V. औरंगजेब
  - इस युद्ध में दारा की सेना का सेनापति जसवंतसिंह था।
  - दूसरे सेनापति कासिम खाँ से अनबन होने पर जसवंत युद्ध के बीच में जोधपुर वापस आ जाता है।
  - धरमत के युद्ध मे हारकर वापस आने पर जसवंतसिंह की रानी जसवंत दे हाड़ी ने किले के दरवाजे बंद कर दिये।
  - बची हुयी राजपूत सेना का नेतृत्व रतलाम का राजा रत्नसिंह राठौड़ करता है, और युद्ध में लड़ता हुआ मारा जाता है।

*• रत्नसिंह राठौड़ की वीरता पर 'जग्गा खिड़िया' ने एक पुस्तक लिखी - 'वचनिका राठौड़ रत्नसिंह महेसदासोत री'।

- 'खजुआ का युद्ध' इसमें जसवंतसिंह, औरंगजेब की तरफ से लड़ता है।
- औरंगजेब ने जसवंत सिंह राठौड़ को अफगानिस्तान भेज दिया।
  ↓
  (काबुल का गवर्नर बनाकर)
- वहीं पर 'जमरूद' का थाना नामक स्थान पर 1678 A.D. में जसवंत सिंह की मृत्यु हो जाती है।
- औरंगजेब ने इसकी मृत्यु पर कहा -

  'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।'
  (धर्म का विरोध करने वाला).

- जसवंत सिंह की मृत्यु के 1 साल बाद ही औरंगजेब 165 A.D. में 'जजिया कर' लगाता है।
- जसवंतसिंह के बेटे पृथ्वीसिंह ने शेर के साथ लड़ाई की। औरंगजेब ने इसे विषैली पोशाक देकर मरवा दिया।
- पुस्तकें –
  1) अपरोक्ष सिद्धान्त सार
  2) प्रबोध चन्द्रोदय
  3) आनन्द विलास
  4) भाषा भूषण
- इन्होंने औरंगाबाद के पास 'जसवंतपुरा' नामक कस्बा बसाया।
- इसकी रानी जसवंत दे हाड़ी ने जोधपुर में राई का बाग लगवाया।
- जसवंत दे ने कल्याणसागर (रातानाड़ा) तालाब बनवाया।
- जसवंतसिंह ने जोधपुर में 'कागा उद्यान' बनाया।
- इसके दरबार में दरबारी था – 'दलपत मिश्र'
  जिन्होंने पुस्तक लिखी – 'जसवंत विलास'
- मुहणोत नैणसी – 1) 'नैणसी री ख्यात' (पुस्तक)
  - इसमें जोधपुर के राजाओं की वंशावली लिखी गयी है।
  - राज. में पहली बार जनगणना का उल्लेख।
  - पहली बार क्रमबद्ध इतिहास लेखन।

  2) 'मारवाड़ रा परगना री ख्यात'
  - इसे 'मारवाड़ का गजेटियर' कहते हैं।

- जब जसवंतसिंह की मृत्यु हुयी तब उनकी दोनों रानियाँ गर्भवती थी।
- औरंगजेब ने आगरा में इन्हें रूपसिंह राठौड़ की हवेली में नजर बंद कर दिया।
- कालान्तर में इनसे अजीतसिंह व दलथम्बन नामक पुत्र होते हैं।

अजीत सिंह (1679-1724 A.D.)

- औरंगजेब ने 36 लाख रुपये के बदले अमरसिंह के पोते इन्द्रसिंह को राजा बना दिया।
- दुर्गादास राठौड़ दोनों रानियों व राजकुमारों को लेकर वहाँ से निकल जाता है।
- अजीतसिंह को बचाने के लिए एक गौरा नाम महिला ने अपने पुत्र की बलि दे दी।

'गौरा' को 'मारवाड़ की पन्नाधाय' कहते हैं।

- मारवाड़ के इतिहास 'धूंसो' में गौरा का नाम लिया जाता है।
- गौरा की छतरी जोधपुर में बनी है।
- सिरोही जिले के कालिन्द्री गांव में जयदेव पुरोहित के घर में मुकुन्ददास खिंची की देखरेख में रखा जाता है।
- मेवाड़ महाराणा राजसिंह, अजीतसिंह व दुर्गादास को समर्थन देता है।

- अजीतसिंह को मेवाड़ में 'केलवा गांव' की जागीर दी गई।
- दुर्गादास औरंगजेब के बेटे अकबर से विद्रोह करवा देता है।
- औरंगजेब ने दुर्गादास व अकबर में फूट डलवा दी।

- अकबर के बेटा - { बुलन्द अख्तर
  बेटी - { सफीयतुन्निसा, दोनों दुर्गादास के

पास रह जाते हैं, दुर्गादास इन्हें 'जूना बाड़मेर' नामक गांव में 'जगन्नाथ रामचन्द्रोत' के पास रखता है।

- दुर्गादास इनकी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध करता है। तथा कालान्तर में औरंगजेब को सौंप देता है।

- 1707 A.D. में औरंगजेब की मृत्यु तक अजीतसिंह को जोधपुर नहीं दिया जाता है।
- ~~अजीतसिंह~~ औरंगजेब की मृत्यु के बाद 'बहादुरशाह' अजीतसिंह को जोधपुर का बादशाह बना देता है।
- अजीतसिंह मुगल बादशाह फर्रुखसियर से अपनी बेटी इन्द्रकंवर की शादी करता है।

यह अंतिम राजकुमारी (राजपूत) थी, जिसकी किसी मुगल बादशाह से शादी हुई।

- 23 June 1724 को अजीतसिंह के बेटे 'बख्तसिंह' ने अजीतसिंह की हत्या कर दी।

- अजीतसिंह की मृत्यु पर उनकी चिता में जानवरों ने स्वेच्छा से अपनी जान दे दी।

• अजीतसिंह द्वारा लिखी पुस्तकें -

* 1) गुणसागर
* 2) दुर्गापाठ भाषा
3) निर्वाण रा दूहा

देबारी समझौता - राजकुमार अजीतसिंह कच्छवाहा राजा सवाई जयसिंह व मेवाड़ महाराणा अमरसिंह II के मध्य, देबारी नामक स्थान पर हुआ, जिसके अनुसार अजीतसिंह को मारवाड़ में, सवाई जयसिंह को आमेर मे पदस्थापित करने तथा अमरसिंह II की पुत्री का विवाह सवाई जयसिंह से करने व इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को सवाई जयसिंह का उत्तराधिकार घोषित करने पर सहमति हुई।

दुर्गादास राठौड़ :

• पिता का नाम - आसकरण
जन्म स्थान - सालवा
जागीर दी गई - लुणेवा गांव की।

• अजीतसिंह ने शासक बनने के बाद दुर्गादास को देश निकाला दे दिया था।
• दुर्गादास यहां से मेवाड़ महाराणा 'अमरसिंह-II' के यहां चला गया
• अमरसिंह ने इसे 'रामपुरा' व 'विजयपुर' की जागिरें दी।
• यहां से दुर्गादास उज्जैन चला जाता है।
• उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे दुर्गादास की छतरी बनी हुयी है।
• दुर्गादास को 'मारवाड़ का अणबिंधिया मोती' कहते हैं।
• कर्नल जेम्स टॉड इसे 'राठौड़ों का यूलीसेज (उद्धारक)' कहते हैं।

" मायड़ ऐसो पूत जण, जैहड़ो दुर्गादास,
बांध मरुधरा राखियो, बिन थम्बा आकास ॥ "

* अभयसिंह (1724-1749 A.D.) :

- खेजड़ली की घटना : विक्रमी संवत् 1787 (1730 A.D.) को भाद्रपद शुक्ल दशमी को खेजड़ली नामक गांव में अमृता देवी नामक बिश्नोई महिला अपने पति रामोजी व अपनी तीन बेटियों के साथ वृक्षों को बचाने के लिए शहीद हो गयी।
- इसमें कुल 363 लोगों ने अपना बलिदान दिया था। इसलिए आज भी भाद्रपद शुक्ल दशमी को हम शहीद दिवस के रूप में मानते हैं।
- इसी दिन विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला लगता है।
- अमृता देवी के नाम पर सामाजिक वानिकी के क्षेत्र के लिए पुरस्कार दिया जाता है। (वन्य व वन्य जीव)
- 2012 A.D. का अमृता देवी पुरस्कार :
  - * जालौर की हातिमताई संस्था
  - * रेखाराम चौधरी व प्रभुदयाल गुर्जर को दिया गया।
- वृक्ष काटने का आदेश 'गिरधारीदास कामदार' ने दिया।
- इसके दरबार में दो कवि थे –
  - (1) करणीदान – सूरज प्रकाश
  - (2) वीरभाण – राजरूपक
- इन दोनों पुस्तकों में अभयसिंह व अहमदाबाद के सूबेदार 'सर बुलंद खान' के बीच युद्ध का वर्णन है।

मानसिंह (1803 - 1843 A.D.)

- जालौर घेरे के समय 'देवनाथ' द्वारा मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की।
- मानसिंह ने राजा बनते ही देवनाथ को अपना गुरु बनाया।
- नाथों के सबसे बड़े मंदिर 'महामंदिर' का निर्माण करवाया।
- 'नाथचरित्र' नामक पुस्तक लिखी।
- 1805 A.D. में जोधपुर के किले में एक पुस्तकालय बनवाते है, जिसे 'मानपुस्तक प्रकाश' कहते हैं।
- 1807 A.D. में 'गिंगोली का युद्ध' होता है।
- 1818 A.D. में अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- इसके दरबार में कवि बांकीदास था।
- मानसिंह ने इन्हें 'कविराज' की उपाधि दी।

पुस्तक ; *1) बांकीदास री ख्यात
*2) कुकवि बत्तीसी
*3) दातार बावनी
*4) मान जसो मंडन

- बांकीदास ने अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की निन्दा की।

* विजयनगर सिंह की प्रेमिका गुलाबराय को 'जोधपुर की नूरजहां' कहते हैं।

बीकानेर के राठौड़ों का इतिहास :

- जोधपुर के राजा राव जोधा के ताने पर जोधा का बेटा बीका अपने काका कांधल व अपने छोटे भाई बीदा के साथ जोधपुर से निकल गया।

- बीकानेर में गोदारा (पांडू)
  सारण (पूला), की आपसी लड़ाई का बीका ने फायदा उठाया व पांडू गोदारा का पक्ष लेकर बीकानेर क्षेत्र को जीत लिया।

- इसके बाद से बीकानेर के राजा का राजतिलक गोदारा जाट करते थे।

- बीका ने पहले अपनी राजधानी 'कोड़म देसर' को बनाना चाहा, पर पूगल के भाटियों के विरोध करने पर बीका ने बीकानेर को अपनी राजधानी बनाई।

- करणी माता के आशीर्वाद से बीका ने एक स्वतंत्र राठौड़ राज्य की स्थापना की।

- विक्रमी संवत् 1545 (1488 A.D. में) को बैशाख शुक्ल पक्ष की द्वितीया को बीकानेर की स्थापना की गयी।

- इसीलिए बीकानेर में आखातीज का त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।

"पन्द्रह सौ पैंतालीस, सुद बैशाख सुमेर,
थावर बीज थरपियो, बीको बीकानेर।"
(शनिवार) (प्र)

- बीका ने कोड़म देसर में एक भैरु जी का मंदिर बनवाया।
- बीकानेर से पहले इस स्थान को 'रातीघाटी' कहते थे।
- बीका का निवास स्थान 'बीकाजी की टेकरी' कहा जाता है।
- बीकाजी की माता - नौरंगा दे सांखला
  " पत्नी - रंग दे भाटी
  ↓
  (पूगल के राव शेखा भाटी की पुत्री थी।)
- बीका का काका हिसार के सारंग खां के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।
- साहवा (चुरु) में कांधल का स्मारक बना हुआ है।

(साहवा (चुरु) सिखों का भी पवित्र स्थल है)

1 July.

* लूणकरण (1505-26) A.D.

- जैसलमेर के रावल जैतसी को हराया।
- इसे 'कलयुग का कर्ण' कहते हैं।

जैतसी (1526-41) A.D.

- 1527 A.D. में खानवा के युद्ध में अपने बेटे 'कल्याणमल' को भेजकर सांगा की सहायता करता है।
- 1534 A.D. में हुमायुं का भाई कामरान भटनेर (वर्तमान हनुमानगढ़) पर अधिकार कर लेता है। कामरान बीकानेर पर भी आक्रमण करता है, पर रावल जैतसी उसे हरा देता है। इस युद्ध की जानकारी हमें 'बीठू सुजा' की पुस्तक 'राव जैतसी री छन्द' से मिलती है।

* कामरान के भटनेर पर आक्रमण के समय वहां का किलेदार ~~खींव~~ खेत सिंह कांधल था।

- 1541 - पाहेबा का युद्ध
  राव जैतसी और मालदेव।
  राव जैतसी लड़ता हुआ मारा जाता है।

[* रातीघाटी का युद्ध ; कामरान v. जैतसी (बीकानेर में)]

कल्याणमल (1541 - 1574 A.D.)

- 1544 A.D. में गिरी - सामेल का युद्ध
- कल्याणमल का छोटा भाई भीम की शेरशाह सूरी को आक्रमण के लिए प्रोत्साहित करने में मुख्य भूमिका थी।
- भीम को 'गई भोम री बाहडु' कहते हैं। (चली गयी धरती को वापस लाना)
- कल्याणमल बीकानेर का पहला राजा था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की। यह 1570 A.D. के अकबर के नागौर दरबार में

भाग लेता है एवं मुगलों से वैवाहिक सम्बन्ध कायम करता है।

(रायसिंह ने कठौली की लड़ाई (गुजरात में मिर्जाओं के विरूद्ध), देवड़ा सूरताण को दमन तथा जोधपुर के राव चन्द्रसेन पर आक्रमण कर सिवाणा गढ़ जीत लिया)

रायसिंह (1574 - 1612 A.D.) - (अकबर के चार हजारी मनसबदार) (जहांगीर के समय 5000)

- 1570 A.D के अकबर के नागौर दरबार में अपने पिता कल्याणमल के साथ जाता है। अकबर यहीं से इसे अपने साथ आगरा ले जाता है।
- 1572 A.D. में अकबर इसे जोधपुर का प्रशासक नियुक्त करता है। और 'महाराजा' की उपाधि देता है।
- मुगलों की तरफ से गुजरात काबुल व कंधार के अभियान करता है
- 1577 A.D. में अकबर ने इकावन (51) परगने रायसिंह को दिये।
- खुसरो के विद्रोह के समय ~~रायसि~~ जहांगीर रायसिंह को राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौंप के जाता है।
- 1589 - 1594 A.D. के बीच बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया। बीकानेर के जूनागढ़ में सुरजपोल के पास रायसिंह प्रशस्ति लिखी हुयी है, जिसकी रचना 'जइता' नामक जैन मुनि ने लिखी थी।
- जूनागढ़ का निर्माण कर्मचन्द की देखरेख में हुआ।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को ~~कर्ण~~ 'राजपूताने का कर्ण' कहा।
- 1583 A.D. में सिरोही के राजा सुरताण देवड़ा को दत्ताणी के युद्ध में हराया। दत्ताणी के युद्ध में महाराणा प्रताप का भाई जगमाल भी मुगल सेना की तरफ से लड़ रहा था।
- रायसिंह ने 'रायसिंह महोत्सव' नामक पुस्तक लिखी।
- 'श्रीपति' की 'ज्योतिष रत्नमाला' पर 'बाल बोधिनी' नाम से रायसिंह

ने टीका लिखी।

- 'जयसोम' रायसिंह के दरबार में था जिसने - कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्णकंकाव्यम् नामक पुस्तक लिखी।

- रायसिंह के छोटे भाई का नाम पृथ्वी राज राठौड़ था, जो अकबर के नवरत्नों में से एक है। अकबर ने इसे गागरोन (झालावाड़) का किला दिया था।

राठौड़ की प्रमुख रचनाएं -

~~बेलिकृष्ण-रु~~ (1) बेलि क्रिसण रुक्मणि री : दुरसा अढा ने इसे 5 वां वेद और 19 वां पुराण कहा है।

कर्नल जेम्स टॉड ने इस रचना को 'दस सहस्त्र घोड़ों का बल' बताया है।

(2) दशम भागवत रा दूहा

(3) गंगा लहरी

- L.P. टेस्सीटोरी ने पृथ्वी राज राठौड़ को 'डिंगल का हौरेस' कहा है।

कर्णसिंह (1631 - 69 A.D.)

- अटक अभियान के दौरान इन्हें 'जयजांगलधर बादशाह' की उपाधि प्रदान की गयी।

- इन्हीं के समय नागौर के अमर सिंह राठौड़ से 'मतीरे की राड़' नामक युद्ध हुआ।

- कर्णसिंह ने अन्य कुछ साहित्यकारों के साथ मिलकर 'साहित्य कल्पद्रुम' की रचना की।

• 'गंगाधर मैथिल' कर्णसिंह का एक दरबारी था, उसने निम्न पुस्तक लिखी – (1) कर्णभूषण
(2) काव्य डाकिनी

अनूप सिंह (1669- 1698 A.D.)

• औरंगजेब ने इनके दक्षिण अभियानों से खुश होकर 'माही मरातिब' की उपाधि दी।
• संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थों का 'अनूप पुस्तकालय' (बीकानेर) में संकलन किया।
• कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन किया।
• हिन्दू देवी-देवताओं की विभिन्न मूर्तियों को एकत्रित कर उन्हें जूनागढ़ के 33 करोड़ देवी-देवताओं के मंदिर में रखवाया।
• विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया।
↓
1. सुककारिका
2. बेताल पचीसी

('सुककारिका' फारसी में अनुवादित संस्कृत की पहली पुस्तक थी)

3. गीता का राजस्थानी में अनुवाद आनन्दराम ने किया।

• अनूप सिंह की पुस्तकें –
1. अनूप विवेक
2. काम प्रबोध
3. श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि
4. अनूपोदय - गीत गोविन्द पर लिखी टीका

• 'भाव भट्ट' अनूप सिंह के दरबार में था, उसके द्वारा रचित

पुस्तक –

1. संगीत अनूप अंकुश
2. अनूप संगीत रत्नाकर
3. अनूप संगीत विलास

सूरत सिंह

- 1805 A.D. में भटनेर पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। चूंकि उस दिन मंगलवार था, इसीलिये भटनेर का नाम हनुमानगढ़ कर दिया।
- 1814 A.D. में चुरु पर आक्रमण करता है। तथा चुरु को अपने अधिकार में ले लाता है। इस समय चुरु का शासक ठाकुर स्योजी (शिव जी) सिंह था। इसी युद्ध के समय चुरु के किले से चांदी के गोले चलाये गये।
- 1818 A.D. में सूरतसिंह ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली।

रतन सिंह

- 1836 A.D. में गया (बिहार) मे अपने सभी सरदारों से कन्यावध नहीं करने की शपथ दिलायी।
- बीकानेर में रत्नबिहारी मंदिर का निर्माण करवाया।
- दयालदास सिंढायच (चारणों की गोत्र)
(चारण कवि)

जिन्होंने एक ग्रन्थ लिखा है –

बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात – इसमें राव बीका से
(वंशावली)

लेकर महाराजा सरदार सिंह का वर्णन है।

सरदार सिंह

- राजस्थान का एकमात्र शासक जो अपनी रियासत से बाहर जाकर 1857 की क्रान्ति में, अंग्रेजों की सहायता की। सरदार सिंह हिसार के पास जाकर 'बाड्लू' नामक स्थान पर जाकर युद्ध किया।
- अंग्रेजों ने खुश होकर रिण्वी परगने के 41 गांव दिए।

महाराजा गंगा सिंह [1887 - 1943 A.D.]

- 1899 A.D. में चीन के बॉक्सर विद्रोह में अंग्रेजो की मदद की। इसलिए अंग्रेजो ने 'केसर ए हिन्द' पदक दिया।
- पेरिस शांति सम्मेलन (I world war के बाद) में महाराजा गंगा सिंह ने भाग लिया (एकमात्र राजा जो रियासतों की तरफ से गया था)
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाला राज. का एकमात्र राजा।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में सर्वाधिक आर्थिक सहायता महाराजा गंगा सिंह ने दी थी। इसलिए B.H.U. के आजीवन कुलपति रहे।
- 1927 A.D. में अपनी रियासत में गंग नहर का निर्माण करवाया। गंग नहर का ~~निर्माण~~ उद्घाटन लॉर्ड इरविन ने ~~किसाया~~ किया।
- पंजाब में गंग नहर को बीकानेर नहर के नाम से जानते हैं। इसीलिए गंगा सिंह को 'राज. का भागीरथ' कहते हैं।

- महाराजा गंगा सिंह लॉर्ड माउण्टबेटन के सहपाठी थे।
- महाराजा गंगा सिंह की ऊंटों की सेना को 'गंगा रिसाला' कहते थे। 13 ग्रेनेडियर
- बीकानेर रियासत के रामदेवरा, गोगामेड़ी तथा देशनोक के मंदिरों को वर्तमान स्वरूप दिया।
- बीकानेर में जेल सुधार व न्याय सुधार किए।
- रेल व्यवस्था प्रारम्भ की।
- आजाद 1913 A.D. में 'प्रजा प्रतिनिधि सभा' की स्थापना की।
- 1921 A.D. में स्थापित नरेन्द्र मंडल के पहले अध्यक्ष थे।
- अपने पिता लाल सिंह के नाम पर बीकानेर में लालगढ़ पैलेस का निर्माण करवाया।

आजादी के समय बीकानेर का शासक सार्दुल सिंह था।
भारत में विलय की घोषणा करने वाला पहला रियासती शासक (सार्दूल सिंह) था।

किशनगढ़ के राठौड़

→ 1609 A.D. में जोधपुर के शासक महाराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने किशनगढ़ की स्थापना की।

→ जहाँगीर ने यहाँ के शासक को महाराजा की उपाधि दी।

सावंतसिंह

- यहाँ के प्रसिद्ध राजा जो कृष्णभक्ति में राज-पाट छोड़कर वृंदावन चले गये।
- यह नागरीदास नाम से प्रसिद्ध हुए।

→ मराठों ने Tax नहीं लिया - Jaisalmer
Bikaner
Kishangarh

Extra page

Extra page

चौहानों का इतिहास

चौहानों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मत :

[1]
- चन्द्रबरदाई
- सूर्य मल्ल मिश्रण
- मुहणोत

} के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ के अग्नि कुंड से हुयी।

* चौहान, चालुक्य (सोलंकी), प्रतिहार, और परमार, इन चारों जातियों की उत्पत्ति अग्नि कुंड से मानी जाती है।

[2]
- जेम्स टॉड
- विलियम क्रुक

} के अनुसार चौहान विदेशी हैं।

[3] 1170 A.D. के बिजौलिया (भीलवाड़ा) (शिलालेख) के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति वत्स गौत्रीय ब्राह्मणों से हुयी।

* बिजौलिया शिलालेख, बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर में लगा हुआ है। यह किसी गोविन्द नामक व्यक्ति ने लगवाया था। इस पर अंकित बिजौलिया प्रशास्ति की रचना गुणभद्र ने की थी।
इस शिलालेख में बिजौलिया का नाम उत्तमाद्रि मिलता है।
राज० के अन्य विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम भी इससे प्राप्त होते हैं।

चौहानों का मूल निवास स्थान :

- जांगल देश का सपादलक्ष क्षेत्र (सांभर के आस-पास का क्षेत्र)
  ↓
  (जोधपुर + बीकानेर + नागौर)
- इनकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।

चौहानों की कुल देवी - 'आशापुरा माता'

अजमेर के चौहानों का इतिहास : / सपादलक्ष के चौहान

(1) वासुदेव :

- 551 A.D. में चौहान राज्य की स्थापना की।
- वासुदेव को चौहानों का आदिपुरुष कहते हैं।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार इसने सांभर झील का निर्माण करवाया।

(2) गूवक :

- चौहान प्रारम्भ में प्रतिहारों के सामन्त थे, गूवक ने प्रतिहार शासक नागभट्ट II की अधीनता मानने को अस्वीकार कर दिया। तथा इस प्रकार गूवक ने एक पूर्ण स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- गूवक ने हर्षनाथ का मंदिर बनवाया। (सीकर जिले के रैवासा गांव में)
- हर्षनाथ चौहानों के कुल देवता माने जाते हैं।

(3) चन्द्रराज :

- पत्नी का नाम - रूद्राणी
  ↓
  यौगिक क्रिया में निपुण महिला
- रूद्राणी प्रतिदिन पुष्कर झील में 1000 दीप जलाकर भगवान शिव की पूजा करती थी।

(4) विग्रहराज II :

- इसने अन्हिलपाटन के चालुक्य शासक मूलराज I को हराया।

- मण्डोर में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनवाया।

(5) अजयराज

- 1113 A.D. में अजमेर नगर की स्थापना करता है।
- अजमेर का किला बनवाया (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)
- 'श्री अजयदेव' नाम से चांदी के सिक्के चलाये।

(6) अर्णोराज

- अर्णोराज ने अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया।
- पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।
- चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में इसे हराया। इस युद्ध का वर्णन 'प्रबन्ध चिन्तामणि' एवं 'प्रबन्ध कोष' में मिलता है।

(7) विग्रहराज IV (1153-1163 A.D.)

- इसके शासनकाल को सपादलक्ष के चौहानों का स्वर्ण काल कहते हैं।
- इन्होंने तोमरों से ढिल्लिका (दिल्ली) छीन ली।
- इसने अजमेर में 'सरस्वती कंठाभरण नामक' संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया। अपने नाटक हरिकेली की पंक्तियां इस पाठशाला की दीवारों पर खुदवायी। कालान्तर में कुतुबद्दीन ऐबक ने इस पाठशाला को तोड़कर एक मस्जिद बनवा दी, जिसे हम अढ़ाई दिन का झोंपड़ा के नाम से जानते हैं।
- उपाधियां – बीसलदेव, कवि बान्धव, कवि बन्धु
- बीसलपुर नगर व बीसलपुर तालाब का निर्माण करवाया। तालाब के किनारे एक भगवान शिव का मंदिर बनवाया।

• दरबारी सोमदेव ने ललित विग्रह राज नामक पुस्तक लिखी।

• दरबारी नरपति नाल्ह ने 'बीसलदेव रासो' नामक पुस्तक लिखी।

पृथ्वीराज III [1177 - 1192 A.D.]

• पिता का नाम - सोमेश्वर
माता का नाम - कर्पूरी देवी (दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर की पुत्री)

• प्रारम्भ में माता कर्पूरी देवी उसकी संरक्षिका बनी, क्यों पृथ्वीराज III बाल्यावस्था में शासक बने थे।

• अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह का दमन करता है।

• मंडालकों को हराता है।

* मंडालक सतलज प्रदेश की एक जाति थी, जो कालान्तर में हिसार व गुड़गांव क्षेत्र में आ गयी थी।

• 1182 A.D. में तुमुल के युद्ध में महोबा (M.P) के चन्देल शासक परमारर्दिदेव को हराता है।

इस युद्ध में परमारर्दिदेव चन्देल के दो सेनानायक आल्हा व ऊदल लड़ते हुए मारे गये थे, जो आज भी वहां के लोकगीतों में गाये जाते हैं।

• 1187 A.D. में चालुक्य शासक भीम II पर आक्रमण करता है। पर दोनों के बीच संधि हो जाती है।

* चौहान - गहड़वाल वैमनस्य :

• कन्नौज का शासक जयचन्द गहड़वाल व पृथ्वीराज चौहान मौसेरे भाई थे। दिल्ली के उत्तराधिकार के प्रश्न तथा संयोगिता के अपहरण के कारण दोनों में मनमुटाव था।

I BATTLE OF TARAIN : (1191 A.D.)

पृथ्वीराज चौहान V. मोहम्मद गौरी

- तात्कालिक कारण : मोहम्मद गौरी द्वारा तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार
- इसमें पृथ्वीराज का सेनापति चामुण्डराय था।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान जीतता है।
- दिल्ली के गर्वनर 'गोविन्द राज तोमर' के एक वार से मोहम्मद गौरी घायल हो जाता है।

II BATTLE OF TARAIN : (1192 A.D.)

- इस युद्ध में सेनापति चामुण्डराय भाग नहीं लेता है।
- पृथ्वीराज इस युद्ध में हार जाता है। सिरसा (हरियाणा) के पास बंदी बनाकर मार दिया जाता है।
- पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली के पास पिथौरागढ़ का निर्माण करवाया।
- उपाधि पृथ्वीराज की – ① 'राय पिथौरा'
  – ② दल पुंगल (विश्व विजेता)
- दरबारी (पृथ्वीराज के दरबार में) –
  (i) चन्द्रबरदायी (वास्तविक नाम - पृथ्वी भट्ट)
  ↓
  'पृथ्वीराज रासो'
  (ii) जयानक → 'पृथ्वीराज विजय'
  (iii) विद्यापति गौड़
  (iv) जनार्दन
  (v) वागीश्वर
- पृथ्वीराज चौहान ने एक कला व संस्कृति मंत्रालय की स्थापना की।

तथा इसका मंत्री पद्मनाभ को बनाया।

- कैमास व भुवनमल्ल, इसके प्रमुख मंत्री थे।
- मोइनुद्दीन चिश्ती इसी के समय भारत आये थे।

* तराइन के दोनों युद्धों का विस्तृत विवरण कवि चन्द्र बरदाई के पृथ्वीराज रासो, हसन निजामी के ताजुल मासिर एवं सिराज के 'तबकात-ए-नासिरी' में मिलता है।

रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास :

- पृथ्वीराज चौहान के बेटे गोविन्दराज ने रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना की।

वीर नारायण :

- इसने दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश से युद्ध किया था।

वाग्भट्ट :

- इसके समय में बलबन ने रणथम्भौर पर 3 आक्रमण किए थे।

हम्मीर [1282 - 1301]

- इतिहास में हठी हम्मीर के नाम से प्रसिद्ध राजा
- रणथम्भौर का सबसे शक्तिशाली शासक
- हम्मीर ने भीमरस (U.P.) के राजा ~~हम्मीर~~ अर्जुन को हराया।
- धार के राजा भोज परमार को हराया।
- चित्तौड़ के समर सिंह को हराता है।
- हम्मीर ने कोटि यज्ञ का आयोजन करवाया। इस यज्ञ का पुरोहित विश्वरूपम् थे।
- जलालुद्दीन खिलजी के रणथम्भौर आक्रमण को हम्मीर विफल कर देता है। इस विफलता के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि —
  - "ऐसे 10 किलों को मुसलमानों के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता है।

- गुजरात आक्रमण के दौरान अलाउद्दीन की सेना में विद्रोह हो जाता है। विद्रोही मंगोल नेता मुहम्मद शाह हम्मीर के पास चला जाता है।
- (उलुग) उलुग खान व नुसरत खान (अलाउद्दीन के सेनापति) ने रणथम्भौर पर

आक्रमण कर दिया। नुसरत खान मारा गया। तब अलाउद्दीन एक बड़ी सेना लेकर खुद रणथम्भोर पर घेरा डालता है। 'रणमल' व 'रतिपाल' नामक दो विश्वासघातियों की वजह से हम्मीर को किले के फाटक खोलने पड़े, रणथम्भौर के किले में पहला साका हुआ।

- हम्मीर की पत्नी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- हम्मीर के नेतृत्व में सभी सैनिकों ने केसरिया किया व लड़ते हुए मारे गये।
- 'अमीर खुसरो' ने अपनी पुस्तक 'खजाइन उल फुतुह' में इस घटना का जिक्र गया। जो फारसी भाषा में मिलने वाला जौहर का पहला वर्णन है।
- हम्मीर की पुत्री 'देवल दे' ने इस जौहर से एक दिन पूर्व रणथम्भौर किले के पद्म तालाब में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। (जल जौहर)
- रणथम्भौर का साका 1301 A.D. में हुआ था।
  (पर उससे पहले जैसलमेर का साका 1299 A.D. में हो गया था)
- हम्मीर ने अपने जीवनकाल में 17 युद्ध लड़े थे जिनमें से 16 में वो विजयी रहा।
- अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षीय शासनकाल की याद में रणथम्भौर के किले में '32 खम्भों की छतरी' बनवायी।
- 'बीजादित्य' नामक विद्वान हम्मीर के दरबार में रहता था।
- हम्मीर को उसके हठ व शरण देने वालों के रुप में याद किया जाता है।

"सिंह गमन, सत्पुरूष वचन, कदली फलै इक बार।
तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।।"

- हम्मीर की जानकारी प्राप्ति के स्त्रोत :
  (1) नयनचन्द्र सूरी - हम्मीर महाकाव्य
  (2) जोधराज] - हम्मीर रासो
  (3) सारंगधर

(3) चन्द्रशेखर - हम्मीर हठ

(5) जयसिंह सूरि - हम्मीर मद मर्दन

* जालौर के चौहानों का इतिहास : (स्वतंत्रता से पहले जालौर, जोधपुर (मारवाड़) का पार्ट था)

- ऋषि जाबालि की तपोभूमि होने के कारण इसे जाबालिपुर कहते थे, जो कालान्तर में जालौर हो गया।
- जाल वृक्षों की अधिकता होने के कारण इसे जालौर कहा गया।
- जालौर का किला सोनगिरि (सुवर्णगिरी) नामक पहाड़ियों पर स्थित होने के कारण यहाँ के शासक सोनगरा चौहान कहलाए।

  [Note - स्वर्णगिरी का किला / सोनार का किला - जैसलमेर]

- 1182 A.D. में कीर्तिपाल ने जालौर में चौहानों की सोनगरा शाखा की स्थापना की।
- 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' में कीर्तिपाल को 'कीतू एक महान राजा' बताया गया है।
- इसने चित्तौड़ के सामंत सिंह को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

कान्हड़ देव सोनगरा :

- गुजरात आक्रमण के समय अलाउदीन ने सोमनाथ मंदिर के शिवलिंग को तोड़ दिया था अतः वापस लौटती अलाउदीन के सेना पर कान्हड़ देव के सेनापति 'जैता देवड़ा' ने आक्रमण किया। और शिवलिंग के टुकड़ों को पांच अलग - अलग गांवो में स्थापित करवाया।
- अलाउदीन का सेनापति 'ऐन - उल - मुलतानी' जालौर पर आक्रमण कर देता है, कान्हडदेव ने अलाउदीन की अधीनता स्वीकार करली।
- कान्हड देव किसी बात से नाराज होकर दिल्ली से वापस जालौर आ जाता है।
- 1308 A.D. में अलाउदीन 'जालौर की कुंजी' सिवाणा पर आक्रमण करता है।
- 'सातल व सोम' (कान्हडदेव के भतीजे) के नेतृत्व में सिवाणा में साका किया गया। यह सिवाणा का पहला साका था।
- 'भावला' नामक व्यक्ति ने विश्वासघात किया था।
- अलाउदीन सिवाणा का नाम 'खैराबाद' कर देता है।

- अलाउदीन जालौर की तरफ आगे बढ़ता है, तब 'मालकाना के युद्ध' में अलाउदीन की सेना हारती है व सेनापति शम्स खाँ को बंदी बना लिया जाता है।
- 1311 A.D. में अलाउदीन जालौर पर आक्रमण कर देता है। अलाउदीन का सेनापति कमालुद्दीन गुर्ग होता है।
- 'बीका दहिया' नामक आदमी ने किले का रास्ता बताकर विश्वासघात किया। जब इस विश्वासघात की सूचना बीका दहिया की पत्नी को मिली, तब उसने अपने विश्वासघाती पति को मार दिया।
- कान्हडदेव व वीरमदेव के नेतृत्व में साका किया गया।
- अलाउदीन ने जालौर पर अधिकार कर लिया और जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- जालौर में अलाउदीन ने 'अलाई मस्जिद' का निर्माण करवाया।
- अलाउदीन की पुत्री 'फिरोजा' वीरमदेव (कान्हड देव का पुत्र) से प्यार करती थी।
- फिरोजा की धाय माँ 'गुल विहिश्त' थी।

Z. 1311 A.D. के युद्ध की जानकारी पद्मनाभ द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कान्हड़ दे प्रबन्ध' तथा 'वीरमदेव सोनगरा री बात' में मिलती है।

सिरोही के देवड़ा चौहानों का इतिहास :

- लुम्बा ने 1311 A.D. में आबू व चन्द्रावती को जीतकर चौहानों के देवड़ा शाखा की स्थापना की।
- चन्द्रावती को अपनी राजधानी बनायी।
- शिवभाण ने 1405 A.D. में शिवपुरी को अपनी राजधानी बनाया।
- सहसमल (Sou) ने 1425 A.D. में सिरोही की स्थापना कर सिरोही को अपनी राजधानी बना ली।

(महाराणा कुम्भा ने सहसमल पर आक्रमण किया था।)

जगमाल

(मेवाड़ के 48वें महाराणा रायमल की पुत्री)

- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की बहन के आनन्दा बाई कीसाथ शादी जगमाल के साथ हुयी।
- जगमाल ने पृथ्वीराज को जहर देकर मरवा दिया।

अखैराज देवड़ा

- खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से भाग लेता है।
- इसे उड़ना अखैराज के नाम से जानते हैं।

सुरताण देवड़ा

- अकबर के खिलाफ दत्ताणी का युद्ध किया।
- दुरसा आढ़ा सुरताण के दरबार में थे, उन्होंने 'राव सुरताण रा कवित्त' नामक पुस्तक लिखी।

बैरिसाल

- अजीत सिंह को कालिन्द्री गांव में शरण देता है।

मानसिंह

- इसने मानशाही तलवार बनायी थी।

** सिरोही तलवारों के लिए प्रसिद्ध है।

शिवसिंह

- 1823 A.D. में अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।
- अंग्रेजो के साथ संधि करने वाली सिरोही अंतिम रियासत थी।

बूंदी के हाड़ा चौहानों का इतिहास :

- बूंदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था। बून्दा मीणा के नाम पर ही इसका नाम बूंदी पड़ता है।
- कुम्भा के 'रणकपुर अभिलेख' में बूंदी का नाम बुन्दावती भी मिलता है।

1241 A.D. में 'देवा हाड़ा' ने जैता मीणा को हराकर बूंदी पर अधिकार कर लिया।

1274 A.D. में जैत्रसिंह ने कोटा को जीत लेता है

1354 A.D. में बरसिंह ने बूंदी के तारागढ़ किले का निर्माण करवाया।

तारागढ़ का किला भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

राव सुरजन

1569 A.D. में अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेता है।

द्वारिका में 'रणछोड़ जी का' मंदिर बनवाता है।

'हम्मीर हठ' का लेखक चन्द्रशेखर इसके दरबार में था।

'सुरजन चरित्र'

छत्रसाल

सामूगढ़ (उत्तराधिकार युद्ध औरंगजेब के पुत्रों में) में लड़ता हुआ मारा गया।

बूंदी में इसकी '84 खम्भों की छतरी' बनी हुयी है, जिसका निर्माण राव अनिरुद्ध के भाई देवा ने करवाया।

राव अनिरुद्ध की नाथावत रानी ने बूंदी में 'रानी जी की बावड़ी' बनवायी थी।

बुद्धसिंह :

इसके शासन काल में सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप होता है।

- मुगल बादशाह फर्रुखसियर के कहने पर कोटा के राणा भीमसिंह ने बूंदी पर अधिकार कर दिया व बूंदी का नाम फर्रुखाबाद कर दिया।
- जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की ~~पुत्री~~ बहन अमर कंवर की ~~उपाधि~~ शादी बुद्धसिंह के साथ हुयी।

विष्णु सिंह

- इसने अंग्रेजों से संधि कर ली। (मराठों से सुरक्षा हेतु)

रामसिंह

- प्रसिद्ध कवि सूर्यमल्ल मिश्रण इसके दरबार में थे।
  - पुस्तक – वीर सतसई, वंश भास्कर

कोटा के हाड़ा चौहानों का इतिहास :

- 1631 A.D. में बूंदी के राजा राव रत्न सिंह के पुत्र माधो सिंह ने कोटा राज्य की स्थापना की। (1631 A.D. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने कोटा को बूंदी से स्वतंत्र कर बूंदी के शासक के पुत्र को कोटा का शासक बनाया)

मुकुन्द सिंह

- धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने कोटा में 'अबली मीणी का महल' बनाया।

भीम सिंह

- इसने फर्रुखसियर के कहने पर बूंदी पर अधिकार कर लिया।
- खींचियों (चौहानों की एक शाखा) से गागरोन छीन लिया
- भगवान श्रीकृष्ण के भक्त होने के कारण कोटा का नाम नन्दग्राम कर दिया।
- बांरा में 'सांवरिया जी का मंदिर' बनवाया।

शत्रुसाल

- 1761 A.D. के 'भटवाड़ा के युद्ध' में जयपुर के 'राजा माधोसिंह' को हराया।
- इसके शासनकाल में कोटा के प्रधानमंत्री 'जालिम सिंह झाला' का प्रभाव बढ़ने लगता है।

उम्मेद सिंह

- इसने अंग्रेजों से संधि कर ली।
- संधि की मुख्य शर्तें :
  1) उम्मेद सिंह व उसके वंशजो का कोटा पर अधिकार बना रहेगा।
  2) जालिम सिंह व उसके वंशज पूर्ण अधिकार सम्पन्न दीवान बने रहेंगे।

झालावाड़ राज्य का इतिहास :

1837 A.D. में 'जालिम सिंह झाला' के पोते मदन सिंह ने झालावाड़ में एक झाला राज्य की स्थापना की। 1838 A.D. में अंग्रेजो ने इसे मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार झालावाड़ राज. की सबसे अंतिम रियासत थी। इसकी राजधानी 'झालरापाटन' थी।

आमेर के कछवाहों का इतिहास :

- भगवान राम के छोटे बेटे कुश के वंशज कुशवाहा कहलाए, जो कालान्तर में कछवाहा हो गया।
- कछवाहों की कुल देवी जमवाय माता।

* आमेर के कछवाहा शासक स्वंय को गोविन्द देव जी के दीवान मानते हैं।

(M.P.)
नरवर से ई 'दुल्हराय' दौसा आता है, व दौसा में बडगुर्जरों को हराकर कछवाहा शासन की स्थापना करता है। ये घटना 1137 A.D. की है। और लालसोट की राजकुमारी से शादी करता है।

- कालान्तर में रामगढ़ में मीणाओं को हराकर इसे अपनी राजधानी बनाता है, यहाँ अपनी कुल देवी जमवाय माता का मंदिर बनवाता है और इसका नाम जमवारामगढ़ रख दिया।
- दुल्हराय का वास्तविक नाम 'तेजकरण' था।

क

कोकिला देव :

- 1207 A.D. में मीणा शासकों को आमेर में हराकर वहां आमेर पर अधिकार कर लिया और राजधानी जमवारामगढ़ से आमेर ले आता है।

पृथ्वीराज :

- खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायता करता है।
- पृथ्वीराज के पुत्र का नाम सांगा था, जिसने सांगानेर बसाया था।
- रानी का नाम - बाला बाई, जो बीकानेर के राव लूणकरण की पुत्री थी।
- इसने अपनी रियासत में 12 कोटड़ी व्यवस्था (सामन्ती व्यवस्था) लागू की।

भारमल : [1547-1573]

- नारनौल के मुगल फौजदार मजनूँ खाँ की सहायता से अकबर से मिलता है।
- कालान्तर में अजमेर दरगाह में जियारत करने जा रहे अकबर से सांगानेर के 'चगताई खाँ' की मदद से मिलता है।
- जियारत से वापस लौटते समय साम्भर में अपनी बेटी हरखा बाई की शादी अकबर से कर देता है। अकबर इसे 'मरियम उज्जमानी' की उपाधि देता है।
- इस प्रकार मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला तथा वैवाहिक सम्बन्ध बनाने वाला ये आमेर के पहले राजा थे।
- इसी हरखा बाई से कालान्तर में जहांगीर (सलीम) का जन्म हुआ।
- अमीर उल उमरा की उपाधि दी गयी।

भगवन्त दास :

- अकबर ने इसे 'अमीर उल उमरा' की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया।
- अकबर ने इन्हें राणाप्रताप को समझाने के लिए भेजा था।
- बूंदी के राजा सुरजन राय हाड़ा की अधीनता स्वीकार करवाने में भगवन्त दास की मुख्य भूमिका थी।
- अकबर से दादूदयाल को भगवन्तदास ने मिलाया था। (फतेहपुर सीकरी में)

• 'सरनाल का युद्ध' (मिर्जा विद्रोह- गुजरात में) - इसमें वीरता दिखाने पर भगवन्तदास को नगाड़ा व परचम देकर सम्मानित किया।

• भगवन्तदास ने अपनी बेटी मानबाई की शादी सलीम के साथ की। सलीम इसे 'शाहे-बेगम' कहता था। इसी से खुसरों का जन्म हुआ। इसने जहाँगीर की शराब की आदतों से तंग आकर आत्महत्या करली। (मानबाई)

मानसिंह

• सरनाल के युद्ध में मानसिंह भी अकबर के साथ था।
• रणथम्भौर अभियान के समय मानसिंह पहली बार सेना के साथ गया।
• अकबर ने राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजा।
• हल्दीघाटी के युद्ध में शाही सेना का सेनापति होता है, यह मानसिंह का पहला स्वतंत्र अभियान था।
• 14 Feb. 1590 को मानसिंह का राज्याभिषेक किया गया। मानसिंह को 5000 का मनसबदार बनाया गया। जो बाद में बढ़कर 7000 का हो गया।
• अकबर ने इसे बंगाल, बिहार व काबुल का सूबेदार बनाया।

काबुल : (हिन्दू- मुसलमानों के लिए यवन का प्रयोग)

काबुल में मानसिंह ने 5 यवन कबीलों को जीता था। इसलिए आमेर के झंडे का रंग पचरंगा था।

* जयपुर के सिक्के झाड़शाही सिक्के कहलाते हैं।
(कछवाहा वंश — राम — अयोध्या — सफेद तिरंगा — झाड़ी)
(फिर मानसिंह के 5 यवन कबीले जीतने पर पचरंगा हो गया।)

• मानसिंह को अकबर ने 'फर्जन्द' की उपाधि दी।

"मात सुणावै बालगाँ, खौफनाक रण गाथ,
काबुल भूली नहीं अजें वो खाँडो वे हाथ।।"

• वृंदावन में राधा गोविन्द का निर्माण करवाया।
मार — मानसिंह

बिहार -

बिहार में सूबेदारी के दौरान मानपुर नगर बसाता है।

बंगाल -

- बंगाल में अकबरनगर नामक शहर बसाता है, जिसे वर्तमान में हम राजमहल कहते हैं।
- बंगाल की सूबेदारी के दौरान ही इसके तीनों बेटों की मृत्यु हो गयी थी।
  (हिम्मत सिंह, जगतसिंह, सुरजन सिंह)
- पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराकर शिला माता की मूर्ति लेकर आता है तथा इन्होंने आमेर में शिला माता का मंदिर बनवाया।

- मानसिंह के दरबार में एक दरबारी था - पुण्डरीक विट्ठल, जिनकी पुस्तकें हैं -
  1) रागमाला
  2) राग मंजरी
  3) राग चन्द्रोदय
  4) नर्तन निर्णय

- एक और दरबारी थे, जिनका नाम था - मुरारि दास
  पुस्तक - 'मान प्रकाश'

- दरबारी पंडित जगन्नाथ ने पुस्तक लिखी -
  'मानसिंह कीर्ति मुक्तावली'

- दादूदयाल ने इनके समय (मानसिंह) में 'वाणी' की रचना की।
- मानसिंह ने आमेर के महलों का निर्माण शुरु करवाया।
- आमेर में जगत शिरोमणि मंदिर बनवाया, इस मंदिर का निर्माण मानसिंह की रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की याद में बनवाया। इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की वही मूर्ति लगी हुयी है, जिसकी मीरा चित्तौड़ में पूजा किया करती थी।

मिर्जा राजा जयसिंह : [1621-1667]

- सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला जयपुर का राजा (46 वर्ष)।
- जयसिंह, जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब तीनों का समकालीन था,
- जहाँगीर ने इसे दक्षिण में मलिक अम्बर के खिलाफ भेजा था।
- शाहजहाँ ने इसे मिर्जा राजा की उपाधि दी व काबुल अभियान पर भेजा।
- उत्तराधिकार संघर्ष में, बहादुरपुर के युद्ध में दारा शिकोह की तरफ से लड़ा।
- 'दौराई के युद्ध' में औरंगजेब की तरफ से लड़ा।
- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह को भी औरंगजेब की तरफ यही लेकर आता है।
- औरंगजेब ने इसे दक्षिण में शिवाजी को नियंत्रित करने के लिए भेजा।
- 11 June 1665 - पुरन्दर की संधि :

  [शिवाजी V. जयसिंह]

  इस संधि के तहत शिवाजी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेता है।
- संधि के बाद जब शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आता है, तब मिर्जा राजा जयसिंह के बेटे रामसिंह के पास रुकता है।
- मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में हिन्दी के प्रख्यात कवि 'बिहारी जी' थे।
  पुस्तक - बिहारी सतसई
- दरबारी - 'रायसिंह' ने 'जयसिंह चरित्र' लिखी थी।
- 'कुलपति मिश्र' (बिहारी जी के भान्जे) - इन्होंने लगभग 52 ग्रन्थों की रचना की थे, जिनसे हमें जयसिंह के दक्षि० अभियानों की जानकारी मिलती है।
- जयसिंह ने औरंगाबाद के पास जयसिंहपुरा गांव (कस्बा) बसाया था।
- जयपुर में जयगढ़ किले का (पुनः) निर्माण करवाया।

सवाई जयसिंह (1700-1743)

- सर्वाधिक मुगल बादशाहों के साथ रहने वाला।
    - 7 मुगल बादशाहों के साथ – औरंगजेब
    - बहादुर शाह I
    - जहांदर शाह
    - फर्रुखसियर
    - रंगीला (मोहम्मद शाह)

- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में हुये उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होंने शहजादे आजम का पक्ष लिया था चूंकि जीत मुअज्जम की हुयी। जो 'बहादुर शाह I' के नाम से बादशाह बना।
- बादशाह बनते ही उसने सवाई जयसिंह आमेर के राजा पद से हटा दिया। व इनके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बना दिया।
- आमेर का नाम बदलकर इस्लामाबाद या मोमिनाबाद रख दिया।
- 1704 A.D के '<u>देबारी समझौते</u>' के तहत मेवाड़, मारवाड़ व आमेर की संयुक्त सेना के सहारे विजयसिंह को हटाकर जयसिंह वापस राजा बन गया।

जयपुर - बूंदी विवाद

- सवाई जयसिंह की ~~बेटी~~ बहन अमर कंवर की शादी बूंदी के राजा ~~सवाई जयसिंह~~ बुद्धसिंह के साथ हुई थी। अमर कंवर के संतान नहीं होने पर बुद्धसिंह ने दलेल सिंह को गोद ले लिया और बूंदी का राजा घोषित कर दिया। सवाई जयसिंह ने अपनी बेटी कृष्णा कंवर की शादी, दलेल सिंह के साथ कर दी।

कालान्तर में बुद्धसिंह की अन्य रानी से उम्मेद सिंह नामक पुत्र हुआ। अमर कंवर ने उम्मेद सिंह का पक्ष लिया। इससे उम्मेद सिंह व दलेल सिंह के बीच उत्तराधिकार संघर्ष उत्पन्न हो गया।

अमर कंवर ने उम्मेद सिंह के पक्ष में मराठों को बुला लिया। मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर अपना राखीबंध भाई बनाया। व मराठों की सहायता से उम्मेद सिंह को राजा बना दिया।

यह मराठों का राज्य की राजनीति में पहला आंतरिक हस्तक्षेप था।

* सवाई जयसिंह के मराठों के साथ सम्बन्ध :

• मुगल मनसबदार के रूप में सवाई जयसिंह ने मराठों से 3 युद्ध किए —

1) 1715 A.D. — पीलसूद का युद्ध
2) 1733 A.D. = मन्दसौर का युद्ध
3) 1735 A.D. — रामपुरा का युद्ध

• मराठा समस्या के समाधान के लिए 1734 A.D. में हुरड़ा सम्मेलन बुलवाया है। इसका आयोजक सवाई जयसिंह था।

• 1741 A.D. में पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ धौलपुर समझौता करता है

• जयसिंह मालवा का 3 बार सूबेदार हुआ।

• 'गंगवाना के युद्ध' में बीकानेर के राजा जोरावर सिंह की मदद करता है। बीकानेर व जोधपुर जयपुर की संयुक्त सेना जोधपुर के अभयसिंह को हराती है।

• भरतपुर के उत्तराधिकार संघर्ष में बदनसिंह का साथ देता है, उसे राजा बनाता है, युवराज की उपाधि देता है, डीग की जागीर देता है।

• जयसिंह ने अश्वमेध यज्ञ करवाया, इसका पुरोहित 'पुण्डरीक रत्नाकर' था। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को दीपसिंह कुम्भाणी ने पकड़ लिया व अपने 25 आदमियों के साथ लड़ता हुआ मारा गया।

• जयसिंह ने एक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा था — 'जयसिंह कारिका'

• 1725 A.D. में नक्षत्रों की शुद्ध सारणी हुयी। इसे 'जिज मुहम्मदशाही' नाम दिया गया।

• इनके एक दरबारी 'जगन्नाथ' ने युक्लिड की रेखागणित से सम्बन्धित पुस्तक का संस्कृत में अनुवाद किया।

अन्य पुस्तक - { सिद्धान्त सम्राट, सिद्धान्त कौस्तुभ }

• फ्रेंच पुस्तक लागोरियम का 'केवलराम' नाम के विद्वान ने विभाग सारिणी

नाम से अनुवाद किया।

- पुण्डरीक रत्नाकर ने 'जयसिंह कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ लिखा।
- नयनचन्द्र मुखर्जी ने एक अरबी ग्रन्थ 'ऊकर' का संस्कृत अनुवाद किया।
- जयसिंह ने 'मुहम्मद मेहरी' व 'मुहम्मद शरीफ' को विदेशों में पाण्डुलिपियों के संकलन के लिए भेजा।
- 18 नवम्बर 1727 को जयपुर शहर की स्थापना की, इसका वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य नामक एक बंगाली ब्राह्मण था। जयपुर का निर्माण वास्तुशास्त्र के आधार पर बनाने के लिए एक पुर्तगाली ज्योतिषी 'जेवियर डि सिल्वा' को बुलाया।
- 1729 A.D. को जयपुर को अपनी राजधानी बना लिया।
- नाहरगढ़ का किला बनवाया, इसे सुदर्शनगढ़ भी कहते हैं।
- गोविन्द देव जी का मंदिर बनवाया। यह गौड़ीय सम्प्रदाय की राज. में प्रमुख पीठ है।
- सिटी पैलेस / चन्द्रमहल का निर्माण करवाया।
- जयगढ़ किले में जयबाण तोप रखवायी।
- पांच विभिन्न स्थानों पर पांच वेधशालाएँ बनवायीं।
  - जयपुर – सबसे बड़ी
  - दिल्ली – सबसे पहले निर्मित
  - मथुरा
  - बनारस
  - उज्जैन
- जयपुर के जंतर मंतर में एक 'सम्राट यंत्र' लगवाया, जो विश्व की सबसे बड़ी सूर्य घड़ी है।
  - एक राम यंत्र लगवाया, जो चंद्र घड़ी ~~ऊंचाई नापने का यंत्र~~ थी।

{ जयप्रकाश यंत्र - मौसम की जानकारी हेतु
{ नाभिवलय- यंत्र - गुरूत्वाकर्षण हेतु

- सवाई जयसिंह ने जलमहल का निर्माण करवाया।
- 'अमानीशाह' - सवाई जयसिंह के आध्यात्मिक गुरु थे।
- सवाई जयसिंह को मोहम्मद शाह ने राज राजेश्वर, श्री राजाधिराज, सवाई आदि उपाधियों से विभूषित किया (जाटों का विद्रोह समाप्त करने पर)

ईश्वरी सिंह [1743- 1750 A.D.] :

- जयसिंह की एक खिंची रानी से ईश्वरी सिंह का जन्म हुआ। जो जयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था तथा जयपुर का अगला राजा बना।
- जयसिंह की सिसोदिया रानी चन्द्र कंवर से माधोसिंह पुत्र का जन्म हुआ जो देबारी समझौते (1707 A.D.) के तहत राजा बनाया जाना था।

⊙ मेवाड़ का महाराणा संग्राम सिंह II, माधोसिंह को रामपुरा का परगना देता है।

- जयसिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह व माधो सिंह में उत्तराधिकार संघर्ष होता है।

⇒ राजमहल का युद्ध (टोंक) (बनास नदी के पास) - पहला उत्तराधिकार-युद्ध

ईश्वरी सिंह V. माधोसिंह
↓ (सूरजमल - भरतपुर महाराजा)
↓ (जगतसिंह II - मेवाड़)
(बुंदी नरेश - उम्मेद सिंह)
(कोटा राजा - दुरजन साल)
(मराठे)

इस युद्ध में ईश्वरी सिंह जीतता है। इस जीत के उपलक्ष्य में ईसरलाट (सरगासूली) का निर्माण करवाता है।

⇒ बगरू का युद्ध : (उत्तराधिकार का द्वितीय युद्ध)

- इस युद्ध में ईश्वरी सिंह हार जाता है, उसे मराठों को युद्ध हर्जाना व माधो सिंह को पांच परगने देने पड़े।
- मराठों द्वारा युद्ध हर्जाने के लिए तंग करने पर ईश्वरी सिंह ने आत्महत्या कर ली।

* मानपुरा का युद्ध :
  इसमें ईश्वरी सिंह अहमद शाह अब्दाली को हराता है।

माधोसिंह (1750- 1768 A.D.)

- 1751 A.D. में मराठों (5000) का कत्ले आम करवाया, जयपुर में।

⇒ काकोड़ का युद्ध (टोंक)
- माधोसिंह ने इस युद्ध में मराठों को हराया।

⇒ भटवाड़ा का युद्ध (कोटा) (Ranthambore)
- माधोसिंह V. शत्रुसाल (कोटा)
- रणथम्भौर पर अधिकार के लिए प्रश्न पर।
- इस युद्ध में माधोसिंह की हार होती है।

⇒ कामा का युद्ध (भरतपुर)

माधोसिंह V. जवाहर सिंह (भरतपुर)

इस युद्ध में दोनो पक्ष अपनी-2 जीत का दावा करते रहे।

• 1762 A.D. में माधोसिंह ने सवाई माधोपुर की स्थापना की।

मोतीडूंगरी के महल बनवाए।

चाकसू में शीतला माता का मंदिर बनवाया। → माधोसिंह

प्रतापसिंह (1778 - 1803 A.D.)

* तुंगा का युद्ध (~~1785~~) : (1787)

जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर का विजयसिंह, दोनों मिलकर मराठों के महादजी सिन्धिया को हराते हैं।

* पाटन का युद्ध (1790) :

इस युद्ध में मराठों ने प्रतापसिंह को पराजित किया। इस युद्ध में मराठा सेनापति, एक फ्रांसीसी 'डी - बोय' था।

* मालपुरा का युद्ध (टोंक) :

इस युद्ध में मराठों ने जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर के भीमसिंह की संयुक्त सेना को हराया।

• प्रतापसिंह एक अच्छा लेखक था, 'बृजनिधि' नाम से कविताएं लिखा करता था।

• प्रतापसिंह ने एक संगीत सम्मेलन बुलवाया, जिसकी अध्यक्षता देवर्षि बृजपाल भट्ट ने की थी, जिसमें 'राधा गोविन्द संगीत सार' ग्रंथ लिखा गया।

• प्रतापसिंह के संगीत गुरु का नाम चाँद खाँ था, प्रतापसिंह ने इसे

'बुद्ध प्रकाश' नामक उपाधि थी।

- चाँद खाँ ने 'स्वर सागर' ग्रन्थ की रचना की।
- प्रताप सिंह के दरबार में 22 विद्वान रहते थे, जिन्हें गन्धर्व बायसी या प्रताप बायसी कहते हैं। प्रतापसिंह ने विद्वानों के लिए 'गुणीजन खाना' की स्थापना की।
- प्रताप सिंह 'तमाशा' नाट्य शैली को महाराष्ट्र से जयपुर लेकर आए थे। तमाशा के प्रमुख 'बंशीधर भट्ट' थे।
- प्रतापसिंह ने 'हवामहल' का निर्माण करवाया, यह एक पांच मंजिला इमारत है, जो भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट के समान है।

पांच मंजिले —
- शरद मंदिर
- रत्न मंदिर
- विचित्र मंदिर
- प्रकाश मंदिर
- हवा मंदिर

- हवा महल का वास्तुकार - लाल चन्द *

जगतसिंह (1803 - 1818)

- 1807 A.D. में गिंगोली का युद्ध - अंग्रेजो से सन्धि कर ली थी
- जगतसिंह की प्रेमिका का नाम 'रस कपूर' था।

रामसिंह (1835 - 1880 A.D.)

- रूपा बडारण मामले की जांच करने आए A.G.G. आल्विस के सहायक 'ब्लैक' की पीट-2 कर हत्या कर दी गयी।

* 'जॉन लुडलो' को रामसिंह का संरक्षक व जयपुर का प्रशासक बनाया गया।

जॉन लुडलो ने 1844 A.D. में समाधि प्रथा व कन्या वध पर रोक लगायी

~~1825~~ 1845 A.D. – सती प्रथा पर रोक लगायी

1847 A.D. – मानव व्यापार पर रोक लगायी

1857 A.D. की क्रांति में रामसिंह ने अंग्रेजों का साथ दिया अतः इसे अंग्रेजों ने 'सितार-ए-हिन्द' की उपाधि व कोटपूतली परगना दिया।

* ~~1844~~ एडवर्ड VII के जयपुर आगमन पर जयपुर को गुलाबी रंग से रंगा गया
* स्टेनले रीड नामक पत्रकार ने एक पुस्तक 'ROYAL TOWNS OF INDIA' में पहली बार जयपुर के लिए 'PINK CITY' नाम दिया।
* 'प्रिंस अल्बर्ट' के जयपुर आगमन पर 1876 A.D. में अल्बर्ट हॉल की नींव रखी गयी, इसका वास्तुकार 'स्टीवन जैकब' था। इसी समय रामनिवास बाग बनवाया गया
* कला के विकास के लिए 1857 A.D. में 'मदरसा-ए-हुनरी' की स्थापना की। 1866 में इसका नाम बदलकर 'RAJASTHAN SCHOOL OF ARTS AND CRAFTS' कर दिया गया।
* जयपुर में ब्लू पॉटरी की ~~स्थाप~~ शुरुआत की।
* चूडामण व कालू कुम्हार नामक दो व्यक्तियों को भोला नामक व्यक्ति से ब्लू पॉटरी के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली भेजा।
* 1866 A.D. में 'कान्तिचन्द्र मुखर्जी' ने एक महिला विद्यालय खोला, यह किसी भी रियासत में महिला-शिक्षा का पहला कदम थी। यहां बालिकाओं को सिलाई सिखायी जाती थी।

- महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- 1870 A.D. में लार्ड मेयो ने जयपुर व अजमेर की यात्रा की।
- 1875 A.D. में गवर्नर जनरल नार्थब्रुक ने जयपुर की यात्रा की।

माधोसिंह II :

- इसे बब्बर शेर कहते हैं।
- मदन मोहन मालवीया को BHU के लिए 5 लाख रुपये दिये थे।
- नाहरगढ़ में अपनी नौ दासियों के लिए एक जैसे 9 महल बनवाये
- 1904 A.D. में सबसे पहले 'डाक टिकट व पोस्ट कार्ड व्यवस्था' लागू की जो रियासतों में किया गया पहला प्रयास था।
- सिटी पैलेस में मुबारक महल बनवाए।

मानसिंह II :

- आजादी के समय जयपुर का शासक।
- राज॰ का पहला राजप्रमुख। (30 March 1949)
- मानसिंह II ने राजप्रमुख के पद पर 1 नव॰ 1956 तक कार्य किया।

'अलवर राज्य का इतिहास'

- यहाँ कछवाहों वंश की 'नरूका शाखा' का शासन था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याण सिंह को 'माचेड़ी' की जागीर थी।
- 1774 A.D. में बादशाह शाह आलम ने प्रतापसिंह को स्वतंत्र रियासत दे दी।
- 1775 A.D. में प्रताप सिंह ने भरतपुर से अलवर को छीनकर इसे अपनी राजधानी बनाया।

बख्तावर सिंह :

- 'लसवाड़ी के युद्ध' में मराठों के विरुद्ध अंग्रेजो का साथ देते है। थोड़े दिनों बाद अंग्रेजो से सहायक संधि कर लेते है।
- 'बख्तेश' और 'चन्द्रमुखी' नाम से कविताएं लिखा करते थे।

विनयसिंह :

- विनयसिंह ने अपनी माता 'मूसी महारानी' की याद में अलवर में 80 खम्भों की छतरी बनवायी। यह 2 मंजिला छतरी है, जिसकी दूसरी मंजिल पर रामायण व महाभारत के चित्र बनाए गए है।
- विनय सिंह की रानी का नाम 'शीला' था। इसने अपनी रानी के नाम पर सिलीसेढ़ झील बनवायी।

सिलीसेढ़ झील को 'राज. का नन्दनकानन' कहते है।

जयसिंह :

- नरेन्द्र मंडल का नामकरण 'जयसिंह' ने किया था।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- अलवर में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया।
- 'ड्यूक ऑफ. एडिनबर्ग' के अलवर आगमन पर सरिस्का पैलेस का निर्माण करवाया।
- तिजारा दंगो के बाद जयसिंह को हटा दिया गया, जयसिंह पेरिस चला गया व वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

तेजसिंह :

- आजादी के समय अलवर का शासक
- महात्मा गांधी की हत्या मे इनकी संदिग्ध भूमिका थी, पर बाद में न्यायपालिका ने इन्हें क्लीन चिट दे दी।

जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

- भाटी भगवान श्रीकृष्ण (अनिरुद्ध → प्रद्युम्न → 7वीं पीढ़ी महद्) के वंशज है।
- भाटी यदुवंशी होते हैं, इसलिए जैसलमेर के राजचिन्ह में 'छत्राला यादवपति' लिखा हुआ है।
- भाटियों की कुल देवी – 'स्वांगिया माता'
- "काशी मथुरा प्राग्वाट (प्रयाग), गजनी अर भटनेर।
  दुर्गम (तन्नौट) देरावर (सियालकोट) लुद्रवो (लौदरवार), नवमो गढ़ जैसलमेर।।" – जैसलमेर
- 285 A.D. में भट्टी ने भटनेर का किला बनाकर इसे अपनी राजधानी बनाया। भट्टी को 'भाटियों का आदिपुरुष' या भाटी राज्य का संस्थापक कहा जाता है।
- भटनेर के कारण ही भाटियों को 'उत्तर भड़ किंवाड' / उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा गया है।

मंगलराव :

- गजनी के राजा ढून्डी (मुस्लिम) ने मंगलराव को पराजित करके भटनेर छीन लिया। मंगलराव ने तन्नौट को अपनी नयी राजधानी बनाया।

देवराज :

- देवराज ने पंवारी से लौद्रवा छीनकर, लौद्रवा को अपनी राजधानी बनाया।

(लोद्रवा की राजकुमारी)
* मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था।

जैसल :

- 12 July 1155 A.D. को जैसलमेर की स्थापना करता है व इसे अपनी राजधानी बनाता है।

मूलराज :

- अलाउद्दीन के गुजरात आक्रमण के समय भाटियों ने अलाउद्दीन के घोड़े चुरा लिए। अलाउद्दीन ने जैसलमेर पर आक्रमण किया, यह जैसलमेर का पहला साका था।

दुर्जनसाल :

- 1352 A.D. में फिरोज तुगलक के सिंध आक्रमण के समय, फिरोज ने जैसलमेर का घेरा डाला, इस समय जैसलमेर का 'दूसरा साका' हुआ।

लूणकरण :

- रूठी रानी 'उमा दे', लूणकरण की पुत्री थी।
- कंधार का गर्वनर 'अमीर अली' लूणकरण के पास शरण लेता है। एक दिन उसने अपनी बेगमों से रानियों को मिलवाने की इच्छा जाहिर की, ~~किले के~~ उसने बेगमों की जगह पालकियों में हथियार बंद योद्धा बिठा दिये, किले के पहले दरवाजे पर ही इस धोखे का पर्दाफाश हो गया। चूंकि अब महिलाओं की जौहर करवाने का समय नहीं था, अतः किले की सभी महिलाओं को तलवारों से काट दिया गया। (धारा स्नान)
  * जौहर (अग्नि स्नान)

चूंकि इस समय केवल केसरिया ही हुआ था, जौहर नहीं हुआ. इसलिए इसे जैसलमेर का 'अर्द्ध - साका' ही हुआ।
यह घटना 1550 A.D. की है।

हरराज :

- 1570 A.D. में अकबर के नागौर दरबार में भाग लेता है। इस प्रकार मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला यह जैसलमेर का पहला राजा था।
- इसने अपने राज्य में सामन्तों में (डावड़ी और जीवणी) श्रेणी व्यवस्था लागू की।

अमरसिंह :

- ये 'अमरकास' नहर बनवाकर सिंधु नदी का पानी जैसलमेर लेकर आए।

अखैसिंह :

- इसने जैसलमेर में अखैशाही मुद्रा का प्रचलन किया।

मूलराज II :

- इसने अंग्रेजो के साथ संधि कर ली थी।

जवाहरसिंह :

- आधुनिक जैसलमेर का निर्माता।
- जैसलमेर में डाक-तार व रेल व्यवस्था लागू की।
- जैसलमेर में 'विक्रम पुस्तकालय' बनवाया।
- इन्हीं के समय स्वतंत्रता सैनानी सागरमल गोपा को जेल में

जिंदा जलाकर मार दिया गया। सागर मल गोपा की हत्या के बाद गोपाल स्वरूप पाठक आयोग स्थापित किया गया।

सागरमल गोपा की पुस्तकें :-

1) आजादी के दीवाने
2) जैसलमेर का गुंडाराज
3) रघुनाथ सिंह का मुकदमा

• इनके काल में राज्य का ही नहीं, अपितु भारत का अंतिम दुर्ग श्री मोहनगढ़ बनवाया गया।

गिरधर सिंह :

• आजादी के समय यहाँ का शासक गिरधर सिंह था।

⇒ जैसलमेर में 2½ साके हुये हैं -

1) 1292 A.D में अलाउद्दीन खिलजी व भाटी शासक मूलराज I के मध्य युद्ध।
2) दिल्ली के सुल्तान फिरोजशाह तुगलक व रावल दुर्जनसाल के मध्य युद्ध।
3) तीसरा अर्द्ध साका 1550 A.D में जैसलमेर के राव लूणकरण व कंधार के अमीर अली के मध्य, इसमें वीरो ने केसरिया तो किया, परन्तु जौहर नहीं हुआ।

करौली का इतिहास (यादव वंश)

- करौली में यादवों की 'जादौन' शाखा थी।
- कुल देवी - कैला माता

विजयपाल :

- 1040 A.D. में बयाना को जीतकर इसे अपनी राजधानी बनाता है और यादवों की जादौन शाखा का शासन प्रारम्भ करता है।

तिमनपाल :

- यह तिमनगढ़ का किला बनाता है। और इसे अपनी राजधानी बनाता है।

कुंवरपाल :

- मुहम्मद गौरी के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

अर्जुनपाल :

- कल्याणपुर नामक नगर की स्थापना करता है।

धर्मपाल :

- कल्याणपुर का नाम करौली रखकर इसे अपनी राजधानी बनाता है।

गोपालपाल :

- करौली में 'मदन मोहन जी का मंदिर' बनवाता है। यह गौड़ीय (चैतन्य महाप्रभु ने) सम्प्रदाय की राजस्थान की दूसरी प्रमुख पीठ है।

हरबक्शपाल :

- इसने अंग्रेजो के साथ संधि कर ली।

मदनपाल :

- 1857 A.D. की क्रांति में कोटा महाराव की मदद की थी।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती सबसे पहले (राजस्थान में) करौली मदनपाल जी के निमंत्रण पर आए थे।

भरतपुर के जाट वंश का इतिहास

- 1669 A.D. में मथुरा क्षेत्र के आस-पास के जाट किसानों ने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। इस विद्रोह का नेतृत्व 'गोकुला' नामक जाट किसान ने किया था। (1670 A.D.) गोकुला को पकड़कर उसकी हत्या कर दी गयी।
- 1687 A.D. में सिनसिनी का जमींदार राजाराम विद्रोह कर देता है। सिकन्दरा में अकबर के मकबरे को लूट लेता है, और अकबर की अस्थियों को निकालकर जला देता है। राजाराम के विद्रोह को भी दबा दिया गया।

चूडामण :

- थूण के किले का निर्माण करवाता है, और जाट राज्य की स्थापना करता है, चूंकि ये सिनसिनी गांव के थे, इसलिए ये सिनसिनवार जाट कहलाए।

बदन सिंह :

- चूडामण की मृत्यु के बाद हुए उत्तराधिकार संघर्ष में बदनसिंह, मोहकमसिंह के विरुद्ध जयपुर के सवाई जयसिंह का समर्थन प्राप्त करता है। सवाई जयसिंह ने इसे डीग की जागीर दी, बृजराज की उपाधि दी। और पचरंगी ध्वजा दी (क्यों कि जयपुर का झंडा पचरंगा है।)। सवाई जयसिंह ने 'राजा' की उपाधि भी दी। (मुहम्मद शाह/ सवाई जयसिंह)
- बदनसिंह इनमें से किसी भी उपाधि का प्रयोग नहीं करके अपने नाम के आगे ठाकुर लगाता था।
- बदनसिंह कभी भी दिल्ली दरबार में नहीं गया।
- सवाई जयसिंह के साथ बदनसिंह के रिश्ते बेहद अच्छे थे। वह सवाई जयसिंह के पास जयपुर दरबार आता है, इसीलिए

आज भी जयपुर में बदनसिंह के नाम से 'बास बदनपुरा' जगह है।

- बदनसिंह ने {डीग और कुम्हेर के किले} बनवाए।

सूरजमल : (1753-63)

- सूरजमल को 'जाटों का प्लेटो' और 'जाटों का अफलातून' कहते हैं।
- भरतपुर के किले का निर्माण करवाया व अपनी राजधानी बनाया।

* पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठा सेनापति सदाशिव राव भाऊ से अनबन होने पर युद्ध में भाग नहीं लेता है, पर भागते हुये मराठा सैनिकों को भरतपुर में शरण देता है।

- 'राजमहल व बगरू' के युद्ध में ईश्वरी सिंह की सहायता करता है। (इन दोनों में हरावल (अग्रिम पंक्ति) स्थान पर रहकर लड़ता है।) (इस समय बदनसिंह, सूरजमल को सेनापति बनाता है)
- 1754 A.D. में दिल्ली पर आक्रमण करता है, वहाँ से नूरजहाँ का झूला उठाकर लाता है। और इन झूलों को डीग के महलों में स्थापित करवाया।
- डीग में जलमहलों का निर्माण करवाया।
- नजीब खां के खिलाफ लड़ते हुये मारा गया।
- सूरजमल एक आर्थिक विशेषज्ञ था, उसने भरतपुर की आर्थिक स्थिति सुधारने का अधिक प्रयास किया।
- उसकी मृत्यु के समय 1763 A.D. में भरतपुर राज्य की आय 175 रु. लाख रुपये सालाना थी।
- सूरजमल ने भरतपुर में एक नवीन प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें पद का आधार योग्यता को बनाया गया।
- भरतपुर में दीवान को 'मुखत्यार' कहते थे।

- सूरजमल के दरबारी 'मंगल सिंह पुरोहित' रहे, जिन्होंने – 'सुजान संवत विलास' नामक पुस्तक लिखी।

- सूरजमल की पत्नी का नाम 'किशोरी देवी' था।

जवाहर सिंह :

1774 A.D. में दिल्ली पर आक्रमण करता है, व दिल्ली के किले से अष्ट धातुओं के बने दरवाजे लेकर आता है, इन्हें भरतपुर के किले में लगवाता है।

ये दरवाजे मूल रूप से चित्तौड़ के किले में लगे हुये थे, जिन्हें अकबर चित्तौड़ अभियान के दौरान आगरा ले गया था, फिर औरंगजेब इन्हें आगरा से दिल्ली ले आता है।

- जवाहर सिंह इस जीत के उपलक्ष्य में भरतपुर के किले में जवाहर बुर्ज का निर्माण करवाता है, जवाहर बुर्ज में भरतपुर के राजाओं का राज-तिलक किया जाता है।

- 'कामा का युद्ध' – जवाहर सिंह, जयपुर के माधो सिंह के खिलाफ लड़ता है।

रणजीत सिंह :

- 1803 A.D में दूसरे अंग्रेज – मराठा युद्ध के दौरान 'जसवंत राव होल्कर' को भरतपुर में शरण देता है।

- कई प्रयासों के बावजूद अंग्रेज, भरतपुर के किले को जीत नहीं सके, इसलिए भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता है।

" डिगियो नी गढ़ डीग रो, तोपां ताव पडन्त।
कोराँ खांडी नी हुई, गोरा डीगं गलन्त ॥"
(घमंड जरूर गल गया)

- रणजीत सिंह अंग्रेजों से मैत्री सन्धि कर लेता है।

जसवंत सिंह :
- 1857 की क्रांति के समय यहां का शासक 'जसवंत सिंह II' था

बृजेन्द्र सिंह :
आजादी के समय यहां का शासक 'बृजेन्द्र सिंह' था।

1857 A.D. की क्रान्ति में राजस्थान

- 1832 A.D. में A.G.G. (Agent to Governer General) मुख्यालय 'अजमेर' में स्थापित किया गया।
- राजस्थान के पहले A.G.G. 'मि. लॉकेट' थे।
- 1845 A.D. में इस मुख्यालय को 'आबू' स्थानान्तरित कर दिया गया।
- 1857 A.D. की क्रांति के समय यहां A.G.G. 'George Patrick lawrence' था।

* lawrence इससे पहले मेवाड़ का 'Political Agent' रह चुका था।

Place	Political Agent	King
(1) Kota	Berten	Ram singh
(2) Jaipur	Eden	Ramsingh II
(3) Jodhpur	Mackmeson	Takhtsingh
(4) Udaipur	Shawers	Swaroop Singh
(5) Bharatpur	Morrison	Jaswantsingh II

- राजस्थान में अंग्रेजों की सैनिक छावनियां –

नसीराबाद (अजमेर)
नीमच (M.P.)
एरिनपुरा (सिरोही) पाली – उस समय जोधपुर रियासत में आता था।
देवली (टोंक)
खैरवाड़ा (उदयपुर) } इन दोनों छावनियों ने 1857 की क्रांति में
ब्यावर (अजमेर) } भाग नहीं लिया था।

नसीराबाद :

- 28 May 1857 :- राज. में सबसे पहले नसीराबाद की छावनी में विद्रोह हुआ।
- 28 May 1857 को 15वीं Native Infantry के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- दो दिन बाद 30वीं Native Infantry भी इनके साथ मिल गयी व सभी सैनिक दिल्ली की ओर कूच कर गए।

नीमच :

- मोहम्मद अली बेग नामक एक सैनिक ने कर्नल एबॉट के सामने अंग्रेजी राज के प्रति वफादार नहीं रहने की कसम नहीं खायी। (अवध के प्रश्न को लेकर - विलय)
- 3 June 1857 को हीरासिंह नामके एक सैनिक के नेतृत्व में छावनी में विद्रोह हो गया। एक अंग्रेज सार्जेण्ट व उसकी पत्नी की हत्या कर दी गयी।
- नीमच छावनी से भागे 40 अंग्रेजों को डूँगला गांव में एक रूघाराम, नामक किसान ने शरण दी।
- कैप्टन शावर्स इन्हें मुक्त करवाता है व उदयपुर महाराणा के पास भेज देता है।
- उदयपुर महाराणा ने इन्हें जगमंदिर महलों में रखा।
- यहां से विद्रोही सैनिक शाहपुरा आते हैं, शाहपुरा का राजा इन्हें रसद आपूर्ति करता है।

• शाहपुरा के राजा ने कैप्टन शावर्स का विरोध किया। यह

• यहां से सैनिक निम्बाहेड़ा आए। (उस समय टोंक के अधीन था)
निम्बाहेड़ा में इन्हें व्यापक जनसमर्थन मिलता है। निम्बाहेड़ा में देवली छावनी के सैनिक भी इनसे आकर जुड़ गये। यहां से सैनिक दिल्ली की ओर चले गये।

एरिनपुरा :

• 1835 A.D. में जोधपुर लीजियन का गठन किया गया। इसका सदर मुकाम (प्रमुख मुख्यालय) एरिनपुरा को बनाया गया।

• एरिनपुरा छावनी की पूर्बिया सैनिकों की टुकड़ी को आबू भेजा हुआ था वहीं पर उन्होंने विद्रोह कर दिया और एरिनपुरा में आकर अपने बाकी साथियों के साथ मिल गए।

• खैरवा (पाली) नामक स्थान पर इन्हें आउवा का ठाकुर खुशालसिंह चाम्पावत मिलता है, व विद्रोही सैनिकों को अपना नेतृत्व प्रदान करता है।

• खुशाल सिंह चम्पावत :

बिठौड़ा गांव के उत्तराधिकार प्रश्न को लेकर खुशालसिंह ने बिठौड़ा के ठाकुर कानजी की हत्या कर दी थी, हत्या करने से यह जोधपुर राज का विद्रोही हो गया।

एरिनपुरा छावनी के सैनिकों के साथ जुड़ने से इसका यह विद्रोह अंग्रेजों के विरुद्ध हो गया।

(1) बिठौड़ा का युद्ध – 8 Sep. 1857
(2) चेलावास का युद्ध – 18 Sep. 1857

आउवा का युद्ध : २० Jan 1858

(1) बिठौड़ा का युद्ध :

इस युद्ध में जोधपुर की सेना ने कैप्टन हीथकोट, ओनाड़ सिंह पंवार (किलेदार) और कुशाल राज सिंघवी (जोधपुर की पलटन का सेनापति) के नेतृत्व में खुशाल सिंह से युद्ध किया।

इस युद्ध में कुशाल सिंह चम्पावत जीत गया और किलेदार ओनाड़ सिंह मारा गया।

(2) चेलावास का युद्ध :

- इसे काले - गोरे का युद्ध भी कहते हैं।
- A.G.G. George Patrick lawrence व जोधपुर का Political agent मैकमेसन अंग्रेजी सेना का नेतृत्व करते हैं।
- मैकमेसन के सिर को काटकर आउवा के किले पर लटका दिया गया।

(3) आउवा का युद्ध :

- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व होम्स व हंसराज जोशी कर रहे थे, जीत की आशा न देखकर खुशाल सिंह आउवा का भार अपने छोटे भाई पृथ्वी सिंह (लाम्बिया का ठाकुर) को सौंपकर मेवाड़ चला गया।
- मेवाड़ में कोठारिया (नाथद्वारा) के रावत जोधसिंह के पास शरण लेता है और यहाँ से सलूम्बर के केसरी सिंह चूंडावत के पास चला जाता है।
- आउवा में विद्रोही सैनिक हार जाते हैं, अंग्रेज आउवा के किले में घुसकर अत्याचार करते हैं। और आउवा की इष्ट देवी

माता
सुगाली देवी की मूर्ति उठाकर ले जाते है, जो वर्तमान में पाली के बागड़ म्यूजियम में रखी हुयी है।

- खुशाल सिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्त :-

आलणियावास	-	अजीत सिंह
गूलर	-	बिशन सिंह
आसोप	-	शिवनाथ सिंह

- आउवा में घरने के बाद विद्रोही सैनिक शिवनाथ सिंह के नेतृत्व में (आसोप का ठाकुर) दिल्ली की ओर बढ़ते हैं।
- 1860 A.D. में खुशाल सिंह नीमच में अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर देता है।
- 'टेलर कमीशन' की जांच के आधार पर खुशाल सिंह को बरी कर दिया गया।
- आउवा की क्रांति व खुशाल सिंह आज भी लोकगीतों में गाए जाते हैं।

कोटा में विद्रोह :

- कोटा में वकील 'जयदयाल' व 'रिसालदार मेहराब खाँ' के नेतृत्व में कोस क्रांति की गयी। (15 Oct. 1857)
- कोटा के पॉलिटिकल एजेन्ट बर्टन व उसके दो पुत्र (फ्रैंक व आर्थर) की हत्या कर दी गयी।
- बर्टन के शव को पूरे कोटा में घुमाया गया।
- कोटा महाराव रामसिंह को नजरबंद कर लिया गया।
- मथुराधीश मंदिर के महन्त कन्हैयालाल गोस्वामी व कोटा महाराव

के बीच एक समझौता हुआ, मेजर बर्टन की हत्या के लिए स्वंय को जिम्मेदार ठहराने वाले परवाने पर कोटा महाराव ने हस्ताक्षर किए, जयदयाल को कोटा का प्रशासक नियुक्त कर दिया गया।

- करौली का शासक मदनपाल सेना भेजकर कोटा महाराव को मुक्त करवाता है।
- इसके भी काफी दिनों बाद 'जनरल राबर्टस' कोटा को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाता है।
- अंग्रेजों ने मेजर बर्टन की हत्या के लिए, कोटा महाराव को निरपराध किन्तु उत्तरदायी घोषित किया।
- कोटा महाराव की तोपों की सलामी 15 से घटाकर 11 कर दी गयी।
- करौली के मदनपाल को सम्मानित किया गया व 17 तोपों की सलामी दी गयी।
- कोटा का विद्रोह एक जन विद्रोह था।

टोंक में विद्रोह :

- टोंक का नवाब वजीरूदौला अंग्रेजों का समर्थक था। परन्तु नवाब के मामा मीर आलम ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- नीमच छावनी के सैनिकों का निम्बाहेडा में स्वागत किया गया विद्रोहियों का पीछा करती कर्नल जैक्सन की सेना का ताराचन्द पटेल ने सामना किया।

• टोंक में महिलाओं ने भी क्रांति में भाग लिया था। इस तथ्य की पुष्टि मोहम्मद मुजीब के नाटक आजमाईश से होती है।

तात्यां टोपे और राजस्थान :

• तात्या टोपे सबसे पहले मांडलगढ़ (भीलवाडा) आया था। टोंक के नवाब के खिलाफ, नासीर मोहम्मद खाँ ने तात्यां टोपे का समर्थन किया।

• बनास नदी के निकट हुये एक युद्ध में तात्यां टोपे हार जाता है व हाडौती की तरफ चला जाता है। यहां पर झालावाड़ का राजा पृथ्वीसिंह तात्या टोपे के विरूद्ध सेना भेजता है। 'गोपाल पलटन' को छोड़कर बाकी सेना ने युद्ध करने से मना कर दिया।

• पलायथा नामक स्थान पर हुये युद्ध में तात्यां टोपे जीत जाता है व पृथ्वीसिंह को भागना पड़ता है।

• थोड़े दिनों बाद अंग्रेजों की मदद से ही पृथ्वीसिंह झालावाड़ पर पुनः अधिकार कर पाता है।

• पृथ्वीसिंह ने तात्यां टोपे को 5 लाख रुपये भी दिए।

• सित॰ 1857 A.D. में तात्यां टोपे एक बार फिर बांसवाडा में आता है, सलूम्बर का रावत केसरी सिंह चूंडावत तात्या टोपे की मदद करता है।

• बीकानेर के राजा सरदार सिंह ने भी तात्यां टोपे को 10 घुड़सवारों की सहायता दी।

• तात्यां टोपे को नरवर के जंगलो मे 'मानसिंह नरूका' ने गिरफ्तार करवा दिया। अंग्रेजों ने तात्यां टोपे को फांसी दे दी।

- सीकर के एक सामन्त को तात्यां टोपे की शरण देने के आरोप में फांसी दी गयी।
- तात्यां टोपे जैसलमेर को छोड़कर राज. की बाकी सब रियासतों में गया था।

टूटती कड़ियाँ, जुड़ते तथ्य :

→ बीकानेर का महाराजा सरदार सिंह एकमात्र शासक था, जो अपनी रियासत से बाहर जाकर लड़ा था।
(हिसार के 'बाडलू' नामक स्थान पर)
अंग्रेजो ने सरदार सिंह को टिब्बी परगने के (41) गांव दिए थे।
(हनुमानगढ़)

→ जयपुर के सवाई रामसिंह ने भी अंग्रेजो का साथ दिया था।
→ अंग्रेजो के विरुद्ध षड्यंत्र करने वालों को गिरफ्तार कर लिया था
- सादुल्ला खां
- विलायत खां
- उस्मान खां

→ अंग्रेजो ने रामसिंह को 'सितार ए हिन्द' की उपाधि दी व कोटपूतली परगना दिया।

→ अलवर के राजा बनेसिंह के खिलाफ वहां के दीवान फैजल खान ने विद्रोहियों का साथ दिया।

→ धौलपुर के राजा भगवन्त सिंह को विद्रोहियों से मुक्त करवाने के लिए पटियाला से सेना आयी थी।

→ भरतपुर के राजा ने Political Agent मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने का सुझाव दिया था। यहां की गुर्जर व मेव जनता

विद्रोहियों के साथ हो गयी थी।

→ बीकानेर के *अमरचन्द बांठिया* 1857 की क्रान्ति में राजस्थान के पहले ऐसे शहीद थे, जिन्हें फांसी दी गयी। ये ग्वालियर के नगरसेठ थे, इन्होनें खजाने का सारे धन क्रांतिकारियो में वितरित कर दिया।

→ सूर्यमल्ल मिश्रण वं बांकीदास ने अंग्रेजो का साथ देने वाले राजाओ की निन्दा की।

राजस्थान में किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन :

- बिजौलिया वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है, तत्कालीन मेवाड़ रियासत का 'अ' श्रेणी का ठिकाणा था।
- राणा सांगा ने अशोक पवांर को अपरमाल की जागीर था, और इसका सदर मुकाम बिजौलिया था।
  (खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से अशोक पवांर लड़ता है)
- बिजौलिया में 1897 A.D. से किसान आंदोलन शुरु होता है। यह आंदोलन 'धाकड़' जाति के किसानों द्वारा किया गया।
- इस आंदोलन के मुख्य कारण :
  (i) 84 प्रकार की लाग - बाग (कर)
  (ii) लाटा - कूंता व्यवस्था (खेत में खड़ी फसलों के अनुमान पर)
  (iii) चंवरी कर, तलवार बंधाई कर
  (किसान की बेटी की शादी पर) (नये जागीरदार बनने पर)
- यह आंदोलन मुख्यतः 3 चरणों में विभक्त था

I चरण →	1897 - 1914	(स्वतः स्फूर्त)
II चरण →	1914 - 1923	(विजयसिंह पथिक)
III चरण →	1923 - 1941	(जमनालाल बजाज)

प्रथम चरण (1897 - 1914 A.D.) - नेता : फतेहकरण चारण
ब्रह्मदेव
प्रेमचन्द भील

- बिजौलिया का ठाकुर किशनसिंह था, जिसने प्रजा पर कई तरह के कर लगा रखे थे।
- गिरधारी पुरा नामक एक गांव में एक मृत्युभोज के अवसर पर

किसानों की सभा हुई, साधु सीताराम दास के कहने पर नानजी व ठाकरी पटेल को मेवाड़ महाराणा से मिलने भेजा गया। ये मेवाड़ महाराणा से मिलने में असफल रहे।

- रियासत की तरफ से हामिद खां को ठिकाने की जांच करने के लिए भेजा गया।
- नानजी व ठाकरी पटेल को बिजौलिया ठाकुर ने बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

पहले चरण में इस आंदोलन में अधिक सफलता नहीं मिल पायी थी, अतः यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त चलता था।

द्वितीय चरण (1914- 1923 A.D)

- 1906 A.D. में पृथ्वीसिंह बिजौलिया का नया जागीरदार बनता है। व प्रजा पर तलवार बंधाई नामक एक नया कर लगा देता है।

* तलवार बंधाई : किसी जागीरदार की गद्दीनशीनी के समय रियासत द्वारा उससे लिया जाने वाला कर।

- विजय सिंह पाथिक, इस चरण में आंदोलन से जुड़ता है।
- 1917 A.D. में 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' की स्थापना की जाती है। मुन्ना पटेल को इसका अध्यक्ष बनाया जाता है।
- मेवाड़ रियासत में 'बिन्दुलाल भट्टाचार्य' की अध्यक्षता में आयोग गठित किया गया।
- A.G.G. हॉलैण्ड के प्रयासों से किसानों व रियासत के बीच समझौता हो जाता है, पर ठिकाने ने इस समझौते को लागू नहीं किया।

विजयसिंह पथिक :

- वास्तविक नाम - भूपसिंह
- बुलन्दशहर का रहने वाला था।
- क्रांतिकारी गतिविधियों में संदिग्ध पाए जाने पर इसे अजमेर के टॉडगढ़ जेल में नजरबंद कर दिया गया।
- यहां से छूटने के बाद चित्तौड़ के ओछड़ी गांव में 'विद्या प्रचारिणी सभा' की स्थापना की।
- 1919 में वर्धा में 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना की। इसे 1920 A.D. में अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया।
- अजमेर से विजयसिंह पथिक एक 'नवीन राजस्थान' नामक समाचार-पत्र निकालते थे, जिसका नाम बदलकर बाद में तरुण राजस्थान कर दिया गया।
- पुस्तक (विजयसिंह पथिक) —

  'WHAT ARE THE INDIAN STATES'
- विजय सिंह पथिक ने बिजौलिया किसान आंदोलन को कांग्रेस के अधिवेशन में उठाया।

तृतीय चरण (1923 - 1941 A.D.)

- तीसरे चरण में विजयसिंह पथिक इस आंदोलन से अलग हो जाते हैं। 'जमनालाल बजाज' को नेतृत्व सौंपा जाता है।
- जमनालाल बजाज ने हरिभाऊ उपाध्याय को नियुक्त कर दिया।
- माणिक्य लाल वर्मा भी इस आंदोलन से जुड़े हुये थे, अपने 'पंछीड़ा' गीत से किसानों में जोश भरते थे।
- मेवाड़ के प्रधानमंत्री राघवाचारी व राजस्व मंत्री मोहनसिंह मेहता के

प्रयासों से किसानो के साथ समझौता हो गया और उनकी (किसानों) अधिकांश मांगें मान ली गयी।

इस प्रकार 1951 A.D. में यह आंदोलन समाप्त हो गया। इस प्रकार यह सर्वाधिक समय (44yrs) तक चलने वाला यह अहिंसक आंदोलन था। (कानपुर)

- गणेश शंकर विद्यार्थी अपने समाचार पत्र 'प्रताप' में बिजौलिया किसान आंदोलन को प्रमुखता से महत्त्व देते है।
- बिजौलिया किसान आंदोलन में महिला नेत्रियों की प्रमुख भागीदारी रही।

महिला नेत्रियां – { अंजना देवी चौधरी
नारायण देवी वर्मा
रमा देवी

* 'त्याग भूमि' समाचार पत्र का सम्पादन 'हरिभाऊ उपाध्याय' ने किया इसमें गांधी जी के रचनात्मक कार्यों पर बल दिया गया।

बेगूं किसान आंदोलन

- बेगूं वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है, यह भी मेवाड़ रियासत का 'अ' श्रेणी का ठिकाना था।
- यहाँ का ठाकुर 'अनूप सिंह चूंडावत' था। यहाँ के किसान भी विभिन्न लाग-बागों से परेशान थे। किसानों ने इन करों को कम करने की मांग की। तो ठिकानों व किसानों के बीच समझौता हो गया। पर रियासत ने इस समझौते को अस्वीकार कर दिया व इसे 'बोल्शेविक समझौता' कहा गया।
- रियासत ने 'ट्रेन्च' को मामले की जांच करने के लिए भेजा।
- किसानों ने ट्रेन्च का बहिष्कार किया।
- गोविन्दपुरा गांव में सभा कर रहे किसानो पर ट्रेन्च ने (13) July 1923 को गोली चला दी, रूपा जी व कृपा जी धाकड़ नामक दो किसान शहीद हो गए।
- 1925 A.D. में किसानों की शर्तें मान ली जाती है।
- मुख्य नेता - रामनारायण चौधरी
  (उस समय राजस्थान सेवा संघ के सचिव थे)
- विजयसिंह पथिक भी इस आंदोलन से जुड़ा हुआ था।

बूंदी किसान आंदोलन :

- 1920 A.D. में साधु सीताराम दास ने डाबी किसान पंचायत की स्थापना की, जिसका अध्यक्ष 'हरला भड़क' को बनाया गया।
- 2 April 1923 A.D. को सभा कर रहे किसानों पर पुलिस अधिकारी 'इकराम हुसैन' ने गोली चला दी।
- 'नानक जी भील' झंडा गीत गाते हुए शहीद हो गए।

नीमूचणा किसान आंदोलन (अलवर)

- 14 MAY 1925 A.D को नीमूचणा में आंदोलन कर रहे किसानों पर कमाण्डर 'छाजू सिंह' ने गोली चला दी, कई किसान मारे गये।
- 'तरूण राज' समाचार पत्र ने इस खबर को सचित्र प्रकाशित किया।
- महात्मा गांधी ने इसे 'दोहरी डायरशाही' की संज्ञा दी।

भगत आंदोलन :

- यह आंदोलन मुख्यतः भील जनजाति के किसानों द्वारा किया गया था।
- सुरजी भगत व गोविन्द गिरी ने इसे शुरु किया था।
- गोविन्द गिरी ने 1883 A.D. में 'सम्प सभा' की स्थापना की।
  (आपसी सौहार्द)
- 1903 A.D. में मानगढ़ की पहाड़ी पर सम्प सभा का पहला अधि-
  -वेशन हुआ।
- 1913 A.D. में आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मानगढ़ की पहाड़ी पर
  17 Nov. जब भीलों की सभा हो रही थी, तब मेवाड़ भील कोर ने पहाड़ी
  को घेर लिया व गोली चला दी।
- 1500 से अधिक भील मारे गये।
- आज भी उनकी याद में आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मेला लगता है।

* मेवाड़ भील कोर का गठन 1841 A.D. में किया गया था.
जिसका सदर मुकाम *खैरवाड़ा* को बनाया गया।

एकी आंदोलन :

- ये भोमठ क्षेत्र के भील जनजाति लोगों द्वारा किया गया था, इसलिए भोमठ-भील आंदोलन भी कहते हैं।
- चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया नामक स्थान से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को यह आंदोलन शुरू हुआ था।
- मातृकुण्डिया को 'राजस्थान का हरिद्वार' कहते हैं।
- इस आंदोलन के मुख्य नेता मोती लाल तेजावत थे।
- मोती लाल तेजावत मेवाड़ रियासत के 'झाडोल ठिकाणे' के कामदार थे।
- प्रारम्भ में यह आंदोलन झाडोल, कोटडा व गोगुन्दा तहसीलों में शुरू हुआ था। जो बाद में डूंगरपुर, बांसवाडा, ईडर, विजयनगर (गुजरात की एक रियासत) आदि रियासतों में फैल गया।
- मोती लाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा के समक्ष 21 सूत्री मांग-पत्र प्रस्तुत किया था, जिसे 'मेवाड़ की पुकार' कहते हैं।
- 1922 A.D. में नीमड़ा (विजयनगर) गांव में हो रही एक सभा पर पुलिस फायरिंग कर दी गयी थी, इसे 'दूसरा जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड' कहते हैं।

मोती लाल तेजावत इस आंदोलन के बाद भूमिगत हो गए, पर 1928 में गांधीजी के कहने पर ईडर (   ) पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

ईडर रियासत ने उन्हें मेवाड़ को सौंप दिया, मेवाड़ की सर्वोच्च न्यायिक संस्था 'महाइन्द्राज सभा' ने ____________ मोती लाल तेजावत से रियासत के विरुद्ध कोई गतिविधि नहीं करने का लिखित आश्वासन मांगा।

- गांधी जी के सहायक माणिलाल कोठारी के हस्तक्षेप से समझौता हुआ।
- 1936 में मोती लाल तेजावत को रिहा कर दिया गया।

मीणा जाति का आंदोलन :

- 1925 में 'आपराधिक जाति अधिनियम' बनाकर मीणा जाति को उसके अन्तर्गत रख दिया गया। 1930 में 'जरायम पेशा' कानून के तहत 25 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक मीणा स्त्री -पुरुष को थाने में हाजिरी लगवाना अनिवार्य कर दिया गया।
- 1933 में मीणा क्षेत्रीय महासभा की स्थापना की गयी। व महासभा ने इस कानून को निरस्त करने की मांग की।
- 1944 A.D. में 'मुनि मगन सागर' के नेतृत्व में सीकर के नीमकाथाना में एक मीणा सम्मेलन बुलाया गया और मीणा समाज को उनके गौरवशाली अतीत से अवगत करवाया गया।
- मुनि मगन सागर ने 'मीन पुराण' नामक ग्रन्थ लिखा।
- 1944 A.D. में 'जयपुर मीणा सुधार' समिति की स्थापना बंशीधर शर्मा ने की।
- आजादी के बाद 1952 में जरायम पेशा कानून को रद्द कर दिया गया
- *1946 में जयपुर क्षेत्र के सभी मीणाओं ने स्वेच्छा से चौकीदार पदों से इस्तीफा दे दिया।

दयानन्द सरस्वती और राजस्थान

- 1865 A.D. में दयानन्द सरस्वती सबसे पहले करौली रियासत में राजकीय अतिथि के रूप में रहे।

- 1881 A.D. में दोबारा राजस्थान आए तब कवि राजा श्यामलदास के बुलाने पर उदयपुर गए, तब 'सत्यार्थ प्रकाश' (हिन्दी) का दूसरा भाग उदयपुर के गुलाब बाग में लिखा।
  (सज्जन सिंह ने बनवाया था)

- 1883 A.D. में उदयपुर में *परोपकारिणी* सभा की स्थापना की। महाराणा सज्जन सिंह को इसका अध्यक्ष बनाया गया, कालान्तर में इसे अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया।

- * मेवाड़ में विष्णु लाल पंड्या ने आर्य समाज की स्थापना की।
- राजस्थान में सबसे पहले आर्य समाज की स्थापना अजमेर में हुयी थी।
- 13 Feb. 1881 को अजमेर में वैदिक यन्त्रालय (Printing Press) की स्थापना की गयी, जिसका कार्य वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार करना था।
- भरतपुर में भी आर्य समाज का प्रचार-प्रसार हुआ।
  भरतपुर में आर्य समाज के मुख्य कार्यकर्ता -
  - मास्टर आदित्येन्द्र
  - जुगल किशोर चतुर्वेदी

* जुगल किशोर चतुर्वेदी - मत्स्य संघ के उपप्रधानमंत्री रहे थे, इन्हें 'राज. का नेहरू' भी कहते हैं।

- अजमेर में आर्य समाज के कार्यकर्ता :
  - चांदकरण शारदा
  - हरविलास शारदा

- जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह II, व सर प्रताप भी दयानन्द सरस्वती के करीबी थे।

ऐसा कहा जाता है जसवंतसिंह II की प्रेमिका नन्ही जान ने दयानन्द सरस्वती को जहर दे दिया था, जिससे दयानन्द सरस्वती की अजमेर में मृत्यु हो गयी थी।

प्रजामण्डल आंदोलन

- 1927 A.D. में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' की स्थापना की गयी (बम्बई में)
- विजय सिंह पथिक को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया।
- 1928 A.D. में 'राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद' का गठन किया गया।
- 1931 A.D. में अजमेर में इसका पहला अधिवेशन हुआ, अध्यक्ष थे - रामनारायण चौधरी

(सुभाष चन्द्र बोस - अध्यक्ष)

- 1938 A.D. के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में रियासतों (देशी) में चल रहे आंदोलनों को कांग्रेस ने समर्थन दिया।

जोधपुर में प्रजामंडल आंदोलन :

- 1917 A.D. में चांदमल सुराणा ने 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना की।
- 1920 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ सेवा संघ' की स्थापना की। 1920-1921 A.D. में मारवाड़ सेवा संघ ने तौल आंदोलन चलाया था।

(1 तौल - 100 सेर) ↓
(1 तौल - 80 सेर) कर दिया था

- 1929 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ राज्य लोक परिषद' की स्थापना की। 1931 A.D. में इसका अधिवेशन पुष्कर में हुआ. इसकी अध्यक्षता 'चांदकरण शारदा' ने की। इस अधिवेशन में काका कालेलकर व कस्तूरबा गांधी आए थे।

- 1931 में जयनारायण व्यास ने 'Marwar Youth league' की स्थापना की।
- 1932 A.D. में जोधपुर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। छगन राज चौपासनी वाला ने तिरंगा झंडा फहराया।
- 1934 A.D. में 'भंवरलाल सर्राफ' ने जोधपुर प्रजामंडल की स्थापना की।
- जोधपुर रियासत ने जयनारायण व्यास के जोधपुर में घुसने पर पाबंदी लगा दी।
- 1937 A.D. में बीकानेर महाराजा गंगा सिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री 'डोनाल्ड फील्ड' को पत्र लिखकर जयनारायण व्यास के प्रवेश सम्बन्धी लगी पाबन्दी को हटाने की मांग की।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 19 ~~July~~ June 1942 को जेल में भूख हड़ताल कर रहे बालमुकुन्द बिस्सा की मृत्यु हो गयी, बालमुकुन्द बिस्सा ने जोधपुर में *'जवाहर खादी भण्डार'* की स्थापना की।

* बालकृष्ण कौल ने अजमेर में जेलों में कुव्यवस्था के विरुद्ध हड़ताल की थी।

- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयनारायण व्यास 'सिवाणा' किले में नजरबंद किया गया।
- जयनारायण व्यास की पुस्तकें :
  1. मारवाड़ की अवस्था
  2. पोपा बाई की पोल

समाचार-पत्र –
1. अखण्ड भारत (Hindi) → Published from bombay.
2. आगीबाण (Rajasthani) — I Political Newspaper
3. पीप (English)

डाबड़ा कांड : (13 March 1947)

डीडवाना परगने के डाबडा गांव में एक किसान मोतीलाल के घर पर सभा हो रही थी, पुलिस ने फायरिंग कर दी। 12 लोग मारे गये।

- मथुरा दास माथुर घायल हो गये।

बीकानेर में प्रजामंडल आंदोलन :

- कन्हैयालाल ढूंढ व स्वामी गोपालदास ने 1913 में चुरू में 'सर्वहितकारिणी सभा' की स्थापना करी।
- कन्हैयालाल ढूंढ ने 'कन्या विद्यालय' व 'कबीर पाठशाला' (दलित शिक्षा) खोली।
- 1930 A.D. में चुरू के धर्मस्तूप पर तिरंगा फहरा दिया।
- महाराजा (बीकानेर) गंगासिंह जब गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन गए थे तब 'चन्दनमल बहड़ व स्वामी गोपालदास' ने 'बीकानेर एक दिग्-दर्शन' नामक पत्रिकाएं बटवायी। इन पर 1932 A.D. में बीकानेर षड्यंत्र केस चलाया गया।
- 1935 A.D. में वैद्य मघाराम ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना की।
- 1942 A.D में 'रघुवर दयाल गोयल' ने 'बीकानेर राज्य लोक परिषद' की स्थापना की।

• 26 Oct. 1944 को बीकानेर दमन विरोधी दिवस बनाया गया।

• 1 July 1946 को रायसिंह नगर में जुलूस निकाल रहे प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं पर फायरिंग कर दी गयी। बीरबल सिंह नामक एक युवक मारा गया।
इसी बीरबल सिंह के नाम पर इन्दिरा गांधी नहर की जैसलमेर शाखा को 'बीरबल शाखा' नाम दिया गया।

• बीकानेर प्रजामंडल के तहत ही दुधवा-खारा (चूरू) आंदोलन चलाया गया।

मेवाड़ प्रजामंडल :

• 1938 A.D. में स्थापना। (24 April)
• बलवंत सिंह मेहता अध्यक्ष
• भूरेलाल बया (उपाध्यक्ष) – सराडा किले में नजरबन्द किया गया।
• माणिक्य लाल वर्मा (महामन्त्री)
• ~~माणिक्य लाल वर्मा~~ मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों पर रियासत ने पाबन्दी लगा दी। अतः माणिक्य लाल वर्मा ने अजमेर से इसका संचालन किया।
• 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तक माणिक्य लाल वर्मा ने लिखी।
• 1941 A.D. में मेवाड़ प्रजामंडल का पहला अधिवेशन 'उदयपुर' में हुआ।
• माणिक्यलाल वर्मा इसके अध्यक्ष थे।
• जे.बी. कृपलानी व विजयलक्ष्मी पंडित इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए। (U.N.O. की महासभा की पहली महिला अध्यक्षा)

- 1946 A.D. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का अधिवेशन उदयपुर में हुआ। 'जवाहर लाल नेहरू' व 'शेख अब्दुल्ला' इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए।

- भारत छोड़ो आंदोलन में माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा अपने 6 महीने के पुत्र दीनबन्धु को साथ लेकर जेल गयी।
- प्यारे लाल बिश्नोई की पत्नी भगवती बिश्नोई भी जेल गयी थी।
- भीलवाड़ा भी मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था।
- भीलवाड़ा के रमेश चन्द्र व्यास मेवाड़ प्रजामंडल के पहले सत्याग्रही थे
- नाथद्वारा भी मेवाड़ प्रजामंडल का अन्य केन्द्र था।

जयपुर प्रजामंडल

- 1931 — कर्पूर चन्द पाटनी ने इसकी स्थापना की
- 1938 A.D. — जमना लाल बजाज ने इसका पुनर्गठन किया। और चिरंजी लाल शर्मा को इसका अध्यक्ष बनाया। (राजा - मानसिंह)
- 1942 A.D. में जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल व जयपुर प्रजा मंडल के नेता हीरालाल शास्त्री के बीच एक समझौता हुआ, जिसे 'जेन्टलमैन एग्रीमैन्ट' कहा गया।

इसके तहत जयपुर प्रजामंडल ने यह कहा कि वह भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लेगा।

(मिर्जा इस्माइल - आधुनिक जयपुर का निर्माता)

- जयपुर प्रजामंडल के असंतुष्ट कार्यकर्ताओ ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में एक आजाद मोर्चा का गठन किया। व इस आजाद मोर्चा ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।

आजाद मोर्चा के नेता –
- रामकरण जोशी
- दौलतमल भंडारी
- गुलाबचन्द कासलीवाल

गुलाबचन्द कासलीवाल के घर को कार्यालय बनाया गया।

कोटा प्रजामंडल : (1939)

- नयनूराम शर्मा और पंडित अभिन्न हरि ने 1939 A.D. में कोटा प्रजामंडल की स्थापना की थी।

* ~~नयनूराम शर्मा ने 1934 में हाड़ौती प्रजामंडल की स्थापना की।~~

- कोटा प्रजामंडल का पहला अधिवेशन मांगरोल (बारां) में हुआ था।
- 1951 में नाथूलाल जैन के नेतृत्व में प्रजामंडल के सदस्यों ने कोटा के प्रशासन पर कब्जा कर लिया था।
- नयनूराम शर्मा ने कोटा राज्य में बेगार विरोधी आंदोलन चलाया।

बूंदी प्रजामंडल : (1931)

- ऋषिदत्त मेहता व कांतिलाल ने बूंदी प्रजामंडल की स्थापना की थी। ऋषिदत्त मेहता ने 'बूंदी राज्य लोक परिषद' की स्थापना भी की थी।

* ऋषिदत्त मेहता ने 1923 में ब्यावर से 'राजस्थान' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र निकाला।

जैसलमेर प्रजामंडल : (15 Dec. 1945)

- जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना मीठालाल व्यास ने जोधपुर में की।
- प्रजामंडल के सदस्य सागरमल गोपा को जेल में जलाकर हत्या कर दी गयी।

अलवर प्रजामंडल : (1938)

- इसकी स्थापना हरिनारायण शर्मा ने की, इसके पहले अधिवेशन के अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा थे।
- अलवर प्रजामंडल ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था।

* हरिनारायण शर्मा ने वाल्मिकी संघ, आदिवासी संघ व अस्पृश्यता निवारण संघ स्थापित किए।

धौलपुर प्रजामंडल : (1936)

- स्थापना - कृष्णदत्त पालीवाल ने की।
- धौलपुर प्रजामंडल में - अप्रैल 1947 में प्रजामंडल के सदस्यों पर फायरिंग की गयी। छत्रसिंह व पंचम सिंह शहीद हो गए।

(तसीमो गांव में अपना अधिवेशन मनाते समय)

डूंगरपुर प्रजामंडल : (26 जनवरी, 1944)

- स्थापना : भोगीलाल पांड्या व हरिदेव जोशी ने की।
- रास्तापाल कांड – 19 June 1947

सेवा संघ द्वारा स्थापित स्कूल को बंद करवाने गये रियासत के सैनिकों ने एक शिक्षक नानाभाई की हत्या कर दी व दूसरे शिक्षक सेंगाभाई को गाड़ी के पीछे बांधकर घसीट रहे थे, तब एक कालीबाई नामक एक वीर बालिका ने अपनी हंसिया से उन रस्सियों को काट दिया, पर खुद पुलिस की गोलियों की शिकार हो गयी।

- डूंगरपुर में गैप सागर (तालाब) के पास कालीबाई की प्रतिमा लगी हुयी है।
- राज० सरकार बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई के नाम से पुरस्कार देती है।

- पूनावाडा कांड –
- ~~शिवराम भील शहीद हुए थे।~~

* भोगीलाल पांड्या – हरिजन सेवा समिति (1938)

- इस प्रजामंडल में रियासती अन्यायपूर्ण नीतियों के विरूद्ध जनजागृति हेतु 'प्रयाग सभाओं' का आयोजन किया गया।
- April, 1946 – पहला अधिवेशन डूंगरपुर में – इसमें बाहर के राज्यों से हीरालाल शास्त्री, मोहनलाल सुखाडिया, जुगलकिशोर चतुर्वेदी आदि नेताओं ने भाग लिया।

बांसवाड़ा प्रजामंडल : (दिस. 1945)

- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी ने स्थापना की थी।
- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी बम्बई से 'संग्राम' नामक समाचार पत्र निकालते थे।
- इस प्रजामंडल में एक महिला मंडल का गठन "विजया बहिन भावसार" ने किया था।

शाहपुरा प्रजामंडल : (18 April, 1938)

- स्थापना - लादूराम व्यास व रमेश चन्द्र ओझा
- शाहपुरा पहली रियासत थी, जिसमें पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी (गोकुल चंद असावा के नेतृत्व में)
- शाहपुरा के राजा 'सुदर्शन देव' ने प्रजामंडल को अपना समर्थन दिया।

झालावाड़ प्रजामंडल : (25 नवम्बर, 1946)

- स्थापना - मांगीलाल भव्य ने की
- झालावाड़ में स्वंय राजराणा हरिश्चन्द्र (राजा) के नेतृत्व में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी।

* झालावाड़ के राजराणा राजेन्द्र सिंह ने दलित उद्धार के कार्य किए थे।

भरतपुर प्रजामंडल : (March, 1938)

- स्थापना – जुगल किशोर चतुर्वेदी (उपाध्यक्ष) ने रेवाड़ी में इसकी स्थापना की।
- अध्यक्ष – गोपी लाल यादव
- जुगल किशोर चतुर्वेदी के घर पर भरतपुर राज्य प्रजामंडल की स्थापना हुयी।

सिरोही प्रजामंडल : (22 Jan. 1939)

- स्थापना - गोकुल भाई भट्ट ने की थी।

प्रतापगढ़ प्रजामंडल : (1945)

- स्थापना – ठक्कर बापा व अमृतलाल पायक ने की।

करौली प्रजामंडल : (1938)

- स्थापना - त्रिलोक चन्द माथुर ने की। (राज्य सेवक संघ के अध्यक्ष)

किशनगढ़ प्रजामंडल : (1939)

- स्थापना- कांतिलाल चौथानी व जमाल शाह ने की। (की अध्यक्षता)

राजस्थान का एकीकरण

(V.K. Menon - सचिव)

- 5 July 1947 को रियासती सचिवालय की स्थापना की गयी।
- रियासती सचिवालय के अनुसार वे रियासतें जिनकी आय 1 करोड़ से अधिक हो, व जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो, अपना स्वतं० अस्तित्व रख सकती है।
- उस समय राजस्थान में ऐसी 4 रियासतें थी
    1) जयपुर
    2) जोधपुर
    3) उदयपुर
    4) बीकानेर
- 16 जुलाई 1947 को धारा - 8 के तहत देशी रियासतों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त कर दी गयी। (स्वतंत्रता अधिनियम के तहत)
- आजादी /एकीकरण के समय राज० में 19 रियासतें, 3 ठिकाने थे।
    1) लावा
    2) नीमराणा
    3) कुशलगढ़
- राजस्थान के एकीकरण के सबसे पहले प्रयास 1939 में लॉर्ड लिनलिथगो ने किए।
- कोटा महाराव न भीमसिंह ने कोटा, बूंदी व झालावाड़ को मिलाकर हाड़ौती संघ बनाने का प्रावधान दिया।
- मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह ने राज०, गुजरात व मालवा की रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन बनाने का प्रस्ताव रखा, इसके लिए 25, 26 June 1947 को अधिवेशन भी बुलाया, इसमें 22 राजाओं ने भाग लिया, पर जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के रियासतों के रुचि नहीं लेने के कारण यह निर्णय फलीभूत नहीं हो सका।

• डूंगरपुर महारावल लक्ष्मण सिंह ने डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड़ संघ बनाने का प्रस्ताव रखा।

• जयपुर महाराजा मानसिंह II ने भी ऐसे ही प्रयास किए।

प्रथम चरण ;

मत्स्य संघ का निर्माण ;

• भरतपुर, धौलपुर, अलवर व करौली रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ बनाया गया।
• मत्स्य संघ का नामकरण K.M. मुंशी ने रखा
• मत्स्य संघ में

धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह — राजप्रमुख
करौली महाराजा गणेशपाल सिंह — उपराजप्रमुख
अलवर (तेजसिंह - राजा) — राजधानी
भरतपुर (बृजेन्द्रसिंह - राजा) — उद्घाटन

• मत्स्य संघ का उद्घाटन 18 March 1948 को भरतपुर के किले में केन्द्रीय खनिज मंत्री N.V. गाडविल ने किया।
• शोभाराम कुमावत (अलवर के) को मत्स्य संघ का प्रधानमंत्री बनाया गया।
• जुगल किशोर चतुर्वेदी को उपप्रधानमंत्री बनाया गया।
• मत्स्य संघ में नीमराणा ठिकाणे को भी इसमें शामिल किया गया।

द्वितीय चरण :

राजस्थान संघ का निर्माण :

- 9 रियासत + 1 ठिकाणे को मिलाकर राजस्थान संघ को बनाया गया
- कोटा, बूंदी, झालावाड़ + प्रतापगढ़, किश डूंगरपुर, बांसवाडा, किशनगढ़, टोंक, शाहपुरा + कुशलगढ़

- कोटा - राजधानी

कोटा महाराजा भीमसिंह – राजप्रमुख

बूंदी महाराजा बहादुरसिंह – उपराजप्रमुख

डूंगरपुर के लक्ष्मणसिंह – कनिष्ठ उपराज प्रमुख

शाहपुरा के गोकुल लाल असावा - प्रधानमंत्री

- 25 March 1948 को 'N.V. गाडविल' ने कोटा में उद्घाटन किया।

NOTE:

- * शाहपुरा व किशनगढ़ दो ऐसी रियासतें थी, जिन्हें तोपों की सलामी का अधिकार नहीं था।
- * बांसवाडा महारावल चन्द्रवीर सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुये कहा था कि मैं अपने DEATH WARRANT पर हस्ताक्षर कर रहा हूं।

पंचम -चरण :

संयुक्त वृहद राजस्थान :

- वृहद राजस्थान + मत्स्य संघ (for Shankar deo committee)
- 15 May 1949
- शोभा राम कुमावत को शास्त्री मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया।

षष्ठम् -चरण :

- संयुक्त वृहद राज. + सिरोही (आबू व देलवाड़ा को छोड़कर)
- 26 Jan. 1950

  हीरालाल शास्त्री - पहले मनोनीत मुख्यमंत्री

Note:

अजमेर मेरवाड़ा एक केन्द्र शासित प्रदेश था, यहाँ 30 सदस्यों की एक 'धारा सभा' थी, जिसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे।

सप्तम् चरण :

- 'फैजली अली' की अध्यक्षता में राज्य पुर्नगठन आयोग का गठन किया गया था (तीन सदस्यीय)
  - के. एम पणिक्कर (बीकानेर की तरफ से संविधान सभा में जाने वाले सदस्य)
  - हृदयनाथ कुंजरु

- इसकी सिफारिशों के आधार पर 1 नवम्बर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय कर दिया गया।
- हरिभाऊ उपाध्याय ने इस विलय का विरोध किया।
- अजमेर को राजस्थान का 26वां जिला बनाया गया।
- कोटा का सिंरोज क्षेत्र मध्यप्रदेश को दे दिया गया और मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले का 'सुनेल टप्पा' झालावाड़ जिले में मिला दिया गया।
- इस समय राज्य के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया थे।
- राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया।
- सरदार गुरुमुख निहालसिंह को राजस्थान का पहला राज्यपाल बनाया गया।
- आबू व देलवाड़ा को भी राजस्थान में मिला लिया गया।

राजस्थान के लोक-देवता

" पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा।
पांच्यू पीर पधारज्यो, गोगा जी जेहा (जेहा)।। "

- राज. के पांच पीर ;
  - पाबू जी
  - हडबू जी
  - मेहा जी
  - रामदेव जी
  - गोगा जी

(1) पाबू जी :

- पाबू जी का जन्म, जोधपुर के राजा राव चूहड़ के छोटे भाई धांधल के घर हुआ था।
- इनकी माता का नाम कमला दे था।
- पाबू जी को लक्ष्मण का अवतार कहा जाता है।
- इनका जन्म कोलूमण्ड गाँव में हुआ था।
- पाबू की शादी अमरकोट के राजा सूरजमल सोढा की पुत्री फूलम दे/ 'सुप्यार दे' के साथ हुयी थी।
- इस शादी के लिए जाते समय पाबू देवल चारिणी महिला की केसर कालमी घोडी लेकर जाता है।
- देवल चारिणी की गायें जायल का जींदराव खिंची चुरा कर ले गया था पाबू अपने वचनों के मुताबिक फेरो के बीच से ही उठकर देवल चारणी की गायें बचाने के लिए आए।
- पाबू जींदराव खिंची से लड़ता हुआ मारा गया।
- चैत्र कृष्ण अमावस्या को कोलूमण्ड में पाबू जी का मेला भरता है।
- पाबू जी को ऊंटो के देवता व प्लेग रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

- ऊंट पालने वाली राईका / रैबारी जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती है।
- चाँदा व डामा पाबू जी के दो प्रमुख सहयोगी थे।
- आशिया मोड़जी ने 'पाबू प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी है।
- पाबू जी की फड़ भील जाति के भोपे रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ बांचते है।
- पाबू जी की पूजा भालों लिए हुये अश्वारोही के रूप में की जाती है

(2) <u>रामदेव जी</u> :

- रामदेव जी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (बाड़मेर) में हुआ था,
- इनके पिता का नाम अजमाल था, अजमाल को मल्लीनाथ जी ने पोकरण की जागीर दी थी।
- रामदेव जी के गुरू का नाम बालिनाथ था।
- हरजी भाटी इनके एक प्रमुख सहयोगी थे।
- डाली बाई नामक एक दलित महिला रामदेव जी की धर्म बहिन थी, इसने रामदेव जी से एक दिन पहले जीवित समाधि ली थी।
- रामदेव जी ने रूणीचा नामक गाँव बसाया, वहाँ एक रामसरोवर बनवाया। इसी तालाब के किनारे रामदेव जी ने जीवित समाधि ली थी।
- रामदेव जी एक समाज सुधारक थे, उन्होंने जात-पात का भेदभाव मिटाने व दलित उद्धार का कार्य किया।

- रामदेव जी एक अच्छे कवि थे और इनका ग्रंथ है – चौबीस वाणियां
- रामदेव जी ने कामड़िया पंथ शुरू किया था। कामड़िया पंथ के लोग तेरह – ताली नृत्य करते हैं।
- रामदेव जी के मेघवाल भक्तों को रिखिया कहते है।
- रामदेव जी का मेला भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक लगता है।
- मुसलमान रामदेव जी को रामसा पीर के रूप में मानते हैं।
- रामदेव जी को पीरों का पीर कहते हैं।
- साम्प्रदायिक सौहार्द के देवता माने जाते हैं।
- रामदेव जी के घोड़े का नाम – ('लीली'/लीला)
- रामदेव जी के पगले पूजे जाते हैं।

(3) <u>गोगाजी</u> : (पत्नी का नाम - केलम दे)
- जन्म – चुरू जिले के ददरेवा गांव में हुआ।
- इन्होंने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था, महमूद गजनवी ने इन्हे जाहरपीर (साक्षात् पीर) कहा।
- अपने मौसेरे भाईयो अरजन – सरजन के खिलाफ गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए हनुमानगढ़ (गोगामेड़ी) नामक स्थान पर इनकी मृत्यु हुयी। (वर्णन - गोगाजी रा रसावला – मेहा जी बीठू)
- ददरेवा व गोगामेड़ी दोनों ही स्थानों पर भाद्रपद कृष्ण नवमी को इनका मेला भरता है।
- गोगाजी को सांप रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी का मंदिर (थान) खेजड़ी वृक्ष के नीचे बनाया जाता है।

- किसान हल जोतने से पहले नौ गांठो वाली गोगा राखड़ी बांधते है।
- ददरेवा के मंदिर को शीर्षमेढ़ी व गोगामेढ़ी के मंदिर को धुरमेढ़ी कहते है।
- गोगामेढ़ी वाला मन्दिर मकबरा शैली में बना हुआ है, इसके शीर्ष पर बिस्मिल्लाह लिखा हुआ है।
- इस मंदिर का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने बनवाया था।
- गोगा जी को मुसलमान 'पीर' के रूप में मानते है।

(4) हड़बू जी :

- ये सांखला राजपूत थे, रामदेव जी के मौसेरे भाई थे।
- जन्म - नागौर (भूंडेल)(गांव) में
- इन्होंने राव जोधा को मंडौर विजय का आशीर्वाद दिया व एक कटार भेंट की, इसलिए राव जोधा ने मंडौर विजय के बाद इन्हें 'बेंगटी' गांव दिए, जहां इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- इस मंदिर का निर्माण जोधपुर महाराजा अजीत सिंह ने करवाया।
- हड़बू जी अपनी बैलगाड़ी से गायों के लिए चारा लाते थे।
- इसलिए मंदिर में इनकी बैलगाड़ी की पूजा की जाती है।
- 'शगुन विचार ग्रन्थ' - हड़बू जी ने लिखा

(5) मेहा जी :

- जोधपुर जिले में ओसियाँ के निकट बापणी गांव में इनका मुख्य मंदिर है, कृष्ण जन्माष्टमी को इनकी पूजा की जाती है।
- इनके घोड़े का नाम किरड काबरा है।
- इनके भोपों की वंशवृद्धि नहीं होती।

(6) तेजाजी :

- इनका जन्म नागौर जिले के खड़नाल गांव में एक जाट परिवार में हुआ था, इनकी पत्नी का नाम 'पेमल' दे था।
- लाछा गुर्जरी की गायों को बचाने के लिए तेजाजी सुरसुरा (अजमेर) गांव में शहीद हो गये।
- इन्हें काटने वाले सांप का नाम 'बासक' था।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को पर्बतसर (नागौर) में तेजाजी का पशु मेला भरता है।
- तेजाजी को 'काला - बाला' का देवता कहते हैं।
- किसान हल जोतते हुए तेजा गाता है।
- 7 December 2010 को तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया।
- तेजाजी की घोड़ी का नाम - लीलण
- तेजाजी के भोपों को घोड़ला कहते हैं।
- तेजाजी की बहिन 'बुंगरी माता' की भी खड़नाल में पूजा की जाती है।

(तेजाजी लिखा गया)
(पेमल दे , तेजाजी के साथ सती हुई थी।)

(7) देवनारायण जी :

पिता का नाम - सवाई भोज
माता का नाम - साढ़ू
पत्नी का नाम - पीपल दे (धार नरेश जयसिंह की पुत्री)

- देवनारायण बगड़ावत गूर्जर परिवार से सम्बन्धित थे।
- आसीन्द (भीलवाड़ा), देवमाली (अजमेर) में इनके मुख्य पूज्य स्थल हैं।
- इनके मंदिर में प्रतिमा के स्थान पर ईंटों की पूजा की जाती है।
- नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं।
- देवनारायण जी की फड़ गूर्जर जाति के भोपे 'जन्तर' वाद्य के साथ पढ़ते (बांचते) हैं।
- देवनारायण जी की फड़ सभी लोकदेवताओं में सबसे लम्बी फड़ है। जो वर्तमान में जर्मनी के म्यूजियम में रखी हुयी है।
- ~~लक्ष्मी प्रोसी~~ कुमारी चूण्डावत ने 'बगड़ावत' नामक कहानी लिखी।
- देवनारायण जी पर डाक टिकट जारी किया गया है।
- भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।

(8) मल्लीनाथ जी :

- मारवाड़ के राजा
- राजधानी - मेवानगर
- पिता का नाम - राव सलखा
- गुरु का नाम - उगम सी भाटी

- बाड़मेर के तिलवाड़ा गांव में होली के दूसरे दिन मल्लीनाथ पशु मेला लगता है। (15 दिन तक मेला भरता है)
- पत्नी का नाम - रूपा दे (ये भी लोकदेवी हैं, इनका मंदिर तिलवाडा के पास मालाजाल गांव में बना हुआ है)

तल्लीनाथ जी :

- वास्तविक नाम - गांगदेव राठौड़
- शेरगढ़ (जोधपुर) के राजा
- पांचोटा (जालौर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- इन्हें ओरण का देवता माना जाता है।

देव बाबा :

- नंगला जहाज (भरतपुर) में मुख्य मंदिर है।
- भाद्रपद शुक्ल पंचमी और चैत्र शुक्ल पंचमी को इनकी पूजा की जाती है।
- देव बाबा पशु चिकित्सक थे।
- इनको खुश करने के लिए सात ग्वालों को भोजन करवाना होता है।
- पशुपालक समाज इन्हें अपना आराध्य देव मानता है।

बिग्गा जी :

- बीकानेर के रीड़ी गांव में एक जाट परिवार में जन्म हुआ।
- गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए मारे गये।
- जाखड़ समाज इन्हें अपना कुलदेवता मानते हैं।

~~हरिराम~~ जुन्झार जी :

- सीकर जिले के इमलोहा गांव में जन्म हुआ।
- स्यालोदड़ा गांव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- स्यालोदड़ा गांव में 5 पत्थर की मूर्तियां लगी हुयी हैं।

  ↓ (3 ~~हरिराम~~ जुन्झार जी के भाई, 1 दुल्हा, 1 दुल्हन)

झरड़ा जी :

- पाबू जी के भतीजे थे
- कोलूमण्ड (जोधपुर) व शिंभूदड़ा (बीकानेर) में इनके मुख्य मंदिर हैं।
- झरड़ा जी का एक अन्य नाम 'रूपनाथ' भी मिलता है।
- हिमाचल प्रदेश में बालकनाथ के रूप में पूजा की जाती है।

खेतला जी :

- मुख्य मंदिर – सोनाणा (पाली) में
- हकलाने वाले बच्चों का इलाज किया जाता है।

मामा देव :

- इन्हें बरसात का देवता कहा जाता है।
- इनके मंदिर नहीं होते हैं, बल्कि गांव के बाहर इनके तोरण की पूजा की जाती है।
- भैंसे की बलि दी जाती है।

आलम जी :

- धोरीमन्ना (बाड़मेर) में इनका मेला भरता है।
- धोरीमन्ना को 'घोड़ों का तीर्थस्थल' कहते हैं।

वीरफत्ता जी :

- सांथू (जालौर) गांव में इनका मुख्य मंदिर है।
- गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- मेला – सांथू गांव में भादवा सुदी को (भाद्रपद)

हरिराम

<u>सोरड़ा जी :</u>

- नागौर के सोरड़ा गांव में इनका मंदिर है।
- सांप की बांबी की पूजा की जाती है।

<u>डूंगजी- जवाहरजी ;</u>

- सीकर जिले के बाठोठ -पाटोदा गांव के थे।
- अमीरों को लूटकर गरीबों में उनका धन वितरित कर दिया करते थे।
- अंग्रेजों ने डूंगर सिंह को पकड़कर आगरा जेल में डाल दिया।
- आगरा जेल से डूंगर सिंह को उनके भतीजे जवाहर सिंह और उनके दो सहयोगी करणा मीणा और लोटा जाट छुड़ाकर लाए।

छूटने के बाद डूंगरसिंह ने अंग्रेजो की नसीराबाद छावनी लूट ली।

- अंग्रेजो ने इन्हें पकड़ने की कोशिश की, उस समय राजस्थान का A.G.G. 'सदरलैंड' था।
- जवाहर सिंह को बीकानेर महाराजा रत्नसिंह और डूंगर सिंह को जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने शरण दी।
- शेखावाटी क्षेत्र में ये लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

* बीकानेर क्षेत्र में 'पेमा बावरी' नामक व्यक्ति ने भी अंग्रेजो को तंग किया।

राजस्थान की लोक देवियां

करणी-माता :

- जोधपुर के सुआप गांव में इनका जन्म हुआ।
- इनके पिता का नाम मेहा जी था।
- करणी माता के बचपन का नाम 'रिद्धु बाई' था।
- इन्होंनें देशनोक गांव बसाया, जहाँ इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- मंदिर में अत्यधिक संख्या में चूहे होने के कारण इन्हें चूहों वाली देवी कहा जाता है।
- इन चूहों को 'काबा' कहा जाता है। सफेद काबे के चूहे के दर्शन को शुभ माना जाता है।
- 'चील' को करणी माता का प्रतीक माना जाता है।
  ↓ 'संवली' (स्थानीय भाषा में)
- राव बीका ने बीकानेर की स्थापना करणी माता के आशीर्वाद से की थी, इसलिए बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी करणी माता को माना जाता है।
- जोधपुर के मेहरानगढ़ किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मुख्य मंदिर से कुछ दूरी पर एक अन्य मंदिर स्थित है, जिसे 'नेहड़ी जी' कहते हैं।
- करणी माता स्वयं तेमड़ेराय माता जी की पूजा करती थी। तेमडेराय का मंदिर भी देशनोक में बना हुआ है। इस तेमडेराय मंदिर में करणी माता की शादी का तोरण, त्रिशूल और एक संदूक रखा हुआ है। (पति का नाम - देपा जी)
- चैत्र और आश्विन नवरात्रों में करणी माता का मेला लगता है।
- देशनोक स्थित वर्तमान मंदिर का स्वरूप बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने बनवाया था।
- करणी माता को दाढ़ी वाली डोकरी कहते हैं। (151 साल)
- चैत्र व आश्विन शुक्ल सप्तमी को इनका प्रमुख दिन माना जाता है।

नागणेची ;

- इनका मुख्य मंदिर नागाणा (बाड़मेर) में बना हुआ है।
- राव धूहड़ कर्नाटक से ये मूर्ति लेकर आया था।
- नागणेची माता राठौड़ों की कुल देवी है।
- बीकानेर में भी नागणेची माता का मंदिर है, जिसमें 18 हाथों वाली नागणेची की प्रतिमा लगी हुयी है, जो राव बीका ने लगवायी था।
- अन्य नाम — { राठेश्वरी, पंखिनी }
- नागणेची के भक्त नाग व नीम को पवित्र मानते हैं।

(3) जीण माता

- सीकर जिले के रैवासा गाँव में इनका मुख्य मंदिर है।
- इनके भाई का नाम हर्ष था, जिनका मंदिर भी पास की पहाड़ियों पर बना हुआ है।
- जीण माता का मंदिर चौहान शासक पृथ्वीराज I के सामन्त 'हट्टड़ मोहिल' ने बनवाया था।
- औरंगजेब ने भी जीण माता के 'छत्र' चढ़ाया था।
- जीण माता को मधुमक्खियों की देवी भी कहते हैं।
- जीण माता के ढाई प्याले शराब चढ़ाये जाते हैं।
- जीण माता के दीपक का घी आज भी केन्द्र सरकार द्वारा भेजा जाता है।

* जीण माता का लोकगीत सबसे लम्बा है।

- प्रतिवर्ष चैत्र व आश्विन मास के नवरात्रों में जीण माता का मेला लगता है।

• जमवाय माता

• जयपुर के कछवाहों की कुल देवी है।
• इनका मंदिर दुल्हराय ने जमवा रामगढ़ में बनवाया था।
• जमवाय माता को अन्नपूर्णा माता भी कहते हैं।

• आशापुरा माता

• चौहानों एवं बिस्सा ब्राह्मणों की कुलदेवी है।
• नाडोल (पाली) एवं मोदरा (जालौर) में इनके मुख्य मंदिर है।
• इनकी पूजा करते समय महिलाएं घूंघट निकालती हैं।

• शीतला माता

चाकसू (जयपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
• इस मंदिर का निर्माण जयपुर के सवाई माधोसिंह I ने करवाया था।
~~यह एक एकमात्र ऐसी देवी है, जिनकी खंडित प्रतिमा की पूजा की जाती है।~~
• 'चैत्र कृष्ण अष्टमी' को यहाँ गधों का मेला भरता है।
• शीतला माता का वाहन गधा एवं पुजारी कुम्हार होता है।
• चैत्र कृष्ण अष्टमी को इनको बासी भोजन का प्रसाद चढ़ाया जाता है।
• इन्हें चेचक की देवी भी कहते हैं।
• बांझ स्त्रियां संतान प्राप्ति के लिए शीतला माता की पूजा करती हैं।
जोधपुर के ~~पृथ्वीसिंह~~ विजयसिंह के पुत्र ~~विजयसिंह~~ सरदार सिंह की चेचक से मृत्यु हो गयी थी। अतः उसने शीतला माता की मूर्ति पहाड़ों में फिंकवा दी थी। तब से इनकी खंडित प्रतिमा की पूजा की जाती है।

त्रिपुर सुन्दरी ;

- इनका मंदिर तलवाड़ा (बांसवाड़ा) में है।
- इन्हें 'तुरताई माता' भी कहते हैं।
- 'लुहार' जाति के लोग इन्हें अपनी ईष्ट देवी मानते हैं।
- त्रिपुर सुन्दरी की 18 हाथों की प्रतिमा है।

रानी सती ;

- इनका वास्तविक नाम 'नारायणी देवी' था।
- इनके पति का नाम तनधनदास अग्रवाल था।
- झुन्झुनु में इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- 'भाद्रपद अमावस्या' को इनका मेला भरता है।
- इन्हें दादी सती भी कहते हैं।
- इनके मंदिर में तलवार की पूजा की जाती है।

आवरी माता ;

- निकुम्भ (चित्तौड़गढ़) में इनका मुख्य मंदिर है।
- यहां लकवाग्रस्त लोगों का इलाज किया जाता है।

महामाया माता :

- मावली (उदयपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- शिशु रक्षक लोकदेवी है।

- बड़ली माता ;
- 'आकोला' (चित्तौड़गढ़) में इनका मुख्य मंदिर है।
- यहां दो तिबारियां बनी हुयी है, जिसमें से गुजरने पर बच्चों की बीमारियां दूर हो जाती हैं।

भदाणा माता ;
- मुख्य मंदिर – 'कोटा'
- यहां मूठ लगे व्यक्ति का इलाज किया जाता है।

शिला माता ;
- आमेर के राजा मानसिंह पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराकर शिला माता की मूर्ति लेकर आए एवं आमेर के महलों में स्थापित करवाई।
- यहां शराब एवं जल का चरणामृत दिया जाता है।

तन्नोट माता ;
- इनका मुख्य मंदिर तन्नोट (जैसलमेर) में है।
- इन्हें 'थार की वैष्णोदेवी' कहते हैं।
- B.S.F के जवान इनकी पूजा करते हैं।
- इन्हें 'रुमाल की देवी' भी कहते हैं।

ब्राह्मणी माता :

- इनका मुख्य मंदिर सोरसन (बारां) में है।
- यहां देवी की पीठ की पूजा की जाती है।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता है।

छींक माता :

- इनका मुख्य मंदिर जयपुर में है।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता है।

छींछ माता ;

- इनका मुख्य मंदिर बांसवाड़ा में है।

ब्रह्माणी माता :

- मुख्य मंदिर पल्लू (हनुमानगढ़) में है।

कैला माता ;

- करौली के यादव राजवंश की कुल देवी
- त्रिकुट पहाड़ी पर इनका मंदिर बना हुआ है।
- चैत्र शुक्ल अष्टमी को लक्खी मेला भरता है।
- इनके भक्त लांगुरिया गीत गाते हैं।
- इन्हें अंजनी (हनुमान जी की मां) माता का अवतार मानते हैं।
- इनके मंदिर के सामने 'बोहरा भक्त' की छतरी बनी हुई है, जहां तांत्रिक क्रिया से बच्चों का इलाज किया जाता है।

आई माता :

- ये सिरवी जाति की कुल देवी।
- इनका मुख्य मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर) में है।
- इनके मंदिर की अखण्ड ज्योति से केसर टपकती है।
- इनके मुख्य मंदिर को 'दरगाह' व अन्य मंदिर को 'बडेर' कहते हैं।
- आई माता रामदेव जी की शिष्या थी। अतः इन्होंने भी दलित उद्धार व साम्प्रदायिक सौहार्द का काम किया।

सच्चियाँ माता :

- ओसियाँ (जोधपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- ये ओसवालों की कुल देवी है।
- यह मंदिर गुर्जर-प्रतिहार शासकों के समय बनाया गया था, जो महामारु शैली में निर्मित है।

सकराय माता :

- मुख्य मंदिर – उदयपुरवाटी (झुन्झुनु)
- खण्डेलवालों की कुल देवी।
- एक अकाल के समय शाक-सब्जियाँ उत्पन्न की थी, इसलिए इसे शाकम्भरी माता ~~का नाम~~ भी कहते हैं।
- अन्य मंदिर सांभर व सहारनपुर (U.P.) में भी है।

स्वांगिया माता :

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी।
- शगुन चिड़ी के हाथ में मुड़ा हुआ भाला (स्वांग) – जैसलमेर के राज्य चिन्ह में है, इसीलिए शगुन चिड़ी को स्वांगिया माता का प्रतीक माना जाता है।
- इनका मुख्य मंदिर जैसलमेर में बना हुआ है।

हिंगलाज माता :

- मुख्य मंदिर – पाकिस्तान के ~~ब्लुचिस्तान~~ सिंध प्रान्त के लासवेला गाँव में बना है।
- अन्य मंदिर – लोद्रवा (जैसलमेर) व नारलाई (जोधपुर)

आवड़ माता ;

- ये भी स्वांगिया माता का ही एक अवतार है।
- इनका एक अन्य नाम तेमडे राय भी मिलता है, जिनकी करणी माता भी पूजा करती थी।
- मुख्य मंदिर ; जैसलमेर

नारायणी माता ;

- मुख्य मंदिर – अलवर
- नाई जाति के लोग इन्हें अपनी कुल देवी मानते हैं।

जिलाड़ी माता ;

- मुख्य मंदिर – बहरोड़ (अलवर) में
- गुर्जर जाति के लोग इनकी पूजा करते हैं।

चामुण्डा माता ;

- मुख्य मंदिर – जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में बना हुआ है।
- जोधपुर राज्यपरिवार चामुण्डा माता में विशेष आस्था रखते हैं।
- 30 September 2008 A.D. को पहले नवरात्रा के दिन मची भगदड़ में कई लोग मारे गए, इसे मेहरानगढ़ दुखान्तिका कहते हैं।
- इसकी जांच के लिए जसराज चोपड़ा आयोग की स्थापना की गयी।

आमजा माता ;

- मुख्य मंदिर – रीछड़ा (उदयपुर) में।
- भील जाति के लोग इन्हें अपनी इष्ट देवी मानते हैं।

अम्बिका माता ;

- मुख्य मंदिर – जगत (उदयपुर) में
- इस मंदिर को 'मेवाड़ का खजुराहो' कहते हैं।

सुंधा माता ;

- मुख्य मंदिर - मीनमाल (जालौर)
- राजस्थान का पहला रोप-वे बनाया ~~किया~~ गया है।
- यहां भालू अभ्यारण्य स्थापित किया जा रहा है।

ज्वाला माता ;

- मुख्य मंदिर - जोबनेर (जयपुर)
- खंगारोतो की कुल देवी।

नकटी माता ;

- जयपुर जिले में जयभवानीपुरा में मुख्य मंदिर।

दधीमति माता ;

- मुख्य मंदिर - गोठ मांगलौर (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी।

लटियाल माता ;

- कल्ला ब्राह्मणों की कुलदेवी
- फलौदी (जोधपुर) - मुख्य मंदिर
- इन्हें खेजड बेरी राय भवानी भी कहते हैं।

जोगणिया माता ;
- मुख्य मंदिर - भीलवाड़ा

चौथमाता ;
- चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)

मरूण्डी माता ;
- नीमाज (पाली)

कठेश्वरी माता - आदिवासी

रानाबाई ;
- हरनावा (नागौर)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
- एकमात्र महिला संत, जो कुंआरी सती हुयी।

माता रानी भटियाणी ;
- जसोल (बाड़मेर)
- मेला- भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी

वीरातरा माता ;
- चौहटन (बाड़मेर)

अधर देवी ;
- माउण्ट आबू

अर्बुदा देवी ;
- माउण्ट आबू

राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय

(1) दादूदयाल :

- जन्म - 1544 (44) (अहमदाबाद) में लोधी राम नामक ब्राह्मण के घर हुआ था।
- इनके गुरु का नाम ब्रह्मनन्द था, जो कबीर के शिष्य थे।
- 1585 में आमेर के राजा भगवान दास ने दादूदयाल को फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिलाया (था)।
- इनकी मुख्य पीठ नरैना (~~आमेर~~) में है, जो दादूदयाल ने 1602 में स्थापित की थी।
- 1750 में जैतराम (नरैना पीठ के महन्त) जी के समय दादू पंथ कई शाखाओं में विभक्त हो गया था।

शाखाएं -
- खालसा - (नरैना पीठ के)
- विरक्त
- उतरादे - (बनवारीदास - हरियाणा में (उत्तर) (रतिया) चला गया था)
- खाकी
- नागा

- दादू जी के 52 शिष्य थे, जिन्हें 52 स्तम्भ (थाम्बे) कहा जाता है।
- दादू दयाल ने अपने उपदेश ढुँढाड़ी भाषा में दिए।
- दादूदयाल ने 'वाणी' नामक ग्रंथ की रचना की।
- दादूदयाल के प्रमुख शिष्य :

सुन्दरदास →
- 'नागा' शाखा की स्थापना की थी।
- नागा शाखा के साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के शासकों (प्रतापसिंह) की मदद की।
- नागा साधु हथियारबंद रहते थे, इनके रहने के स्थान को छावनी कहते हैं।

• सुन्दरदास की किताबें –

सुन्दरसागर
सुन्दरविलास
सुन्दर ग्रन्थावली

• सुन्दर दास की मुख्य पीठ <u>घेटोलाव (दौसा)</u> में है।

रज्जब जी ;

• सांगानेर के पठान थे।

• दादूदयाल के उपदेश सुनकर शादी छोड़ दी, दादूदयाल जी के शिष्य बन गये, आजीवन दूल्हे के वेश में रहे।

• पुस्तकें –

रज्जब वाणी
सर्वंगी

गरीबदास जी ;

• दादूदयाल के पुत्र

• दादूदयाल की मृत्यु के बाद अगले महन्त थे।

मिस्किनदास ;

• दादूदयाल के पुत्र

• दादू पंथ के मंदिरो को 'दादू द्वारा' कहते हैं।

– दादूदयाल को राज॰ का कबीर कहते हैं।

– दादू पंथी विवाह नहीं करते हैं।

– मंदिर में कोई मूर्ति नहीं होती है, (वाणी रखी जाती है)

– दादूपंथी शव को जलाते या दफनाते नहीं है, बल्कि पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता है। (वायु-दहन)

– स्वंय दादूदयाल का शव <u>भैराणा की पहाड़ी</u> में छोड दिया गया था।

- दादूपंथियो के सत्संग स्थल को 'अलख दरीबा' कहा जाता है।
- दादू ने निपख आंदोलन चलाया।

(3) जाम्भो जी :

- जाम्भो जी के पिता का नाम - लोहट जी
  माता का नाम - हंसा बाई
- जाम्भो जी पंवार राजपूत थे।
- जाम्भो जी के बचपन का नाम धनराज था
- 1482 A.D. में समराथल धोरे पर अपने अनुयायियों को 29 उपदेश दिए। इसलिए इनके अनुयायी विश्नोई कहलाए। (20+9)
- सबसे पहले अपने काका 'पूलो जी' को विश्नोई बनाया था।
- जाट जाति के लोग जाम्भो जी के अधिक अनुयायी थे।
- 1536 A.D. में बीकानेर जिले के मुकाम गाँव में समाधि ली थी। जहाँ 'मुक्काम' में इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को यहाँ मेला भरता है।
- जाम्भो जी की प्रमुख पुस्तकें :
  - जम्भ संहिता
  - जम्भ सागर
  - जम्भ वाणी
  - विश्नोई धर्म प्रकाश
  - जम्भ सरिता

• जाम्भो जी की प्रमुख शिक्षाएं –

(1) पेडों की कटाई नहीं करना

(2) जीव हिंसा नहीं करना (विशेषकर हिरण)

(3) नशा नहीं करना

(4) विधवा विवाह करना

(5) नीले वस्त्र का त्याग

• जाम्भो जी ने सिकंदर लोधी से कहकर गौ-वध निषेध करवाया।

• एक बार बीकानेर क्षेत्र में अकाल पड़ने पर जाम्भो जी के कहने पर सिकंदर लोधी ने पशुओं के लिए चारा भेजा था।

• विश्नोई धर्म के लोग शव को दफनाते हैं।

• 'सिर साठे रूख रहे तो भी सस्तो जाण ।।'
(पेड)

यह पंक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेम को दर्शाती है।

• जाम्भो जी के अन्य प्रमुख मंदिर ;

(1) जाम्भा (जोधपुर)

(2) रामड़ावास (जोधपुर)

(3) जांगलु (बीकानेर)

• जाम्भो जी को विष्णु का अवतार माना जाता है।

• जोधपुर के राव जोधा व उनके बेटे बीका व बीदा, जांभो जी के भक्त थे।

• जन्म स्थान :- पीपासर (नागौर)

(3) जसनाथी सम्प्रदाय :

- पिता का नाम - हम्मीर ज्याणी
  माता का नाम - रूपा दे
- सिकन्दर लोधी ने जसनाथ जी को बीकानेर में कतरियासर गांव की जमीन दी थी।

[पहले ऊंट महोत्सव यहां होता था, जो कि अब लाडेरा (बीकानेर) में होता है।]

Note ;

मरु महोत्सव - जैसलमेर
थार महोत्सव - बाड़मेर

- कतरियासर गांव में ही जसनाथ जी ने जीवित समाधि ली थी।
- जसनाथ जी के अनुयायी 36 नियम मानते हैं।
- जसनाथ जी के अनुयायियों में भी जाट जाति के लोगों की संख्या सर्वाधिक है।
- इनके अनुयायी काली ऊन का धागा पहनते हैं।
- मोर पंख व जाल वृक्ष को प्रमुख माना जाता है।
- * इनके अनुयायी अग्नि नृत्य करते हैं।
- जसनाथी सम्प्रदाय के लोग शव को दफनाते हैं।
- इनकी पत्नी 'कालदे' इनके साथ सती हुयी, जिनकी जसनाथ जी के साथ पूजा की जाती है।
- जसनाथ जी के गुरु का नाम गोरखनाथ था।
- मुख्य पीठ - कतरियासर

* उपदेश - सिंभूदड़ा एंव कोंडा ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

चरणदासी सम्प्रदाय :

- चरणदास जी का जन्म अलवर जिले के डेहरा गांव में हुआ।
- इनकी मुख्य पीठ दिल्ली में है।
- चरणदास जी के बचपन का नाम रणजीत था, पर इनके गुरु शुकदेव ने शिक्षा देकर इनका नाम चरणदास रख दिया।
- चरणदासी सम्प्रदाय के अनुयायी 42 नियम मानते हैं।
- चरणदास जी ने नादिरशाह आक्रमण (1739) की भविष्यवाणी की थी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग पीले रंग के कपड़े पहनते हैं।
- इनकी एक शिष्या का नाम दयाबाई था, जिसने -
  1. 'दया बोध'
  2. 'विनय मलिका' नामक पुस्तक लिखी।
- एक अन्य शिष्या सहजोबाई ने 'सहज प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग भगवान श्रीकृष्ण की पूजा सखी भाव से करते हैं।
- मेवात क्षेत्र के लोगों में इनका प्रभाव अधिक है।
- ग्रंथ – ब्रह्म ज्ञान सागर, ब्रह्म सागर, भक्ति चरित्र

रामानन्दी सम्प्रदाय :

- कृष्णदास 'पयहारी' ने गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आमेर का पृथ्वीराज कछवाहा कृष्णदास जी का भक्त था।
- कृष्णदास जी के अन्य शिष्य अग्रदास ने सीकर जिले के

रैवासा गांव में इस सम्प्रदाय की दूसरी पीठ की स्थापना की।

- इस सम्प्रदाय के लोग भगवान राम की पूजा 'रसिक नायक' के रूप में करते हैं, इसलिए इस सम्प्रदाय को रसिक सम्प्रदाय भी कहते हैं।
- सवाई जयसिंह के समय कृष्ण भट्ट ने 'रामरासा' नामक ग्रंथ लिखा था, जिसमें भगवान राम व सीता के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन है।

निम्बार्क सम्प्रदाय :

- आचार्य परशुराम ने सलेमाबाद (अजमेर) में इस सम्प्रदाय की मुख्य पीठ की स्थापना की।
- इस सम्प्रदाय के लोग राधा को भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी मानते हैं।
- द्वैताद्वैत नामक दर्शन।
- वेदान्त पारिजात भाष्य का प्रतिपादन।

वल्लभ सम्प्रदाय :

- वल्लभ सम्प्रदाय की स्थापना वल्लभाचार्य ने की थी, जो तेलंगाना के ब्राह्मण थे।
- वल्लभ सम्प्रदाय के लोग श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की

पूजा करते हैं।

- 1672 A.D. में गोविन्द दास जी व दामोदर दास ने सिहाड़ (नाथद्वारा) में श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित करवायी।
- इनके मंदिर में कपड़े के पर्दे पर कृष्ण लीलाओं का अंकन किया जाता है, जिसे 'पिछवाई' कहते हैं।
- राजस्थान में वल्लभ सम्प्रदाय के 41 मंदिर हैं। इनके मंदिरो को हवेली कहा जाता है।
- मंदिरो में गाया जाने वाला संगीत हवेली संगीत कहलाता है।
- वल्लभ सम्प्रदाय को पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय भी कहते हैं।
- इनके अन्य प्रमुख मंदिर –

  द्वारकाधीश – कांकरोली
  मथुरेश जी – कोटा
  गोकुलचन्द्र मंदिर – कामां (भरतपुर)
  मदनमोहन मंदिर – भरतपुर

- इनकी कुल 7 पीठ हैं, जिनमें 5 राजस्थान में
  2 गुजरात में स्थापित है।

अणुभाष्य व शुद्ध अद्वैतवाद का प्रतिपादन।

गौड़ीय सम्प्रदाय :

- चैतन्य महाप्रभु ने की थी
- आमेर के राजा मानसिंह ने वृंदावन में राधा गोविन्द का मंदिर बनवाया।
- सवाई जयसिंह ने जयपुर में गोविन्द देव जी का मंदिर बनवाया, जो राजस्थान में गौडीय सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- मदन गोपाल पाल ने करौली में मदन मोहन जी का मंदिर बनवाया, जो गौड़ीय सम्प्रदाय की दूसरी प्रमुख पीठ है।

संत पीपा :

- वास्तविक नाम - प्रतापसिंह
- ये गागरौन के खींची शासक थे।
- रामानन्द के शिष्य थे।
- दर्जी समाज इन्हें अपना आराध्य देव मानता है।
- समदडी (बाड़मेर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- टोडा (टोंक) में इनकी गुफा बनी हुयी है।
- गागरौन में काली सिंध नदी के किनारे इनकी छतरी बनी हुयी है।

हरिदासी सम्प्रदाय :

- इसकी स्थापना हरिसिंह सांखला ने की थी।
- इनका जन्म नागौर के कापड़ोद गांव में हुआ था।
- इन्होनें गाढ़ा गांव (नागौर) में समाधि ली थी।
- ये डाकू से संत बने थे।
- हरिदासी सम्प्रदाय को* निरंजनी सम्प्रदाय* भी कहते हैं।
- हरिदास जी की प्रमुख पुस्तकें –

मन्त्र राज प्रकाश
हरिपुरुष जी की वाणी

लालदासी सम्प्रदाय :

- लालदास जी का जन्म अलवर जिले के धोलीदूब गांव में हुआ था।
- इनकी मृत्यु भरतपुर के नगला जहाज में हुयी थी।
- इनकी समाधि अलवर के शेरपुर गांव में है।
- ये मेव जाति के लकड़हारे थे।
- प्रसिद्ध संत 'गद्दन चिश्ती' इनके गुरु थे।

संत धन्ना :

- टोंक जिले के धुवन गांव में एक जाट परिवार में इनका जन्म हुआ था। (उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत)
- धन्ना भी रामानन्द जी के शिष्य थे।
- * इन्हें राजस्थान में भक्ति आंदोलन लाने का श्रेय जाता है।
- बोरानाड़ा (जोधपुर) में इनका मंदिर बना हुआ है।

संत मावजी :

- इनका जन्म डूंगरपुर जिले के साबला गांव में हुआ था।
- इन्होंने 'निष्कलंकी सम्प्रदाय' चलाया।
- इनमें भगवान श्रीकृष्ण की निष्कलंकी रूप में पूजा की जाती है।
- * इन्होंने बेणेश्वर धाम (डूंगरपुर) की स्थापना की।
- इनके ग्रन्थ का नाम 'चोपड़ा' है। जिसमें तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की हुई है। (वागडी भाषा में लिखा)

अलखिया सम्प्रदाय :

- इसकी स्थापना स्वामी लाल गिरी जी ने (चुरू) में की थी।
- बीकानेर में इनकी प्रमुख पीठ है।

• 'अलख स्तुति प्रकाश' इनका प्रमुख ग्रन्थ है।

नवल सम्प्रदाय :

• इसकी स्थापना नवल सागर ने नागौर के हर्षोलाव में की थी।
• इनका मुख्य ग्रन्थ 'नवलेश्वर अनुभव वाणी' है।

बालनन्दाचार्य :

• ये औरंगजेब के समकालीन थे।
• (52) मूर्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।
• इन्होनें, दुर्गादास राठौड़, राजसिंह व शत्रुसाल की सेना भेजकर सहायता की थी।
• इन्हें लश्कर (सेना) संत भी कहते हैं।
• मुख्य पीठ – लोहार्गल (झुन्झुनु)

राजाराम :

• पटेल जाति के लोग इनमें विशेष आस्था रखते हैं।
• मुख्य पीठ – शिकारपुरा (जोधपुर)
• पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया।

रामस्नेही सम्प्रदाय :

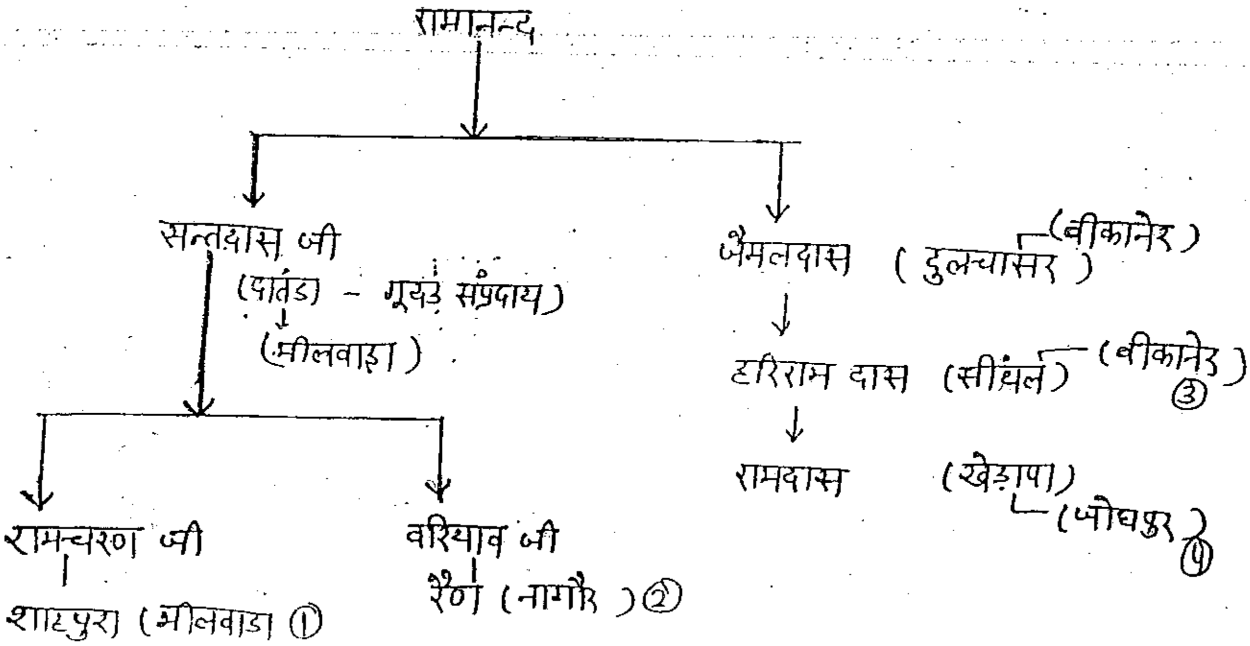

- रामस्नेही संप्रदाय की राज० में प्रमुख चार पीठ –
  - (1) शाहपुरा – (भीलवाड़ा)
    - स्थापना रामचरण जी ने की थी।
    - बचपन का नाम – रामकिशन
    - जन्म – टोंक जिले के सोड़ा गांव में।
    - शाहपुरा के राजा रणसिंह ने इनके रहने के लिए शाहपुरा में एक छतरी बनवाई।
    - रामचरण जी के उपदेश 'अणभैवाणी' नामक ग्रंथ में संकलित है।
    - 'शाहपुरा' रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
    - शाहपुरा में होली के दूसरे दिन 'फूलडोल का मेला' भरता है।

(2) रैण (नागौर)

- इस पीठ की स्थापना दरियाव जी ने की थी।

(3) सींथल (बीकानेर)

- इस पीठ की स्थापना हरिराम दास जी ने की थी।
- ग्रंथ का नाम – 'निशानी', इस ग्रंथ में यौगिक क्रियाओं का उल्लेख है।

(4) खेड़ापा (जोधपुर)

- इस पीठ की स्थापना रामदास जी ने की थे।
- ये हरिराम दास जी (सींथल) के शिष्य थे।

* संत जैमलदास को सींथल व खेड़ापा शाखा का आदि-आचार्य कहा जाता है।

* संतदास जी ने गूदड़ सम्प्रदाय चलाया था।
- गूदड़ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ दांतड़ा (भीलवाड़ा) में है।

- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग निर्गुण राम की पूजा करते हैं। (यहां राम से तात्पर्य दशरथ पुत्र राम से नहीं है)
- रामस्नेही सम्प्रदाय के मंदिरों को रामद्वारा कहते हैं।
- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग गुलाबी रंग की चादर पहनते हैं।

संत मीरा :

- मीरा का जन्म पाली जिले के कुड़की गाँव में हुआ था।
- पिता का नाम - रत्नसिंह

  दादा का नाम - राव दूदा (जोधा का सबसे छोटा बेटा)

- मीरा की शादी मेवाड़ के राणा साँगा के पुत्र भोजराज से हुयी थी।
- अपने पति के मृत्यु के बाद मीरा मेवाड़ से वापस मेड़ता आ गयी थी, फिर वहाँ से वृंदावन चली गयी थी, फिर वृंदावन से द्वारिका चली गयी थी।
- ऐसा कहा जाता है कि मीरा द्वारिका के रणछोड़ मंदिर की मूर्ति में विलीन हो गयी।
- मीरा सगुण श्रीकृष्ण की पति रुप में पूजा करती थी।
- मीरा के शिक्षक का नाम गजाधर था।
- मीरा ने रैदास (रामानन्द के शिष्य) को अपना गुरु बनाया, रैदास की छतरी चित्तौड़ में बनी हुई है।
- रैदास के उपदेश 'रैदास की परची' नामक ग्रंथ में संकलित है।
- मीरा की पुस्तकें -

  (1) गीत गोविन्द
  (2) रुक्मणि मंगल
  (3) सत्यभामा नू रुसणो

* रतना खाती के सहयोग से **नरसी जी रो मायरो** नामक पुस्तक लिखी।

- महात्मा गांधी मीरा को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाली सत्याग्रही महिला के रूप में देखते थे।

- मीरा को राज की राधा कहते हैं।
- मीरा के पद 'हरजस' कहलाते हैं।

भक्त कवि दुर्लभ :

- प्रमुख प्रभाव क्षेत्र 'बागड़' रहा है।
- भक्त कवि दुर्लभ को 'बागड का नृसिंह' कहते हैं।

~~नरहड़ पीर~~

नरहडपीर :

- सलीम चिश्ती (जिसके आशीर्वाद से जहांगीर पैदा हुआ था), नरहड़ पीर के शिष्य थे।
- कृष्ण जन्माष्टमी के दिन इनका उर्स लगता है।
- साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जाने जाते हैं।
- यहां पागलों का इलाज किया जाता है।
- इन्हें 'बागड़ का धणी' कहते हैं।

बागड	- डूंगरपुर, बांसवाडा
बागड	- शेखावाटी क्षेत्र

* गवरी बाई - 'बागड की मीरां'

राजस्थान की चित्रकला

- ब्राउन महोदय ने राजस्थान की चित्रकला को 'राजपूत कला' कहा।
- H.C. मेहता – 'हिन्दू शैली'
- आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 में लिखी अपनी पुस्तक 'RAJPUT PAINTINGS' में राज. की चित्रकला को राजपूत चित्र शैली कहा तथा इस राजपूत चित्र शैली में पहाड़ी शैली (हिमाचल प्रदेश) को भी शामिल कर लिया।
- रामकृष्ण दास – राजस्थानी चित्रकला
- मेवाड़ को राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि कहा जाता है।

राज. के सबसे प्राचीन चित्र जैसलमेर के जिनभद्र सूरी भंडार में संग्रहीत हैं।

मुख्य प्राचीन चित्र ; (1) ओघ निर्युक्ति वृत्ति
(2) दस वैकालिक सूत्र चूर्णि } जैन ग्रन्थ

(Note; जैनों ने सबसे पहले कागज पर चित्र तथा क्षेत्रीय भाषा में लिखना शुरू किया।)

- भौगोलिक व सांस्कृतिक आधार पर राज. की चित्रकला को (4) भागों में बाँटा जाता है

(1) मेवाड़ शैली – चावण्ड, देवगढ़, नाथद्वारा

(2) मारवाड़ शैली – जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर, नागौर, जैसलमेर

(3) ढूंढाड़ शैली – जयपुर, अलवर, उणियारा, शेखावाटी

(4) हाड़ौती शैली – कोटा, बूंदी

(I) मेवाड़ शैली :

- 1260 A.D. में रावल तेजसिंह के समय आहड़ में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- 1423 A.D. में मोकल के समय देलवाड़ा में 'सुपार्श्वनाथ चरित्र' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- महाराणा कुम्भा ने भी मेवाड़ की चित्रकला में अपना योगदान दिया था।

– चावण्ड :

- महाराणा प्रताप के समय चावण्ड से मेवाड़ की चित्रकला शैली का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ होता है।
- इस समय ढोला-मारू का चित्र चित्रित किया गया। जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में रखा हुआ है।
- महाराणा अमरसिंह के समय इस चित्रकला शैली का विकास अग्रसर होता है। नासिरुद्दीन नामक एक चित्रकार ने 'रागमाला' का चित्रण किया। (अब बड़ौदा के अजायबघर में) (1610 A.D.)
- इसके बाद 'बारहमासा' का चित्रण किया गया। (अब सरस्वती भवन पुस्तकालय उदयपुर में)
- महाराणा जगतसिंह के समय को मेवाड़ की चित्रकला का स्वर्णकाल कहते हैं।
- जगतसिंह ने 'चितेरों की ओबरी' का निर्माण करवाया। चित्तेरों की ओबरी को 'तस्वीरां रो कारखानो' भी कहते हैं।
- जगतसिंह के समय साहिबदीन नामक एक चित्रकार ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाए।
- महाराणा संग्राम सिंह II के समय कलीला-दमना व मुल्ला दो प्याजा के लतीफे ग्रन्थों के चित्र चित्रित किए।
- महाराणा जगत सिंह II के समय मुहम्मदीन नामक चित्रकार ने जगत सिंह II का चित्र बनाया।

- इस शैली में शिकार के दृश्यों की चित्रकारी में त्रि - आयामी प्रभाव दिखायी देता है।
- मनोहर व कृपाराम इस शैली के अन्य चित्रकार थे।
- कदम्ब वृक्ष का अधिक चित्रण किया गया है।

– <u>देवगढ़</u>:

- 1680 A.D. में महाराणा जयसिंह ने द्वारिकादास चूंडावत को देवगढ़ ठिकाणा दिया था। (मेवाड़ के 16 ठिकानों में से एक)

चूंडावत –	सलूम्बर
	आमेट
	बेगूं
	देवगढ़

यहीं से चित्रकला की देवगढ़ शैली प्रारम्भ होती है।

- देवगढ़ शैली में मेवाड़, मारवाड़ व आमेर तीनों शैलियों का प्रभाव दिखायी देता है।
- श्रीधर अंधारे ने इस शैली को प्रकाश में लाने का काम किया।
- देवगढ़ शैली में अजारा की ओबरी व मोतीमहल के भित्ति चित्र देवगढ़ शैली के प्रमुख उदाहरण है।
- हरे व पीले रंगों का अधिक प्रयोग किया गया है।

– <u>नाथद्वारा</u>:

- पिछवाई चित्रण नाथद्वारा शैली की मौलिक विशेषता है।
- केले के वृक्षों की प्रधानता है।

मारवाड़ शैली

जोधपुर

- मालदेव के समय यह चित्र शैली प्रारम्भ हुयी।
- चौखेला महल में भित्ति चित्र बनाए गए। (राम - रावण युद्ध के दृश्य)
- उतराध्ययन सूत्र नामक ग्रन्थ चित्रित किया गया।
- महाराजा सूरसिंह के समय ढोला - मारू व भागवत पुराण चित्रित किए गए।

* 1623 A.D. में वीर जी (विठ्ठलदास चाम्पावत) ने 'रागमाला' का चित्रण किया।

- महाराजा जसवंत सिंह के समय चित्रकला में मुगल प्रभाव आ गया था।
- इस समय कृष्ण लीलाओं के चित्र अधिक चित्रित किए गए।
- मानसिंह के समय नाथों का प्रभाव अधिक था, अतः शैव सम्प्रदाय से सम्बन्धित चित्र अधिक चित्रित हुए।

पुस्तकें - नाथ चरित्र, शिव पुराण, दुर्गा चरित्र

- महाराजा तख्तसिंह के समय यूरोपीय प्रभाव आ जाता है।
- H.K. MULER नामक एक चित्रकार ने दुर्गादास राठौड़ का घोड़े पर बैठकर भाले से रोटी सेकते हुए चित्र बनाया है।

अतः

'चौवीस घड़ी, आठ पहर, घुड़ले ऊपर वास।
सेल अणी सुं सेकती, बाटी दुरगादास ॥'
(भाला)

- जोधपुर शैली में प्रेम कहानियां अधिक चित्रित की गयी।

जैसे - ढोला - मारू, महेन्द्र - मूमल, वीरमदेव सोनगरा

- इस शैली में बादलों का अधिक चित्रण किया गया।
- लाल व पीले रंगो का अधिक प्रयोग हुआ है।
- हासिये में भी पीले रंग का अधिक प्रयोग हुआ है।

बीकानेर शैली :

- महाराजा रायसिंह के समय प्रारम्भ हुई भागवत पुराण चित्रित करवाया गया।
- महाराजा अनूपसिंह का समय बीकानेर चित्रकला शैली का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- उस्ता कला ; महाराजा अनूपसिंह लाहौर से अली रजा, रुक्नुद्दीन नामक दो कलाकारों को लेकर आए, जिन्होनें बीकानेर में उस्ता कला प्रारम्भ की।
  - उस्ता कला में ऊंट की खाल पर सोने की चित्रकारी की जाती है।
  - हिसामुद्दीन उस्ता को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।
  - बीकानेर के 'कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर' में उस्ता कला सिखायी जाती है।

मथेरणा कला ; जैनों की एक उपजाति

- गीले प्लास्तर पर चित्र बनाए जाते हैं।
- इसे फ्रेस्को कहते हैं।
- इसे अरायरा भी कहते हैं।
- शेखावटी क्षेत्र में इसे पणा कहा जाता है।

- बीकानेर की चित्र कला शैली में पंजाबी, दक्कनी व मुगल तीनों प्रभाव दिखायी देते हैं।
- बीकानेर शैली की प्रमुख विशेषता मुस्लिम चित्रकारों द्वारा हिन्दू पौराणिक चित्रों का अंकन किया जाना है।

''"तेरा सारा जहर उतर जाएगा,
दो दिन मेरे शहर में रुक कर तो देख॥"

- बीकानेर के चित्रकार चित्र के साथ अपना नाम व तिथि अंकित करते थे

किशनगढ़ शैली :-

- 'फैयाज अली व एरिक डिक्सन' इस शैली को प्रकाश में लाए।
- महाराजा सावन्त सिंह का समय किशनगढ़ शैली का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक होने के कारण कृष्ण-लीलाओं का चित्रण अधिक किया गया है।
- सावन्त सिंह ने अपनी प्रेमिका 'रसिक बिहारी' को राधा के रूप में चित्रित करवाया।
- इसी रसिक बिहारी की तस्वीर को बणी-ठणी कहा जाता है, जिसका चित्रकार 'मोरध्वज निहालचन्द' था।
- एरिक डिक्सन ने इसे 'भारत की मोनालीसा' कहा है।
- एक दूसरा प्रमुख चित्र 'चांदनी रात की गोष्ठी' है, जिसका चित्रकार अमीरचन्द था।
- किशनगढ़ शैली में कांगड़ा (हिमाचल) शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता है।
- नारी सौन्दर्य का अधिक चित्रण हुआ है।
- नारी पात्रों के नाक में बाली इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

• अजमेर शैली :

- साहिबा नामक एक महिला चित्रकार का नाम मिलता है।

नागौर शैली :

- इस शैली में बुझे हुए रंगों का अधिक प्रयोग किया जाता था।

जैसलमेर

- मूमल का चित्रण अधिक हुआ है।
- जैसलमेर के चित्रों पर किसी अन्य शैली का प्रभाव नजर नहीं आता है।

* बणी-ठणी पर 1973 में डाक-टिकट जारी किया गया।

ढुँढाड़ शैली :

- ढुँढाड़

जयपुर :

- मुगल शैली का सर्वाधिक प्रभाव दिखायी देता है।
- महाराजा मानसिंह के समय यशोदा का चित्र बनाया गया।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने { बिहारी सतसई, कृष्ण रुक्मणि, गीत गोविन्द, आदि के चित्र अपनी रानी चन्द्रावती के लिए बनवाए।
- सवाई जयसिंह ने आमेर में सूरतखाने की स्थापना की।
- महाराजा ईश्वरी सिंह के समय साहिबराम नामक एक चित्रकार ने आदमकद चित्र बनाए।
- माधो सिंह के समय भित्ति चित्र अधिक बनाए गए।
- 'पुण्डरीक हवेली' के भित्ति चित्र प्रमुख हैं।
- प्रताप सिंह का समय जयपुर चित्रकला शैली का स्वर्ण काल था। इस समय लालचंद नामक एक चित्रकार ने पशुओं की लड़ाई के दृश्य बनाए।
- विशेषताएँ –

  आदमकद चित्रण, भित्ति चित्रण

  उद्यान चित्रण, हाथियों का चित्रण

अलवर शैली :

- महाराजा विनयसिंह का समय अलवर शैली का स्वर्ण काल था।
- बलदेव नामक एक चित्रकार ने शेखसादी की पुस्तक 'गुलिस्तां' का चित्रण किया।
- अलवर शैली में वेश्याओं के चित्र सर्वाधिक बनाए गए।
- महाराजा शिवदान/स्योदान सिंह के समय 'कामशास्त्र' का चित्रण हुआ।
- मूलचन्द नामक एक चित्रकार हाथीदांत पर चित्रकारी करता था।
- विशेषता;

  लघु चित्रण, योगासन के चित्र

  हासिये में बेल - बूंटो का प्रयोग

(राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण राव बख्तावर सिंह के द्वारा करवाया गया, यहीं से चित्रकला की अलवर शैली का विकास हुआ।)

उणियारा शैली : (टोंक)

- कछवाओं की 'नरूका शाखा' का प्रमुख ठिकाणा।
- यहां ढूंढाड़ व बूंदी शैली का प्रभाव/समन्वय देखने को मिलता है।
- चित्रकार - धीमा, मीम, मीर बख्श, काशी, राम लखन

शेखावाटी शैली :

- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
- कम्पनी शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता है।
- नीले व हरे रंगो का अधिक प्रयोग किया गया।
- उदयपुर वाटी में जोगीदास की छतरी भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। इन भित्ति चित्रों का चित्रकार 'देवा' था।

• फतेहपुर की गोयनका हवेली के भित्ति चित्र भी आकर्षक हैं।

हाड़ौती शैली :

बूंदी :

• राव सुरजन के समय यह शैली प्रारम्भ हुई थी।
• राव रतन सिंह के समय दीपक व भैरवी राग पर चित्र बनाये गये।
• शत्रुसाल के समय रंगमहल का निर्माण करवाया गया, जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
• उम्मेद सिंह का समय बूंदी चित्रकला शैली का स्वर्ण काल कहा जाता है। इन्होंने बूंदी के किले में चित्रशाला का निर्माण करवाया, जिसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं।
• विशेषता-
  * पशु-पक्षी व प्रकृति चित्रण
• मेवाड़ शैली का अधिक प्रभाव दिखायी देता है।

कोटा :

• महाराव रामसिंह के समय शुरू हुयी थी।
• भीमसिंह के समय कृष्ण लीलाओं का अधिक अंकन हुआ है।
• उम्मेद सिंह का समय कोटा - शैली का स्वर्ण काल माना जाता है।
• 'डालू' नामक एक चित्रकार ने रागमाला को चित्रित किया।
• प्रमुख विशेषता - शिकार के दृश्य

• महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया गया है।
• नारी सौन्दर्य का सबसे अधिक चित्रण कोटा शैली में हुआ है।

प्रमुख आधुनिक चित्रकार :

(1) रामगोपाल विजयवर्गीय:
- राज० के सबसे अग्रणी चित्रकार।
- सबसे पहले एकल चित्र प्रदर्शनी लगानी शुरु की।
- इनके गुरु का नाम शैलेन्द्र नाथ डे।
- साहित्यिक रचना; 'अभिसार निशा'

अभिसार – प्रेमी से छिपकर मिलना
अभीसार – आक्रमण

(2) गोवर्धन लाल बाबा:
- भीलों का चितेरा
- प्रमुख चित्र :- बारात

(3) कुन्दन लाल मिस्त्री :
- इन्होंने महाराणा प्रताप का चित्र बनाया।
- राजा रवि वर्मा ने कुन्दन लाल मिस्त्री के चित्रों को देखकर महाराणा प्रताप का चित्र बनाया। राजा रवि वर्मा (केरल) को 'भारतीय चित्रकला का पितामह' कहा जाता है।

(4) सौभाग्य मल गहलोत :
- इन्हें नीड़ का चितेरा कहते हैं।

(5) परमानन्द चोयल:
- इन्हें भैंसों का चितेरा कहते हैं।

(6) जगमोहन मायोडिया:

- इन्हें स्वान का चितेरा कहते हैं।

(7) भूर सिंह शेखावत:

- इन्होंने देशभक्त व क्रांतिकारियों के चित्र बनाए।
- इनके चित्रों में राजस्थानी अंश अधिक पाया जाता है।

(8) ज्योति स्वरूप; कच्छावा;

- चित्र – 'INNER JUNGLE' (Book में)

(9) देवकीनन्दन शर्मा;

- इन्हें 'THE MASTER OF NATURE AND LIVING OBJECT' कहते हैं।

---

* रमेश गर्ग → आधुनिक कला के जनक के नाम से प्रसिद्ध।

प्रसिद्ध चित्र – मशीनी मानव
बीसवीं सदी
माता और शिशु

राजस्थान के दुर्ग

(1) गागरौन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध व आहू नदियों के किनारे स्थित है
- गागरौण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे डोडगढ़ भी कहते हैं। इसे धूलरगढ़ भी कहते हैं।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पद्रुम के अनुसार)
- जैत्र सिंह
  - 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
  - संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहब' के नाम से जानते हैं। इनकी ~~छतरी~~ दरगाह गागरौण के किले में बनी हुयी है।

प्रताप सिंह

- ~~इन्हे हम संत पीपा के नाम से जानते हैं।~~
- इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरौण पर विफल आक्रमण किया था।
- संत पीपा की छतरी गागरौण में बनी हुयी है।

अचलदास

- 1423 A.D. मे मालवा का सुलतान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।

(जागल)

* अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम - उमा साखला

- शिवदास गाडण ने 'अचलदास खिंची री वचनिका' नामक ग्रन्थ लिखा है।

पाल्हण सिंह ; (अचलदास का बेटा, कुम्भा का भांजा)

- 1444 A.D. में मालवा का सुलतान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। (मआसिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है।)
- इस समय गागरौण के किले का दूसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था।

- बाद में गागरौण का किला महाराणा सांगा (मेवाड) के अधिकार मे आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके लिए किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वी राज राठौड़ को दे दिया।
- पृथ्वीराज राठौड ने इसी किले में 'वेलि क्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहां ने यह किला कोटा महाराजा माधो सिंह को दे दिया था।
- कोटा महाराणा दुर्जनसाल ने यहां मधुसूदन का मंदिर बनवाया।
- जालिम सिंह झाला ने यहां जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहां बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुंड, 2 अंधेरी बावड़ी, गीध कराई (यहां राजनैतिक (ऊंची पहाडी))

बंदियों की सजा दी जाती थी) है।

- गागरौण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है।
- कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव

"ओ गढ़ नीचो किम झुकै, ऊँचो जस गिर वास।
हर झाटै जौहर (ज्वाला) जठै, हर भाठे इतिहास॥"

- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)
- 734 A.D. में बापा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- यह राज. का सबसे बड़ा* आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए।

1303

1534

1568

कुम्भा ने कुम्भश्याम / कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।

- मोकल ने समाद्धिश्वर (समिद्धेश्वर) मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भंडार बनवाया।

- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में { रत्नेश्वर तालाब, भीमलत तालाब
  मीरा मंदिर
  कालिका मंदिर
  लाखोटा बारी आदि प्रमुख हैं।

- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है।
- धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएं हैं।
- यह किला गम्भीरी व बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ है।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें सात दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें विजयस्तम्भ (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राज्य की प्रथम इमारत है, जिस पर 15 Aug. 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया था।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 से 1458 A.D. के बीच करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार मंडन था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ - मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते हैं।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के लि कारण अबुल - फजल ने कहा था कि

  इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।

- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है, जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को मेवाड़ की आंख कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदा ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुंड के पास) की थी।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छतरी बनी हुयी है। (12 खम्भों की)
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ के किले में आयी थी उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- प्रताप ने भी अपना शुरुआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ के शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ है।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई – 36 km
- चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'यूरोप के एट्रुस्कन' से की है। 'एट्रुस्कन' (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्जे एवं कंगूरे के कारण)

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान सवाई माधोपुर में स्थित।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अष्टाकार आकृति में निर्मित।
- गिरि व वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फज्ल –

  'बाकी सब किले नंगे हैं, पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।'
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहां एक विफल आक्रमण किया था। इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था –

  'ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।'
- 1301 A.D – अलाउद्दीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया। उस समय – रणथम्भौर का पहला साका (हम्मीर के नेतृत्व में) हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।

  " रण लड़ियो रण रीति सुं, रणथल रणथम्भौर।
  हठ राख्यौ हम्मीर रो, कट – कट खांगा कोर ॥"
  (तलवार)
- इस किले में जोगी महल
  सुपारी महल
  रणत भंवर गणेश जी का मंदिर (शादी की पहली कुमकुमपत्री यहां भेजी जाती है।)
  पद्म तालाब
  जौरा - भौरा महल
  पीर सद्रुद्दीन की दरगाह
- अकबर कालीन टकसाल यहां स्थित है।

मेहरानगढ़ :

- यह किला जोधपुर में मयूर आकृति में बना हुआ है, इसलिए इसे मयूर ध्वज गढ़ भी कहते हैं।
- इस किले का निर्माण राव जोधा ने 1459 A.D. में करवाया था।
- इस किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मेहरानगढ़ किले की नींव में राजाराम नामक व्यक्ति की बलि दी गयी थी।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था। तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मालदेव ने किले में लोहा पोल का निर्माण करवाया था।
- अजीत सिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोल का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयपोल पोल का निर्माण करवाया।
(इस पोल के दरवाजे निमाज का ठाकुर 'अमर सिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था)
- मेहरानगढ़ के किले में 'कीरत सिंह सोढ़ा' की छतरी बनी हुयी है।
(मानसिंह की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था)
(जसोल गांव के कीरत सिंह सोढा ; गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लड़ता है।)

- धन्ना-भींवा की छतरी बनी हुयी है। (मामा - भान्जा की छतरी)

- महाराजा सूरसिंह ने मोती महल का निर्माण करवाया।
- सूरसिंह ने ही एक तलहटी महल (अपनी रानी सौभाग्यवती के लिए) बनवाया।

- तख्त सिंह ने 'श्रृंगार चौकी' का निर्माण करवाया, यहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।
- मेहरानगढ़ के किले में तीनों तोपें हैं -
  - (1) किलकिला (महाराजा अजीतसिंह अहमदाबाद की सूबेदारी के दौरान लाए थे)
  - (2) गजनी खाँ (महाराजा गजसिंह ने जालौर घेरे में प्राप्त की थी)
  - (3) शम्भू बाण (महाराजा अभय सिंह सर बुलन्द खाँ से छीनकर लाते हैं) (अहमदाबाद)

अन्य तोप - भवानी

- जोधा की रानी जसमा दे हाड़ी ने रानीसर तालाब बनवाया, जिसे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- जोधा ने चामुण्डा माता का मंदिर बनवाया था।
- RUDYARD KIPLING' - जोधपुर के किले का निर्माण परियों और देवताओं ने किया है।
- मेहरानगढ़ का किला चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर बना हुआ है।
- जोधपुर के किले में एक फूल महल (अभयसिंह) बना हुआ है, जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- किले में मान पुस्तक प्रकाश नामक पुस्तकालय है, जो मानसिंह ने 1805 A.D. में बनवाया।
- 2005 A.D. में यूनेस्को अवार्ड ~~प्राप्त~~ दिया गया था।

जैसलमेर दुर्ग :

(1155)

- जैसलमेर के राजा जैसल ने इस किले का निर्माण करवाया।

"गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो, अर गढ़ बीकानेर।
भलो चिणायो भाटियां, सिरे गढ़ जैसलमेर।।"

- जैसलमेर के किले में 99 बुर्जें बनी हुयी हैं।
- जैसलमेर का किला त्रिभुजाकार (त्रिकूट) आकृति में बना हुआ है।

"दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानो रेत के समन्दर में जहाज ने अपना लंगर डाल रखा हो।"

- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को 'स्वर्णगिरी का किला' कहते हैं। इसे सोनार का किला भी कहते हैं।
- सत्यजीत रे 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।
- जैसलमेर के किले में दोहरा परकोटा बना हुआ है, जिसे कमर कोट कहा जाता है।
- जैसलमेर का किला अपने 2½ साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- अबुल फजल ने कहा था - पत्थर की टांगे ही आपको जैसलमेर के किले तक पहुंचा सकती हैं।

"शरीर किजे काठ रा, पग कीजे पाषाण।
बख्तर कीजे लौह का, तब पहुंचे जैसाण।।"

- इस किले में चूने का ~~प्र~~ उपयोग नहीं किया है।
- जैसलमेर के किले की छत लकड़ी की बनी हुयी है।
- बादल महल बना हुआ है।
- जवाहर विलास महल
- 2009 A.D. में जैसलमेर किले में 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया।

बीकानेर - दुर्ग : (चतुष्कोण आकृति)

- बीकानेर के किले को जूनागढ़ किला कहा जाता है।
- इस किले का निर्माण महाराजा रायसिंह ने करवाया था।
- इसमें 37 बुर्जें बनी हुयी हैं।
- जूनागढ़ के किले को 'जमीन का जेवर' कहते हैं।
- जूनागढ़ में सूरजपोल के पास जयमल फत्ता की मूर्तियां लगी हुयी हैं।
- जूनागढ़ किले में 33 करोड़ देवी- देवताओं का मंदिर है।
- बादल महल
  अनूप महल
  हर मंदिर (बीकानेर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था)
  (निर्माण - महाराजा डूंगरसिंह ने करवाया था)
- जूनागढ़ किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है।

* आमेर व बीकानेर दो ऐसे किले हैं, जो जिस वंश के द्वारा निर्मित किए गए थे, हमेशा उसी वंश के अधिकार में रहे।

भटनेर का किला :

- हनुमानगढ़ जिले में स्थित। (भूपत भाटी ने इसका निर्माण शुरू करवाया था)
- भाटी शासकों ने इसका निर्माण करवाया था।
- महमूद गजनवी ने इस पर आक्रमण किया था।

- तैमूर ने भी यहां आक्रमण किया था। इस आक्रमण के समय यहां हिन्दू महिलाओं के साथ-साथ मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया था।
- तैमूर इसे भारत का सर्वश्रेष्ठ किला बताता है।
- तैमूर के आक्रमण के समय यहां का शासक दूलचन्द भाटी था।
- हुमायुं के भाई कामरान ने भी यहां आक्रमण किया था। उस समय यहां का किलेदार खेतसिंह कांधल था।
- अकबर ने भी यहां आक्रमण किया था। कल्याणमल का भाई ठाकुरसिंह लड़ता हुआ मारा गया।
- रायसिंह के बेटे दलपत सिंह व उसकी पांच रानियों के स्मारक बने हुए हैं। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरुद्ध भी विद्रोह किया था)
- मनोहर कछवाहा ने यहां मनोहर पोल का निर्माण करवाया।
- 1805 में बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने इस पर अधिकार कर लिया उस दिन मंगलवार था, इसलिए भटनेर के किले का नाम बदलकर हनुमानगढ़ कर दिया।
- भारत में सबसे अधिक आक्रमण झेलने वाला किला।
- भटनेर के किले को 'उत्तरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता है।
- इसमें भद्रकाली माता का मंदिर बना हुआ है।
- बलबन के भाई शेर खां की कब्र है।

जालौर का किला :

- सूकड़ी नदी के किनारे स्थित।
- सुवर्णगिरी के किले के नाम से विख्यात।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट I ने इसका निर्माण करवाया।
- कान्हड़देव सोनगरा ने यहां पुनर्निर्माण करवाया।
- 1311 A.D. में जालौर के किले में साका हुआ था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने यहां अलाई मस्जिद व खिलजी मीनार बनवाई थी। जालौर का नाम जलालाबाद रख दिया था।
- जोधपुर महाराजा मानसिंह अपने संघर्ष के दिनों में जालौर के किले में रहा था। (मानसिंह महल)
- जालौर के किले में तोपखाना मस्जिद बनी हुयी है। जो पूर्व में भोज परमार द्वारा बनायी गयी एक संस्कृत पाठशाला थी।

कान्हड़देव की बावड़ी, वीरमदे की चौकी, जलंधर नाथ जी का मंदिर।
मलिक शाह की दरगाह।

सिवाणा का किला : (इसी दुर्ग में शेर-ए-राज्य जयनारायण व्यास को बंदी बनाकर रखा गया था।)

- बाड़मेर जिले में स्थित। (हल्देश्वर पहाड़ी पर)
- वीर नारायण पंवार ने इसका निर्माण करवाया था।
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे कूमट दुर्ग भी कहते हैं।
- सिवाणा का किला राठौड़ों की शरणस्थली (राव चन्द्रसेन व मालदेव ने शरण ली थी), जालौर की कुंजी कहलाता है।
- अलाउद्दीन के आक्रमण के समय सातल व सोम के नेतृत्व में साका हुआ था।
- अकबर के आक्रमण के समय कल्ला रायमलोत के नेतृत्व में साका हुआ था।

(रामसनोत)

"किलो अणखलो यूं कहे, आव सुण कल्ला राठौड़।
म्हारे तो मेहणो उतरे, तोहे बधे सिर मौड़॥"
(व्यंग)

- सिवाणा के किले में भांडेलाव तालाब बना हुआ है।

आमेर का किला:

- इसे कादिलगढ़ भी कहा जाता है।
- मानसिंह I ने इसका निर्माण करवाया था।
- ~~यह किला कछवाओं वंश का संकटमोचक किला कहा जाता है।~~
- आमेर के किले में सुहाग मंदिर है। यह रानियों के हास-परिहास का स्थान था।
- सुख मंदिर :- एक जैसे 12 कमरे हैं, जो मिर्जा राजा जयसिंह ने बनवाए थे।
- दौलाराम का बाग
- मावठा जलाशय
- शिला माता का मंदिर
- जगत शिरोमणि मंदिर
- अम्बिकेश्वर मंदिर
- बारहदरी महल
- शीश महल
- दीवान-ए-आम
- दीवान-ए-खास
- केसर क्यारी बगीचा

जयगढ़ का किला :

- पहले इस स्थान को चील्ह का टीला कहते हैं।
- मानसिंह I ने इसका निर्माण कार्य शुरू करवाया था।

मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम जयगढ़ रखा।

- सवाई जयसिंह ने इस में जयबाण तोप रखवायी।
- जयगढ़ का किला अपने पानी के विशाल टांको के लिए प्रसिद्ध है।
- इसमें आमेर के कछवाहों शासकों का शस्त्रागार व खजाना था।
- इन्दिरा गांधी ने यहां 1975-76 में यहां खुदाई करवायी।

इस किले में सुरंगे बनी हुयी हैं। इस कारण इस किले को रहस्यमय दुर्ग भी कहते हैं।

- इसे जयपुर का संकटमोचक किला कहते हैं।
- विजयगढ़ी : राजनैतिक जेल, सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई (चीमाजी) विजयसिंह को यहां गिरफ्तार करके रखा था, इस कारण इसका नाम विजयगढ़ी पड़ गया।

नाहरगढ़ का किला :

- इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।

जगतसिंह II की प्रेमिका रसकपूर को यहीं गिरफ्तार करके रखा गया था।

सवाई माधोसिंह II ने अपनी 9 पासी / पासवानों के लिए 9 एक जैसे महल बनवाए।

- इसे जयपुर का पहरेदार किला कहते हैं।
- प्रारम्भ में इसका नाम सुदर्शनगढ़ था, बाद में नाहरसिंह भौमियां जी के नाम पर इसका नाम नाहरगढ़ पड़ गया।

बाला किला :

- अलवर जिले में स्थित है।
- निकुम्भ चौहानों ने इसका निर्माण करवाया था।
- कोकिल देव के बेटे अलघुराय ने इसका पुनर्निमाण करवाया था।
- हसन खां मेवाती ने इसकी ~~पुनर्निर्माण~~ मरम्मत करवायी।
- इसमें — { निकुम्भ महल, जल महल
- जहांगीर इस किले में ठहरा था। इसलिए इसे सलीम महल भी कहते हैं।
- करणी माता का मंदिर बना हुआ है। (बख्तावर सिंह)

तारागढ़ (अजमेर) :

- इस किले का निर्माण चौहान शासक अजयराज ने करवाया।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम तारागढ़ रख दिया।
- पृथ्वीराज चौहान का स्मारक बना हुआ है। पृथ्वीराज चौहान के घोड़े

नारयरम्भा का स्मारक बना हुआ है।

- मीरान साहब की दरगाह बनी हुयी है।
- यह किला मराठों के अधिकार में भी रहा था।
- इस किले में नाना साहब का झालरा बना हुआ है।
- मराठों से यह किला अंग्रेजों ने छीन लिया
- विलियम बैंटिक ने इसे 'आरोग्य सदन' में बदल दिया।
- दारा शिकोह ने यहां शरण ली थी।
- राठी रानी उमा दे ने भी अपना कुछ समय यहां बिताया था।
- हिंजडे की मजार बनी हुयी है।
- इसे राज. का जिब्राल्टर कहते हैं।
- गढ़ बीठली किला भी कहते हैं। (बीठली पहाड़ी, शाहजहां का सामन्त विट्ठल राज गौड़ने पुनर्निमाण करवाया)

अकबर का किला :

- 1570 A.D. में ख्वाजा मुइनदीन के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए अकबर ने इस किले का निर्माण करवाया।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले यहां पर युद्ध की अंतिम योजना बनायी गयी थी।
- जहांगीर मेवाड़ अभियान के दौरान तीन साल यहां ठहरा था।
- 10 Jan. 1616 को 'टॉमस रो' जहांगीर से मिलता है।
- इस महल को अकबर का दौलतखाना भी कहते हैं।
- अंग्रेजों ने इसे शस्त्रागार में बदल दिया था, इसलिए इसे मैगजीन का किला भी कहते हैं।
- इसमें राजपूताना म्यूजियम बना हुआ है।

चुरु का किला : (कुशाल सिंह)

- इस किले का निर्माण चुरु के ठाकुर कुशाल सिंह ने करवाया था।
- 1815 A.D. में बीकानेर के राजा सूरत सिंह ने यहां आक्रमण किया, उस समय चुरु का ठाकुर स्योजी सिंह (शिव जी सिंह) था।
- इस आक्रमण के समय किले में सीसा समाप्त होने पर चांदी के गोले दागे गये थे (बीकानेर का सेनापति - अमरचन्द सुराणा)

"बीको फीको पड़ गयो, बण गोरा हमगीर।
चांदी गोळा चालिया, आ चूरु री तासीर॥"

भरतपुर का किला (लोहागढ़)

- 1733 A.D. में सूरजमल ने इस किले का निर्माण करवाया।
- भरतपुर के राजा जवाहर सिंह ने इस किले में दिल्ली आक्रमण से लूट कर लाए हुये अष्ट धातु के दरवाजे लगवाए। तथा इस जीत की स्मृति में किले में जवाहर बुर्ज बनवायी।
- महाराजा रणजीत सिंह ने जसवंत राव होल्कर को इस किले में शरण दी थी।
- अनेक प्रयासों के बावजूद अंग्रेज इस किले को जीत नहीं सके, इसी कारण भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता है।
- रणजीत सिंह ने इस जीत की स्मृति में 'फतेह बुर्ज' का निर्माण करवाया।
- चार्ल्स मेटकॉफ ने अंग्रेजो की इस विफलता पर कहा था –

"अंग्रेजो की प्रतिष्ठा भरतपुर के दुर्भाग्यपूर्ण घेरे में दबकर रह गई।"

- इसी किले के बारे में कहा जाता है —

"आठ फिरंगी नौ गोरा,
लड़े जाट का दो छोरा ॥"
"(दुर्जनलाल और माधोसिंह)

- किशोरी महल
  दादी मां का महल
  वजीर की कोठी
  गंगा मंदिर
  लक्ष्मण मंदिर

बयाना का किला :

- इस किले का निर्माण विजयपाल ने करवाया था।
- इसे बादशाह का किला
  बाणासुर किला
  विजय मंदिर गढ़ ; के नाम से जाना जाता है।
- खानवा के युद्ध के बाद बाबर इस किले में आया था।
- इसमें - लोदी मीनार
  अकबर की छतरी
  जहांगीरी दरवाजा
  सादुल्ला सराय
  दाउद खां की मीनार
- बयाना में समुद्रगुप्त ने विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- रानी चित्रलेखा (समुद्रगुप्त के सामंत की पत्नी) ने ऊषा मंदिर का निर्माण करवाया ।
- समुन्द्रगुप्त के सामन्त विष्णुवर्धन ने भीमलाट / ऊषालाट का निर्माण करवाया था।

तारागढ़ (बूंदी)

- इस किले का निर्माण हाड़ा शासक बरसिंह ने करवाया था।
- दूर से देखने पर यह तारे के समान दिखायी देता है।
- इसमें - सुख महल
  छत्र महल
  रानी जी की बावड़ी
  84 खम्भों की छतरी
  फूल सागर तालाब

सूरसागर तालाब - बूंदी / बीकानेर

- बूंदी का तारागढ़ किला अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- रूडयार्ड किपलिंग - इसे देखकर लगता है कि इसका भूतों द्वारा निर्माण करवाया गया है।
- जेम्स टॉड - बूंदी के महलों को राज. का सर्वश्रेष्ठ महल बताता है।
- 'गर्भ गुंजन' तोप रखी हुयी है।

मांडलगढ़ : (बनास, बेड़च व मेनाल नदियों के संगम पर)

- वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है।
- इस किले का निर्माण चांदना / चानणा गुर्जर ने माण्डिया भील की स्मृति में करवाया था। (पुर्ननिर्माण - महाराणा कुम्भा)
- मांडलगढ़ में जगन्नाथ कछवाहा की 32 खम्भों की छतरी बनी हुयी है।
- राणा सांगा की छतरी भी यहीं स्थित है।

- मानसिंह हल्दीघाटी युद्ध से पहले माँडलगढ़ में रुकता है।
- इस में उंडेश्वर महादेव का मंदिर बना हुआ है।
- शीतला माता का मंदिर भी है।
- माँडलगढ़ मण्डल आकृति में बना हुआ है, इसलिए भी इसे माँडलगढ़ कहते हैं।

अचलगढ़ :

- इस किले का निर्माण परमार शासकों ने करवाया था।
- महाराणा कुम्भा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया व कुम्भा स्वामी का मंदिर बनवाया।
- सावन भादो की मूर्तियां (कुम्भा - ऊदा) लगी हुयी हैं।
- अचलेश्वर स्वामी का मंदिर है, इसमें शिव जी के अंगूठे की पूजा की जाती है। इस मंदिर के ठीक सामने दूरसा आढ़ा की मूर्ति लगी हुयी है।
- अचलगढ़ को 'भँवराथल' कहते हैं, क्यों कि महमूद बेगडा के आक्रमण के समय यहाँ पर मधुमक्खियों ने उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया था।

शेरगढ़ :

- यह किला बारां जिले में परवन नदी के किनारे स्थित है। इसे कोषवर्धन गढ़ भी कहते हैं। (जल दुर्ग)

शेरगढ़ (धौलपुर) :

- इसका निर्माण कुषाण काल में हुआ था।
  (मालदेव नामक सामन्त ने)
- शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रख दिया था।
- इस किले में सैय्यद हुसैन की दरगाह है।
- हुनहुंकार तोप भी इसी किले में स्थित है।

* धौलपुर के सिक्कों को 'तमंचाशाही' कहते हैं।

- इस शहर किले में भारत का सबसे बड़ा घंटाघर है।
- धौलपुर में कमलबाग है, जिसका बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में जिक्र है।
- राजस्थान, मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश की सीमाओं पर स्थित।

कोटा का किला : (माधोसिंह, परकोटा)

- जैत्रसिंह (बूंदी का राजा) ने यहां एक गुलाब महल का निर्माण करवाया। कालान्तर में माधोसिंह ने इसे कोटा के किले के रूप में विकसित किया।
- जेम्स टॉड के अनुसार इस किले का परकोटा आगरा के किले के बाद सबसे बड़ा है।
- झाला हवेली - भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध

कांकणबाड़ी का किला : (अलवर, मिर्जा राजा जयसिंह)

- अलवर जिले में स्थित मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने दारा शिकोह (बड़े भाई) को यहां बंधक बना कर रखा था।

शाहबाद का किला :

- बारां जिले में स्थित।
- मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया था।
- शेरशाह सूरी अपने कालिंजर अभियान के दौरान इस पर अधिकार कर लेता है व इसका नाम सलीमाबाद कर देता है।
- इसमें एक बादल महल बना हुआ है।
  (अललपंख पत्नी - बादल महल के दरवाजे पर)
- इसमें नवलबान तोप रखी हुयी है।

चौमूं का किला :

- जयपुर जिले में स्थित।
- इसे धा धाराग‍ढ़, रघुनाथगढ़, चौमुंहागढ़ भी कहते हैं।
- इसका निर्माण करणसिंह ने करवाया था।
- इसमें एक हवा मंदिर (आतिथ्य स्वागत) बना हुआ है।

दौसा का किला :

- देवगिरी पहाडी पर बना हुआ है।
- छाजले की आकृति का बना हुआ है।
- दौसा कछवाओं की पहली राजधानी थी।

माधोराजपुरा का किला :

- ~~सवाई माधोपुर~~ जयपुर जिले में स्थित। (फागी तहसील के पास)

जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह ने मराठों पर जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था।

- यह किला कछवाहों की नरूका शाखा के अधीन रहा था। यहां का भारत सिंह नरूका, अमीर खां पिण्डारी की बेगमों को बंधक बना कर लाता है।

फतेहपुर का किला :

- सीकर जिले में स्थित।
- 1453 में फतेहपुर के नबाब फतेह खां कायमखानी ने निर्माण करवाया था।
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह बनी हुयी है।
- बीकानेर के राजा लूणकरण ने यहां आक्रमण किया था।

* सरस्वती पुस्तकालय - फतेहपुर

नीमराणा का किला :

- अलवर जिले में स्थित।
- इसे पंचमहल भी कहते हैं।

कुचामन का किला : (निर्माण = मेड़तिया शासक - जालिम सिंह)

- नागौर के जिले में स्थित।
- इसे जागीरी किलों का सिरमौर कहते हैं।

गौर का किला :

- इसका निर्माण चौहान शासक सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने करवाया था।
- इसे 'अहिच्छत्रगढ़' दुर्ग भी कहते हैं।
- अमर सिंह राठौड़ की वीरता के लिए प्रसिद्ध है।

↓

(16 खंभों की छतरी) (2007 - Award of Excellence to this fort)

• इसे 2013 का आगा खां अवार्ड दिया गया है।

भैंसरोड़गढ़ का किला :- (एक व्यापारी द्वारा निर्मित)

• चम्बल व बामनी नदियों के संगम पर चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
• इसे राज० का वेल्लोर कहते हैं। (जल दुर्ग)

मालकोट का किला :

• मेड़ता (नागौर) के किले को मालकोट का किला कहते हैं।
• निर्माण - मालदेव ने।

मोहनगढ़ का किला :

• जैसलमेर जिले में स्थित।
• निर्माण - जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह के समय।
• भारत का अंतिम किला है।

तिमनगढ़ का किला :

• त्रिभुवनगढ़ भी कहते हैं।
• ननद - भौजाई का कुआं।

राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ

गैटोर की छतरियां :

- यहां पर जयपुर के शासकों की छतरियां है।
- सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह II तक।
- ईश्वरी सिंह की छतरी यहां स्थित नहीं है, ईश्वरी सिंह की छतरी ईसरलाट के पास ही है।

आहड़ :

- यहां पर मेवाड़ के शासकों की छतरियां है।
- सबसे पहले यहां अमरसिंह I की छतरी बनायी गयी थी।
  इस स्थान को महासतियां कहते हैं।

पंचकुण्ड (मंडोर) :

- यहां जोधपुर के राजाओं की छतरियां हैं।

* **जसवन्त थड़ा :** जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह II का स्मारक, इसका निर्माण उनके बेटे सरदार सिंह ने करवाया था। इसे राज. का ताजमहल कहते हैं।
  ↓
  मेहरानगढ़ किले के पास

कागा की छतरियां : यहां जोधपुर के सामन्तो की छतरियां बनायी जाती हैं।
- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह I के प्रधानमंत्री रामसिंह कुम्पावत की 16 खम्भों की छतरी बनी है।

देवी कुंड सागर (बीकानेर)

- यहां बीकानेर के राजाओं की छतरियां बनी हुयी है।
- इनमें राव कल्याण मल की छतरी अधिक प्रसिद्ध है।

बड़ा बाग (जैसलमेर) - (महारावल जैतसिंह की छतरी)

- यहां जैसलमेर के राजाओं की छतरियां बनी हुयी है।

क्षार बाग

- कोटा के राजाओं की छतरियां बनी हुयी हैं।
- क्षार बाग की छतरियों को छत्रविलास बाग की छतरियां भी कहते हैं।

पालीवाल

- जैसलमेर

- बन्जारों की छतरी - लालसोट (दौसा)
- नाथों की छतरी - जालौर
  ↳(छतरी पर तोता बना हुआ है।)
- मिश्रजी की छतरी - अलवर जिले के नेहड़ा गांव में स्थित।
  - भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
  - दशावतारों के चित्र बने हुये हैं।
- कुत्ते की छतरी - जोधपुर - ? (सवाई माधोपुर)

गोपाल सिंह जी की छतरी - करौली

→ गंगा बाई की छतरी : गंगापुर सिटी (भीलवाड़ा)

• महादजी सिन्धिया की पत्नी

→ रैदास जी, कल्ला जी की छतरी – चित्तौड़गढ़ में

* राजस्थान की प्रमुख हवेलियां व महल :

(विश्व की एकमात्र हवेली, जिसकी खिड़कियां पत्थर की बनी हुयी है।)

* जैसलमेर : ① पटवों की हवेली – जिसका निर्माण गुमानचन्द बाफना ने करवाया।

② सालिम सिंह की हवेली – 9 मंजिला हवेली, जिसकी ऊपर की दो मंजिले लकड़ी की बनी हुयी है।

③ नथमल की हवेली – वास्तुकार : हाथी व लालू

④ सर्वोत्तम विलास पैलेस –

* शेखावाटी :

① सोने-चांदी की हवेली – महनसर (झुन्झुनु)

② भगतों की हवेली – नवलगढ़ (झुन्झुनु)

③ रामनाथ गोयनका की हवेली – मंडावा (झुन्झुनु)

④ पसारी की हवेली – श्रीमाधोपुर (सीकर)

⑤ माल जी का कमरा – चुरू

⑥ मन्त्रियों की हवेली – चुरू

⑦ सुराणों की हवेली – चुरू (चुरू का हवामहल)

⑧ खेतड़ी महल – झुन्झुनु (राज्य का दूसरा हवामहल)

* नवलगढ़ : सर्वाधिक हवेलियाँ
  - हवेलियों का नगर
  - शेखावाटी की स्वर्ण नगरी।

* कोटा :
  - गुलाब महल
  - अबली मीणी का महल
  - अभेड़ा महल
  - हवा महल - रामसिंह II
  - जगमंदिर - दुर्जनसाल ने अपनी रानी बृज कंवर के लिए बनाया।

* जोधपुर :
  (1) बड़े मियां की हवेली
  (2) राखी हवेली
  (3) पोकरण हवेली
  (4) एक खम्भा महल - महाराजा अजीत सिंह ने बनवाया था।
  (5) राई का बाग पैलेस - जसवंत दे (जसवंत I की रानी)
  (6) उम्मेद पैलेस - छीतर पैलेस भी कहते हैं।
      - इसका निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान कराया गया था।
      - यह विश्व (एशिया) का सबसे बड़ा आवासीय महल है।
  (7) अजीत भवन पैलेस - राज्य का पहला हेरिटेज होटल
  (8) पुष्य हवेली : विश्व की एकमात्र हवेली, जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में बनी।

डूंगरपुर :

(1) एक थम्बिया महल :

(2) जूना महल

अलवर :

(1) हवा बंगला ; तिजारा

(2) विनय विलास पैलेस ; सिटी पैलेस (अलवर)

टोंक :

* (1) सुनहरी कोठी – (इस्लामिक शैली में निर्मित)

(2) राजमहल ; देवली

(3) मुबारक महल

जयपुर :

(1) सलीम मंजिल

(2) प्यारे मियां की हवेली

बीकानेर :

(1) रामपुरिया हवेली

(2) बच्छावतों की हवेली – कर्णसिंह बच्छावत ने बनवायी थी।

(3) गूँधड़ा हवेली

(4) मोहता हवेली (5) गजनेर पैलेस (गजसिंह)

राज० की जनजातियाँ

(1) कंजर :

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय ; चोरी करना
- चोरी करने से पूर्व आशीर्वाद (देवता से) मांगते है, जिसे ये पाती मांगना कहते हैं।
- जोगणिया माता (~~भीलवाड़ा~~ चित्तौड़गढ़) - कंजरो की कुल देवी

  चौथमाता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)

  रक्त दंजी माता - बूंदी

  हनुमान जी - आराध्य देव
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते हैं।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते हैं।
- मोर का मांस खाते हैं।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएं चकरी नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा ~~कहते~~ पहनते हैं, जिसे खूसनी कहते हैं।

(2) कथौड़ी :

- उदयपुर जिले में अधिक संख्या।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के हैं।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते हैं, इसलिये कथौड़ी कहते हैं।

- कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
- कथौड़ी शराब पीते हैं।
- महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर शराब पीती हैं।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती हैं।
- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी '<u>फड़का</u>' कहलाती है।
- इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- प्रमुख देवता – { डूंगर देव / बाघ देव / भारी माता / कंसारी माता
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।
- इनको 'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है। पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता है।
- कथौड़ी पुरुषों द्वारा '<u>मावलिया नृत्य</u>' नवरात्रि के दिनों में किया जाता है। और महिलाएं होली पर होली नृत्य करती हैं।
- कथौड़ी झोंपड़े को '<u>खोलरा</u>' कहते हैं।

<u>डामोर</u> : (0.7%)

- मुख्यतः उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा।
  (डूंगरपुर → सर्वाधिक - डामोर)
- डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति को डामरिया क्षेत्र कहते हैं।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है। कृषि व पशुपालन करते हैं।
- डामोर अपनी उत्पत्ति '<u>राजपूतों</u>' से मानते हैं।
- डामोर पुरुष महिलाओं के समान गहने पहनते हैं।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाड़िया' कहलाता है।
- होला बावजी का मेला ; पंचमहल (गुजरात)
  ग्यारस की रेवड़ी का मेला ; डूंगरपुर (सितम्बर माह में)

- मुखिया - मुखी
- डामोर बहुविवाह करते हैं; विवाह का आधार 'वधू मूल्य' कहते हैं।

सांसी :

- भरतपुर जिले में अधिक संख्या में।
- इनकी उत्पत्ति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियां हैं – ① बीजा
  ② माला

- *सांसी विधवा विवाह नहीं करते हैं।
- 'माखर बावजी' (कुलदेवता) की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते हैं। कसम खाते समय ये एक हाथ में कुल्हाड़ी व दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते हैं। (माखर बावजी के मंदिर में)
- लड़की को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे कूकड़ी रस्म कहते हैं।
- सिकोतरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।
  अशोक जाडेजा (सांसी) - डाक्टर (गुजरात)

गरासिया : (2.7%)

- सिरोही - आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में
- पाली - बाली तहसील
- गरासिया महिलाएं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- प्रेम विवाह को अधिक तवज्जो दी जाती है।
- विवाह के प्रकार :
  (1) मोर बांधिया विवाह (परम्परागत)
  (2) पहरावणा विवाह
  (3) ताणना विवाह
  (पैसे देकर - छीनकर)

(4) मेलबी विवाह (बाल-विवाह के बाद बड़ी होने पर लड़की को ससुराल छोड़ना।)

(5) खेवणो विवाह (शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाते हैं।)
इसे नाता विवाह भी कहते हैं।

(6) सेवा विवाह (घर जवाई)

- गरासिये के मुखिये को सहलोत या पालवी कहते हैं।
- सफेद पशु व मोर को पवित्र मानते हैं।
- नक्की झील में अस्थियों का विसर्जन करते हैं। (12वें दिन - अंतिम संस्कार)
- गरासिया, राज्य की तीसरी बड़ी जनजाति है।
- गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :

मोटीन्यात / ऊँचली न्यात - उच्च श्रेणी के लोग होते हैं, जिन्हें बाबोर-हाइया कहते हैं।
- नेनकी न्यात - इसमें शामिल लोगों को माड़िरिया कहा जाता है।
- निचली न्यात

- जब कोई गरासिया पुरुष भील महिला से शादी कर लेता है, तो उसे भील गरासिया कहते हैं। और जब कोई गरासिया महिला भील पुरुष से शादी कर लेती है, तो उसे गमेती गरासिया कहते हैं।
- हूरे / मोगी - मृतकों की याद में बनाए जाने वाले स्मारक। (कार्तिक पूर्णिमा के दिन विधिवत प्रतिष्ठापित करते हैं।)
- हेलरू - गरासियों की सहकारी संस्था
- गरासियों के प्रमुख मेले :

(1) सियावा गाँव का मेला - गणगौर (इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते हैं।)

(2) कोटेश्वर मेला - यह अम्बा जी में भरता है।

(3) चेतर-विचितर मेला - देलवाड़ा

• अनाज भंडार की कोठियाँ - साहरी

सहरिया : (1%)

- राज. की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)
- बारां जिले के किशनगंज व शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- सहरियों का मुखिया - कोतवाल
- बड़े गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
  छोटी बस्ती को 'सहरौल' कहा जाता है।
- गांव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र टालिया / हथाई (हपाई) कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है -
  (1) पंचताई - पांच गांवो की पंचायती
  (2) एकदसिया - 11 गांवो की पंचायती
  (3) चौरासियां - 84 गांवो की पंचायती
  ↓
  चौरासी गांवो की सभा सीताबाड़ी के वाल्मीकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मीकि' को अपना आदि पुरूष मानते हैं।
- सहरियों की कुल देवी - कोड़िया माता
- तेजाजी व भैरव की भी पूजा करते हैं।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
  होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर सक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से 'लेंगी' खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आल्हा व लहंगी गीत गाया जाता है।
- कपिलधारा का मेला - कार्तिक पूर्णिमा

- सीताबाड़ी का मेला – ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा
  (इसे सहरियों का कुम्भ कहते हैं।)
- सहरिया महिलाएं गोदना गुदवाती हैं, पर पुरुषों को मनाही है।
- धारी संस्कार : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों व राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह जैसी आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेडों पर घर बनाकर रहते हैं। इसे '**गोपना**' कहते हैं।
- अनाज व घरेलु सामान रखने की छोटी कोठी – कुसिली
  बडी कोठी – भडेली

भील (56%)

- राज• की सबसे प्राचीन जनजाति।
- भील शब्द की उत्पत्ति '<u>बील</u>' शब्द से हुयी है, जिसका अर्थ है, तीर-कमान।
- भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है।
- भील, राज• की दूसरी सबसे बडी जनजाति है।
- उदयपुर जिले में सर्वाधिक संकेन्द्रण।
- भील, टोटम को अपना कुल देवता मानते हैं।
- पेड - पौधो को टोटम का प्रतीक माना जाता है।
- <u>केसरियानाथजी</u> (ऋषभ देव) की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते हैं।
- 'फाइरे - फाइरे', भीलों का रणघोष है।
- <u>हाथीवेण्डो विवाह</u> : पेड-पौधों को साक्षी मानकर किया जाने वाला विवाह। (हरज व लाडी)
- <u>मंगेरिया त्यौहार</u> के अवसर पर शादी की जाती है।

भील बाल विवाह नहीं करते हैं।

तलाक को 'छेड़ा फाड़ना' कहा जाता है।

यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ रहती है तो उस पुरुष को पूर्व पति को झगड़ा राशि देनी पड़ती है।

विवाह के समय दूल्हे द्वारा अपने ससुराल में मराड़ी माता का चित्र बनाना होता है।

मराड़ी माता को विवाह की देवी कहते हैं।

भील पुरुषों द्वारा 'हाथीमना नृत्य' किया जाता है।

होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है।

गवरी - भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य है, जो रक्षाबन्धन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।

हेलमो - भीलों द्वारा मिल-जुल कर किया जाने वाला कार्य।

भीलों के प्रमुख मेले -

(1) घोटिया अम्बा मेला - बांसवाड़ा

(2) बेणेश्वर मेला - डूंगरपुर (माघ पूर्णिमा) - नवाटापुरा गाँव में

भील, स्थानान्तरित कृषि करते हैं। यह दो प्रकार की होती है -

- दजिया - मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- चिमाता - पहाड़ी भागों में।

भीलों का मुखिया गमेती कहलाता है।

मेवाड़ के राजचिन्ह में भील का चित्र बना हुआ है। मेवाड़ के महाराणा के राजतिलक में भी भील सरदार मुख्य भूमिका निभाता था।

पाखरिया - किसी सैनिक के घोड़े को मारने वाला

मीणा : (41%)

- राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति।
- सर्वाधिक संख्या – जयपुर में।
- आमेर व बूंदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था।
- आमेर के राजा का राजतिलक मीणा करते थे।
- सर्वाधिक शिक्षित जनजाति।
- मीणाओं में दो प्रमुख वर्ग हैं – (1) जमींदार मीणा
  (2) चौकीदार मीणा
- गौतमेश्वर / भूरिया बाबा मीणाओं के प्रमुख आराध्य देव। - (वैशाख पूर्णिमा) (13 April - 13 May)
- मीणा जाति के देवताओं को बुस देवता कहा जाता है।
  पुरुष → पटेल

ओड :

- यह जनजाति तालाबों में मिट्टी खोदने का कार्य करती है।
- जसमल ओड़ण : राव खंगार (गुजरात) के द्वारा जबरदस्ती करने पर अग्नि में कूद जाती है।
  ; शान्ता गान्धी ने जसमल ओडन नामक नाटक लिखा है।

→ राज० में भारत की कुल जनजाति का 13.5% निवास करता है।

→ राज० में सर्वाधिक जनजाति - उदयपुर जिले में।

→ राज० में प्रतिशत के आधार पर सर्वाधिक जनजाति - बांसवाड़ा (76%)

→ न्यूनतम जनसंख्या - बीकानेर

→ प्रतिशत के आधार पर न्यूनतम संख्या - नागौर (0.3%)

→ राज० का ~~जनसंख्या~~ जनजाति की दृष्टि से भारत में छठा स्थान है।
  - (मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, राजस्थान)

राज॰ की हस्तकलाएँ

थेवा कला :

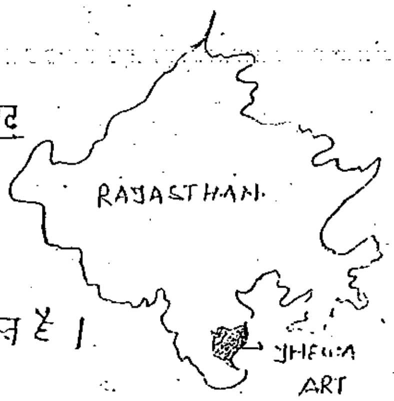

- विश्व में थेवा कला का एकमात्र केन्द्र - प्रतापगढ़
- थेवा कला - काँच में सोने का चित्रांकन।
- रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है।
- प्रतापगढ़ का सोनी परिवार, इस कला में सिद्धहस्त है।
- 'नाथू जी सोनी' ने इस कला को शुरू किया था।
- वर्तमान में गिरीश कुमार इस कला को आगे बढ़ा रहे हैं।
- जस्टिन वकी ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी।

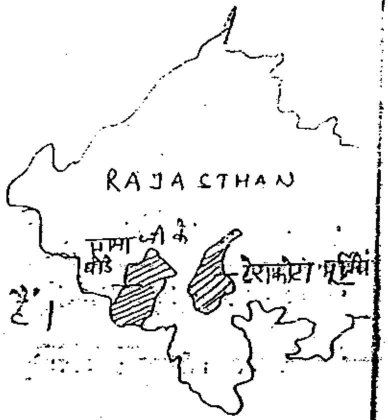

टेराकोटा :

- पकाई हुई मिट्टी से मूर्तियां व खिलौने बनाए जाते हैं।
- मिट्टी को 800°c temp. पर गर्म किया जाता है।
- राजसमन्द का मोलेला गांव टेराकोटा मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- जालौर जिले का हरजी गांव मामा जी के घोड़े बनाये जाते हैं।
- 'मोहनलाल कुम्हार' को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।
- बड़ोपल (हनुमानगढ़), एक पुरातात्विक स्थल है, जहां से टेराकोटा मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं, जो बीकानेर संग्रहालय में रखी हुयी हैं।

ब्लू पॉटरी :

- चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंगो का अंकन।
- जयपुर इसका प्रमुख केन्द्र है।
- जयपुर महाराजा रामसिंह के समय चूड़ामण व कालू कुम्हार को भोला नामक कारीगर से प्रशिक्षण लेने के लिए दिल्ली भेजा।
- वर्तमान में इसके प्रमुख कलाकार कृपाल सिंह शेखावत है, जिन्हें इसके लिए पद्म श्री से नवाजा जा चुका है।
- कृपाल सिंह जी ने नीले रंग के अतिरिक्त 25 से अधिक अन्य रंगो का प्रयोग किया, जो ब्लू पॉटरी की कृपाल शैली कहलाती है।

मीनाकारी :

- सोने पर रंग चढ़ाने की कला।
- जयपुर मीनाकारी के लिए प्रसिद्ध है।
- महाराजा मानसिंह इसे लाहौर से लेकर आए थे।
- कुदरत सिंह को मीनाकारी के लिए पद्म श्री मिल चुका है।
- अन्य केन्द्र - प्रतापगढ़, कोटा, बीकानेर।

उस्ता कला :

- ऊँट की खाल पर सोने की चित्रकारी।
- महाराजा अनूपसिंह (बीकानेर), अली रजा व रुक्नुद्दीन को लाहौर से लेकर आए थे।
- बीकानेर, उस्ता कला का प्रमुख केन्द्र है।
- बीकानेर के हिसामुद्दीन उस्ता को पद्म श्री मिल चुका है।

• उस्ता कला सिखाने के लिए बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर स्थापित किया गया है।

रंगाई- छपाई :

(1) बाड़मेर - अजरक प्रिन्ट - नीले रंग का अधिक प्रयोग।
मलीर प्रिन्ट - काले व कत्थई रंग का अधिक प्रयोग।

(2) सांगानेर - सांगानेरी प्रिन्ट (काला व लाल रंग)
↓
मुन्ना लाल गोयल ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलायी।

बगरू प्रिन्ट : इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।

(3) चित्तौड़गढ़ - दाबू प्रिन्ट
आजम प्रिन्ट - गाड़िया लुहारों की स्त्रियों के कपड़ों की छपाई।
जाजम प्रिन्ट

(4)

बंधेज :

• जयपुर में प्रसिद्ध है।
• 'TIE AND DYE' के नाम से प्रसिद्ध।

→ चूनड़ी - जोधपुर
* पीमचा - जयपुर
लड़के के जन्म पर - पीला पोमचा
लड़की की जन्म पर - गुलाबी पोमचा

→ तलवार - सिरोही

→ लोहे के औजार - नागौर

→ मोजड़ियाँ - भीनमाल (जालौर)
बड़गाँव (

→ पेच वर्क - शेखावाटी

→ मिरर वर्क - जैसलमेर

→ फड़ चित्रण - शाहपुरा (भीलवाड़ा)
↓
शाहपुरा का जोशी परिवार फड़ चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।
(श्रीलाल जोशी - प्रमुख कलाकार)

- पार्वती जोशी, भारत की पहली महिला फड़ चितेरी है।

→ बादला - जोधपुर (पानी को ठंडा रखने का बर्तन)

→ जस्ते की मूर्तियां - जोधपुर

→ रमकड़ा उद्योग (खिलौने) - गलियाकोट (डूंगरपुर)

→ काष्ठ कला - बस्सी (चित्तौड़गढ़)
(देवताओं के मंदिर, मूर्तियां)

→ तारकशी के जेवर - नाथद्वारा (राजसमंद)
(चांदी के पतले तारों द्वारा निर्मित जेवर)

→ गोटा किनारी - खंडेला (सीकर)
(किरण, बांकड़ी, लप्पा, लप्पी)

→ खस के बने पानदान - सवाई माधोपुर

→ कोटा डोरिया/मसूरिया - कैथून (कोटा)
मांगरोल (बारां)

- जालिम सिंह झाला सर्वप्रथम महमूद मंसूर नामक व्यक्ति को लेकर आये थे, इसलिए नाम मसूरिया पड़ा।
- वर्तमान में श्रीमती जैनब इसकी प्रमुख कारीगर है।
- इस कपड़े में चौकोर खाने बने होते हैं।

→ लहरिया – जयपुर और पाली।

→ गोरजटह – जसोल (बाड़मेर)

→ गलीचे / नमदे – टोंक,
जयपुर
बीकानेर

- जयपुर व बीकानेर की जेलों में बने गलीचे प्रसिद्ध है।

दरियाँ – सालावास (जोधपुर)
लवाण (दौसा)
✓ टांकला (नागौर)

कागजी बर्तनी – अलवर

आरा - तारी – सिरोही

जड़ाई – जयपुर

पिछवाई – नाथद्वारा

पाव रजाई – जयपुर

लाख का काम – जयपुर

हाथी दांत – जोधपुर
पाली

कठपुतली – उदयपुर

→ संगमरमर की मूर्तियां - जयपुर

↓

अर्जुन लाल प्रजापत को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।

→ जरदोजी - जयपुर

→ पेपरमेसी - जयपुर

→ कागज से बनी वस्तुओं के लिए सांगानेर प्रसिद्ध है।

→ ब्लैक पॉटरी - कोटा

→ कोफ्तगिरी - लोहे की वस्तुओं में सोने की कारीगरी।

- जयपुर
  अलवर

- यह कला सीरिया से भारत आयी थी।

→ तहनिशा - पीतल पर सोने की कारीगरी

* अलवर

→ नसवार - ब्यावर

→ खेल का सामान - हनुमानगढ़

→ जेम्स एंड ज्वैलरी - जयपुर

→ गरासियों की फाग (ओढ़नी) - सोजत (पाली)

→ मेंहदी - सोजत

→ पशु पक्षियों की कलाकृति - बू - नरावता (नागौर)

→ गोल्डन पेंटिंग - कुचामन एवं मारोठ (नागौर)

→ आलागीला कारीगरी - बीकानेर

→ पत्थर मूर्तिकला - तलवाड़ा (बांसवाड़ा)

→ मलमल - जोधपुर

→ चन्दन की मलयागीरी लकड़ी पर खुदाई - चुरु

→ काष्ठ पर कलात्मक शिल्प - जेठाना (डूंगरपुर)

→ ऊनी कम्बल - जैसलमेर

→ खेसले - लेटा (जालौर)

* हस्त शिल्प कागज राष्ट्रीय संस्थान - Sanganer (Jaipur)
↓
UNDP तथा खादी व ग्रामोद्योग आयोग के प्रयासों से।

* हस्तशिल्प डिजाइन एवं विकास केन्द्र - Jaipur

* राज्य का पहला 'अरबन ~~हाट~~ हाट' जोधपुर में स्थापित किया गया है।
(हस्तशिल्पियों को उनका पूरा मूल्य मिल सके।)

* राज० में शिल्प ग्राम -
(1) उदयपुर
(2) पाल (जोधपुर)
(3) पुष्कर (2002)
(4) सवाई माधोपुर (2003-04)

राजस्थान के त्यौहार

- चैत्र — वसन्त ऋतु
- बैशाख, ज्येष्ठ — ग्रीष्म
- आषाढ़, श्रावण — वर्षा
- भाद्रपद, आश्विन — शरद ऋतु
- कार्तिक, मार्गशीर्ष — हेमन्त ऋतु
- पौष, माघ — शिशिर ऋतु
- फाल्गुन — वसन्त ऋतु

- विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल एकम् से शुरु होता है।
- अंग्रेजी महिनों से बराबर करने के लिए प्रत्येक ~~चार~~ तीसरे वर्ष ~~बाद~~ एक महीना दो बार गिना जाता है, जिसे अधिकमास कहते हैं।

श्रावण :

कृष्ण पक्ष

- पंचमी - नागपंचमी (सांपों को दूध पिलाया जाता है।)
- नवमी - निड़री नवमी (नेवले की पूजा की जाती है।)

शुक्ल पक्ष

(1) तृतीया (तीज) - इसे छोटी तीज कहते हैं।
- इस तीज से त्यौहारों की शुरुआत मानी जाती है, तथा गणगौर तक जाकर मुख्य त्यौहार समाप्त हो जाते हैं।

तीज त्यौहारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर।

अमावस्या –

हरियाली अमावस्या

* अजमेर के मांगलियावास में 'कल्प वृक्ष' का मेला भरता है।

- जयपुर की तीज की सवारी प्रसिद्ध है।
- शादी के बाद की पहली तीज, लड़की पीहर में मनाती है।
- तीज से एक दिन पहले लड़की के ससुराल पक्ष से सिंजारा आता है।
- तीज पर नवविवाहिताएं लहरिया पहनती है।
- बीकानेर का सावन अच्छा माना जाता है।

'सियाळो जैपर भलो, उनाळो अजमेर।
नागाणो नित री भलो, सावण बीकानेर॥'

② पूर्णिमा : रक्षाबन्धन

- इसको नारियल पूर्णिमा कहते हैं।
- श्रवण कुमार की पूजा की जाती है।
- रक्षाबन्धन के बाद अमरनाथ के दर्शन बंद हो जाते हैं।

भाद्रपद :

कृष्ण पक्ष

① तृतीया : – बड़ी तीज
कजली तीज
सातुड़ी तीज
बुढ़ी तीज

- बूंदी की कजली तीज प्रसिद्ध है।

② षष्ठी / छठ – ऊब छठ

शुक्ल पक्ष

① तृतीया - हरियाली तीज

② चतुर्थी - गणेशजी की चतुर्थी / शिव जी की चतुर्थी

- इस दिन रणथम्भौर में बड़ा मेला लगता है। इस दिन चांद नहीं देखते

* चतरा चौथ / कलंक चतुर्थी - है।

③ पंचमी – ऋषि पंचमी

· इस दिन लड़कियां निराहार व्रत रखती हैं व पूरे दिन खड़ी रहती हैं।

* हल षष्ठी - बलराम जयन्ती

पूजा करने वाले इस दिन गाय के दूध का सेवन नहीं करते हैं।

③ अष्टमी - जन्माष्टमी

· नरहड़ पीर का उर्स।

④ नवमी - गोगानवमी

⑤ द्वादशी / बारस - बछबारस

· बछड़े की पूजा की जाती है।

- पूर्ण अन्न खाया जाता है।

· चाकू का उपयोग नहीं किया जाता है।

⑥ अमावस्या - सतियां अमावस

· रानी सती का मेला भरता है।

* भाद्रपद में सर्वाधिक त्यौहार मनाए जाते हैं, इसलिए इसे बड़ा महीना कहते हैं।

· ब्राह्मणों व बणियों में इस दिन राखी बांधी जाती है।

· सप्त ऋषि की पूजा की जाती है।

· छोरड़ा (नागौर) में हरिराम जी का मेला भरता है।

④ अष्टमी - राधाष्टमी

· निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ सलेमाबाद (अजमेर) में इस दिन मेला भरता है।

⑤ दशमी - तेजादशमी

· खेजड़ली का वृक्ष मेला

· विश्वकर्मा जयन्ती - औजारों की पूजा की जाती है।

⑥ एकादशी

· रामदेव जी का मेला द्वितीया से एकादशी तक चलता है।

* भाद्रपद की दूज को 'बाबे री बीज' भी कहा जाता है। [भोजन थाली मेला - कामां भरतपुर]

* जल झूलनी ग्यारस :

भगवान श्रीकृष्ण (ठाकुर जी) को स्नान कराया जाता है।

⑦* चतुर्दशी - अनन्त चतुर्दशी

- गणेश विसर्जन

⑧ पूर्णिमा - श्राद्ध पक्ष शुरु होते हैं।

· इस दिन लड़कियां सांझी बनाती हैं। (गोबर की आकृति)

आश्विन :

कृष्ण पक्ष

श्राद्ध पक्ष - कृष्ण पक्ष की एकम् से अमावस्या तक श्राद्ध चलते हैं।

श्राद्ध पक्ष के अंतिम दिन (अमावस्या) को घम्बुड़ा व्रत करती हैं। (सांझी की पूजा करती हैं, जो कि श्राद्ध पक्ष के प्रत्येक दिन लड़कियां बनाती हैं।)

शुक्ल पक्ष

* एकम् -
  - नवरात्रा शुरु हो जाते हैं, इन्हें शरद / बड़े नवरात्रा कहा जाता है।
* षष्ठी को आमेर में शिला माता का मेला भरता है।
* अष्टमी : दुर्गाष्टमी (पश्चिम बंगाल विशेषकर)
* दशमी : दशहरा
  - खेजड़ी/शमी वृक्ष की पूजा की जाती है।
  - हथियारों की पूजा भी की जाती है।
  - इस दिन नीलटांस पक्षी (चिड़िया) के दर्शन शुभ माने जाते हैं।
  - कन्हैयालाल सेठिया ने 'नीलटांस' नामक कविता लिखी है।
  - कोटा का दशहरा प्रसिद्ध है। (भारत में मैसूर)
  - भरतपुर में नुमाइश मेला लगता है।
* पूर्णिमा : शरद पूर्णिमा
  (चन्द्रमा 16 कलाओं से परिपूर्ण होता है।)
  - इसे रास पूर्णिमा भी कहते हैं।
  - इस दिन मारवाड़-महोत्सव का समापन होता है।

कार्तिक पक्ष

कृष्ण पक्ष

* चतुर्थी - करवा चौथ

* अष्टमी - अहोई अष्टमी (संतान के लिए व्रत रखा जाता है।)
- तारों को देखकर व्रत खोल दिया जाता है।

* एकादशी - ~~तुलसी~~ रमा पूजा

* त्रयोदशी - धनतेरस
- ऋषि धन्वन्तरि की पूजा की जाती है।

* चतुर्दशी - रूप चौदस / छोटी दीपावली
- इस दिन यम की पूजा की जाती है।

* अमावस्या - दीपावली
- बणिये, इस दिन अपने बही - खाते बदलते हैं।
- दीपावली को भगवान महावीर, व दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस।

शुक्ल पक्ष

* एकम - गोवर्धन पूजा
- इस दिन नाथद्वारा में अन्नकूट महोत्सव शुरू हो जाता है।

* द्वितीया / भैया दूज -
- इस ~~दिन को भैया~~ यम दूज भी कहते हैं। (इस दिन चित्रगुप्त की पूजा होती है।)

* अष्टमी - गोपाष्टमी

* नवमी - आंवला नवमी / अक्षय नवमी

* एकादशी - देव उठनी ग्यारस / प्रबोधिनी एकादशी (तुलसी पूजा)

* पूर्णिमा - कार्तिक पूर्णिमा
- इस दिन गंगा स्नान का विशेष महत्त्व है।
- पुष्कर व कोलायत के मेले प्रसिद्ध है।
- इसे सत्यनारायण पूर्णिमा कहते हैं।
- गुरु नानक जयन्ती, इस दिन सिखों का कोलायत में मेला भरता है।

माघ

कृष्ण पक्ष

- चतुर्थी – तिल चतुर्थी
  – संकट हरण चतुर्थी
  – चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर) में मेला भरता है।

- एकादशी – षट्तिला एकादशी
  (6 प्रकार के तिलव्यंजनों का दान किया जाता है।)

- अमावस्या – मौनी अमावस्या
  – ऋषि मनु का जन्मदिन
  (इस दिन मौन रहते हैं)
  – कुम्भ स्नान

शुक्ल पक्ष

- एकम् से-
  गुप्त नवरात्रि शुरू हो जाते हैं।

- पंचमी – बसंत पंचमी
  – माता सरस्वती का जन्म दिन।
  – राज॰ में बालिका शिक्षा के लिए गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।

- पूर्णिमा – बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर)
  ↓
  [नवातपुरा गाँव, आसपुर तहसील]
  – यहाँ, शिवलिंग 5 स्थानों से खंडित है।
  – बेणेश्वर मेले को आदिवासियों का कुम्भ कहते हैं।
  – वागड़ का पुष्कर
  – इस दिन होली का डंडा रोपण किया जाता है।

फाल्गुन :

कृष्ण पक्ष

- चतुर्दशी महाशिवरात्रि
— शिवाड़ (सवाई माधोपुर) में घुश्मेश्वर महादेव का मेला भरता है।

शुक्ल पक्ष

- द्वितीया - फुलेरा दूज
- * पूर्णिमा - होली
- एकादशी - ढूँढ पूजा की जाती है।

पूर्णिमा (होली) - * ब्यावर में होली पर बादशाह (टोडरमल) की सवारी निकाली जाती है।

* भिनाय - कोड़ामार होली
(1st सहकारी समिति राज्य की)

* महावीर जी - लट्ठमार होली

* बाड़मेर - पत्थर मार होली।
- बाड़मेर में इलो जी की सवारी निकाली जाती है।
- इलो जी को छेड़ छाड़ का देवता कहा जाता है।

* सांगोद का न्हाण (कोटा)

* जयपुर में जन्म, मरण, परण का त्यौहार मनाया जाता है।

→ बादशाह की सवारी के आगे बीरबल भैरव नृत्य करता है।

चैत्र

कृष्ण पक्ष

- एकम् - धुलण्डी
- अष्टमी - शीतलाष्टमी
  - इस दिन घुड़ले का त्यौहार शुरू हो जाता है।
  - मारवाड़ के राजा राव सातल (जोधा का बेटा) के समय शुरू हुआ था।

शुक्ल पक्ष

- एकम - विक्रमी संवत् शुरू होता है।
  - महाराष्ट्र में गुडी पडवा मनाते हैं।
  - बसन्त नवरात्रि शुरू।
  - वृहद् राज॰ का गठन
- तीज (तृतीया) - गणगौर के रूप में मनाते हैं।
  - इस दिन शिव-पार्वती की पूजा की जाती है। (गणगौर की पूजा धुलण्डी से ही शुरू हो जाती है।)
  - इस दिन पार्वती का गौना / मुकलावा हुआ था।
  - जयपुर व उदयपुर की गणगौर सवारी प्रसिद्ध है। (चैत्र शुक्ल चतुर्थी)
  - जैसलमेर में गणगौर पर केवल गौर / गवरी की सवारी निकलती है। (बीकानेर वाले ईसर कोअपहरण कर ले गये थे।)
  - सबसे अधिक गीतों वाला त्यौहार
  - इस दिन लड़कियां अपने भाई व पति की दीर्घायु की कामना करती हैं।
- अष्टमी - अशोक अष्टमी
- नवमी - रामनवमी (भगवान राम का जन्मदिन)
- पूर्णिमा - हनुमान जयन्ती

वैशाख :

कृष्ण पक्ष

- तृतीया -
उदयपुर में
धींगा गवर मनायी
जाती है,
जोधपुर में इस दिन
धींगा गवर मेला लगता है।
↓ जवरघर्ती
(रामसिंह की पत्नी)

शुक्ल पक्ष

* तृतीया : आखा तीज / अक्षय तृतीया
- अबूझ सावा।
- राज. में सबसे ज्यादा बाल - विवाह इसी दिन होते हैं।
- बीकानेर का स्थापना दिवस

* पूर्णिमा : पीपल पूर्णिमा
: इसको बुद्ध - पूर्णिमा भी कहते हैं।

ज्येष्ठ :

कृष्ण पक्ष
* अमावस्या - बड़ मावस /
वट सावित्री व्रत

शुक्ल पक्ष

* दशमी - गंगा दशमी
(गंगा जी का धरती पर अवतरण।)

* एकादशी - निर्जला एकादशी
(गंगा जी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए)
→ उदयपुर में निर्जला एकादशी पर पतंगे उड़ती हैं।

आषाढ़

कृष्ण पक्ष

शुक्ल पक्ष

- एकम् - गुप्त नवरात्रा शुरु हो जाते है।
- नवमी - भदल्या नवमी (विवाह के लिए अंतिम सावा)
- एकादशी - देव शयनी एकादशी।
- पूर्णिमा - गुरु पूर्णिमा
  - वेदव्यास का जन्म दिन, इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं।

* पूस की एक रात - प्रेमचन्द

* पौष - माघ - जनवरी

मुस्लिम - त्यौहार

- मुस्लिम त्यौहार 'हिजरी संवत्' के अनुसार मनाए जाते हैं।
- 622 A.D. में मौहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना गये थे, इसी दिन से हिजरी संवत् का प्रारम्भ माना जाता है।

(1) मोहर्रम :

- हिजरी संवत् का पहला महीना
- मोहर्रम की 10 वीं तारीख को हजरत मोहम्मद साहब के नवासे 'हुसैन' करबला के मैदान में शहीद हो गये थे, इसलिए इस दिन ताजिये निकाले जाते हैं।
- 27 वीं तारीख को गलियाकोट (डूंगरपुर) में सैय्यद फखरुद्दीन का उर्स।
  (दाउदी बोहरा सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ)

(2) सफर

- 20 वीं तारीख को चेहल्लम मनाते हैं। (हुसैन के चालीस दिन पूरे हुये थे।)

(3) रबी - उल - अव्वल (बसंत)

- 12 वीं तारीख को बारावफात (ईद-मिलादुलनबी) मनाते हैं।
- हजरत मौहम्मद साहब का जन्म व मृत्यु इसी दिन हुई थी।
  (570 A.D.) (632 A.D.)

(4) रबी - उस - सानी

(5) जमात - उल - अव्वल

(6) जमात उस सानी

- 8वीं तारीख को ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का जन्मदिन।

(7) रज्जब (सम्मान देना)

- 1 से 6 तारीख तक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का उर्स।
- इस उर्स में भीलवाड़ा का गौरी परिवार बुलन्द दरवाजे पर झंडा चढ़ाता है।
- इस बार 801 वाँ उर्स मनाया गया।
- रज्जब की छठी तारीख को कुल की रस्म अदा की जाती है।
- रज्जब की 9वीं तारीख को बड़े कुल की रस्म अदा की जाती है।

(8) शाबान

- शाबान महीने की 14वीं तारीख हजरत मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुयी थी। इसलिए इसको शब (रात) - बरात कहते हैं।
- मुसलमान इस दिन अपने कर्मों का प्रायश्चित करते हैं।
- मक्का की हीरा पहाड़ी पर मुसलमान एकत्रित होते हैं।

(9) रमजान

- मुसलमान, इस महीने में रोजे रखते हैं।
- रमजान की 27 वीं तारीख को 'शबे - कद्र' कहते हैं, इस दिन कुरान (फरिश्तों द्वारा लिखी हुयी) का धरती पर अवतरण हुआ था।

(10) शव्वाल

- शव्वाल की पहली तारीख को ईद-उल-फितर (खुशी) (मीठी ईद) / सेवईयों की ईद मनाया जाता है।
- यह भाईचारे का त्यौहार है।

(11) जिल - कद्र

(12) जिल्हिज

- 10वीं तारीख को ईद-उल-जुहा / बकर ईद / कुर्बानी का त्यौहार होता है।
- (हजरत इब्राहिम ने) इस दिन हजरत इब्राहिम ने अपने बेटे को हजरत इस्माइल की अल्लाह को कुर्बानी दीथी, कुर्बानी के बाद जब पर्दे को हटाया गया, तो वहां एक भेड़ मृतक अवस्था में मिली इसीलिए इस दिन प्रतीक स्वरूप भेड़ या बकरी की कुर्बानी दी जाती है।

(६) दसलक्षण पर्व : चैत्र, भाद्रपद, माघ → शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी ।

सिन्धी समाज के त्यौहार :

(1) चेटीचण्ड - चैत्र शुक्ल एकम् (विक्रम संवत प्रारम्भ)

- झूलेलाल जयन्ती ।
- झूलेलाल जी को वरुण का अवतार मानते हैं ।
- झूलेलाल जी ने सिंध के राजा मृगशाह के अत्याचारों से मुक्ति दिलायी ।
- झूलेलाल जी का जन्म - थट्टा (सिंध)

(2) थदड़ी (ठंडा) सातम / बड़ी सातम :
भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (कृष्ण जन्माष्टमी से ठीक एक दिन पहले)
→ सिन्धियों का बास्योड़ा ।

(3) चालीसा महोत्सव :

- 16 जुलाई से 25 अगस्त तक व्रत रखते हैं ।
- मृगशाह के अत्याचारों से तंग आकर सिन्धी समाज ने व्रत रखे ।

(4) असूचंड पर्व : झूलेलाल जी ने समाधि ली थी ।

- इस महीने में मुसलमान हज्ज के लिए जाते हैं।
- जिल्हिज की 8 से 10 तारीख तक हज के लिए जाते हैं।
- 10 की नमाज को हज की नमाज कहते हैं।
  (अष्टांग योग का सरलीकरण)

जैन धर्म के त्यौहार

(1) ऋषभ जयन्ती - चैत्र कृष्ण नवमी

(2) महावीर जयन्ती - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

(3) सुगन्ध दशमी - भाद्रपद शुक्ल दशमी

- सुगन्ध दशमी को धूप दशमी कहा जाता है।

(4) रोट तीज - भाद्रपद शुक्ल तीज

(5) पर्यूषण - ये जैनों का महापर्व है

- दिगम्बर - भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक व्रत रखते हैं।
  आश्विन कृष्ण एकम् को पड़वा ढोक मनाते हैं।
  (क्षमा-याचना पर्व)
- श्वेताम्बर - भाद्रपद कृष्ण द्वादशी से भाद्रपद शुक्ल पंचमी तक व्रत रखते हैं।

  भाद्रपद शुक्ल पंचमी को संवत्सरी पर्व मनाते हैं।
  (क्षमा-याचना पर्व)

सिक्खों के त्यौहार

(1) गुरु नानक जयन्ती - कार्तिक पूर्णिमा (शुक्ल)

इस दिन साखा (कुरु) में सिक्खों का बड़ा मेला भरता है।
फीलायत में भी सिक्खों का मेला भरता है।

(2) गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती - पौष शुक्ल सप्तमी

(3) लोहड़ी - 13 जनवरी

(4) वैशाखी - 14 अप्रैल

- 13 अप्रैल 1699 को आनंदपुर साहिब में गुरु गोविन्द साहिब ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।
- 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकांड।

ईसाई समाज के त्यौहार

(1) 1 जनवरी - ईसाईयों का नववर्ष

(2) 25 दिसम्बर - ईसा मसीह का जन्मदिन

(3) ईस्टर - 21 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है, उसके ठीक बाद वाले रविवार को ईस्टर मनाया जाता है।

- इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित होकर लौट आए थे।

(4) गुड फ्राइडे - ईस्टर से ठीक पहले वाला शुक्रवार।

- इस दिन ईसा मसीह को सूली पर लटकाया गया।

(5) असेन्शन डे – ईस्टर से ठीक 40 चालीस दिन बाद, ईसा मसीह, वापस स्वर्ग चले गये थे।

राजस्थान के लोक-नृत्य

घूमर :

- राजस्थान का राज्य नृत्य। (उमेद सिंह के समय शुरू)
- नृत्यों का सिरमौर।
- राजस्थान की आत्मा।
- केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है, विवाह एवं मांगलिक अवसरों पर। विशेषतः गणगौर
- घूमर में हाथों का लचकदार संचालन आकर्षक होता है।
- लहंगे के घूम के कारण ही इसे घूमर कहा जाता है।
- इसमें विशेष 8 steps होते हैं, जिन्हें सवाई कहते हैं।
- ढोल, नगाड़ा, शहनाई वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- इसे रजवाड़ी लोक नृत्य कहा जाता है। (राज परिवारों में विशेषतः)
- घूमर मुख्यतः तीन रूपों में होता है –
  (1) घूमर
  (2) लूर
  (3) झूमरियो

कच्छी घोड़ी :

शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य। (व्यावसायिक नृत्य)

केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।

- चार-चार पंक्तियों में पुरुष आमने-सामने खड़े होकर नृत्य करते हैं।
- नृत्य करते समय फूल की पंखुड़ियों के खिलने का आभास होता है।
- इसमें नृतक हाथ में तलवार रखते हैं।
- वाद्य यंत्र – ढोल

अग्नि नृत्य :

- जसनाथी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- बीकानेर का कतरियासर गांव इसका मुख्य स्थल है।
- नृत्य करते समय आग से मतीरा फोड़ना, तलवार के करतब दिखाना, प्रमुख है।
- नृत्य करते समय नर्तक फर्ते-फर्ते बोलता है।
- आग के साथ राग व फाग का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।
- बीकानेर महाराजा गंगा सिंह ने इस नृत्य को संरक्षण प्रदान किया।

गींदड़ नृत्य :

- शेखावाटी क्षेत्र का लोक नृत्य। (नगाड़ा - प्रमुख वाद्य यंत्र)
- माघ पूर्णिमा (होली का डंडा रोपण) से इसकी शुरूआत हो जाती है, और फिर होली तक चलता रहता है।
- गींदड़, केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- पुरुष के द्वारा महिला वस्त्र पहनकर किया जाने वाला नृत्य - गणगौर कहलाता है।

गैर नृत्य :

- होली के अवसर पर किया जाता है। (होली के दूसरे दिन से 15 दिन तक चलता है।)
- मेवाड़ में भील पुरुषों का गैर नृत्य प्रसिद्ध है। (वाद्य यंत्र - ढोल, बांकिया व थाली)
- बाड़मेर का कनाना गांव गैर नृत्य के लिए प्रसिद्ध है।
- गैर खेलते समय गैरिये एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहनते हैं, जिसे आंगी कहते हैं। (कमर के नीचे)
- बाड़मेर के ~~फूल~~ मूलचन्द जैन को पद्म श्री मिला है।

वालर नृत्य : (विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर किया जाने वाला)

- सिरोही क्षेत्र में गरासिया जनजाति का मुख्य नृत्य।
- महिला पुरुष दोनों भाग लेते हैं।
- वालर नृत्य में किसी भी वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- नृत्य करते समय महिला-पुरुष अर्द्धवृत्त बनाते हैं।

भवाई नृत्य : (जन्मदाता - बाघोजी जाट (केकड़ी) - अजमेर)

- उदयपुर क्षेत्र में किया जाने वाला व्यावसायिक नृत्य।
- इस लोक नृत्य में तलवारों पर नाचना, मुंह से रूमाल उठाना, थाली के किनारों पर नाचना, गिलासों पर नाचना, सिर पर सात - आठ मटके रख कर नृत्य करना आदि करतब किये जाते हैं।

चकरी नृत्य : - कोटा ✓कंजर

- कालबेलिया जाति द्वारा किये जाने वाला लोकनृत्य।
- गुलाबो - प्रसिद्ध नृत्यांगना (x)

चरी नृत्य :

- किशनगढ़ क्षेत्र में।
- गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- सिर पर सात चरी रखकर, सबसे ऊपर की चरी में कपास के बीजों को जलाकर नृत्य किया जाता है।
- फलकू बाई : प्रसिद्ध नृत्यांगना (किशनगढ़)

तेरह ताली नृत्य : उद्गम स्थल → पादरला (गांव - पाली) (महिलाएं) (पाली, नागौर, जैसलमेर में मुख्यतः)

- कामड़ जाति / पंथ (रामदेव जी के भक्त) के लोगों द्वारा किया जाता है।
- इसमें नौ मंजिरे दायें पैर में बांधे जाते हैं।
- २ मंजिरे कोहनी के ऊपर दोनों हाथों में तथा दो मंजिरे एक - एक हाथ में लिए जाते हैं।
- महिलाएं बैठ कर नृत्य करती हैं।
- मांगी बाई - प्रसिद्ध नृत्यांगना
- वाद्य यंत्र - मंजीरा, तानपुरा, चौतारा

ढोल नृत्य :

- जालौर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य
- ढोली, माली, भील, सरगड़ा आदि जातियों में ~~द्वारा~~ पुरुषों द्वारा मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।
- 'थाकना' शैली में नृत्य किया जाता है।

बम नृत्य :

- अलवर, भरतपुर, धौलपुर क्षेत्रों में फसल की कटाई के अवसर पर (नयी फसल आने के उपलक्ष्य में) पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य।
- इसमें नगाड़े को बम किया जाता है।
- इसमें गायन को रसिया कहा जाता है। इसलिए इस नृत्य को बम-रसिया भी कहा जाता है।

घुड़ला नृत्य : (जोधपुर के राजा सातल की याद में)

- मारवाड़ क्षेत्र में शीतलाष्टमी को किया जाता है।
- छिद्रित मटके में दीपक रखकर लड़कियां डांस करती हैं।
- मणिशंकर गांगुली, देवीलाल सामर, कोमल कोठारी } ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान किया।

[दो बार पद्म श्री मिल चुका है।]

Note - राज• रत्न पुरस्कार / सम्मान (30 March)

(1) कोमल कोठारी - रूपायन

(2) जगजीत सिंह

(3) कन्हैया लाल सेठिया

(4) लक्ष्मी गौरी चूंडावत -- living Now.

(5) अल्लाह जिलाई बाई

(6) विजय दान देथा - दुविधा पर पहेली फिल्म

(7) विश्वमोहन भट्ट (मोहन - वीणा बजाते हैं)

रूपायन संस्थान – 1960, कोमल कोठारी व विजयदान देथा ने की थी। (जोधपुर में)

अल्लाह जिलाई बाई – मांड गायिका

* देवी लाल सांभर ने उदयपुर में लोककला मंडल की स्थापना (1952) की थी।

गवरी नृत्य :

- मेवाड़ में भीलों द्वारा किये जाने वाला नृत्य।
- भाद्रपद कृष्णा एकम् (रक्षाबन्धन से एक दिन पहले) से शुरु होकर 40 दिन तक चलता है।
- इसमें गवरी पार्वती का प्रतीक है।
- शिव को 'पुरिया' कहा जाता है।
- इसे राई नृत्य भी कहते हैं।

शंकरिया लोक नृत्य :

- कालबेलिया जाति का लोक नृत्य।
- प्रेम कहानी पर आधारित।

बिंदोली नृत्य :

- झालावाड़ क्षेत्र का लोकनृत्य।
- होली के अवसर पर किया जाता है।

गरबा नृत्य :

- डूंगरपुर, और बांसवाडा क्षेत्रों में किया जाता है।
- होली के अवसरों पर।

चंग नृत्य :

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किये जाने वाला नृत्य।

डांग नृत्य :

- नाथद्वारा क्षेत्र में होली के अवसरों पर किया जाता है।

जनजातियों के नृत्य :

गरासिया जनजाति :

वालर
मांदल
लूर
कूद
मोरिया
जवारा

भील जनजाति :

नेजा	शिकार
गवरी	युद्ध
द्विचक्री	
घूमरा	
घूमर	

कालबेलिया नृत्य : इंडोणी
पणिहारी
चकरी
शंकरिया
बागड़िया

सपेरा : राज. का एकमात्र नृत्य जिसे विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया।

(गुलाबो ने दिल्ली के राष्ट्रमंडल खेलों के उद्घाटन पर सपेरा नृत्य)

मेव जाति - रणबाजा
रतवई (पुरुष अलगोजा बजाते हैं)

बंजारों के नृत्य - मछली
नाहर
पेंजणा

सहरिया जाति - शिकारी नृत्य

कथौड़ी जनजाति - मावलिया नृत्य,
होली नृत्य

राजस्थानी भाषा की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

आर्य भाषा

वैदिक संस्कृत

पाली संस्कृत

शौरसेनी प्राकृत मागधी प्राकृत महाराष्ट्री प्राकृत

गुर्जरी अपभ्रंश शौरसेनी अपभ्रंश

राजस्थानी हिन्दी

डिंगल	पिंगल
प. राजस्थानी का साहित्यिक रूप	पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप, इसमें ब्रज भाषा का मिश्रण पाया जाता है।

राजस्थानी भाषा का विकास :

गुर्जरी अपभ्रंश – 11 वीं से 13 वीं शताब्दी

प्राचीन राजस्थानी – 13 वीं से 16 वीं शताब्दी (जैन)

मध्यकालीन राजस्थानी – 16 वीं से 18 वीं शताब्दी (चारण)

आधुनिक राजस्थानी – 18 वीं ____

* राजस्थानी साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ –
भरतेश्वर बाहुबली घोर
(वज्रसेन सूरि)

* उद्योतन सूरि ने अपनी पुस्तक कुवलयमाला में मरु भाषा का उल्लेख किया है। (18 देशी भाषाओं का उल्लेख)

* अबुल फजल भी मारवाड़ी भाषा का उल्लेख करता है।

* जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, ने 1912 में लिखी अपनी पुस्तक 'LINGUISTIC SURVEY OF INDIA' में राजस्थानी भाषा का उल्लेख किया है।

(1) सारंगधर — हम्मीर रासौ

(2) जोधराज — हम्मीर रासौ
(नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबार में था)

(3) श्रीधर — रणमल छन्द, इसमें ईडर के राजा रणमल व पाटन के सूबेदार जफर खाँ के बीच युद्ध का वर्णन है।

(4) चन्दबरदाई — पृथ्वीराज रासौ (पिंगल भाषा शैली में रचित ग्रन्थ)
वास्तविक नाम [पृथ्वीभट्ट]
इसका पहला प्रामाणिक उल्लेख राजप्रशस्ति महाकाव्य में मिलता है।

(5) दलपत विजय — खुमाण रासौ, इसमें बापा रावल से महाराणा राजसिंह तक का वर्णन है। (पिंगल)

(6) गिरधर आसियाँ — सगतसिंह रासौ, इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह का वर्णन है। [राम रासौ – माधोदास चारण]
[बुद्धि रासौ – जानकवि (मुस्लिम लेखक द्वारा पंचतंत्र पर रचित)]

(7) डूंगरसिंह — शत्रुसाल रासौ (बूंदी)

(8) आशानन्द (आसा बारहठ) भादरेस (बाड़मेर) (मालदेव के समकालीन) — गोगा जी री पैड़ी, बाघा रा दूहा, उमादे भटियाणी रा कवित्त।

(पाहेबा के युद्ध में मालदेव के साथ थे।)

(9) ईसरदास — [A] (काठियावाड़) हाला झाला री कुण्डलियां
(आशानन्द जी के भतीजे) [B] सूर सतसई

(10) केशवदास गाडण — [A] गुण रूपक
(जोधपुर महाराजा गजसिंह I का दरबारी था) [B] अमरसिंह जी रा दूहा
[C] विवेक वार्ता (उपनिषदों पर लिखित कृति)

(11) शिवदास गाडण — 'अचलदास खिंची री वचनिका' (गागरोन का वर्णन)

(12) उमरदान — [A] (अफीम) अमल रा औगण
↓ [B] दारू रा दोस
इन्होंने दादूपंथियों की आलोचना की थी। [C] भजन री महिला

(13) पृथ्वीराज राठौड — [A] बेलि क्रिसण रुक्मणि री
↓ [B] गंगा लहरी
• बीकानेर महाराजा रायसिंह का छोटा भाई। [C] दशम भागवत रा दूहा, ठाकुर जी रा दूहा
• अकबर के नवरत्नों में से एक। [D] दशरथ रावउत

(14) करणीदान — सूरज प्रकाश, (शकुन्तला)
↓
(अहमदाबाद)
जोधपुर महाराजा अभयसिंह व गुजरात के सूबेदार सर बुलन्द खां के बीच युद्ध का वर्णन है।

* सूरज प्रकाश का संक्षिप्त रूप - बिड़द सिणगार

इस पुस्तक के लिए करणीदान जी को 1 लाख रुपये दिए गए।

(15) वीरभाण — राजरूपक

(16) कृपाराम खिड़िया — राजिया रा दूहा
↑ कृपाराम जी का नौकर

थे सीकर के रावराजा लक्ष्मण सिंह के दरबारी थे।

" फाटा पीड़ उपाव, तन लागा तलवारिया।
वहै जीभ रा घाव, रती औषध न राजिया॥"

नाटक : चानक नैसी [अलंकारो का सुन्दर प्रयोग]

(17) जग्गा खिड़िया — वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेस दासोत री
↓
सीतामऊ रियासत (M.P.) के सीताखेड़ा गाँव में जन्म। (जसवंत सिंह I के समकालीन)

(धरमत के युद्ध में रतलाम नरेश रतन सिंह राठौड़ द्वारा दिखायी गयी अद्भुत वीरता का वर्णन है

(18) कवि कल्लोल — दोला - मारु रा दूहा
(मरवण)
(नरवर) (पूगल)

" अकथ कहानी प्रेम की, मुख सुं कही ना जाय।
गुंगा रा सुपना भयो, सुमर - सुमर पछतायो॥"

(19) कुशल लाभ — दोला - मारु री चौपाई
↓
जैसलमेर महारावल हरराज का दरबारी।

(20) बुद्धसिंह — नेहतरंग
↓
(बूंदी नरेश)

(21) सूर्यमल्ल मिश्रण — (A) वंश भास्कर - दत्तक पुत्र मुरारि दान ने इसे पूरा किया। *
↓
बूंदी नरेश रामसिंह का दरबारी

(B) वीर सतसई -
(C) बलवन्त विलास
(D) सती रासो
(E) छन्द मयूख (F) धातु रूपावली (G) राम रंजाट

(बेटा) लहूलुहान (मिट्टी)
" सुत धारा रज- रज पियो, बहू बलेवा जाय।
लखियां डूँगर लाज रा, सासू उर न समाय॥"

(22) बीठू सूजा — राव जैतसी रो छन्द
↓
इसमें बीकानेर के राजा जैतसिंह व कामरान के बीच हुये 'रातीघाटी के युद्ध' का वर्णन है।

(23) बांकीदास — [A] बांकीदास री ख्यात
↓
[जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि, जिसे मानसिंह ने कवि राज की उपाधि दी।]
[B] कुकवि बत्तीसी
[C] दातार बावनी
[D] मान जसो मंडन

• भाण्डियावास (बाड़मेर)

4) मुरारिदास — जसवन्त जसो भूषण
(बांकीदास जी के पोते) (अलंकारों का सबसे बड़ा ग्रन्थ)

जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह II के दरबारी।

5) मुहणौत नैणसी — [A] नैणसी री ख्यात
↓
जोधपुर महाराजा जसवंत I के दरबारी थे। जसवंत सिंह ने किसी बात पर 1 लाख रु. का जुर्माना लगा दिया। इन्हें व इनके भाई सुन्दरदास को जेल में डाल दिया, जहां दोनों भाइयों ने आत्महत्या कर ली।

[B] मारवाड़ रा परगना री विगत
↓ ↓
(मारवाड़ गजेटियर) (जनगणना का उल्लेख मिलता है)

* मुंशी देवी प्रसाद ने इन्हें 'राजपूताने का अबुल-फजल' कहा है।

(26) नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासौ (विग्रहराज IV)

(27) नल्ल सिंह - विजयपाल रासौ (करौली)

(28) हम्मीर - शृंगार हार
(रणथम्भौर का राजा)

(29) दयालदास - बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात।
ये बीकानेर महाराजा रतनसिंह व सरदारसिंह के दरबारी थे।
(राव बीका से सरदार सिंह का वर्णन)

(30) बख्तावर जी — केहर प्रकाश

(31) सवाई प्रताप सिंह — ब्रजनिधि ग्रन्थावली

(32) दुरसा आढ़ा - विरुद्ध छतहरी
किरतार बावनी
राव सुरताण रा कवित्त
अकबर के दरबार में थे। इन्होंने अकबर को यवः अवतार कहा है। अकबर के दरबार में रहते हुये भी महाराणा प्रताप की तारीफ की।
[पत्ताणी के युद्ध में दुरसा आढ़ा अकबर की तरफ से लड़े थे।]

(33) बादर ढाढ़ी - वीरमाण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की वीरता का वर्णन है।)

(34) वृन्द - ① सत्य स्वरूप (औरंगजेब के पुत्रों के बीच हुये उत्तराधिकार संघर्ष का वर्णन है।)
② शृंगार शिक्षा

(35) दयाल - राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन है।)

(36) खेतसिंह खेतसी सांदू - भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल में अनुवाद)

(37) जगजीवन भट्ट — अजितोदय

(38) जोगीदास — हरिपिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह के बारे में वर्णित)

(39) किशोरदास — राजरूपक प्रकाश

(40) सायाँ जी झूला — नागदमण
रुक्मिणी हरण

↓
ईडर के राजा
कल्याणमल के दरबार में थे।
सायाँ जी झूला व पृथ्वीराज
राठौड़, अकबर के समकालीन थे।

(41) कल्याणदास — गुण गोविन्द

(42) नरहरिदास — अवतार चरित्र

(43) कवि जान — ① कायमरासौ
② बुद्धि सागर
③ लैला - मजनूँ

- वास्तविक नाम - न्यामत खाँ
- फतेहपुर के 8वें नवाब थे।

---

① राजकरण मासोपा - बांकीदास ग्रन्थावली, राजस्थानी व्याकरण
② मुरलीधर व्यास - राज॰ कहावतां

> पवाड़ा : वीरों के विशेष कार्यों को वर्णन करने वाली रचना
> विगत : राज्य की सामाजिक - आर्थिक स्थिति।
> कला — राजकीय विवरण।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य :-

(1) श्रीमाल नथमल जोशी —— [A] एक बीनणी दो बींद
[B] परण्योड़ी कुंवारी
[c] सबड़का
(स्वतंत्रता के बाद पहला राज॰ उपन्यास) ← [D] आभै पटकी
[E] धोरां री धोरी

(2) विजयदान देथा —— [A] बातां री फुलवारी
[B] तीडो राव
[c] मां रो बदलो
[D] हिटलर
[E] अलेखूं, दुविधा

(3) लक्ष्मी कुमारी चुंडावत —— [A] मांझल रात
↓
देवगढ़ की राजकुमारी (राजसमंद)
→ रावरां री बातां
→ डूंगर जी, जवारजी री बात

[B] अमोलक बातां
[c] कै रे चकवा बात
[D] गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ा
[E] राज॰ की प्रेम कहानियां
[F] टुंकारो दो सा
[G] बाघा - भारमली
[H] बगडावत
[I] मूमल

(4) कन्हैया लाल सेठिया —— [A] धरती धोरां री
→ सबद
[B] लीलटांस
[C] पायल और पीयल
[D] कुंकू मिंझर
[E] निर्ग्रन्थ

(5) यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र — [A] हूं गोरी किण पीव री
↓
(बीकानेर)
→ मिट्टी का कलंक

[B] खम्मा अन्नदाता
[C] हजार घोड़ों का सवार
[D] तास रो घर
[E] जमारो
[F] मेहंदी के फूल (कहानी)
[G] जोग - संजोग
[H] एक और मुख्यमंत्री

(6) मेघराज मुकुल —

[A] उमंग
[B] सैनाणी
[C] चंवरी

(7) रांगेय राघव —

[A] घरौंदे
[B] मुर्दों का टीला
[C] कब तक पुकारूँ
[D] आग की आवाज

(8) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — [A] प्राचीन लिपिमाला
[B] कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र
[C] राजपूताने का इतिहास

(9) जहूर खाँ मेहर —

[A] राजस्थानी संस्कृति रा चितराम
[B] अर्जुन आळी आंख
[C] धर मंजला धर कोसां

(10) चन्द्रसिंह बिरकाली — * [A] बादली (कालिदास के मेघदूत का राज. अनुवाद)
[B] लू

[C] सांझ बालासाद

(D) कद - मुकरनी

(11) नारायण सिंह भाटी :
→ सांझ, ओळूं

(A) मीरा

[B] परमवीर

(c) दुर्गादास

(D) बरसां रा डिगोड़ा डूंगर लाँघिया।

(12) सीताराम लालस : राजस्थानी शब्दकोष *

(13) हरिराम मीणा : हाँ चाँद मेरा है।
(साहित्य अकादमी पुरस्कार)

(14) मणिमधुकर : पगफेरो, सुधि सपनों के तीर, रस गन्धर्व

(15) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : उसने कहा था।

(16) श्यामलदास : वीर विनोद
(शम्भू सिंह के समय लिखना शुरू किया था, तथा फतेह सिंह के समय पूरी की गयी)

- अंग्रेजो ने इन्हें केसर-ए-हिन्द की उपाधि दी थी।
- महामहोपाध्याय भी इनकी एक उपाधि है।

* वीर विनोद मेवाड़ का इतिहास है। परन्तु इसमें अन्य इतिहास की भी समकालीन जानकारियाँ मिलती हैं।

---

1. रेवतदान चारण - बरखा बिनणी, मेहरू ने मोलमो
2. शिवचन्द्र भरतिया - कनक सुन्दरी (उपन्यास), केसर विलास (नाटक)
3. हमीदुल्ला - प्रारमती, परिन्दे, ख्याल
4. कुन्दन माली - सागर पांखी
5. हीरालाल शास्त्री - प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र
6. सावित्री परमार - 'जमी हुयी झील' (मीरा पुरस्कार)

→ राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी — बीकानेर

↓

सबसे प्रमुख पुरस्कार — सूर्य मल्ल मिश्रण पुरस्कार

↓ समाचार पत्रिका — जागती जोत

→ राजस्थान साहित्य अकादमी — उदयपुर

↓

सबसे प्रमुख पुरस्कार — मीरा पुरस्कार

↓ समाचार पत्रिका — मधुमती

मीरा पुर. { 2012 — आम्बिका दत्त
2013 — भवानी सिंह को उनकी रचना मागस के लिए मिला है।

राजस्थान के लोकगीत

→ केसरिया बालम : राज्य गीत, यह एक रजवाड़ी गीत है, जिसमें पति का इंतजार करती पत्नी की विरह- व्यथा का वर्णन है।

→ मोरियो : लड़की जिसकी शादी छोटी उम्र में हो गयी, और जिसे अपने मुकलावे का इंतजार हो।

→ सूवटियो : परदेस गये पति के पास तोते के माध्यम से संदेश भेजती पत्नी का गीत।

→ कुरजाँ : पत्नी द्वारा परदेस गये पति से मिलन की कुरजाँ से की गयी गुजारिश

→ कागा : कागा को उड़ाकर पत्नी अपने पति के आगमन का शगुन बनाती है।

→ पपैयो : पत्नी एवं पति के बीच आदर्श दाम्पत्य प्रेम का सूचक।

→ पीपली : विरह गीत, इसमें पत्नी द्वारा पति से परदेस न जाने की विनती

→ लावणी : शाब्दिक अर्थ – 'बुलाना'
पति द्वारा पत्नी से मिलन का आग्रह।

→ हिंडो : सावण के महीने में गाया जाने वाला गीत।

→ काम्मण : वर को जादू-टोने से बचाने के लिए गाये जाने वाले गीत।

सीठणे : विवाह आदि अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गाली गीत।

→ गोरबन्द : ऊंट के गले का एक आभूषण

चिरमी : ससुराल में अपने पिता व भाई की प्रतीक्षा करती वधू द्वारा

गाया जाने वाला गीत ।

→ जीरा : इसमें वधू अपने पति से जीरा नहीं बोने की विनती करती है।

→ जच्चा : संतान जन्म पर गाये जाने वाले गीत ।

→ बधावा : शुभ कार्यों के सम्पन्न होने पर गाया जाने वाला गीत ।

→ पावणा : दामाद के ससुराल आने पर गाया जाने वाला गीत ।

→ मूमल : शृंगारिक विरह गीत ।

→ घूमर : मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत, जिसमें कन्या अपनी माता से घूमर खेलने जाने की प्रार्थना करती है।

→ हमसीढ़ो : भील महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत।

→ पणिहारी : अपने पतिव्रत धर्म पर अटल स्त्री का गीत

→ कलाली : वीर रस प्रधान गीत ।

→ इंडोणी

→ पीली : बारात का डेरा देखने जाते समय महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत।

→ बना - बनी : विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

→ घुड़चढ़ी : -

→ बिच्छुड़ो -

राजस्थान के लोकनाट्य

*→ **ख्याल** : पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाओं को पद्यबद्ध करके नाटक के रूप में मंचन किया जाता है।
इसमें सूत्रधार – हलकारा होता है।

- **कुचामनी ख्याल** :
  - प्रवर्तक – लच्छी राम
  - इसमें महिला पात्रों की भूमिका पुरुषों द्वारा ही निभायी जाती है।
  - इसका स्वरूप 'ओपेरा' जैसा होता है।
  - मुख्य कथाएं – चांद नीलगिरि
    राव रिड़मल
    मीरा मंगल
  - 'उगमराज', कुचामनी ख्याल के प्रमुख कलाकार है।

- **जयपुरी ख्याल** :
  - इसमें महिला पात्रों की भूमिका महिला ही निभाती है।

- **हेला ख्याल**
  - दौसा, लालसोट एवं सवाई माधोपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध।
  - वाद्य यंत्र : नौबत

- **तुर्रा - कलंगी**
  - तुकनगीर व शाह अली ने इसे लोकप्रिय किया था।
    (चन्देरी शासक के दरबार में थे)
  - यहाँ तुर्रा से तात्पर्य – शिव से,
    कलंगी – पार्वती से।
  - सहेडू सिंह व हमीद बेग ने इसे मेवाड़ में लोकप्रिय किया था।
  - इसमें दो पक्ष आमने-सामने बैठकर प्रतिस्पर्धामूलक संवाद करते हैं, जिसे गम्मत करते हैं।
  - तुर्रा - कलंगी ख्याल में मंच की सजावट की जाती है।
  - दर्शकों के भी भाग - लेने की सम्भावना रहती है।

- अन्य कलाकार - चेतराम
  ताराचन्द
  जयदयाल सोनी
  ओंकार सिंह

- शेखावाटी ख्याल :
  - नानूराम व दूलिया राणा ने इसे लोकप्रिय किया।

- अली बख्शी ख्याल :
  - अलवर जिले के मुण्डावर ठिकाने के नवाब अली बख्श के समय यह ख्याल शुरु हुआ।

- कन्हैया ख्याल :
  - भरतपुर, धौलपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
  - कृष्ण लीलाओं का मंचन किया जाता है।
  - सूत्रधार - मेड़िया

- ढप्पाली ख्याल :
  - अलवर क्षेत्र में लोकप्रिय

- भेंट के दंगल :
  - धौलपुर क्षेत्र में लोकप्रिय।
  - धार्मिक कहानियों का मंचन किया जाता है।

(2) नौटंकी

- अलवर, भरतपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
- प्रवर्तक - भूरीलाल
- वर्तमान में प्रमुख कलाकार - गिरिराज प्रसाद
- 9 प्रकार के वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

नौटंकी

- यह हाथरस शैली से प्रभावित है।
- नौटंकी में प्रचलित कहानी –
  - अमरसिंह राठौड़
  - आल्हा - ऊदल
  - सत्यवान - सावित्री
  - हरिचन्द्र - तारामती

(3) रम्मत

- बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र की लोकप्रिय।
- पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा खेली जाती है।
- होली एवं सावन के महीने में रम्मत खेली जाती है।
- जैसलमेर में तेजकवि ने इसे लोकप्रिय किया था।
- तेजकवि की प्रसिद्ध रम्मतें –
  - स्वतंत्र बावनी (1952 में महात्मा गांधी को की गयी भेंट)
  - मूमल
  - जोगी भृतहरि
  - छेले तम्बोलन
- तेजकवि ने अंग्रेजो की नीतियों के खिलाफ थे।
- बीकानेर में 'पाटों' पर रम्मत का मंचन किया जाता है।
  - * पाटा संस्कृति – बीकानेर की मौलिक विशेषता है।
- होली के समय शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक इनका अधिक मंचन किया जाता है।
- हेड़ाऊ - मेरी की रम्मत सर्वाधिक लोकप्रिय है, जिसे जवाहर लाल ने शुरु किया था।
- रम्मत शुरु करने से पहले रामदेव जी का गीत गाया जाता है।
- बीकानेर के कलाकार : तुलसीदास जी
  - सुआ महाराज
  - फागु महाराज

(4) स्वांग :

- किसी पौराणिक या ऐतिहासिक पात्र की वेशभूषा पहनकर उसकी नकल करना।
- भीलवाड़ा के जानकीलाल भांड ने इसे लोकप्रिय किया।
- जानकी लाल भांड को 'MONKEY MAN' कहा जाता है।
- चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को भीलवाड़ा में नाहरों का स्वांग खेला जाता है।
- इसके कलाकार को बहुरूपिया कहा जाता है।

(5) गवरी :

- राजस्थान का प्राचीनतम लोक नाट्य।
- इसे राजस्थान का मेरू नाट्य भी कहा जाता है।
- मेवाड़ क्षेत्र में भीलों द्वारा गवरी नाट्य का मंचन किया जाता है।
- लोकनाट्य - शिव पार्वती से सम्बन्धित है।
- रक्षा बन्धन से शुरू होकर 40 दिनों तक चलता है।
- इसमें शिव - भस्मासुर कथा को आधार बनाया जाता है।
- सूत्रधार - कुटकड़िया
- हास्य पुट डालने वाला कलाकार - झटपटिया
- विभिन्न कथानकों को आपस में जोड़ने के लिए बीच में सामुहिक नृत्य किया जाता है, जिसे 'गवरी की घाई' कहते हैं।

(6) तमाशा :

- यह जयपुर में लोकप्रिय है।
- सवाई प्रतापसिंह के समय बंशीधर भट्ट (महाराष्ट्र) को तमाशा के लिए जयपुर लाया गया।
- उस समय 'गौहर जान' तमाशा में भाग लिया करती थी।
- होली के दिन - जोगी - जोगण का तमाशा।
- शीतलाष्टमी के दिन - जुट्ठन मियां का तमाशा।

• चैत्र अमावस्या के दिन - गोपीचन्द का तमाशा।

(7) भवाई :

- गुजरात के सन्निकट राजस्थानी जिलों में अधिक लोकप्रिय।
- इसमें संगीत पक्ष पर कम ध्यान दिया जाता है, बल्कि करतब अधिक दिखाये जाते हैं।
- भवाई लोकनाट्य व्यावसायिक प्रकृति का है।
- राज. में मुख्य कलाकार : रूपसिंह
  तारा शर्मा
  सांगी लाल
- महिला व पुरुष पात्रों को सगीजी व सगाजी कहा जाता है।

(8) चारबैंत :

- टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय।
- मूलतः अफगानिस्तान का लोकनाट्य है।
- पहले इसे पश्तो भाषा में प्रस्तुत किया जाता था।
- मुख्य वाद्ययंत्र - डफ.
- टोंक नवाब फैजुल्ला खाँ के समय करीम खाँ निहंग ने इसे टोंक में लोकप्रिय किया था।

(9) फड़ :

- कपड़े के पर्दे पर किसी देवता से सम्बन्धित जीवन चरित्र का मंचन फड़ कहलाता है। (30x5)
- 30 Feet - length, 5 Feet - Breadth } फड़ का चित्रण किया जाता है।
- किसी देवता की मनौती पूरी होने पर फड़ बंचवाते हैं।

(10) रासलीला :

- इसे वल्लभाचार्य द्वारा शुरु किया गया।
- भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं का मंचन किया जाता है।
- भरतपुर क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- शिवलाल कुमावत ने इसे भरतपुर में लोकप्रिय किया था।
- राम स्वरूप जी व हरगोविन्द जी भी इसके मुख्य कलाकार रहे हैं।
- कामां (भरतपुर) } फुलेरा (जयपुर) } की रासलीला प्रसिद्ध है।

(11) रामलीला :

- तुलसीदास जी द्वारा
- भगवान राम से सम्बन्धित घटनाओं का मंचन किया जाता है।
- बिसाऊ (झुन्झुनू) की रामलीला – मूक अभिनय पर आधारित
- अटरू (बारां) – यहाँ रामलीला में धनुष को भगवान राम द्वारा न तोड़ा जाकर, जनता द्वारा तोड़ा जाता है।
- पाटूंदा (कोटा) – की रामलीला भी प्रसिद्ध है।
- वेंकटेश मंदिर (भरतपुर) – भरतपुर के वेंकटेश मंदिर में होती है।

(12) सनकादिक लीला :

- चित्तौड़गढ़ के घोसुण्डा व बस्सी स्थान पर इसका मंचन किया जाता है।
  - घोसुण्डा ↓ (आश्विन)
  - बस्सी ↓ (कार्तिक)
- मंचित देवता कथा – गणेश
  गौरा - काला भैरू
  नृसिंह - हिरण्यकश्यप

राज. के प्रमुख मंदिर

1- किराड़ू के मंदिर :

- माहवार (बाड़मेर) के समीप।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर - सोमेश्वर
- किराड़ू के मंदिरों को राज. का खजुराहों कहते हैं।
- यह मंदिर नागर शैली में बने हुये हैं।

2- सूर्य मंदिर :

- झालरापाटन (झालावाड़)
- इसे सात सहेलियों का मंदिर कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे ~~सात सहेलिय~~ चारभुजा मंदिर भी कहा है।
- इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहते हैं।
- यह मंदिर 10 वीं शताब्दी में निर्मित हुआ।

(3) अर्थुना के मंदिर :

- बांसवाड़ा
- अर्थुना भी परमारों की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर - हनुमान जी का मंदिर
- 11 वीं व 12 वीं शताब्दी के बने हुये हैं।
- इन्हें 'वागड़ का खजुराहों' कहते हैं।

(4) रणकपुर के जैन मंदिर :

- कुम्भा के समय रणकशाह द्वारा निर्मित
- मुख्य मंदिर - चौमुखा मंदिर (वास्तुकार - देपाक)

- इस मंदिर में 1444 खम्भे है, अतः इसे खम्भों का अजायबघर कहते हैं।
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ मंदिर है, जिसे वेश्याओं का मंदिर भी कहते हैं।

(5) देलवाड़ा के जैन मंदिर :

- सिरोही

* विमलसहि मंदिर : इसका निर्माण 1031 ई. में भीमशाह (गुजरात के चालुक्य राजा का मंत्री) ने करवाया था।

* नेमिनाथ मंदिर : चालुक्य राजा धवल के मंत्री तेजपाल एवं वास्तुपाल ने इसका निर्माण करवाया।
  : इसे देवरानी - जेठानी का मंदिर भी कहते हैं।

(6) पुष्कर के मंदिर :

- यहाँ ब्रह्मा जी का मंदिर बना हुआ है, जिसका निर्माण गोकुलचन्द पारीक ने करवाया।
- यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।
- यहाँ सावित्री माता का मंदिर भी है।
- यहाँ रंगनाथ मंदिर भी बना हुआ है, जो द्रविड शैली का है।
- पुष्कर को कोंकण तीर्थ भी कहा जाता है।
- ब्रह्मा जी के अन्य मंदिर :(a) आसोतरा (बाड़मेर)
  (b) छींछ (बांसवाड़ा)

(7) एकलिंगनाथ जी के मंदिर :

- कैलाशपुरी (उदयपुर) - नागदा के समीप
- 18 वीं सदी में बापा रावल ने इसका निर्माण करवाया था।

(8) सहस्त्रबाहू का मंदिर :

- नागदा (उदयपुर)
- इसे सास- बहू का मंदिर भी कहते हैं।

(9) नौ-ग्रहों का मंदिर : - किशनगढ़ (अजमेर)

(10) सॉवलिया जी का मंदिर :

- मंडफिया (चित्तौड़गढ़)
- इसे चोरों का मंदिर भी कहते हैं।

(11) हर्षद माता का मंदिर :

- आभानेरी

Note • अ

(12) मुनि का मंदिर :

- कोलायत (बीकानेर)
- कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।

* कपिल मुनि सांख्य दर्शन के प्रणेता थे।

(13) अम्बिका माता :

- जगत (उदयपुर)
- इसे मेवाड़ का खजुराहो कहते हैं।
- इसे राज्य का मिनी खजुराहो कहते हैं।

(14) कंसुआ मंदिर :

- कोटा
- मौर्य राजा धवल ने शिव मंदिर बनवाया था, जिसमें 1000 शिवलिंग हैं।
- यहां गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर भी है, जिसके दर्शन नहीं किये जाते हैं।

(15) शीतलेश्वर महादेव :

- झालावाड़ (कर्नल टॉड ने झालरापाटन को घंटियों का शहर कहा है।)
- इसका निर्माण 689 A.D. में हुआ।
- यह राज्य का प्राचीनतम तिथि युक्त मंदिर है।

(16) महामंदिर :

- जोधपुर
- राजा मानसिंह द्वारा निर्मित
- नाथ सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मंदिर।

(17) सिरे मंदिर :

- जालौर (जोधपुर के राजा मानसिंह ने इसका निर्माण करवाया था)

(18) भांडाशाह जैन मंदिर :

- बीकानेर
- यह 5वें जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ का मंदिर है।
- इसके निर्माण में पानी की जगह घी का उपयोग किया गया था।

(19) सतबीस मंदिर :

- चित्तौड़गढ़
- 11वीं शताब्दी के जैन मंदिर।

20) भंडदेवरा मंदिर :

- अटरू (बारां)
- इसे हाड़ौती का खजुराहो कहते हैं।
- (राज्य का मिनि खजुराहो)

(21) फूलदेवरा मंदिर :

- बारां
- इसे मामा- भान्जा मंदिर भी कहते हैं।

(22) सोनी जी की नसियां :

- अजमेर
- इसे लाल मंदिर भी कहते हैं।
- 1864 में मूलचन्द सोनी ने इसका निर्माण करवाया।

(23) खड़े गणेश का मंदिर :

- कोटा

(24) बाजणा गणेश मंदिर :

- सिरोही

(25) सारणेश्वर महादेव मंदिर :

- सिरोही

(26) नाचणा गणेश मंदिर :

- ~~रणथम्भौर~~ अलवर

(27) त्रिनेत्र गणेश मंदिर :

- रणथम्भौर

(28) हेरम्ब गणपति :

- बीकानेर (जूनागढ़ किले में)
- गणपति शेर पर सवार हैं।

(29) रावण मंदिर :

- मण्डौर (जोधपुर)
- श्रीमाली ब्राह्मण पूजा करते हैं।

(30) विभीषण मंदिर : कैथून (कोटा)

(31) खोड़ा गणेश : अजमेर

(32) रोकड़िया गणेश : जैसलमेर

(33) सालासर बालाजी : चुरू

• बालाजी के दाढ़ी - मूंछ है।

(34) 72 जिनालय : भीनमाल (जालौर)

(35) मेहन्दीपुर बालाजी : दौसा (N.H.11, आगरा से जयपुर)

(36) पावापुरी जैन मंदिर : सिरोही

(37) नारेली के जैन मंदिर : अजमेर

(38) बाला पीर : नागौर (कुम्हारी)

• यहाँ खिलौने चढ़ाये जाते हैं।

(39) मूछाला महावीर : घाणेराव (पाली)

(40) 33 करोड़ देवी - देवताओं का मंदिर : बीकानेर (जूनागढ़)

(41) 33 करोड़ देवी - देवताओं की साल : मंडोर (अभयसिंह द्वारा निर्मित)

(42) नीलकण्ठ महादेव मंदिर : अलवर

• अजयपाल द्वारा निर्मित

(43) मालासी भैरू जी का मंदिर : मालासी (चूरू)

• यहाँ भैरू जी की उल्टी मूर्ति लगी है।

(44) खाटू श्याम जी का मंदिर :

- खाटू (सीकर)
- बर्बरीक का मंदिर

(45) कल्याण जी का मंदिर :

- डिग्गी (टोंक)

अन्य मंदिर

① ऋषभदेव जी का मंदिर – उदयपुर.
– पूरे देश में एकमात्र यही ऐसा मंदिर है जहां सभी सम्प्रदाय व जाति (श्वेताम्बर, दिगम्बर, जैन, शैव, वैष्णव, भील) के लोग आते हैं।

② सिरयारी मंदिर – पाली
– जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिक्षु की निर्वाण स्थली।

③ मुकन्दरा का शिव मंदिर – कोटा
– राज. का एकमात्र गुप्तकालीन मंदिर है।

④ स्वर्ण मंदिर – पाली
- जिसे 'Gateway of Golden' and 'Mini Mumbai' के नाम से जाना जाता है।

⑤ सुन्धा माता का मंदिर – जालौर
- राज. का प्रथम रोप-वे बनाया गया है।

⑥ नागर शैली का अंतिम व सबसे भव्य मंदिर – सोमेश्वर (किराडू)
(गुर्जर-प्रतिहार कालीन)

⑦ पंचायतन शैली का प्रथम उदाहरण राज. में – 'ओसियां का हरिहर मंदिर'
(भारत में प्रथम उदाहरण – देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर)

⑧ नाकोड़ा भैरव जी – बालोतरा

राजस्थान की मस्जिदें एवं मजारें

(1) ईदगाह मस्जिद : जयपुर

(2) मलिकशाह की दरगाह : जालौर

3) मीठे शाह की दरगाह : गागरौन

4) गुलाब खां का मकबरा : जोधपुर

5) गुलाब कलन्दर का मकबरा : जोधपुर

(6) ममता गाजी मीनार : जोधपुर

7) भूरे खां की मजार : मेहरानगढ़ (जोधपुर)

8) इकमीनार : जोधपुर

9) सफदरजंग की दरगाह : अलवर

0) अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह : तिजारा (अलवर)

1) बीबी जरीना का मकबरा : धौलपुर

2) मेहर खां की मीनार : कोटा

3) सैय्यद बादशाह की दरगाह : शिवगंज (सिरोही)

4) जामा मस्जिद : शाहबाद (बारां)

5) काकाजी पीर की दरगाह : प्रतापगढ़

6) मस्तान बाबा की दरगाह : सोजत (पाली)

7) रजिया सुलतान का मकबरा : टोंक

8) गूलर कालूदान की मीनार : जोधपुर

9) तन्हा पीर की दरगाह : मण्डौर

0) कबीर शाह की दरगाह : करौली

(21) कमरूद्दीन शाह की दरगाह : झुन्झुनु

(22) पीर अब्दुल्ला की दरगाह : बांसवाड़ा

(23) दीवान शाह की दरगाह : कपासन (चित्तौड़गढ़)

(24) हजरत शक्कर बाबा की दरगाह : नरहड़ (झुन्झुनु)
(नरहड पीर) - इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।

(25) सैय्यद फखरूद्दीन की दरगाह : गलियाकोट (डुंगरपुर)
(दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय का सबसे बड़ा उर्स)

(26) चल फिर शाह की दरगाह : चित्तौड़गढ़

(27) पंजाब शाह की दरगाह : अजमेर

(28) मर्दान शाह पीर की दरगाह : रणथम्भौर

(29) फखरूद्दीन चिश्ती की दरगाह : सरवाड़ (अजमेर)

(30) नालीसर मस्जिद : सांभर (जयपुर)

(31) इमली वाले बाबा की दरगाह : ताला (जयपुर)

(32) लैला मंजनू की मजार : रायसिंह नगर (गंगानगर)

(33) बाबा दौलतशाह की दरगाह : चौमूं

(34) दूल्हेशाह की दरगाह : पाली

(35) पीर निजामुद्दीन की दरगाह : फतेहपुर (सीकर)

→ राज० में कादरिया सम्प्रदाय की सबसे बड़ी दरगाह – सैफुद्दीन अब्दुल वहाब (बड़े पीर की दरगाह)

राजस्थान के प्रमुख मेले

* राज॰ सरकार द्वारा आयोजित मेले :

पतंग महोत्सव - जयपुर
ऊँट महोत्सव - बीकानेर
मरु महोत्सव - जैसलमेर
थार महोत्सव - बाड़मेर
हाथी महोत्सव - जयपुर
शरद महोत्सव - Mt. Abu
मेवाड़ महोत्सव - उदयपुर
दशहरा महोत्सव - कोटा
हिण्डोला महोत्सव - पुष्कर

अन्य मेले :

गंगा दशहरा - कामाँ (भरतपुर)
लोपन थाली मेला : कामाँ (भरतपुर)
बसंत पचंमी मेला : दौसा
गौतम जी का मेला : सिरोही
जगदीश मेला : गोनेर (जयपुर)
घोड़ो - गधों का मेला : भावबन्ध (जयपुर) (Before Bhavbandh) (लुनियावास)
सावित्री मेला : पुष्कर
गरुड़ मेला : बयाना (भरतपुर)
सूईयां कपालेश्वर मंदि - बाड़मेर
(इसे अर्द्धकुम्भ भी कहते हैं।)

(10) राम रावण मेला - बड़ी सादड़ी (चित्तौड़)

(11) मीरा महोत्सव - चित्तौड़गढ़

(12) तीर्थराज मेला - धौलपुर

(13) डोलची महोत्सव - दौसा

(14) (फूल) डोल मेला - बारां

(15) विक्रमादित्य मेला - उदयपुर

(16) चनणी चेरी का मेला - देशनोक (बीकानेर)

(17) सवाई भोज मेला - आसींद (भीलवाड़ा)

(18) बाणगंगा मेला - विराटनगर (जयपुर)

(19) पूंगी तीर्थ मेला - जैसलमेर

(20) चारभुजा नाथ मेला - मेड़ता (नागौर)

प्रजामंडल आंदोलन

रियासतों में कुशासन को समाप्त कर, उत्तरदायी शासन की स्थापना करने, राजनीतिक जनजाग्रति पैदा करने, नागरिकों के मौलिक अधिकारों की बहाली करने के उद्देश्य से किये गये आंदोलन प्रजामंडल आंदोलनों के नाम से जाने जाते हैं।

1938 A.D. के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के बाद देशी रियासतों में चल रहे संघर्ष को कांग्रेस ने अपना समर्थन दिया

1927 A.D में बम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना की गयी थी, जिसकी रियासती इकाइयों को प्रजामण्डल के नाम से जाना गया।

मारवाड़ सेवा संघ: 1920 A.D. में जयनारायण व्यास व चाँदमल सुराणा द्वारा मारवाड़ सेवा संघ का गठन किया गया. जिसका उद्देश्य जनजाग्रति पैदा कर मारवाड़ रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना करवाना था।

- मारवाड़ सेवा संघ, राज. सेवा संघ की एक इकाई थी।

तोल आंदोलन: 1920-21 A.D. में मारवाड़ रियासत में ब्रिटिश भारत की तर्ज पर सौ तोले के स्थान पर 80 तोले का एक सेर कर दिया गया. मारवाड़ सेवा संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा इसके खिलाफ आंदोलन चलाया गया, अतः सरकार को अपना निर्णय बदलना पड़ा।

मारवाड़ यूथ लीग: 10 May 1931 A.D. को जयनारायण व्यास द्वारा मारवाड़ रियासत में इस संगठन की स्थापना की गयी।

चण्डावल घटना: मई, 1942 A.D. में चण्डावल (पाली) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजा परिषद के कार्यकर्ताओं की एक सभा पर रियासती सैनिकों द्वारा हमला किया गया. फलस्वरूप कई कार्यकर्ता घायल हो गये।

डाबड़ा काण्ड: 13 March 1947 A.D. को डाबड़ा (नागौर) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं की एक सभा, मोतीलाल नामक एक किसान के घर पर हो रही थी। डीडवाना परगने के जागीरदार द्वारा कार्यकर्ताओं पर हमला करवाया गया। प्रजामंडल के मुख्य नेता चुन्नी लाल समेत 12 लोग मारे गये। मथुरादास माथुर घायल हो गये।

सर्वहितकारिणी सभा: ~~1907~~ 1913 A.D. में बीकानेर प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं स्वामी गोपाल दास व कन्हैया लाल द्वारा चुरू में इसकी स्थापना की गयी. इसके तहत बालिका शिक्षा के लिए पुत्री पाठशाला तथा दलित शिक्षा के लिये कबीर पाठशालाएँ खोली गयी।

बीकानेर षड्यंत्र अभियोग: बीकानेर महाराजा गंगा सिंह जब दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931) में भाग लेने के लिये लंदन गये. तब वहां पर बीकानेर ~~प्रजामंडल~~ रियासत के कार्यकर्ताओं द्वारा 'बीकानेर दिग्दर्शन' (बीकानेर में कुशासन को बताने वाली) नामक पत्रिका बंटवायी गयी। इसके दण्डस्वरूप स्वामी गोपालदास, चन्दनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ बीकानेर षड्यंत्र मुकदमा चलाया गया।

जेन्टलमैन एग्रीमेन्ट: भारत छोड़ो आंदोलन के समय Sep. 1942 में जयपुर प्रजामंडल के नेता हीरालाल शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल के मध्य एक समझौता हुआ, जिसे Gentleman agreement कहा जाता है, इसके तहत यह तय किया गया कि

- जयपुर रियासत अंग्रेजो की जन- धन से सहायता नहीं करेगी।
- प्रजामंडल के कार्यकर्ता शांतिपूर्ण विरोध करन सकते हैं, तथा कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी नहीं की जायेगी।
- राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के प्रयास किये जायेंगे।
- जयपुर प्रजामंडल भारत छोडो आंदोलन में भाग नहीं लेगा।

आजाद मोर्चा: जयपुर प्रजामंडल के द्वारा Quit India Movement में भाग नहीं लेने के हीरालाल शास्त्री के निर्णय से नाराज कार्यकर्त्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में आजाद मोर्चा का गठन किया तथा भारत छोडो आंदोलन में भाग लिया, जिसके अन्य नेता रामकरण जोशी, दौलतमल भंडारी व गुलाबचन्द कासलीवाल थे।

तसीमों कांड: अप्रैल 1947 A.D. में धौलपुर प्रजामंडल के तसीमो नामक गांव में पुलिस फायरिंग की गयी, जिसमें पंचम सिंह व छतरसिंह, दो कार्यकर्त्ता शहीद गये।

रास्तापाल घटना: वागड सेवा संघ द्वारा सचांलित विद्यालयों को बंद करवाने गये डुंगरपूर राज्य के सैनिकों ने रास्तापाल नामक गांव में विद्यालय बंद नहीं करने पर अध्यापक नाना भाई की गोली मारकर हत्या कर दी तथा दूसरे अध्यापक सेंगाभाई को गाडी के पीछे बांधकर घसीटा गया, 13 वर्षीय भील बालिका कालीबाई अध्यापक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस की गोलियों की शिकार (शहीद) हो गयी। (19 June 1947)

डुंगरपुर जिले में गेप सागर के तट पर काली बाई की प्रतिमा लगी हुयी है। राज. सरकार बालिका शिक्षा के क्षेत्र में बालिका पुरस्कार प्रदान करती है।

कटराथल सम्मेलन : 25 Apr. 1934 A.D. को कटराथल (सीकर) नामक स्थान पर महिलाओं से दुर्व्यवहार के खिलाफ किशोरी देवी (किसान नेता हरलाल सिंह) के नेतृत्व में 10,000 महिलाओं का एक सम्मेलन हुआ। इसमें भरतपुर के किसान नेता ठाकुर देशराज की पत्नी उत्तमा देवी ने भी भाग लिया था।

कूदन हत्याकांड : Apr. 1934 A.D. में कूदन (सीकर) नामक गाँव में पुलिस अधिकारी कैप्टन वेब द्वारा किसानों पर फायरिंग कर दी गई, इसमें कई किसान मारे गये, इस हत्याकांड की चर्चा लंदन के 'HOUSE OF COMMONS' में भी हुयी थी।

महत्त्वपूर्ण संगठन

देश हितैषिणी सभा : मेवाड़ रियासत में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के उद्देश्य से 2 जुलाई 1877 A.D. को महाराणा सज्जन सिंह की अध्यक्षता में समाज सुधार संगठन बनाया गया, जिसके उद्देश्य विवाह के समय होने वाले खर्च को कम करना, बहु विवाह निषेध करना था।

[समाज सुधार के परिप्रेक्ष्य में किसी रियासत में हुआ पहला प्रयास)

कवि राजा श्यामलदास (वीर विनोद के लेखक) इसके सदस्य थे।

वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा : Jan. 1889 A.D. में A.G.G. वाल्टर ने राजपूतों में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के लिये इस सभा का गठन किया जिसके उद्देश्य –

a) विवाह योग्य आयु निश्चित करना (लड़के के लिये 18, लड़की -14वर्ष)

b) बहु विवाह बंद करना

c) टीका व रीत बंद करना

संस्कार / संस्कृति

जड़ूला – जातकर्म (बच्चों के बाल उतरवाना)

बरी पड़ला – वर पक्ष के लोगों द्वारा वधू पक्ष के लोगों के लिए लेकर जाने वाले उपहार.

[illegible]मेला (मधुपर्क) – शादी पर वधु पक्ष द्वारा वर पक्ष की अगुवानी करना।

मोड़ बाँधना – वर को बारात में चढ़ाते समय मांगलिक कार्य।

नांगल – नये घर का उद्‌घाटन

[illegible]ोंकन डोरा – वर की शादी पूर्व बांधे जाने वाला डोरा।

[illegible]रावणी / रंगवरी / समठुनी – शादी के बाद वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष को दिये जाने वाले उपहार।

रढार – शादी के समय का प्रीतिभोज।

गौना / मुकलावा – बाल विवाह होने पर, बाद में लड़की की पहली विदाई। जब लड़की पहली बार ससुराल जाती है।

[illegible]छक / जामणा – ~~लड़क~~ नवजात के जन्म पर, ननिहाल पक्ष की ओर से दिये जाने वाले आभूषण।

द[illegible]सोठन –

रे[illegible]ण – किसी अवसर पर अमल (अफीम) की मनुहार।

बैकुण्ठी : / **चंपोल** : शव-यात्रा

अधेटा: शमशान ले जाते समय रास्ते में अर्थी की दिशा बदलना।

पगड़ी : घर में मुखिया की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी चुना जाना।

सांतरवाड़ा : मृत्यु के बाद दी जाने वाली सांत्वना।

फूल चुगना : मृत्यु पश्चात् अस्थि एकत्रित करना।

राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था

①

सामन्ती व्यवस्था (Feudal System) : राज॰ में सामन्ती व्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जो रक्त सम्बन्धों पर आधारित कुलीय प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था होती थी, जिसमें राजा समकक्षों में प्रथम होता था (कबीलाई संस्कृति)

राज॰ की सामन्त व्यवस्था पश्चिम की सामन्ती (feudal) व्यवस्था के समान नहीं थी, जिसमें राजा व सामन्त के मध्य स्वामी व सेवक का सम्बन्ध होता था बल्कि बंधुत्व पर आधारित थी।

शासक पिता की मृत्यु के बाद बड़ा पुत्र राजा बनता था। तथा शेष छोटे भाईयों को जीवन निर्वाह के लिए जमीन आवंटित की जाती थी, इन भाईयों को सामन्त, तथा भूमि को सामन्त जागीर कहा जाता था जिस पर उस सामन्त का जन्मजात अधिकार होता था।

सामन्ती व्यवस्था का स्वरुप :

राज॰ में सामन्ती व्यवस्था पदसोपान पर आधारित नहीं थी बल्कि टैंट व्यवस्था के समान थी जिसमें राजा टैंट का मुख्य स्तम्भ तथा सामन्त उसके अन्य स्तम्भ होते थे। किसी एक भी स्तम्भ के हिलने से पूरी व्यवस्था पर उसका पूरा प्रभाव पड़ता था।

सामन्ती व्यवस्था की विशेषताएँ – (Started from Saptavahan dynasty)

यह रक्त सम्बन्धों पर आधारित प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था थी।
राजा इन सामन्तों की मुख्य प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति किया करता था।

राज्य के सभी प्रशासनिक, सैनिक व नीतिगत निर्णय सामन्तों की सलाह / परामर्श पर ही लिए जाते थे।

- सामन्त का उत्थान व पतन राजा के साथ ही होता था। वह अपनी मर्जी से किसी अन्य राज्य के साथ युद्ध या संधि का निर्णय नहीं ले सकता था।
- राजा व सामन्तों के सम्बन्ध सम्मान व कर्त्तव्यों पर आधारित होते थे। राजा सामन्तों के विशेषाधिकारों का सम्मान करता था वहीं सामन्त राज्य के प्रति कर्त्तव्य को निभाते थे।
- सामन्तों को अपने पास एक सेना (जमीयत) रखनी पड़ती थी तथा आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनिक सहायता दी जाती थी, यह युद्ध व शांतिकाल दोनों में रहती थी। इस अनिवार्य सैनिक सहायता के पीछे यह भावना रहती थी कि इस राज्य की भूमि पर सबका सामूहिक अधिकार रहे।
- राजा समकक्षों में प्रथम होता था इस तथ्य को मजबूती देने के लिए राजा सामन्तों को 'काकाजी' व 'भाई जी' जैसे सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करता था, वहीं सभी सामन्त राजा को 'बापजी' कहकर बुलाते थे। (राजा राज्य का प्रधान, सामंत जागीर का प्रधान)

सामन्तों को मिलने वाले विशेषाधिकार :

* <u>ताजीम</u> : यह एक राजकीय सम्मान होता था जिसमें सामन्त के दरबार में आने पर राजा को खड़े होकर अभिवादन करना होता है। ताजीम दो प्रकार की होती थी —

इकैवड़ी (इकहरी)	दोवड़ी (दोहरी)
इसमें राजा (एक बार ही) सामन्त के केवल आने पर खड़ा होता था।	इसमें राजा को सामन्त के आगमन व गमन दोनों पर खड़ा होना पड़ता था।

3) राजपूताना मध्य भारत सभा: 1918 A.D. में जमनालाल बजाज द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक में मारवाड़ी पुस्तकालय में इस सभा का गठन किया गया जिसका मुख्यालय अजमेर (बाद में) बनाया गया। विजयसिंह पथिक, गणेश शंकर विद्यार्थी, चांदकरण शारदा आदि लोग भी इससे जुड़े हुये थे।

4) राजस्थान सेवा संघ: 1919 A.D. में विजय सिंह पथिक द्वारा वर्धा (महाराष्ट्र) में इसका गठन किया गया था। रामनारायण चौधरी व हरिभाई किंकर इस संघ के मुख्य कार्यकर्त्ता थे। राज. सेवा ने किसान आंदोलनो (बूंदी, शेखावाटी आदि) में अपनी मुख्य भूमिका निभाई। राज. सेवा संघ का मुख्यालय अजमेर में बनाया गया।

5) जीवन कुटीर: 1927 A.D. में वनस्थली (टोंक) में हीरालाल शास्त्री द्वारा इस संस्था का गठन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे ग्राम समाज का निर्माण करना था, जो पूर्णतः स्वावलम्बन पर आधारित हो।

6) हिन्दी साहित्य समिति: 1912 A.D. में इस संस्था की स्थापना की गयी थी, इसके तहत 1927 A.D. में भरतपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन करवाया गया जिसके अध्यक्ष गौरी शंकर हीराचन्द ओझा थे इस सम्मेलन में रवीन्द्र नाथ टैगोर व जमना लाल बजाज ने भी भाग लिया था।
(भरतपुर में किशनसिंह ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था)

7) अखिल भारतीय हरिजन संघ: 1932 A.D. में गांधी जी ने घनश्यामदास बिड़ला के नेतृत्व में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की थी. इसकी राजपूताना इकाई के अध्यक्ष हरविलास शारदा थे।

6) <u>वीर भारत सभा</u>: राज० में क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रसार के लिये 1910 A.D. में केसरी सिंह बारहठ व राव गोपाल सिंह खरवा द्वारा इसका गठन किया गया था, विजय सिंह पथिक भी इससे जुड़े हुये थे। यह संस्था अभिनव भारत (वीर सावरकर) की प्रान्तीय इकाई थी

<u>प्रजामण्डलों का राजनैतिक व सामाजिक योगदान</u> :

<u>राजनैतिक योगदान</u>

राजनीतिक चेतना जागृत

राष्ट्रीय चेतना का संचार

उत्तरदायी सरकारों की स्थापना

एकीकरण का मार्ग प्रशस्त

राष्ट्रीय एकता को बल

सामन्तशाही समाप्त

राष्ट्रीय आंदोलनों को बल

<u>सामाजिक योगदान</u>

- महिलाओं की स्थिति में सुधार
- शिक्षा का प्रचार-प्रसार
- आदिवासियों के कल्याण के लिये सुधार कार्यक्रम
- हरिजन उद्धार
- सामाजिक सौहार्द
- बेगार प्रथा का उन्मूलन
- सामाजिक सुधार

②

* बाँह पसाव :

इसमें जब कोई सामन्त राजा के दरबार में आता था तो वह अपनी तलवार राजा के पैरों में रखकर उसके पैरों को छूता था। बदले में राजा उसके कंधे पर हाथ रखता था।

* हाथ का कुरब :

इसमें भी सामन्त राजा के पैरों में तलवार रखकर उसके पैरों को छूता था बदले में राजा उसके कंधे पर हाथ रखकर हाथ को हृदय से लगा लेता था

सामन्तों द्वारा दिये जाने वाले (राज्यों को) कर :

* रेख : यह किसी जागीर का अनुमानित भू-राजस्व होता था, जो उस जागीर के पट्टे पर लिखा होता था।

पट्टा रेख	भरतु रेख
पट्टे में लिखा अनुमानित भू- राजस्व	जागीर का वास्तविक भू राजस्व, जो सामन्त राज्य को भरता था।

* उत्तराधिकार शुल्क : किसी जागीर में सामन्त की मृत्यु हो जाने पर राज्य द्वारा उस जागीर पर जब्ती बिठा दी जाती थी फिर नया सामन्त राज्य को उत्तराधिकार शुल्क चुका कर अपने लिए जागीर पुनः प्राप्त करता था। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उस जागीर का नवीनीकरण था। इसे मारवाड़ में हुक्मनामा व पेशकशी तथा मेवाड़ में कैद या तलवार बंधाई कहते हैं।

जैसलमेर एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ उत्तराधिकार शुल्क नहीं लिया जाता था।

* न्योत कर :

राजकुमारी की शादी के अवसर पर सामन्तों द्वारा राजा को दिया जाने कर ।

गनीम बराड़ :

युद्ध के अवसर पर दिया जाने कर

जागीर के प्रकार

- न्त जागीर
  जा द्वारा अपने
  त सम्बन्धियों
  दी जाने
  ी जागीर
  न्त जागीर
  लाती थी, जिस
  उनका जन्मजात
  धिकार होता था।
- हकुमत जागीर
  राज्य द्वारा प्रशासनिक कार्यों के बदले में मुत्सद्दी (कर्मचारी) वर्ग को दी जाने वाली जागीर, जिसे उस जागीरदार की मृत्यु के बाद 'खालसा' कर दिया जाता था।
- भौम जागीर
  राज्य के लिए बलिदान के बदले में दी जाने वाली जागीर, भौम जागीर कहलाती थी।
- सासण जागीर
  चारणों, ब्राह्मणों, मंदिरों, शिक्षा केन्द्रों आदि को दी जाने वाली जागीर, सासण जागीर कहलाती थी, जिस पर किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता था, जिसे 'माफी जागीर' कहा जाता था।

सामन्तों की श्रेणियाँ :

ामन्तों को उनके सेवा कार्य तथा बलिदानों के बदले में जो जागीरें
 जाती थी, उनका अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीके
 र्गीकरण होता था। इन सामन्तों के विशेषाधिकार व सम्मान भी
न श्रेणियों से तय होते थे। उदाहरणस्वरूप - मेवाड़ में प्रथम श्रेणी
 सामन्तों की संख्या (16) थी, इसमें भी सलूम्बर (उदयपुर)

के चूंडावतों का महत्त्वपूर्ण स्थान था, उसे राज्य में प्रधान (3) का पद दिया जाता था। युद्ध के समय वह सेना का सेनापति होता था। राजा की अनुपस्थिति में राजधानी संभालता था। राजा के राजतिलक के समय उसके तलवार बांधता था।

जोधपुर में सामन्तों की मुख्यतः 4 चार श्रेणियां थी जिन्हें राजवी, सिरदार, गिनायत व मुत्सद्दी में विभक्त किया गया है।

जयपुर (आमेर) रियासत में पृथ्वीसिंह के समय 12 कोटडी व्यवस्था लागू की गयी।

सामन्तों में मुख्यतः दो वर्ग होते थे।

(1) भौमिया सामन्त

भूमि की रक्षा करते हुये मारे जाने पर उस बलिदान के बदले में जो जागीर दी जाती थी, उन्हें भौमियां सामन्त कहते थे। इनका अपनी जागीर पर वंशानुगत अधिकार होता था व इन्हें बेदखल नहीं किया जा सकता था।

- भौमिया सामन्तों की राज्य कार्यों में नियुक्तियां कर दी जाती थी जैसे - डाक पहुंचाना, युद्ध सामग्री पहुंचाना

(2) ग्रासिया सामन्त

जिन्हें सैनिक सेवा के बदले भूमि दी जाती थी, उन्हें ग्रासिया सामंत कहते थे। इनकी सेवाओं में किसी प्रकार की कमी आने पर इनकी भूमि छीन ली जाती थी

प्रशासनिक व्यवस्था :

- राजा – राज्य का मुख्य सर्वेसर्वा होता था। सभी प्रशासनिक, सैनिक व न्यायिक शक्तियां इसमें निहित होती थी। परन्तु राजा की निरकुंश सत्ता नहीं होती थी। उस पर नियत्रंण करने वालों
  सामन्त,
  पुरोहित,
  युवराज,
  परम्परागत नीति नियमों व धर्म शास्त्रों का दबाव हमेशा बना रहता था।

राजा के अल्पवयस्क होने पर राजमाताएँ शासन चलाया करती थी।
कभी-2 बडे पुत्र का युवराज के रूप में राज्याभिषेक कर दिया जाता था तो युवराज भी शासन कार्यों में सहयोग करता था।

प्रधान – राजा के बाद में दूसरा मुख्य अधिकारी, जो राजा को सैनिक व न्याय सम्बन्धी मामलों में सलाह दिया करता था।

कोटा रियासत में – फौजदार
बीकानेर, भरतपुर – मुख्त्यार
जयपुर – मुसाहिब

वान – दीवान राज्य के वित्त व राजस्व सम्बन्धी मामलों की देख रेख करता था वह राज्य के आय-व्यय का लेखा-जोखा व जागीरों द्वारा दिये जाने वाले वार्षिक कर का हिसाब रखता था। कई बार राजा की अनुपस्थिति में जब राज्य पर नियंत्रण रखता थो तो उसे देश दीवान के नाम से जाना जाता था।

[left margin: ! के / र)की / की / रा / ।]

हिब – राजा का मुख्य सलाहकार

ती – यह सैन्य विभाग पर नियंत्रण रखता था। सैनिक सामग्री

(4)

सैनिकों के अनुशासन व प्रशिक्षण की व्यवस्था करता था।

- **शिकदार** – शिकदार नगर कोतवाल होता था जो नगर में कानून व्यवस्था व शांति बनाए रखने का प्रयास करता था।

- **खानसामा** – यह राजा का विश्वसनीय अधिकारी होता था जो राजकीय सामानों की खरीद, राजमहल की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा राजकीय उद्योगों के सामानों का क्रय विक्रय किया करता था। इस पद पर राजा किसी ईमानदार व्यक्ति की नियुक्ति करता था।

- **वकील** – यह राजधानी में ठिकाणे का प्रतिनिधि होता था।

- **मीर मुंशी** – यह कूटनीतिक पत्र व्यवहार का कार्य देखता था।
  - * रुक्का : राजा द्वारा सामन्तों को भेजे जाने वाले पत्र।
  - * खरीता : राजा द्वारा किसी दूसरे राजा को भेजे जाने वाले पत्र।

- **किलेदार**
- **चौकीदार**

ग्राम प्रशासन :

- मौजा (गांव) → ग्रामिक (पटवारी), → चौधरी (पटेल)

- तपो (गांवो का समूह)

→ तफेदार – फसल कटते समय राज्य के भू-राजस्व को निश्चित करता था।

भू - राजस्व प्रशासन :

→ भूमि को दो भागों में विभक्त किया गया था।

कृषि भूमि

- खेती की जाती थी।

चरणोता भूमि / गोचर

- सार्वजनिक भूमि, जिसे राजा भी खालसा घोषित नहीं कर सकता था।

किसान भी दो तरह के होते थे -

बापीदार

दाखला (पट्टा)
कुएँ खुदवा सकते थे।
लकड़ी उपयोग में लेक सकते थे।
मालिकाना हक

गैर - बापीदार

- खेतीहर मजदूर
- शिकमी किसान

भू - राजस्व को भोग, हासिल, लगान कहा जाता था।

बारानी व उन्नाव भूमि पर भू- राजस्व अलग - 2 होता था

बारानी ↓ बरसात के पानी से सिंचित भूमि

उन्नाव ↓ तालाबों, नहरों, कुओं से सिंचित भूमि

[जयपुर में उन्नाव भूमि पर राजस्व, बारानी भूमि से $1\frac{1}{2}$ गुणा था।

भू- राजस्व वसूलने के तरीके :

* **लाटा** : फसल को काटकर, खलिहान में उसकी सफाई करने के बाद राज्य का हिस्सा निश्चित किया जाता है। इस समय

राज्य का कर्मचारी (तफेदार) वहां उपस्थित होता था।

* **कूंता** - खड़ी फसल का अंदाजा लगाकर ही भू-राजस्व निश्चित कर दिया जाता था।

मुकता - जब किसी गांव का एक मुश्त भू-राजस्व निर्धारित कर दिया जाता था।

* **डोरी** - जब खेत को नापकर भू-राजस्व निर्धारित किया जाता था।

* **घूघरी** - राज्य द्वारा दिये गये बीज के बदले लिया जाने वाला भू-राजस्व घूघरी कहलाता था।

* **बीघोडी** - जब गांवो में बीघा के आधार भू-राजस्व लिया जाता था, बीघोडी कहलाता था।

सामन्ती व्यवस्था के प्रभाव:

नकारात्मक प्रभाव

1). जनता कूपमडूकता (जागीर में ही) की स्थिति में बनी रही, बाहरी दुनिया से अवगत नहीं हो पायी।

2. कृषि व्यवस्था का ह्रास

3. व्यापार - वाणिज्य को प्रोत्साहन नहीं दिया जैसे परिवहन - संचार के साधनों का अभाव।

4. उद्योग - धंधो को प्रोत्साहन नहीं दिया गया।

5). आर्थिक शोषण की परिणति किसान विद्रोहों में हो गयी थी।

6). फिजूल खर्ची

7). विलासितापूर्ण जीवन शैली

(6)

सकारात्मक प्रभाव –

हस्तकला उद्योग को प्रोत्साहन किया।

कला एवं संस्कृति का संरक्षण।

स्थापत्य कला को प्रोत्साहन।

लोकगीतों, लोकनृत्यों, शास्त्रीय गायन (लंगा, मांगणियार) को जीवित बनाए रखा।

शुक्र नीति के 9 प्रकार के किले बताए गए हैं –

1) एरण दुर्ग – जिसमें जाने के लिए कांटो – पत्थरों का दुर्गम पथ हो।

2) गिरि दुर्ग – पहाड़ी पर

3) धान्वन दुर्ग – मरुस्थल में

उदा॰ – जैसलमेर का किला

4) वन दुर्ग – वन में।

उदा॰ – रणथम्भौर, चित्तौड़

5) पारिख दुर्ग – चारों तरफ खाई /नहर हो।

उदा॰ – बीकानेर का किला

6) पारिघ दुर्ग – चारों तरफ परकोटा हो।

उदा॰ – बीकानेर का किला

7) सैन्य दुर्ग – सैनिकों का निवास स्थान

उदा॰ – चित्तौड़

8) औदक दुर्ग – चारों तरफ पानी हो। (नदियों के किनारे बसा हुआ दुर्ग)

उदा॰ – गागरोन और भैंसरोड़गढ़

9, सहाय दुर्ग – बन्धु बान्धवों, शूरवीरों का निवास स्थान।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

विषय वस्तु की विविधता, वर्ण विविधता, प्रकृति परिवेश, देश-काल के अनुरूप होना राज० चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र की चित्रकला में भक्ति एवं श्रृंगार रस की प्रधानता है।

दीप्तियुक्त, चटकदार एवं सुनहरे रंगो का अधिक प्रयोग किया जाता है।

किलों, महलों व हवेलियों में चित्रकला का पोषण हुआ।

मुगल चित्रकला से प्रभावित राजस्थानी चित्रकला में विलासिता, तड़क-भड़क अन्तः पुर के चित्र व पारदर्शी वस्त्र पहने पात्रों के चित्र बनाए गए हैं।

राजस्थानी चित्रकला में समग्रता के दर्शन होते हैं। मुख्य आकृति व पृष्ठभूमि का हमेशा सामन्जस्य बना रहता था। चित्र में प्रत्येक वस्तु का अनिवार्य महत्त्व होता था।

राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति को जड़ नहीं मानकर उसका मानव के सुख-दुःख के साथ तादात्म्य स्थापित किया गया।

मुगलों की अपेक्षा राजस्थानी चित्रकारों को अधिक स्वतन्त्रता होने के कारण लोक विश्वासों को अधिक अभिव्यक्ति मिली।

विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक वर्णन कर मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण किया गया।

राज० चित्रकला में नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया है।

प्राकृतिक सौन्दर्य का अधिक चित्रण होने के कारण राजस्थानी चित्रकला अधिक मनोरम हो गयी है।

राजस्थान की संगीतबद्ध जातियां

(8)

ढोली
राणा
लंगा
मांगणियार
कलावन्त
भवई
कंजर
भोपा
ढाढी

लोकगीतों की विशेषताएं

मनुष्य मन की सुख - दुःख की भावनाओं का मौखिक रूप में लयबद्ध होना ही लोकगीत है।

- राजस्थानी लोकगीतों में पेड़-पौधों का वर्णन कर प्रकृति के साथ लोगों का जुड़ाव प्रकट होता है।
  जैसे - चिरमी, पीपळी, जीरा
- पशु - पक्षियों के माध्यम से विरहणी महिलाओं ने अपने प्रियतम के पास संदेश भेजे हैं तथा उन पक्षियों को अपने परिवार के सदस्य के समान माना गया है, जैसे - कुरजां, सुवटियो, मोरियो, बिच्छूड़ो.
- राज. लोकगीतों में काम व श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है। परन्तु कहीं भी यौन सम्बन्धों की स्वतंत्रता की बात नहीं की गई है। ये पति-पत्नी के निर्मल दाम्पत्य प्रेम के गीत हैं।
- राज. लोकगीतों में हमारे लोक विश्वासों की मुखर अभिव्यक्ति हुई है।
- विभिन्न देवी - देवताओं पर लिखे गए गीत निराश मनुष्य में भी आशा का संचार करते हैं।

(५)

- राजस्थानी लोकगीतों में पायल की झंकार व तलवार की टंकार दोनों ही सुनाई देती हैं।
- सामन्ती परिवेश में लिखे गए राज. लोकगीतों में वीर रस की प्रधानता रहती है।

लोक देवी - देवताओं एवं ~~संत-सम्प्रदायों~~ का योगदान

- समाज सुधार
- लोक साहित्य / क्षेत्रीय भाषा को प्रोत्साहन
- धर्म एवं संस्कृति की रक्षा
- पर्यावरण रक्षा व जीव रक्षा
- कष्टों से निवारण
- सरल पद्धति पर आधारित भक्ति भावना
- सामाजिक समरसता
- स्थापत्य कला (मंदिर / थान) से पर्यटन को बढ़ावा
- लोक कला (गीत, नृत्य)
- नैतिक उत्थान
- चित्रकला एवं मूर्तिकला (फड़ चित्रण, पिछवाई)
- आध्यात्मिक उत्थान (संत, सम्प्रदाय द्वारा)
  ↓
  ईश्वर महिमा पर बल।